Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

INDI PRADEEP 1907

Arya Samaj Foundation Chennai and
Gurukul Kangri Collection

078040

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078010

STOCK VERIFICATION
Central Library
G.K.D.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. A—308.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078010

# हिन्दी प्रदीप

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जनवरी १९०७

मासिक पत्र

जि० २९ सं० १

सम्पादक और प्रकाशक पंडित बालकृष्ण भट्ट प्रयाग

## विषय सूची

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| हमारा नया साल ... ... ... ... ... ... | १ |
| पाप और पुण्य ... ... ... ... ... ... | ६ |
| पोरस ... ... ... ... ... ... | ७ |
| बिकाश सिद्धान्त या विनाश सिद्धन्त ... ... ... | १२ |
| सामयिक वर्त्ताव की कुण्डलिया ... ... ... ... | १६ |
| कलि बिश्व रूप दर्शन ... ... ... ... ... | १८ |
| समालोचना ... ... | २२ |
| महाकबि अमर चन्द्र सूरि ... ... ... | |

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से ... समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द ...

यूनियन प्रेस इलाहाबाद

...आज हमा... इसका ... त हैं- सिंचित ... हरा भरा ... क्या है ... घड़ियाल ... जावै कौन ... दानवी माया का कौतुक, जिसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

—:००:

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
पुस्तक सं०..............

HINDI PRADEEP
1907
G.K.V.
Lib
HARDWAR

जि० २६ सं० १ } प्रयाग { जनवरी सन् १९०७ ई०

## हमारा नया साल।

जगदाधार, जगदेकबन्धु, परात्पर, परमात्मा की कृपा से आज हमा॰ रा अट्ठाईसवां साल समाप्त हुआ अब उनतीसवें में पांव पसारते हैं-इसका विशेष धन्यवाद हमारे पढ़ने वालों को है जिनके हम बड़े उपकृत हैं-सुधा समान जिनकी कृपा वारिद की वर्षा के अमृत जल से सिंचित यह पौधा बीच बीच कई वार मुरझाते २ बच कर टटका और हरा भरा बना रहा-यों तो होनहार को कौन जान सक्ता है कि आज क्या है और कल क्या हो, कहावत है-"घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावै कौन घड़ी धो कैसी आवै" इन्द्र जाल और मय की दानवी माया का कौतुक, जिसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देख चित्त चमत्कृत हो अचरज में आ जाता है सो भी इस भवितव्यता होनहार के आगे हेच है-किन्तु यह कहेंगे कि अब हमारे में प्रौढ़ता आ गई है, हिन्दी साहित्य रसिकों में हमारे लेख का गौरव होने लगा है । इस सब के धन्यवाद का "एसेन्स" निष्कर्ष उन्हीं इने गिने थोड़े से रसिकों को है जिनसे हमारा परस्पर का कुछ ऐसा लगाव होगया है कि उनके बिना न हमे चैन है न हमारे बिना उन्हे कल होगी-इस वर्षारंभ के आमोद प्रमोद में हम अपने पाठकों की जो कुछ सेवा करें सब कम है-किन्तु मुफलिस कल्लांच पास झंझी नहीं क्या करें लाचार हो पुष्पाञ्जली की भांत काव्यवाटिका के चुने हुये फूलों का यह गुच्छा उनकी भेट करता हूं-यह तुच्छ भेंट कुछ भी उनको हृदयंगम हुई तो मैं अपने को कृतकृत्य मानूंगा-

अप्यस्ति कश्चिल्लोकेस्मिन्येन चित्तमदद्विपः-नीतः
प्रशमशीलेन बन्धनालानलीनताम्

कोई ऐसा पुरुष संसार में है जिसने चित्त मत वाले हाथी को संयम Controle के "आलान" खूटे में बांध रक्खा है ? निस्सन्देह चित्त ऐसा चंचल है कि इसे काबू में लाना बहुत ही कठिन है-

परस्य पूर्णगुणतामात्मनस्तद्विहीनताम्-दृष्ट्वा
को नाम नायाति मात्सर्यस्य बिधीयताम्

किसी को किसी गुण में पूर्ण देख और अपने को उस गुण से हीन पाय कौन ऐसा है जिसे डाह न होती हो-

अपर्युषितसत्वानां स्वाधीना सर्वसिद्धयः-

जिनका पुरुषार्थ सदा टटका बना रहता है उनके आगे बड़ी २ सिद्धियां हाथ बान्धे खड़ी रहती हैं-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


नह्यविश्रान्तचित्तानां क्रिया काचित् प्रसीदति-

जो स्थिर चित्त न हो सदा उतावले रहते हैं उनका कोई काम सिजिल नहीं होता ॥

पैशून्यासत्यपारूष्यभिन्नवादोज्झितं वचः-स
दैव वदने येषां तेषां सर्वाशिषा दिशः

चुगली चवाई झूठ और निठुराई जिनकी बोल चाल मे नहीं है वे जहां जांयगे वहीं कदर के लायक होंगे-

धीरेव धन्यं धनमुन्नतानां विद्यैव चक्षुर्विजिते-न्द्रियाणाम् दयैव पुण्यं पुरुषोत्तमानां आत्मैव तीर्थं शुचिमानसानाम् ।

ऊंची तबियत वालों को बुद्धि ही बड़ा धन है-जो इन्द्रियां और मन को बश में किये हैं उनको विद्या ही नेत्र है-उदार भाव रखने वाले पुरुषरत्नों को दया ही बड़ा पुण्य है जिनका मन पवित्र है उन्हें आत्मा ही तीर्थ है

सेवाविक्रीतकायानां स्वेच्छा विहरणं कुतः

जिन्हों ने सेवा में अपने शरीरको बेच डाला उन्हे स्वेच्छाविहार कहां ।

दिक्षु धावन्ति पापानां सुगुप्तमपि पातकम्

पापियों के छिपे से छिपे पाप आप से आप सब ओर दौड़ा करते हैं।

मनसः स्फटिकस्येव नविद्मः केन वर्त्मना ।
रागः कोपि विशत्यन्तर्नापैति क्षालितो पि यः ।

बिल्लौर की नाईं मन में "राग" रङ्ग या राग द्वेष न जानिये किस रास्ते से भीतर पैठ जाता है कि इसे कितना ही धोओ दूर नहीं होता ॥

वित्तभ्रंशेस्ति मे वृत्तिः वृत्तिभ्रंशे तु का गतिः ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


धन चला गया हमारे में नेक चलनी है तो हम अपना काम चला सक्ते हैं; नेक चलन भी न रहे तो क्या ठिकाना ॥

:o:

आरभेतैव कर्माणि श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः ।
कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीर्निषेवते । मनुः-

कामों को करता ही जाय, एक बार किसी काम को आरम्भ किया और कामयाब न हुये तो भी हतोत्साह न हो फिर उसे करैं-जो इस तरह दृढ़ रह अपना काम करते रहते हैं उनको लक्ष्मी आप से आप आकर सेवती हैं। वेदान्ती कर्म का खण्डन करते हैं और कर्म को बन्धन का हेतु मानते हैं; भले या बुरे जितने काम सब परिणाम में फल के जालमें जीव को ऐसा फसा लेते हैं कि उससे इसका उद्धार होता ही नहीं।

'पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम्'

बार २ जन्म लेता और मरता हुआ यह जीव कभी मुक्ति पाताही नहीं॥

पहले तो बड़ी कच्ची और हसने के लायक यही एक बात है कि भला बुरा दोनों सहोदर भाई के समान हैं भला मानो बुरे का जेठा भाई है। ऐसा माननेवालों की अकिल पर पहले तो हमे तर्स आता है फिर क्रोध होता है कि पीछे २ ऐसी ही ऐसी समझने तो देश को गिरा दिया और हम इस दशा को पहुंचे अब आगे और क्या होनहार है। ध्यान देनेलायक है कि तलवार उठाय किसी बेकसूर की गरदन धड़ से अलग कर देना जो बुरे से बुरा काम है और कोई बे कसूर नाहक मारा जाता है दया का भाव मन में लाय कोशिश कर उसकी जान बचा देना जो निहायत भला काम है दोनों एक ही काम हुए और उससे हमारी मुक्ति में बाधा आती है तो ऐसी मुक्ति को दूरही से नमस्कार है। मुक्ति के माने छुटकारा पाने के हैं; बुराई से हमारा छुटकारा हो मुक्ति के यदि यह माने हैं तो यह मुक्ति हमे ग्राह्य है, साथ ही जो भलाई से भी हमे छुट्टी मिलती है तो अकर्मराय काहिलों की तरास इस मुक्ति को ले हम क्या करेंगे। हमे चाहिये कि हम डट कर काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करने में प्रवीण और कुशल हों-गीता में भगवान् का वाक्य यदि सत्य है तो बड़े २ देशोद्धारक कर्मशूर जिन्हें देश के उद्धार की चोट थी स्वामी रामतीर्थ स्वामी दयानन्द सरीखे कहीं जन्म ले चुके होंगे फिर प्रगट हुआ चाहते हैं । ऐसे कर्मराय कर्मशूर मुक्ति कभी नहीं चाहते, अपने देश तथा देश बान्धवों को क्षति ग्रस्त और अवनति के चंगुल से मुक्त कर देनाही उनकी संप्रदाय में मुक्ति है-अपने सेव्य प्रभु के अनन्य भक्त और सच्चे देश हितैषियों से मुक्ति लंडूरी छिपी फिरती है सन्मुख आने की हिम्मत नहीं करती-मुक्ति का नाम लै अकर्मण्यों के सिरदार यती संन्यासियों ने अब तक हिन्दुस्तान को मन माना लूटा खाया, देश का देश बेहोश मुग्ध पड़ा था मुक्ति लोगों को गुमराही में घसीटती फिरी । अब जो नेत्र खुले होश आई तो इस नटिन की कला बाज़ी पर हंसी और अफसोस होता है, स्वामी रामतीर्थ का "प्राक्टिकल" वेदान्त याद आता है जो हमारी इस वर्तमान गिरी दशा में हमें बड़ा भारी सहारा है । मौत का दिन करीब होने तक बराबर काम करने से कभी न थकना जिस का पहिला उसूल है । इसी से मनु महाराज ने "श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः" कहा है-जिस से सिद्ध है कि आधुनिक वेदान्तियों की मुक्ति निरी काहिलों की खाव गाह है, ज़बान मात्र से ब्रह्मास्मि कहने वालों का भ्रम या धूर्त प्रलाप है, आकाश कुसुम और शशशृङ्ग सदृश बे बुनियाद है । हम ब्रह्म हैं ऐसा न समझ सब मनुष्य मात्र उस सच्चिदानन्द परमात्मा की विभूति हैं हमारे और उनके में कोई अन्तर नहीं है तब दूसरे मनुष्य का अनहित करना मानो अपनी ही हानि या अनहित करना है । मनुष्य मात्र के साथ यह भाव न हो सके तो अपने मुल्क या देश के साथ यह भाव तो होना ही चाहिये । जहां के आदमियों में यह बुद्धि आ गई है वही देश तरक्की की सीढ़ी पर चढ़ता जा रहा है । जब तक वेदान्त के इस सिद्धान्त पर हम लोग दृढ़ रहे हमारे में किसी तरह की कमज़ोरी नहीं आई थी । दृढ़ता गहे रखना वेदान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


का मुख्य उपदेश है दूसरे सुख दुःख या हानि लाभ में एकसी मनोवृत्ति का रहना दुख में उदास हो हिम्मत न हारना अभ्युदय मे घमण्ड से किसी को कुछ माल न समझना इस तरह का कर्म कुशल संसार के बड़े उपकार का है तब हम कैसे माने कि असली वेदान्त हम से संसार लुटवाता है और काम करने से हमें रोकता है ।

## पाप और पुण्य ॥

हमारे यहां पुरानी अकिल वाले कह गये हैं "धर्मस्य सूक्ष्मा गतिः"। अर्थात् "क्या करने या कहने से पुण्य है और क्या करने या कहने से पाप है" सो बहुत ही ठीक है। मनुष्य जीवन में अनेक तरह के पाप और पुण्य बना करते हैं उन सबों का बिचार हम इस समय नहीं करते बरन एक खास किस्म के पाप का जो हम प्रतिक्षण सोते जागते चलते फिरते उठते बैठते कहां तक कहें प्रत्येक श्वांस लेने तक में करते रहते हैं। उसे हम अपने पढ़ने वालों को बतलाया चाहते हैं और उस से बचने को उन्हें चौकस किया चाहते हैं। वह पाप विलाइत की बनी वस्तुओं का काम में लाना है। हम अपना शौक पूरा करने को, अपनी अमीरी निबहने को, अपना कमरा सजाने को, मोहफिल आरास्ता करने को, भाई बिरादरी के बीच नाक कट जाने से बचाने को; जो कुछ करते हैं कहीं ऐसा नहीं है जिस में यह पाप हम से न बन पड़े। इसी से कहा गया है कि पाप अथवा पुण्य की बड़ी सूक्ष्म गति है। कभी २ को जानते भी हैं कि यह पाप है पर निभता नहीं लाचार हो पाप कर्म करनाही पड़ता है। पाप कर्म से बचने और पुण्य संपादन का सहायक बायकाट का सिद्धांत बहुतही उत्तम है; बायकाट के उसूल पर चलना सहज भी है केवल दृढ़ता अपने में आ जाना चाहिये। हमारे ब्राह्मण देवता चाहें तो इस पाप से लोगों को सहज में उबार सकते हैं। हम यह नहीं कहते कि वे अपने लोभ को कहीं से कम कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दें वरन वे प्रजा को ऐसा ही लूटते खाते रहैं जैसा अब तक करते रहे। पोथियों को पढ़ने के समय केवल इतना कह दिया करें कि जो बिदेश की बनी वस्तु दान कर ब्राह्मन को देगा वह नरक में जायगा और देशी चीज़ दान देने में दस गुना पुण्य है। बरन् वह प्राणी जो सदा देशी वस्तु ब्राह्मन को देता रहा उसे इन्द्र महाराज स्वयम् विमान पर चढ़ा कर ले जाते हैं और अपने आधे आसन पर उसे बिठा देते हैं। अन्त को इस दांत किट्टन का सारांश यह है कि बिदेशी को बैपरने के समान पाप नहीं और न स्वदेशी को बैपरने के बराबर पुण्य है 'इदमेव समासेन लक्षणं पुण्यपापयोः''

—o—

## पोरस ॥

जब यूनान निवासी प्रसिद्ध दिग्विजयी सिकन्दर ने उत्तर पश्चिम की ओर से भारत पर आक्रमण किया उस समय तक्षशिला के राजा आम्फिस ने तो उस से मेल कर लिया पर पंजाब के स्वामी पोरस ने उस का भरपूर साम्हना किया था और उस की शूरता पर सिकन्दर इतना प्रसन्न हुआ कि यद्यपि उसे पराजित कर चुका था तथापि उसका राज्य उसे फेर दिया ॥

पञ्जाब के राजा का नाम पोरस यूनान के निवासियों ने लिखा है और भारतवर्ष के प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में इस राजा वा उस के विरोधी सिकन्दर का नाम तक नहीं देखने में आता। अर्वाचीन इतिहास लेखकों ने अनुमान किया है कि यह राजा पोरस या तो पुरु नाम का कोई मनुष्य था अथवा पुरुवंशी राजा रहा होगा। संस्कृत में पुरु के सन्तानों को पौरव कहते हैं। पौरव ही का नाम यूनान वालों ने पोरस बना लिया। महाराज पुरु चन्द्रवंश में पुरूरवा से चौथी पीढ़ी में उत्पन्न हुए थे और पीछे से इन का वंश दूर २ तक भारत के भिन्न २ भागों में फैला और प्रतापशाली हुआ। विचार का अवसर है कि जब सिकन्दर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भारत में आया उस समय इस वंश का राज्य पञ्जाब में था वा नहीं। यदि उस समय पञ्जाब में पुरुवंश रहा हो तो अर्वाचीन इतिहासों की बात ठीक होवे अन्यथा यदि कोई दूसरा राजवंश रहा हो तो उसी का पता लगाया जावे। पोरस का नाम जो पुरु बतलाया गया है यह भी बिना उचित अनुसन्धान के न मान लेना चाहिये।

चन्द्रवंशी महाराज पुरूरवा की राजधानी गङ्गा तीर पर प्रतिष्ठान पुर नाम की नगरी थी जहां अब झूसी नाम का एक छोटा सा गांव रह गया है। उन के पोते महाराज नहुष हैं जिन्हें इन्द्रासन भी मिला था। नहुष के पुत्र ययाति हैं जिन के पांच प्रसिद्ध पुत्र हुए। इन में सब से बड़े महाराज यदु हैं जिन के पुत्रों में से दो की शाखाओं में प्रसिद्ध राजवंश चला था। एक के वंश में प्रसिद्ध सहस्रार्जुन माहिष्मती के राजा थे जिन ने परशुराम से विरोध ठाना था और इन्ही के वंश के लोग हैहय और तालजंघ क्षत्रिय कहलाते हैं-इन लोगों ने सूर्यवंशी राजा सगर के पिता को मार उन का राज्य छीन लिया और उन की सहधर्म्मिणी को जो बन में भाग आई थी बिष पिला दिया। यदु की दूसरी शाखा उन के पुत्र क्रोष्टु के द्वारा चली जिस में विदर्भ चेदि और शूर सेन आदि देशों के राजा हैं। शूरसेन ही के राजवंश में भगवान् श्री कृष्णचन्द्र जी अवतीर्ण हुए थे। ययाति के शेष पुत्रों के भी कई एक राजवंश चले हैं जिन में अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग मद्र केकय आदि बहुत प्रसिद्ध हैं।

महाराज पुरु के वंश में दुष्यन्त और भरत प्रतापी चक्रवर्त्ती राजा हुये। भरत ही के नाम से हिन्दुस्तान की भूमि का नाम भारतवर्ष पड़ा। भरत से चौथी पीढ़ी में महाराज हस्ती हुये इन ने गङ्गा तट पर हस्तिपुर नाम नगर बसाया जो अब मेरठ के ज़िले में उजाड़ पड़ा है। हस्ती के पुत्र अजमीढ़ और द्विमीढ़ वंश चलाने वाले हुए। अजमीढ़ की तीन रानियों से तीन भिन्न २ वंश चले। अजमीढ़ के परपोते महाराज कुरु थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जिन के नाम से कुरुक्षेत्र की भूमि प्रसिद्ध हुई । कुरु से फिर चन्द्र वंशियों की दो शाखायें फूटीं जिनमें से एक में तो मगध के राजा वृहद्रथ जरासन्ध आदि और दूसरे से धृतराष्ट्र तथा कौरव और पाण्डु तथा पाण्डव लोग हैं । इस प्रकार से महाभारत के युद्ध के समय में पुरु के वंश की पांच भिन्न २ शाखायें भारतवर्ष के भिन्न २ भागों में प्रतिष्ठित थीं ।

द्विमीढ़ के वंश का अन्तिम राजा बहुरथ महाभारत के युद्ध के समय में उपस्थित था बहुरथ के पीछे इस वंश का पता नही लगता । अनुमान होता है कि यहीं पर इस शाखा की समाप्ति है । वैसे ही अजमीढ़ की जो शाखा वृहदिषु के द्वारा चली सो उदक्स्वन के पुत्र भल्लाद तक पहुंच के कुरुक्षेत्र युद्ध के लगभग समकाल में लुप्त हो गई । जो शाखा अजमीढ़ के पुत्र नील के द्वारा चली उस का राज्य पाञ्चाल देश में रहा । इसी वंश में द्रौपदी के पिता महाराज द्रुपद हैं जिन्हें द्रोणाचार्य ने महाभारत के युद्ध में बध किया । द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न भी कुरुक्षेत्र के युद्ध में पाण्डवों की ओर से लड़े और इन्ही ने पितृ घाती द्रोण का प्राणान्त किया धृष्टद्युम्न के पुत्र का नाम धृष्टकेतु था । अजमीढ़ की दूसरी शाखा की समाप्ति यहीं पर है ।

कुरु के पुत्र सुधनु से मगध राजवंश चला जिन में से वृहद्रथ का पुत्र जरासन्ध महाभारत की लड़ाई के पूर्व युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के [illegible] में भीम के द्वारा मारा गया । जरासन्ध के वंश का अन्तिम राजा रिपुञ्जय था ।

कुरु के पुत्र जन्हु से जो शाखा चली उसी में कौरव और पाण्डव हुए जिन के बीच घोर युद्ध हुआ और जिन का इतिहास महाभारत में लिखा गया । युधिष्ठिर के भाई अर्जुन के पोते परीक्षित से यह वंश चला और कुछ दिन तक इन लोगों की राजधानी हस्तिनापुर और फिर कौशाम्बी रही । इस वंश का अन्तिम राजा क्षेमक था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


युधिष्ठिर के प्रपितामह महाराज शान्तनु के एक भाई का नाम बाल्हीक था जिन के पुत्र पौत्रोंका अधिकार सिन्धु देश पर था। सोमदत्त का पुत्र जयद्रथ भी महाभारत के युद्ध में उपस्थित था। अर्जुनने युद्ध में सिन्धुराज जयद्रथको मार डाला था। इस शाखा की प्रतिष्ठा भी जयद्रथ के साथ समाप्त हुई।

निदान ऊपर के बर्णन से यह बात निर्धारित होती है कि पुरु की शाखा वाले परस्पर कुरुक्षेत्र में जूझ गये और युद्ध के अन्त में केवल दो शाखायें बच रहीं जिन में से एक तो परीक्षित तथा उन के सन्तानों में हस्तिनापुर तथा कौशाम्बी में रही और दूसरी जरासन्ध के वंश में मगध की राजधानी पटना वा पाटलिपुत्र में प्रतिष्ठित रही।

बाबू रमेशचन्द्र के अनुमानानुसार यदि महाभारत का युद्ध सन् ईस्वी से १२५० वर्ष पूर्व ही मान लिया जावे तो भी सिकन्दर के भारताक्रमण के समय तक न तो जरासन्ध का और न परीक्षित का वंश रह जाता है। यह तो इतिहास में प्रसिद्ध ही है कि सिकन्दर का समकालीन चन्द्रगुप्त का पिता महानन्द था और यह महानन्द पुरुवंशी नहीं बरन शिशुनाग वंशी था।

परीक्षित से क्षेमक तक जो पुरुवंशी राजा हुये उन के राज्य का अन्त सन् ईस्वी से ४३० वर्ष पहिले हो चुका था। वह वंश सिकन्दर के समय तक वर्तमान रहा होगा। पुरुवंशियों की किसी और शाखा ने यदि पञ्जाब पर अधिकार किया होता तो अवश्य उस का उल्लेख कहीं न कहीं मिलता ही।

उपरोक्त बातों से यही अनुमान दृढ़ और स्थिर होता है कि सिकन्दर का बिरोधी पोरस पुरुवंशी न रहा होगा।

यदि पोरस पुरुवंशी न रहा तो फिर किस वंश में इस का होना सम्भव है यह बात सोचना चाहिये। टाड साहिब राजस्थान के इतिहास में लिखते हैं कि सर टामस रो इत्यादि कई एक प्राचीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


युरोपियनों ने मेवाड़ के राना को पोरस का सन्तान बतलाया है। यह बहुत सम्भव है कि पोरस सूर्य वंशी राजा हो। मेवाड़ के राना अपने को बाप्पारावल का सन्तान बतलाते हैं। बाप्पारावल के पूर्वजों में से एक कनक सेन है जिस ने सन १४४ ई० में लाहौर को छोड़ सौराष्ट्र का मार्ग लिया और वहां पर जाके बलभीपुर को अपनी राजधानी बनाया। उस राजधानी को म्लेच्छों ने सन् ५२४ ई० के लगभग सत्यानाश किया पर एक गर्भवती रानी ने अपने प्राण के साथ मेवाड़ के रानाओं के वंशधर को बचाया। कनकसेन भगवान् रामचन्द्र के ज्येष्ठ पुत्र लव के वंश में श्रीरामचन्द्र जी से ६३ वीं पीढ़ी में था। इस का लाहौर में सन १४४ ई० में विद्यमान रहना ऐतिहासिक घटना है। अतएव अवश्य सम्भव है कि लव के वंशजों में से कोई राजा अयोध्या को छोड़ पञ्जाब में आ बसा होगा और राजधानी का नाम लवकोट रक्खा इसी का नाम पीछे से लाहौर हो गया। पुराणों में रामचन्द्र के ज्येष्ठ पुत्र का नाम कुश लिखा है और उन के वंश में अयोध्या के अन्तिम राजा का नाम सुमित्र लिखा है। लोग सुमित्र को विक्रमादित्य शकारि का प्रायः समकालीन बतलाते और ५६ वर्ष ख्रीष्ट से पूर्व में रखते हैं। पर सुमित्र का प्रपितामह प्रसेनजित् सन ईस्वी से ४८० वर्ष पूर्व निज पुत्र क्षुद्रक वा विरोधक के हाथ निहत हुआ। तदनन्तर केवल तीन ही पीढ़ी में ३१२ वर्ष का समय लगना बहुत अधिक असम्भव है। यदि २२ वर्ष प्रत्येक राजा का राज्यकाल माना जावे तो सुमित्र का समय लगभग ख्रीष्ट से ४०० वर्ष पूर्व पड़ता है, सम्भव है कि सुमित्र के वंशज (जिन का कि उल्लेख पुराणों में नहीं मिलता) अयोध्या को छोड़ लाहौर में जा बसे हों और पोरस उन्ही के वंश में कनकसेन का पूर्वज पञ्जाब का राजा हो। सर टामस रो का मेवाड़ के रानाओं को पोरस के सन्तान कहना इस अनुमान से पुष्ट होता है। सुमित्र के अनन्तर और कनक सेन के प्रपितामह महारित के पूर्व पांच राजाओं के नाम नहीं मिलते। पोरस सम्भवतः उन्हीं पांचो में से कोई होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पोरस यह राजा का नाम था इस में भी कुछ संदेह हो सकता है। सिकन्दर के साथियों ने तो लिखा है कि पञ्जाब का राजा पोरस था। तक्षशिला के राजा ने सिकन्दर को पोरस से लड़ने के लिये प्रोत्साहित किया था। पञ्जाब तक्षशिला के पूर्व ओर है संस्कृत में पूर्व देश के निवासियों को 'पौरस्त्य' कहते हैं। अतएव सम्भव है कि तक्षशिला का राजा पञ्जाब तथा भारत के और २ निवासियों की संज्ञा 'पौरस्त्य' व्यवहार में लाता रहा हो। यूनान वालों ने इसी पौरस्त्य को राजा का नाम समझ अपनी भाषानुसार अपभ्रंश रूप पोरस ही उच्चारण किया और लिखा हो। इस अनुमान की पुष्टि में एक बात और कही जा सकती है कि पोरस नाम के दो राजा सिकन्दर के समय में भारत वर्ष में थे। एक पोरस पञ्जाब का राजा था और दूसरा उसी का भतीजा (वा भाञ्जा) था जिस ने पीछे से सिकन्दर से विद्रोह किया और चन्द्रभागा (चनाव) और इरावती (रावी) के बीच की भूमि में सिकन्दर ने उस का पीछा किया था। वह भी पूर्व देश बासी (पौरस्त्य) होने के कारण 'पोरस' ही कहलाया हो। टाड साहिब ने प्राचीन युरोपियन ग्रन्थकारों के लेख में उज्जैन के भी एक राजा का नाम पोरस पाया है और उसे 'पोवार' वा प्रमर वंशी ठहराया है। यहां भी युरोपिनों ने पूर्व देश निवासी ही को पोरस लिखा हो तो सम्भव है।

हरिमङ्गल मिश्र प्रयाग।

—०—

## विकास सिद्धान्त या विनाश सिद्धान्त।

"सरस्वती" के गत अगस्त महीने के अङ्क में "विकास सिद्धान्त" शीर्षक एक तीन पृष्ठ का लेख सम्पादक महोदय की लेखनी का लिखा प्रकाशित हुआ है। यह लेख उपयोगी और बिचारणीय है। द्विवेदी जी महाराज कुछ दिनों से अङ्गरेज़ी के उत्तमोत्तम बिचार पूर्ण ग्रंथों का हिन्दी भाषा में अनुवाद करने का सङ्कल्प कर हम लोगों का जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रभूत उपकार कर रहे हैं उसे हम क्या, सभी मुक्तकण्ठ से स्वीकार करेंगे। मातृ भाषाभारती के ऐसे सुयोग्य सुपूत का हम अन्तःकरण से धन्यबाद करते हैं।

"क्रम विकास" सिद्धान्त के हमने दो एक लेख और पढ़े हैं पर मूल ग्रन्थ के अवलोकन का हमको सौभाग्य नहीं हुआ है। अतः हम यह कहने से हिचकते हैं कि मूल ग्रन्थकार का यथार्थ आशय क्या है। यह हम जानहे हैं कि इस सिद्धान्त पर पाश्चात्य पण्डितों के कई दल हैं, पर यह नहीं जानते हैं कि उनके मत भेद का कारण क्या हैं। सरस्वती के सम्पादक ने इस पर जो लेख लिखा है वह विवर्त बादियों के किस दल का सिद्धान्त है यह भी हम नहीं कह सक्के। जो हो, हमने इस लेख को भली भांति पढ़ा और मनन किया है। हमारे मनन का यह फल हुआ कि पूर्वापर का बिरोध हमारे विचार मार्ग पर आ खड़ा हो गया और अन्त में हमको यह कहना पड़ा कि "यह विकास सिद्धान्त है या बिनाश सिद्धान्त"? लेख के जिस अवतरण से हमारे मन में इस बिरुद्ध भाव वा बिरुद्ध बिचार का उदय हुआ उसका सारांश नीचे उद्धृत कर हम अपनी शङ्का का स्वरूप स्पष्ट खोल कर बताते हैं:-

अवतरण १ "संसार में जीवन निर्वाह का बड़ा विकट झंझट जीवों के पीछे लगा हुआ है। जो सबल होने के कारण अपना जीवन अच्छी तरह से निर्वाह कर सक्के हैं वे ही जीते रहते हैं। शेष नाश ... नाश ही जाते हैं। देश और काल की व्यवस्था के अनुसार जीवों को अनेक प्रतिकूल बातों का सामना करना पड़ता है। उनसे वे ही पार पा सकते हैं। जो अधिक सबल और उनके सहने की अधिक शक्ति रखते हैं। निर्बल का कहीं ठिकाना नही। स्वयं प्रकृति भी जो सबल और निर्बल दोनों को पैदा करती है, निर्बल का पक्ष न लेकर सबल का ही लेती है अतएव सिद्ध है कि संसार में निर्बल का गुज़ारा नहीं। इससे मनुष्य को सबल बनने का प्रयत्न करना चाहिये"॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


ऊपर के वाक्यों पर खूब मनोनिवेश करना चाहिये। यह द्विवेदी जी का स्वतंत्र वा निजका लेख नहीं है-मालूम होता है यह हरवर्ट-स्पेन्सर के ग्रन्थ के आधार पर लिखा गया है और अनेक प्रकार से प्रमाण पर प्रमाण और दृष्टान्त पर दृष्टान्त उपस्थापित करके अन्त में यह सिद्ध किया गया कि "संसार में निर्बल का गुज़ारा नहीं। इससे मनुष्य को सबल होने का प्रयत्न करना चाहिये"। जड़ प्रकृति का आधार लेकर मानवी प्रकृति की इति कर्त्तव्यता स्वीकार कराने में क्या लेख का यह आशय है कि इस सिद्धान्त पर बिचार करने वालों को दृश्य और अदृश्य प्रकृतियों के कृत्य कलाप का वा उनके धर्म भिन्नता के विषय का बिचार एक दम छोड़ देना चाहिये? जब ऐसा है तो यहां भी उस पर बिचार न किया जावेगा। सिर्फ उक्त लेख की प्रसिद्ध बात पर बिचार किया जाता है। अस्तु "संसार में निर्बल का गुज़ारा नहीं सबल का ही गुज़ारा है"। यहां क्रम बिकास का सिद्धान्त भिड़ाने से यही जाना जाता है कि इस सिद्धान्त की अन्तिम सीमा Last stage मनुष्य का "सबल" होना है क्योंकि "सबल" होने पर वह जीवित रहेगा, मरेगा नहीं। "सबल" बनना, और अमर होना एक है। यहां "सबलता" का अर्थ ही हमको जानना है। थोड़ी देर के लिये हम पशुओं की प्रकृति का विचार यहां उपस्थित करते हैं। पशु जाति में वा पशुओं में सिंह वा व्याघ्र सबसे "सबल" जन्तु है। तो क्या यह मानना पड़ेगा कि वे इस संसार में सदा जीवित रहेंगे? किसी शास्त्रज्ञ का कथन है कि ऐसे जीवों की संख्या दिन प्रति दिन कम होती जाती है। जब यह सत्य है तब "सबलता" का क्या अर्थ हुआ? और भी जो हम अपने जीवन का निर्वाह अच्छी तरह करने ही के प्रयोजन से इस उत्तम मनुष्य तन में आये हुये हैं तो कहना पड़ेगा कि मनुष्य के समान स्वार्थ पर आत्मम्भरि दूसरा कोई प्राणी नहीं है। जहां स्वार्थ भरा है वहां बिरुद्धाचरण का प्रचण्ड भाव अवश्य रहता है। शत्रुता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



की उत्पत्ति आपसेआप होती है। इस से यदि "अपने" जीवन का निर्वाह अच्छी तरह करने के लिये हमको "सबल" बनने का प्रयत्न करना चाहिये तो इस सबलता का अर्थ "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वा Might is right होगा। जिससे मनुष्य जाति का इस संसार में एक क्षण भर भी जीवित रहना कठिन हो जायगा। लोगों के स्वार्थ उन्हें एक दूसरे पर हस्तोत्तोलन करने में वाध्य करेंगे। रावण सिकन्दर नेपोलियन महमूद आदि उपद्रवी शस्त्र के बल विजयी बनने वाले इसी अर्थ के मानने वाले हुये। जिस जाति में ये हुये उसकी इस समय क्या दशा है। भारत विजयी मुसलमानों का सिंहासन इस वक्त अपनी पीठ पर किसको आसन दे रहा है। यह सुविज्ञ पाठकों को अच्छी तरह विदित होगा। अतएव हम कह सकते हैं कि यदि "सबल" का यही अर्थ है तो यह "बिकास सिद्धान्त" नहीं बिनाश सिद्धान्त है और इससे परोपकार दया, धैर्य्य, सहिष्णुता, स्वार्थ आदि गुणों पर कुल्हाड़ी चल रही है। क्या "सरस्वती" के प्रवीण सम्पादक इस अर्थ को मानते हैं?

जहां तक हमको स्मरण हो रहा है Survival of the fittest का अनुवाद "जो सबल है वही संसार में जीता है" किया गया है Fittest का अर्थ सबल न हो कर योग्यतम होना चाहिये था। और ऐसा अर्थ करके यह बतलाना था कि योग्यतम बनने के लिये मनुष्य को किसका आश्रय लेना आवश्यक है। योग्यता किससे आती है? योग्यता शारीरिक शक्ति है या मानसिक? इन दोनों शक्तियों में अधिक श्रेष्ठ कौन सी है? किसके आधार में कौन है? इत्यादि। ऐसा न होने से शङ्का का स्थान भर पूर दिखाई देता है। संसार में निर्बल का कहीं गुज़ारा नहीं इसका खंडन हम नहीं करते हैं। संग्राम में बिजयी होने के लिये शक्ति विशेष की बड़ी भारी आवश्यकता है। पर यह मालूम होना चाहिये कि वह शक्ति कौन सी शक्ति है। हमारे आर्ष ग्रंथ भी आरम्भकाल से पुकार रहे हैं "नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः" पर इसे कौन सुनता है? यहां पर यह कह देना हमको उचित जान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पड़ता है कि आधुनिक विर्वत बादियों का जीवन और हमारे पूर्व तन विवर्त्त बादियों का आत्मा दोनों बिचारणीय हैं। स्वार्थ और पर-मार्थ में यदि अंतर माना जावे तो इस में भी अंतर देखा जावेगा। हम लोग क्रम बिकास सिद्धान्त के रथ पर बैठे पूर्णता की ओर चले जा रहे हैं। सबलता की ओर नहीं जो सबलता पूर्णता का एक प्रधान अंग है। जो जितना पूर्ण होगा वह उतना ही योग्य और श्रेष्ठ कहा जायगा। यह सबलता यदि दृश्य संसार से सम्बन्ध रखे तो पूर्णता दृश्य और अदृश्य दोनों से सम्बन्ध रखने वाली कही जावेगी। संग्राम भूमि का जो बि-जयी बीर होगा वही पूर्ण बीर कहा जावैगा और वही सदा जीवित रहेगा। यही मनुष्य का पूर्ण बिकाश वा बिकाश सिद्धान्त का अन्तिम स्थान है। जिसे हम यों समझा सकते हैं किजो पुण्यात्मा है वही योग्य बलिष्ट और श्रेष्ठ है। पूर्णता धर्माचरण से प्राप्त होती है। इससे जो धार्मिक है वही पूर्ण है। यहां हमारा परमप्रिय सिद्धान्त स्वतः सिद्ध हो रहा है कि "यतोधर्मस्ततोजयः"।

अनन्तराम पांड़े रायगढ़

## सामयिक व्रताव की कुण्डलिया माधवप्रसाद शुक्ल रचित ॥

१

हिन्दीतजि इङ्गलिस पढ़ै बोलो गिट् पिट् बैन।
अपनी पदवी छोड़कर वनिये जेंटिल मैन॥
बनिये जेंटिल मैन कोट अरू पैंट चढ़ाओ।
चश्मा नैन लगाय हैट शिर मांहि जमाओ॥
दम् दम् सिगरट् पियो पहिन्न डासन का खट् पट्।
कुत्ता संग मे लिये चलो मारग मे झट् पट्॥

२

धर्म कर्म की बात पर कबहुं न कर विश्वास।
संस्कृत विद पण्डितन पर करिये घृणा प्रकास॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करिये घृणा प्रकास वेद मे त्रुटि दिखलाओ ।
बड़े बड़े पटु बुद्धि सुजन झूठा ठहराओ ॥
निन्दा करना सिखो आपनी हठ मत छोड़ो ।
संयम नियम बिचार आदि को जड़ से तोड़ो ॥ २ ॥

३

भीष्मादिक की कथा पर अचरज करो महान् ।
जो दिमाग मे नहि धसै ताहि झूठ कर जान ॥
ताहि झूठ करि जान महाकायर बनजाओ ।
बृटिश जाति सम नहीं कोऊ यह मन में लाओ ॥
कहुं बीरन की सुनो बात तो डर के मारे ।
चुप ह्वो घर में रहो सोय कहुं पांव पसारे ॥ २ ॥

४

मिथ्या भाषण कुटिलता छल कुकर्म अभिमान ।
द्रोह ईर्षा जाति मद करै सो पण्डित जान ॥
करै सो पंडित जान प्रात उठि तिलक जमावै ।
नारिन के बिच बैठ जगत मिथ्या समझावै ॥
बात बात पर पाप पराछित सहित बतावै ।
महा अधम नीचनहू के घर जाय पुजावै ।

---

भा जे अव नहिं बनै अहो ! भारत प्रवीर गन ।
र हो गहे दृढ़ शस्त्र सुमिरि निज धर्म सनातन ॥
त रह तरह के अस्त्र यदपि तुव हृदय कपावत ।
की रति धन मरजाद मान जन प्रेम नसावत ॥
बर ष वर्ष अगणित मनुष्य बनि ग्रास काल के ।
त न पिंजर के ते लखात ह्वै बश अकाल के ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मा नव अपने धर्म तजत बनि मूर्ख अपौरुष।
न हि स्वदेश अनुराग बिचारहिं ते अस दुर्मुख॥
द शा यद्पि अति गलित तद्पि हे युव शिक्षित गन।
शा न्त चित्त निःशङ्क स्वदेशी करहु प्रचारन॥
उन्निस कबहुं न होइहै जो दृढ़ धर्म निवाहिहै।
तिरसठ के अंत्यार्ध को अद्भुत दृश्य दिखाइ है॥

माधव प्रसाद शुक्ल

--०--

## बड़े दिन की डाली।

### कलि बिश्वरूप दर्शन।

यह कहां किसको खबर थी कि आज ही बड़ा दिन है और यह अपना प्रभाव जमावेगा। इसी से यार लोग भी मस्त भये अपनी प्यारी अलभ्य निद्रा देवी के गोद में मज़े से कल्लोल कर रहे थे कि तड़का होते ही दना दन की आवाज़ से शरीर कांप उठा और निद्रा देवी ने अपने पर कोई बिपत आती जान मुझे अपनी गोद से अलग किया फिर तो वह उक्त सुख कोसों दूर हुआ-चिन्ता के Regiment ने अपने पूरे सामान से मेरे चित्त में डेरा डाल ही तो दिया और एक के बाद दूसरी चिन्ता क्रम २ से अपना प्रभाव जमाने लगी। सोचने लगा मेरा शरीर कांपा तो क्यों कांपा? और यह शब्द क्यों हुआ? क्या बङ्गाल का कम्प छूत की बिमारी सा मुझे तो नहीं हुआ? आज कल बङ्गाल में कितने तरह के कम्प Camp हैं। राज कम्प, भूमि कम्प, दैव कम्प, प्लेग कम्प, पुलिस कम्प, कांग्रेस कम्प आदि कम्प से मेरा शरीर भी एक चिन्ता का Camp हो गया। पुलिस वालों ने बन्दे मातरम् के कहने वालों पर कोई कानूनी तोप तो नहीं धर धमका कि जिस शब्द से मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


शरीर कांप गया । क्योंकि Armsact के बाद एक छोटी सी छूरी के भी दर्शन न हुये तो तोप की आवाज़ से शरीर कांप जाना कोई असम्भव नहीं है । जो हो गुरू महाराज के बिना कैसे शङ्का निवारण हो सकती है । चलो उन्हीं के पास चलैं फिर क्या था अपने महामान्य सदा के साथी पञ्च गुरू के यहां पहुंचे । देखा तो पञ्च गुरू Dunce cap दिये बुकर डाढ़ी लगाये अबा काबा डांटे दोनों हाथ दोनों जेब में डाले बक ध्यान लगाये टहल रहे हैं-हमको अलकाब बजा लाने का भी मौका न मिला कि आप फरमाने लगे । देखो कब से तुम्हारी राह देख रहे हैं और गधे के सर से सींग समान नदारद तुम इधर उधर घूम रहे हो तुम्हारा कहीं पता ही नहीं । मेरे पर आज इतनी कृपा होने का क्या कारण है ? खैरीयत तो है? आज बड़े दिन के उत्सव में न चलोगे ।

यह कह पञ्च महाराज बढ़े हम भी कठ पुतली के तरह उन्हीं के कदमों पर कदम रखते हुये बढ़े और कलकत्ते के St. Paul के गिरजे में जा पधारे । आहा ! उसकी सजावट देखते ही कालिदास भवभूति रेनल्ड बङ्किम आदि की याद आने लगी । कि नाहक अपने बर्णन का मसाला जो इस सजावट से बहुत कुछ मिल सकता है बिना लिये ही चले गये । क्या कहैं यदि सजावट के वर्णन के लिये कहीं से भी कवित्व शक्ति की बुद्धि उधार मिलती होती तो बन्दा क्यों चूकता । तो "सजावट" ऐसा शब्द लिख देना ही पूरे वर्णन की इति समझिये । और नहीं तो ज़रा धीरज धरिये पुनर्जन्म के अनुसार इनके अवतार की प्रतीक्षा करिये और यदि इतना भी सबर न हो तो इस सजावट के न देखने से अपने भाग्यों को ठोंक धिक्कारिये । खैर वहां पहुंच दल बादल के समान काले २ कोट पहने गौराङ्ग महा प्रभुओं को देखा मानों काले २ मेघों में उनका मुख मण्डल बिजली समान चमकता हो । ज्यों ही हम गुरू चेला वहां पहुंचे कि सब के सब पञ्चजी पर टूट ही तो पड़े । मैं बड़ा चकित हुआ कि ऐं । मामला क्या है ? क्या हम दोनों को स्वदेशी Agitator समझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कर वारण्ट की हुलिया मिलाय गिरफ्तार करने के लिये तो हम पर नहीं टूटे। यह हम मन में कही रहे थे कि उन्हीं में से एक गौराङ्ग महा प्रभु ने अपने श्री मुख से देवबाणी में कहा "This grand Presidental seat is reserved for such a worthy man like you from a long time, तब तो मेरे जी में जी आया पञ्च महाराज सजी सजाई कुर्सी पर जा बिराजे और मुझे भी उन्हीं के बगल में Assistant कथक्कड़ की कुर्सी नसीब हुई। अस्तु पञ्च महाराज के बैठते ही इतनी तालियां पिटीं कि लोगों के कान के पर्दे फट गये। इस बात की सत्यता इसी से मालूम हो सकती है कि कदाचित इसके पहिले लोगों के कान में छेद न था और उस पर्दा के फटने ही से सबों के कान में छेद सा मालूम होता है—तदनन्तर पञ्च महाराज बोले "तुम सब कलिराज के अनन्य भक्तों को धन्य है बताओ आज किस प्रसंग को छेड़ें" इतनी बात सुन उनमें के एक लीडर अपने श्री मुख से यह उच्चारण करते भये "आप के हम अति कृतज्ञ हैं कि समय २ पर आप हमारे इष्ट देव की बिचित्र २ बातें बताया करते हैं। आज भी ऐसे ही कोई उनके बिचित्र रूप को बिस्तार या सूक्ष्म रूप से वर्णन करिये"। इतनी बात के सुनते ही हमारे पञ्च महाराज का कन्दरा सा मुंह New invented. Machine. के समान जुंबिश करने लगा।

सावधान ह्वै सचेत सब, सुनहु श्रोत गण आज।
बरनत हैं। जिन कर चरित सो धन्य २ कलिराज॥

सो सावधान होकर सम्पूर्ण जो जेण्टिलमेनों के समूह हों मेरी बिचित्र कथा को श्रवण करिये मैं परिश्रम पूर्वक कलिराज के बिचित्र रूप को बर्णन करता हूं। एक समय की बात है कि अरराट पहाड़ पर कलिराज के एक भक्त ने इनके बिचित्र कर्मों पर आश्चर्य कर इनके रूप के दर्शनार्थ धरना दिया। और बरसों केवल Huntley Calmer की बिस्कुट ' और Co-operative society का Lemonade और soda water ही खा पीकर तपस्या करते रहे पर भगवान् कलिराज न पसीजे। फिर इन सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



078010

चीज़ों के साथ अनन्य भक्त जी ने Extra. No. 1 और बढ़ा दिया फिर भी दर्शन न हुआ। तब तो वो दृढ़ चित्त Kilner's Hotel के कुल सामान से अपनी आत्मा को सन्तुष्ट करने लगा। आत्मा के सन्तुष्ट होते ही कलि भगवान् का कलेजा पसीज कर पानी २ हो गया और झखमार दर्शन देना ही पड़ा-भगवान् कलि साक्षात् रूप से इनके सन्मुख आ बोले "हम तुम पर अति प्रसन्न हैं बताओ जो कहो सो करें" तब तो भक्त जी ने कहा तुम्हारे बिचित्र कर्म्मों को देख आप के विचित्र बिश्वरूप के दर्शन की इच्छा रखता हूं। सो मेरी अभिलाषा को पूर्ण करिये...

इतनी बात के सुनते ही भगवान् कलिराज ने अपने बिचित्र विश्व रूप को दिखलाना आरम्भ किया! ...

महाराज कलि भगवान् के जो चरण हैं सो India या Indians हैं क्योंकि सब इसे अपने पैर की धूल समझते हैं और गौराङ्ग प्रभुओं की लात सहते सहते इसका स्वरूप चरण रूप में परिवर्त्तित हो गया। इसी से यह सवों की लात सहने में समर्थ है। दोनों जंघायें इसकी एशिया खण्ड है, दोनों ऊरू उत्तरी या दखिनी अमेरिका हैं। जघन देश योरप खंड है, नाभी गौराङ्ग राज्य के हस्त गत समस्त देश हैं; बक्षस्थल वृटिश राज्य के समस्त देश हैं। मुख इङ्गलैंड और मस्तिष्क या शिरोभाग लण्डन है। योरप के लोग जिनकी देवताओं में गिनती है वे सब इनकी भुजायें हैं क्योंकि इन्हीं के ज़रिये कलि भगवान् जिसको जो चाहें स्याह का सुफेद करें और सुफेद को स्याह कर सकते हैं। हर एक तरह की Petitions अर्ज़ियां आप के कर्ण हैं इनके कान तक कोई वात के पहुंचाने का केवल यही एक तरीका है उसको भी चाहें जैसा सुनी वा अनसुनी कर सकते हैं। पायोनियर, इङ्गलिशमैन आदि अङ्गरेज़ी पत्र आप के नेत्र हैं जो बातें ये लिख देंगे बस उसी को तो देखेंगे देशी पत्रों की बात देखते हुये भी नेत्र हीन हो जाते हैं। हाकिमों की हिन्दुस्तानियों पर बद नज़र आप की कुटिल भोंहें हैं। ईश्वर न करै किसी देशी पर इनकी नज़र बद हो या किसी को ये तक लें India के

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बारे में Parliament आप की पलकें हैं। जिनके पलक भांजते ही हिन्दुस्तान के बिगड़ने वा बनने का दारमदार रहता है—हर एक तरह के पेय द्रव्य आपकी रसनेन्द्रिय है; पीनल कोड की दफा आप के वेद या ब्रह्म वाक्य हैं; पुलिस कान्स्टेबलों के मोटे २ सोंटे आप के यमराज सदृश दांत हैं, लाल पगड़ी को देखते ही हिन्दुस्तानी मात्र के लिये मानों मौत का पैगाम आ जाता है। इङ्गलिश लेडीज़ आप की मोहनी माया हैं। हर एक तरह के ईजाद आप की सृष्टि हैं हिन्दुस्तान का रस हर तरह चूसना आप के अधर हैं। राली ब्रादर्स उनकी कुक्षि (कोख) या बड़वानल समान पेट है। रक्त मांस रहित भारत का अस्थि पञ्जर मात्र का ढचर आप की हड्डियां हैं। काल की कुटिल गति से भारत का बनना या बिगड़ना कलि भगवान् का श्वास प्रश्वास है। सम्पूर्ण स्टीम मेंशीन के धुयें आप के बाल हैं; वृटिश वार्न सब्जेक्ट आप के हृदय हैं। विलायत की पार्लियामेंट उनका मन है; और हे भक्तजन पण्डितों ने वृटिश पालिसी को कलिराज का अहङ्कार तत्व बतलाया है। बीसवीं शताब्दी के समस्त अस्त्र शस्त्र आपके नख हैं। सम्पूर्ण बिलायती Industries कारीगरी आप की निपुणाई है। फोनोग्राफ ग्रामोफोन, पियानों आदि आप के स्वर हैं। अब कलिराज के बिराट रूप के वर्णन का अन्त करते हैं, किचनर के मातहत में समस्त मिलीटरी सिपाही आप की भुजायें हैं। बिलायती बड़े २ सौदागर आप के ऊरू हैं और काले मात्र आप के चरण हैं।

इतनी कथा सुनाय श्री पञ्च जी महाराज बोले कि हे जेण्टिलमैन गण जिस समय भगवान् कलिराज ने अपने इस बिराट रूप को दिखलाया तो वह भक्त देख बड़ा ही चकित हुआ यहां तक उसमें सामर्थ्य न रही कि वह कलि भगवान् का अनन्य भक्त कलि जी की स्तुति तो करता। वह रूप देख कर हक्का बक्का सा रह गया और कहा बस महाराज! आप अपने इस रूप का लीला बिस्तार करिये। उस भक्त के मुख से यह बात निकलतेही कलिभगवान् ने अपने उस रूप को समेटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और एक मामूली रूप धारण कर बोले कि हम तुम से अति प्रसन्न हैं जब तब हम तुम्हें अपना रूप दिखलाया करेंगे और अब से हम तुमको समस्त परोक्ष ज्ञान की गठरी सौंपे देते हैं जिससे तुमको अतीन्द्रियज्ञान की कमी न रहेगी यह कह कलि महाराज अन्तर्ध्यान हो गये–

तदनन्तर पंच महाराज की कथा के समाप्त होते ही चारो तरफ से हुटहुट हुर्रे के शब्द से वह गिर्जा घर गूंज उठा और सब लोग जिससे जो कुछ बना अपनी २ ज़बानी जमा खर्च पतलून के पाकेट से निकाल निकाल चढ़ाने लगे-इसके बाद एक सच्चे देश भक्त जो मारवाड़ी के शकल का था आया और बड़ी भक्ति से हाथ जोड़ एक गठरी चढ़ा कर बोला "मोंकू तो और कछू देवै की सामर्थि नहीं है तौ पर भी स्वदेशी और वायकाट की या गठरी चढ़ाये देता हौं। महाराज याके मारे मेरो नाक में दम आय लगो है सो आप विद्वान हैं ऐसा करिये जामे या सड़ की सूरत न देखवे को मिले न नाम ही लेना पड़े" इसके बाद सब जहां के तहां तितर बितर हो गये वन्दा भी खुश नसीब वहां से अपना हिस्सा ले रवाना हुआ और गठरी का बोझ लाकर घर में पटक ही तो दिया। वस मेरे सब कच्चे बच्चे उस गठरी से लिपट गये और सब चीज़ों को छोड़ स्वदेशी और बाय कट लगे ले ले भागने। यहां तक की दूसरों के लिये कुछ भी न छोड़ा। पाठक! इस प्रान्त में लोग जो इस भद्दी चीज का नाम नहीं लेते सो यही कारण है कि इस प्रान्त में यह दूसरों के हिस्से में पड़ी ही नहीं। यह वृत्तान्त किसी पत्र में देना ही चाहिये सो दे दिया गया। आप लोग भी इसे पढ़ कुछ लाभ ही उठा लेंगे। महादेव भट्ट।

## लोकोक्ति

पं०-सिद्धेश्वर लिखित इसमें कहावतों का संग्रह किया गया है जो कहावतें हमारी प्रति दिन की बोल चाल मे आती हैं-पुस्तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बड़े काम की है संग्रह करने योग्य है मिलने का पता वी एम एण्ड-सन् नील कण्ठ बनारस

## कविरत्नाकर

कार्त्तिक प्रसाद खत्री लिखित संस्कृत के चुने ऐसे श्लोकों का संग्रह जिनका एक टुकड़ा या आधा बहुधा हमारी बोल चाल में कहा जाता है संग्रह बड़ा उत्तम है मूल्य ।) पता वीएम ऐण्ड सन नील कण्ठ—
बनारस

## महाकवि अमर चन्द्र सूरि

ये कवि सार्वभौम, कबिराज अमर सिंह के शिष्य हैं. । काव्य कल्पलता, छन्दो रत्नावली, मुक्तावली, बाल भारत आदि ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं। इनकी कविता बड़ी सरस और सालङ्कार है। बाल भारत काशी विद्या सुधानिधि और काव्य माला में छप चुका है । सम्पादक काव्य माला ने उक्त कबि का समय १३वीं शताब्दीं में निश्चित किया है। यह प्रसिद्ध है कि "दण्डिननः पदलालित्यम्" पर अमर चन्द्र की पदावली का लालित्य, किसी कबि से कम नहीं है। लिखा भी है। लालित्यम मरस्येह श्रीहर्षस्येह वक्रिमा । नयचन्द्रकवेः काव्येदृष्टं लोकोत्तरं द्वयम्। जैसे रघुवंशादि काव्य सटीक मिलते हैं, वैसे बाल भारत के ऊपर कोई टीका वा टिप्पणी उपलब्ध नहीं होती। काव्य माला के सम्पादकादिकों ने भी संक्षिप्त और बिषम स्थलों में विस्तृत टिप्पणी देने का कष्ट नही उठाया । यदि उन्होंने इसे रघुरपि काव्यं तदपि च पाठयम् की तरह समझा है तो भूल की है। यदि मल्लिनाथ समझते कि 'रघुवंश' सरल है उसकी टीका की आवश्यकता नहीं' तो उनकी स्वच्छ टीका का दर्शन कैसे होता । किसी किसी इसके श्लोक को अच्छे पण्डित को भी सावधान होकर लगाना पड़ता है-उक्त कविकी रस भरी कविता का भारतचम्पू निदर्शन है- भीमसेन शर्म्मा गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri





# स्काट्स इमलशन

यह सब महीने और सब ऋतु में खाने लायक है; भोजन के सदृश पोषक और दवा की दवा—

Always get the Emulsion with this mark—the Fishman—the mark of the "Scott" process.

यह निर्बलों को बल देता है और पतले दुबले आदमी के शरीर में मांस पैदा कर मज़बूत और दृढ़ांग करता है। अंग प्र- जो ढीले हो गये हैं उनमें ताकत और [illegible] लाता है। इसके सेवन से हड्डियां मज़बूत होती हैं और देह के भीतर पट्ठों में मज़बूती लाता है॥

यह रोगी दूधमुहे बच्चे को चंगा कर देता है और कमज़ोर बालकों को सहज़ोर। गर्भिणी और जिस के गोद में बालक है दोनो के लिये यह विशेष उपकारी है। इसलिये कि यह दूधमुहे बालक और मा जिसका दूध बच्चा पीता है दोनो को तनदुरुस्त रखता है॥

खांसी, ज़ुकाम, कफ, फेफड़े और गले की बिमारी, मन्दाग्नि और क्षीणता दूर करने वाली दवाइयों में इसके समान दूसरी दवा नहीं है और सदा गृहस्थी में रखने लायक है॥

लगातार सेवन से शरीर पुष्ट रह निश्चय बहुत तरह के रोगों से बचा रहता है। बालक से बूढ़े तक सब के लिये हित है। इससे नुकसान किसी तरह पर नहीं है। बड़े २ डाक्टरों ने इसकी तारीफ़ की है। किसी तरह की बीमारी यह पास नहीं फटकने देता। आप अपने डाक्टर से पूछ देखिये। इसके ऊपर एक मनुष्य का चित्र है जो पीठ पर मछली लादे है और वह तुम्हें ज़रूर फाइदा पहुंचावेगा। यह हाथ से छू कर नहीं बनाया गया सब दवाखानों में मिलता है॥

## स्काट ऐन्ड ब्रौन लिमिटेड

मेन्युफेक्चरिङ्ग किमिस्ट—लण्डन



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REGISTERED No. A—308.

# हिन्दी प्रदीप

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

फरवरी १९०७

मासिक पत्र

जि० २९ सं० २

सम्पादक और प्रकाशक पंडित बालकृष्ण भट्ट प्रयाग

## विषय सूची


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| भारत का दिवाला ... ... ... | १ |
| भारत में असन्तोष ... ... ... | ५ |
| ग्राम में सन्ध्या ... ... ... ... | ६ |
| गुण दोष निरूपण ... ... ... | ९ |
| प्रतिभा और पवित्रता ... ... ... | १२ |
| अमर कंटक ... ... ... | १४ |
| अमीर साहब हमें क्या सिखा चले ... | १६ |
| पांच ... ... ... ... | १७ |
| बायकाट ... ... ... ... | १९ |
| ईश्वर प्रति ... ... ... ... | २० |
| लेक्चरों की भरमार ... ... ... | २२ |
| अभ्युदय ... ... ... | २४ |


सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम (॥≡)
समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज २)

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

—:००:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दीप्रदीप

जि० २९ } प्रयाग { फरवरी
सं० २ } { सन् १९०७ ई०

## भारत का दिवाला

हमारे सेठ साहूकारों में दिवालियों का क्रम है कि टाट उलट दिवाला निकाल इतनी पूंजी पास रख लेते हैं कि सेठ जी जन्म पर्यन्त नित्य मलाई चखते तोंद पर हाथ फेरते बैठे रहते हैं-देने पावने से कुछ प्रयोजन न रख मुक्तजन समान लेन देन की अनेक झंझट रूप भव जाल से छुटकारा पा जाते हैं-अङ्गरेज़ी शासन की बड़ी मेशीन के द्वारा इण्डिया-गवर्नमेंण्ट के नाम से कई अरब का कर्ज़दार यह भारत मामूली दिवाल-दारियों के समान झंझटों से मुक्त नहीं है बरन् उत्तमर्ण की भांत बाहर के लोग इसे अपना "अधमर्ण" कर्ज़दार बनाये सबी इसकी मास नोचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लेते हैं दिवालदारिये के दिवाले की रकम जहां से जो पाता है खीचे लेता है बल्कि यों कहें कि भूमण्डल में कौन सा ऐसा देश है जो भारत के दिवाले से इस समय फाइदा नहीं उठा रहा है-वरन काटछाट कर चपत मारते हुये सबी इसे लूट रहे हैं-कोई समय था कि बाहर के सौदागर यहां आय चीजें यहां की ले जाते थे और लाभ उठाते थे, प्रति वर्ष विदेश का असंख्य धन यहीं रह जाता था और यहां का अटूट घन चुकाये नहीं चुकता था—Steam और Electricity का आविष्कार तब तक नहीं हुआ था-भाफ और बिजली की शक्तियों का गुण किसी को मालूम नहीं हुआ था-केवल हाथ की बनी कारीगरी की चाह लोगों में फैली हुई थी—उस समय यहां के उत्तमोत्तम शाल रेशमी वस्त्र और महीन से महीन कपड़े पृथ्वी भर का धन खीचे लेते थे-यहां की unadulterated खालिस पैदावार संसार भर मे फैली हुई थी-भाफ और बिजली की ताकत भरपूर काम में लाई जाती तौभी हमारी ऐसी बड़ी हानि न थी जो शुद्ध पैदावार से चीजें तैयार की जातीं—विदेश की बनी चीज़ों में ऐसी ही कोई रहती है जिनमें दूसरी चीज़ों का मेल न किया जाय और ऐसी ऐसी घृणित अपवित्र वस्तु चर्बी लहू मांस आदि का मेल किया जाता है जिनके छूने और नाम लेने से ओकलाई आती है घिन पैदा होती है तो उन्हें बर्तने की कौन कहे-पर सब ओर से कसे हुये इस दिवालिये भारत को सस्ता और चमक दमक देख विदेशी वस्तुओं को लेना ही पड़ता है-धन रहा नहीं प्रति दिन क्षीण होता जाता है जीवनोपयोगी पदार्थों का उपयोग करना ही पड़ता है तब हाथ की बनी मंहगी भद्दी और खुरखुरी चीज़ों को ऐसे ही कोई कामसे ला सक्ते हैं जिन्हे देश की तरक्की का खब्त या Mania हो गया है सर्व साधारण निर्द्धन प्रजा उसे काम मे नहीं ला सक्ती-पहनने ओढ़ने तथा ज़ेबाइशों की चीज़ों को छोड़ देते हैं किन्तु खाद्य पदार्थ जिनका रस खिच शरीर का हाड़ मास और रुधिर बनता है जैसा चीनी नोन घी इत्यादि जब अपवित्र हुये तो उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



क्या परिणाम होगा यही कि शरीर में अनेक रोग पैदा हों; लोग अल्पायु हुआ करैं; बुद्धि तामसी हो कर भले काम की ओर झुकावट न रहे; आलस्य निद्रा क्रोध द्रोह इत्यादि बढ़ै-यह इसी का परिणाम है कि इस समय बहुत लोग देश के उद्धार का यत्न कर रहे हैं किन्तु उनका आहार बिहार तामसी हो जाने से कृत कार्य नहीं होते-कोई न कोई ऐसा अड़चन पड़ जाता है कि आपस में सबों का सह मत नहीं होता-अस्तु और सब छोड़ हम पहले चीनी को लेते हैं-सन् १८३६ तक प्रति बर्ष दो करोड़ की चीनी यहां से और और देशों में जाया करती थी-इस समय साढ़े सात करोड़ की चीनी जो हड्डी और बैल के लहू से साफ की जाती है प्रति वर्ष बाहर से यहां आती है-तो दो करोड़ वह जो चीनी के क्रय-विक्रय से यहां आता था और साढ़े सात यह हर साल साढ़े नौ करोड़ रुपया केवल विदेशी चीनी के द्वारा यहां का निकल जाता है-बरैली इत्यादि शहरों में सब मिलाय कई सौ खण्डसाल यहां थी-सो अब सिर्फ १८ या १५ खण्डसाल बची हैं सो भी रोज़ रोज़ घटती जा रही है-गाज़ीपूर में बड़ी भारी चीनी की मण्डी थी सो अब बिल्कुल टूट गई-यही हाल रहा तो मालूम होता है कि कुछ दिनो में ऊख की खेती बिल्कुल बन्द हो जायगी-मोरिशस की धरती चीनी के लिये यहां से अधिक उर्वरा है यह कभी न माना जायगा-आदि काल से चीनी का उत्पत्ति स्थान यही देश है-संस्कृत शर्करा से शक्कर हुआ उससे अङ्गरेज़ी सुगर Sugur बना-इसाइयों की धर्म पुस्तक पुरानी इञ्जील में भी सर्करा का इशारा पाया जाता है जिस्में इस भांत लिखा है Sweet culamns probably a Species of Sugur yielding cane "स्वीट क्यलमस" जो शायद कोई किस्म शक्कर पैदा करने वाले सरकिण्डे की है-हिराडटस यूनान का एक प्रसिद्ध विद्वान् इसे Manufactured honey बनाया हुआ शहद अपने लेखों में लिख गया है-चीन वालों ने पहले पहल शर्करा क्या वस्तु है यहीं से जाना-प्लाइनी आदि कई विद्वानों की राय है कि शक्कर के पैदाइश की जगह हिन्दुस्तान ही है-अफसोस है जो चीनी के पैदाइश की जगह है वहां से कुछ दिनों मे इसकी खेती जाया चाहती है...एक चीनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ही पर क्या बिलाइत की बनी कौन सी वस्तु है जो unadalterated खालिस है जिसमें मेल नहीं रहता—

बिलाइत के लोग जो खालिस या विना मिलावट के चीजें तैयार करें तो इतनी सस्ती न बेच सकें—जैसा कपूर में चर्बी सी किसी चीज़ का मेल रहता है ऐसा ही केसर का भी हाल है; ऊनी कपड़े शुद्ध ऊन के बने बहुत कम होते हैं हमारे यहां के लोग विलाइती ऊनी कपड़ों को आचार की ढिलावट से "ऊर्णा वातेन शुध्यति" समझ ऊन वस्त्र को शुद्ध मान पूजा पाठ और खाने पीने के समय पहना करते हैं-पर निश्चय रहे ऐसे बहुत कम कपड़े हैं जो शुद्ध या खालिस रेशम या ऊन के बने हों और सस्ते भी हों-जब रूई के कपड़ों में बिलाइत के मिल चलाने वाले न जानिये क्या२ मिला देते हैं तब रेशम और ऊन को कौन कहे-यहां की मिलों में तैयार किये कपड़े जो ज़ियादह पायदार और टिकाऊ हुआ करते हैं उसका यही कारण है कि यहां वाले अभी तक अपना माल unadalterated विना किसी दूसरी चीज़ मिलाये तैयार करते हैं-इसी से देशी माल सस्ता नहीं पड़ता और वैसी चमक दमक भी नही रहती तब क्यों कोई उसे खरीदे-हिन्दुस्थान के इस दिवाले का असर यहां के वाणिज्य पर भरपूर पड़ रहा है—स्वच्छन्द व्यापार Free trade की पालिसी इस दिवाले पर घाव में नोन का छिरकना सदृश हो रही है—जहां से कच्चा बाना Raw metirials जाता है या जो देश कृषि प्रधान है ज़मीन की पैदावार जहां की समृद्धि का हेतु है वह देश कभी नहीं उन देशों के साथ होड़ Comfrete कर सकेगा जहां कच्चे बाने को साफकर चीजें तैयार की जाती हैं इसी से इस समय की विदेशी गवर्नमेंट "फ्रीट्रेड" कायम किये है-विदेशियों को हम स्वदेशियों पर सहानुभूति होती तो हम यह क्यों कहते कि भारत दिवालिया है और न कोई आशा है कि उनको हमारे साथ जैसा चाहिये वैसी हमदरदी कभी आवेगी-हम इस समय स्वदेशी और वायकाट के लिये सिर मार रहे हैं जब यह मालूम होगा कि ये लोग इसमें कुछ कृत कार्य्य हो चले हैं तो कोई ऐसा खोंचा विदेशी लोग मार देंगे कि हमारा सब प्रयत्न व्यर्थ हो जायगा और जैसे के तैसे बने रहेंगे-ऐसा ही इस दिवाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



का असर हमारे धर्म कर्म में भी पड़ा है जिसे फिर दिखावेंगे-

---

## भारत में असन्तोष-

भारत में असन्तोष का सबसे बड़ा कारण उसके लिये है जो राजनीति में कुछ भी ज्ञान रखता है-कौन इसे न मानेगा कि यहां अधिक जन समूह इस समय वेरोज़गार है उसमें भी अधिकतर वेरोज़गार और धनहीन मध्यम श्रेणी वाले हैं-और और देशों में कुलीगीरी का द्वार सब के लिये खुला है और आसान है यहां सो भी नहीं है-यहां ऊंचे दरजे के लोग कुलीगीरी करना कभी पसन्द न करेंगे चाहे भूखों मर जांयगे पर औरर देशों में ऐसा नहीं है-संसार में भूख से अधिक कष्टतर और कुछ नहीं है कहा भी है "कष्टात्कष्टतरं क्षुधा" भूखा भूख से पीडित हो व्याकुल रहता है उसके चित्त को शान्ति नही मिलती जब तक पेट नहीं भरता-हमारे शासन कर्त्ता इस बात को जानते हैं कि प्रजा में अशान्ति बहुत है और यह भी जानते हैं कि क्षुधा इस अशान्ति का मुख्य कारण है किन्तु जान बूझ कर भी इसे छिपाये हुये हैं और दूसरीर बात इसका कारण बतलाते हैं-जैसा कई अङ्गरेज़ी पत्र लोगों के आंख में धूल छोड़ते सिद्ध करते हैं कि प्रजा अङ्गरेज़ी राज्य के अमन चैन में सुख से दिन काट रही है यह थोड़े से पढ़े लिखे लोग हैं जो गुल शोर मचाये हुये हैं कि हम भूखों मर रहे हैं-तो जान लिया गया कि हिन्दुस्तान मे जो असन्तोष और अशान्ति है वह थोड़े से आन्दोलन कर्त्ताओं के आन्दोलन का नतीजा है-यदि वास्तव में प्रजा असन्तुष्ट रहती तो इतना ही आन्दोलन लोगों को उभाड़ने के लिये काफी था-

इसके उत्तर में हम यही कहेंगे कि यह हिन्दुस्तान है इङ्गलैंड नहीं है जहां लोग सदा स्वच्छन्द रहते रहते उभड़े हुये हैं थोड़ा भी आन्दोलन रूई की आग हो जाती है-यहां न जानिये कब से पराधीन और गुलामी में रहते लोगों का जोश बुझ गया है ऐसे शान्त स्वभाव के हैं कि जब तक इनकी नीद तोड़ने का तथा लगा तार इन्हें जगाने और उठाने का प्रयत्न न किया जायगा और चितावनी पर चितावनी इन्हें न दी जायगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तब तक न उभड़ैंगे-भूखो मर रहे हैं सही पर इतनी हिम्मत नहीं कि चिल्लाय के कहैं कि हम भूखों मरे जाते हैं-नही तो क्या गवर्नमेंएट नही जानती कि रेलीब्रदर्स सरीख इस्के दूत प्रतिवर्ष सब अन्न विलाइत ढोये लिये जाते हैं न कोई व्यवसाय बच रहा तब लोग भूखो मरने या आधा पेट खा दिन काटने के अलावा और क्या कर सकते हैं-तो निश्चय हुआ अशान्ति और असन्तोष मिटाने का एक मात्र उपाय इन्हें भोजन पहुचाना है-प्रजा की इस दरिद्र दशा मे अधिक कर लगाना और टैक्सों के बोझ से उन्हें दबाना निःसन्देह पीड़ा पहुचाना है-इस तरह की पीड़ा सब देशों में स्वतंत्रा का सूत्र पात करने वाली हुई है-मसल है "मरता क्या न करता" फ्रान्स देश के राज्य का उलट पलट Fnench revolution की बुनियाद टैक्स की जियादती और दरिद्रता ही थी...

दरिद्रता का बोझ कम करने के लिये हमे अपने देश की कारीगरी और शिल्प की उन्नति करना चाहिये गवर्नमेंएट हमारा कुछ नही कर सक्ती यदि हम अपने पैरों से खड़े होना आप सीख लें-इस्के लिये गवर्नमेंएट का मुख ताकना नितान्त भूल है और यह तभी हो सक्ता है जब यहां के एकर आदमी अपने ही देश की बनी हुई चीज़ काम में लाने का प्रण करलें-

---

## ग्राम में सन्ध्या

अस्ताचल को चले सूर्य भगवान बिलोको पश्चिम को।
किरणैं क्रमशः तिरछी होकर चलने लगीं छोड़ हम को ॥
कबूतरों की सुन्दर जोड़ी, यह देखो, उड़ती आती।
इधर उधर कुछ नहीं देखती, सीधे दक्षिण को जाती ॥ १ ॥
भले पधारे पारावत ! तुम आओ मेरे घर आओ।
थको न उड़तेर ज्यादा, सांझ हुई अब बिरमाओ ॥
खाने को दूंगा मैं तुमको बासमती का ताजा भात।
पीने को पानी पोखर का औ सोने को अपनी खाट ॥ २ ॥
मेरे घर की खाट बांस की गुंथी हुई मन भाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जिस पर सोते देर न होती आंख ज़ल्द लग जाती है ॥
घर भी सुथरा सुन्दर सीधा चौकोर नीड़ सा बना हुआ ।
जिसके ढरका एक द्वार में है निकास को लगा हुआ ॥ २ ॥
रबि का जहां प्रकाश दिवस में वृक्षों की घनता होकर ।
बड़ी कठिनता से आता है आंगन से घर के भीतर ॥
शान्त चित्त सब भांति यहां तुम क्षण में रात बिताओगे ।
ग्राम्य खगों की मधुर चहक से प्रात जगाये जाओगे ॥ ४ ॥
बात नहीं कुछ सुनते तुमतो एकदम उड़ते जाते हो ।
सच है, घर सबको प्यारा है इसी लिये घबड़ाते हो ॥
भानु देव अब धीरे धीरे अस्ताचल को नियराये ।
पृथ्वी से निज कर समेट कर नभ तरु गिरि ऊपर लाये ॥ ५ ॥
पारावत तो लोप हो गये देखो कौवे जाते हैं ।
उनसे थोड़ा ऊंचे उड़ते घबड़ाये हुये दिखाते हैं ॥
शायद बहुत दूरसे आते और दूरही जावेंगे ।
इसी लिये कहिं प्रिय पदार्थ पर वे न अब आंख जमावेंगे ॥ ६ ॥
मैना तोता भी ये आये बगुले पांत वांध उड़ते ।
उनके लम्बे पांव निहारो बहुत भले मालुम पड़ते ॥
जाओ जाओ तोता मैना बच्चे बाट परखते हैं ।
उनकी जलदी भूख मिटाओ जाओ सूरज छिपते हैं ॥ ७ ॥
देख २ वक पंक्ति नुकीली ग्राम बाल चिल्लाते हैं ।
आपस में बतलाते कहते "मीन खवैये जाते हैं" ॥
अरे कहो तो कहां रहे तुम कहां तुम्हारा बासा है ।
देते जाओ थोड़ा हमको पंख तुम्हारा खासा है ॥ ८
अब देखो यह सूर्य देव का तेजपुञ्ज सब लुप्त हुआ ।
उसे परिधिपट गिरिआंचल से भूभामिनि ने ढाप लिया ॥
पक्षी लगे बसेरा करने कुक्कुट घर में घुसना है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गौरैयों की जोड़ी प्रति घर छप्पर में जा छिपती है ।। ९ ।।
यह देखो गोधन भी लौटा गल घंटा का शब्द हुआ ।
सुखद नाद से वर्द्दराज के वन पर्वत प्रतिध्वनित हुआ ॥
निद्रा भङ्ग भई उल्लू की चमगीदड़ भी उठ डोला ।
निशा नई दुलहिन सी मानों अञ्चल से घूंघट खोला ।। १० ।।
मङ्गल तारा नज़र पड़ा यह देखो कैसा सुन्दर है ।
झिलमिल करता तेज बढ़ाता लाल रङ्ग मन हरता है ॥
निशा बधूटी के मस्तक का रोरी का सा विन्दा है ।
प्रकृति स्वामिनी ने या भेजा लालटेन पथ दर्शक है ॥ ११ ॥
एक एक करके तारागण दीख पड़ें नभ मंडल में ।
जैसे श्रमीजनों के श्रमफल क्रम २ से आते कर में ॥
इधर देखिये खेतियर जन भी लौटे घर अङ्ग धो धोकर ।
सुख प्रसन्न हथियार लिये सब अपने २ कंधे पर ।। १२ ॥
सन्ध्योपासन हेतु मिसर जी पुष्करणी को जाते हैं ।
बड़े भाग्य जो इस कुकाल में द्विज सन्ध्या कर पाते हैं ।।
पनिहारिन की पांत रुकी अब निर्जन हुईं ग्राम गलियां ।
अंधियारा बढ़ता जाता है खुलने लगीं कुमुद कलियां ॥ १३ ।।
ग्रामाधीश देव घर भीतर दीपक जाय जलाता है ।
कोई भार्या की सहायता में चूल्हा खुद सुलगाता है ।।
कोई काट रहा है ईंधन कोई बैल खोज करता ।
कोई झांझ मृदङ्ग बजाता प्रेम सहित हरि यश गाता ।। १४ ।।
परम शांत स्वच्छन्द कर्म की भूमि जहां की धरती है ।
पुरुषारथ के सुख आसन पर जहां प्रकृति पद धरती है ।।
वहां गोष्ठ में बैठ मवेशी सुख से जब पगुराते हैं ।
तब किसान मिलजुल आपस में पेट की पूजा करते हैं ।। १६ ।

अनन्तराम पाड़े—रायगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## गुणदोष निरूपण

इस बिषय में अपनी संमति प्रकाश करने के पहिले यह बतलाना होगा कि गुण क्या है ? और दोष क्या है ? और यह गुण दोष हर एक प्राकृतिक पदार्थ और हर एक प्रतिभाशाली पुरुषों के कामों में पाया जाता है--तो आवश्यक हुआ कि बिशेष उदाहरणों से व्यापक नियमों को बनावें और उन नियमों को प्राकृतिक पदार्थ तथा प्रतिभावान् पुरुषों के कार्यों में लगावें और उसके द्वारा गुण तथा दोष को स्थिर करें-गुणदोष निरूपण में यदि यह मान लिया जाय कि गुण का अभाव वही दोष है या दोष का अभाव ही गुण है जैसा देवदत्त सच नहीं बोलता तो सिद्ध हुआ कि झूठ बोलता है तो एक प्रकार गुण तथा दोष क्या है मालूम हो सक्ता है-पर इस वाक्य में कि आम खट्टा है तो यह नहीं सिद्ध होता कि यह आम मीठा ज़रूर है वरन् आम में मिठास का होना जो एक व्यापक या साधारण गुण है सो इस में नहीं है--कभी को ऐसा भी माना जाता है कि गुण का जो प्रतिपक्षी वही दोष है जैसा सच जो गुण है उसका प्रतिपक्षी झूठ दोष है--

अब इस गुण दोष निरूपण में उचित्त अनुचित का खयाल पहिली बात है जैसा हवशी जाति की कुरूपा कोइला सी काली स्त्री के रूप और सौन्दर्य के वर्णन में कोई कविता करे तो कहिये स्वर्गीया अप्सराओं की रूप माधुरी का वर्णन करना ही व्यर्थ है या नायिका भेद को साहित्य की सीमा के बाहर कर देना चाहिये--अब यहां पर यह निरूपण करना उचित जान पड़ता है किसमें क्या गुण दोष है--जैसा चित्रकारी में बैनहूं वैसी शकल का उतार लेना और चित्र में यथोचित सौन्दर्य का आना गुण है-धुंधलापन आदि उसके दोष हैं-रस परिपाक, स्फूर्ति, भाव व्यंजकता, अनुराग आदि काव्य के गुण हैं--रसाभास आदि अनेक दोष हैं--ऐसा ही हस्त लाघव आदि शिल्प के गुण हैं-माधुर्य सुस्वरता, ताल और लय का मिला रहना, आदि गान विद्या के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गुण हैं--व्याकरण और साहित्य के नियमों से हीन न हो, पढ़ते ही गंभीर भाव मन में पैठता जाय; जिस रस को उठावे अन्त तक उसको निवाहता रहे, प्रौढ़ता, सत्यासत्य विवेक, सप्रमाणता, इत्यादि लेख के गुण हैं--गाली गुफ्ता ओछापन आदि इसके दोष हैं--इस समय के बहुत से नये लेखकों में यह दोष अधिक पाया जाता है--हृदय ग्राहकता स्वमतस्थापन की योग्यता आदि वक्तृता के गुण हैं-इन्हें कला भी कहते हैं-गुण और दोष निकालने की शक्ति यद्यपि मनुष्य मात्र को दी गई है पर सामान्य जन का यह विवेचन प्रमाण Standard में न रक्खा जायगा अपिच जो जिस बात के रसिक अथवा सहृदय हैं उन्हीं का विवेचन प्रमाण में लिया जाता है--गुण दोष निरीक्षण एक ऐसा विषय है कि सब लोग अपनी२ योग्यता के अनुसार करते ही हैं किन्तु सामान्य जन का गुण दोष विवेचन बहुधा एक देशीय अपूर्ण और नियम विरुद्ध होता है-ऐसे लोग यदि किसी के गुण की सराहना करें तो उसे निन्दा मानना चाहिये और उनकी निन्दा को स्तुति-धवलगिरि की चोटी पर जैसा कोहिरा अन्धकार और धुंधलापन की पहुंच नहीं है वैसा ही इन सामान्य जनो की पहुंच गुण गण पूर्ण प्रतिभावान् पुरुषों के गुण तक नहीं हो सक्ती-वहां उन्हीं की पहुंच है जिन्हें शुद्ध स्फटिक के सौन्दर्य और प्रकाश का पूर्ण ज्ञान तथा अनुभव है और वहां ऐसे प्रतिभाशालियों की विवेचना मानों बाल दिनमणि की किरणें इन्द्र धनुष के सात रङ्गों से धवलगिरि को रंजित कर देने वाली होगी-

गुणदोष निरीक्षण में हमने प्रतिभा का कई ठौर प्रयोग किया है तो उचित हुआ कि अपने पाठकों को बतलावें कि प्रतिभा क्या है और प्रतिभावान् की क्या प्रकृति है-प्रतिभा एक विशेष बुद्धि या प्रवृत्ति है जो हमे स्वभावतः प्राप्त होती है--यह स्वाभाविक योग्यता या प्रवृत्ति जो बहुधा श्रेष्ठ मनुष्यों में पाई जाती है इसका पता पाश्चात्य नये विद्वानों में कहीं नहीं पाया जाता--पाश्चात्य वैज्ञानिक केवल इतना ही कह सक्ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हैं कि यह मनुष्य प्रतिभावान् है-क्यों है ? क्योंकि इसमें कुछ ऐसी असाधारण बात है जो सबों में नहीं होती-ऐसा मालूम होता है कि प्रतिभाशाली मनुष्य के मस्तिष्क की रचना कुछ ऐसी विशेष प्रकार की है जिसका असर उसके कामों में प्रगट होता है-इस पर जो यह उनसे पूछो कि उसके मस्तिष्क की रचना इस प्रकार की क्यों की गई तो वे जबाव देते हैं यह आनुवंशिक है या वंश परंपरा प्राप्त गुण है माता पिता के स्वभाव तथा गुण कर्म अनुरूप सन्तति में भी वेही गुण उतर आते हैं–किन्तु जब किसी प्रतिभाशाली की सन्तान मूर्ख हुई तब वे कहते हैं इसमें वे गुण प्रतिफलित नहीं हुये-क्यों नहीं हुये इसका उत्तर उनके यहां कुछ नहीं है–बस पाश्चत्य वैज्ञानिकों की दौड़ यहीं तक है–हमारे यहां के शास्त्रों में इसकी विशेष छानवीन है प्रतिभा की उत्त्पति पूर्व संस्कारों के कारण माना है अनेक जन्म के सुकृत का परिपाक प्रतिभा रूप में प्रगट हो उठता है...कविकुल तिलक कालिदास प्रतिभाशाली थे; शेक्सपियर में प्रतिभा थी; आधुनिक बक्ताओं में बर्क्स प्रतिभावान् थे; साम्प्रत चित्रकारों में रविवर्मा प्रतिभा वाले हुये...इन प्रतिभाशालियों के कार्य कविता हो बक्तृत्व शक्ति हो तथा और कोई बात हो जो सब भांत लासानी या अपनी बराबरी का दूसरा नहीं है सदा चिरस्थायी रहेंगे...तो सिद्ध हुआ कि प्रतिभा एक ऐसी परमोत्कर्ष बिधायनी शक्ति है जो मनुष्य के कामों में एक अद्भुत चमत्कार दिखलाती है और इस तरह के प्रतिभा वाले हर एक देश में हर एक जाति और हर एक समय होते आये हैं...जिस देश या जाति की तरक्की होना होता है वहां या उसमें बहुत से प्रतिभा वाले पैदा हो जाते हैं-भाषा के प्रसिद्ध कवि सूर तुलसी विहारी केशव आदि सब प्रतिभा वाले रहे...यह प्रतिभा कवियों में विशेष पाई जाती है वरन् बिना प्रतिभा के कबि हो होगा नहीं-प्रतिभावान् सौन्दर्य या किसी वर्णनीय विषय का निरीक्षण मात्र कर सन्तुष्ट नहीं हो जाता वरन् तत्सदृश सौन्दर्य या वस्तु विशेष पैदा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देता है और अपनी वर्णन शैली में उसे इस तरह दिखलाता है जिसे पढ़ लोग लोटपोट हो जाते हैं जैसा कहा है–

"किं कविस्तस्य काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः।
परस्प हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः" ॥

कवि अपनी प्रतिभा से वह बात जान लेत है और देख लेता है; जिसे सूर्य चन्द्रमा भी दिन में और रातमें घूमते हुये नहीं जान सक्के; जिसे योगी अपने योग वल से नहीं जान सक्के; कहां तक कहैं सर्वज्ञ सदा शिव जिसे नहीं जानते उसे कवि जान लेता है॥

जानाते यन्न चन्द्रार्कौ जानते यन्न योगिनः।
जानीते यन्न भर्गोऽपि तज्जानाति कविः स्वयम् ॥

प्रतिभाशाली कवि भी एक तरह सृष्टि कर्त्ता कहा जा सक्ता है, समग्र सृष्टि दो प्रकार की है एक नाम में अंगरेज़ी में जिसे अइडियल Idial कहते हैं दूसरी सृष्टि वह जिसका कोई रूप है जिसे हम प्रत्यक्ष देखते हैं; तब पहली अर्थात् "अइडियल" का निर्माण करने वाला कवि है–दूसरे का चतुर्मुख ब्रह्मा–

नामरूपात्मकं विश्वं दृश्यते यदिदं द्विधा।
तत्राद्यस्य कविर्वेधा द्वितीयस्य चतुर्मुखः ॥

भारत में आबाल वृद्ध बनिता प्रतिक्षण गुण ग्रामाभिराम महाराज श्री रामचन्द्र का नाम जो रटा करते हैं यह वाल्मीकि की प्रतिभा का फल है--ऐसा ही नीति तथा गीता का ज्ञान उपदेश करनेवाले महाराज कृष्ण चन्द्र तथा पाण्डवों का यश जो छायाहै वह कृष्ण द्वैपायन व्यास की प्रतिभा का महत्व है--जैसा एक कवि ने लिखा भी है ॥

"पारवश्यं वृथादास्यं पंचानामेकदारता।
पाण्डवानामभूत्कीर्त्यै पाराशर्य कवेर्गिरा ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



परवश हो चिरकाल तक रहे, व्यर्थ कौरवों के दास बने, पांच पुरुषों की एक स्त्री का होना; इन सब बातों में कोई ऐसी नहीं है जिसकी श्लाघा की जाय किन्तु पाराशर कवि व्यास की वाणी का यह परिणाम है जो पांडवों की सब बातें स्तुति पक्ष में ग्रहण की जाती हैं-कवि जिसे अपनी प्रतिभा का लक्ष्य या उद्देश्य कर ले वह काना हो तो कमल नेत्र वन जाय कदर्य कहो कल्प वृक्ष सा दानी कर दिया जाय कायर बाहु बल में कहो विक्रमादित्य वना दिया जाय ॥

"काणाः कमलपत्राक्षाः कदर्याः कल्पशाखिनः।
कातराविक्रमादित्याः कविदृक् गोचरंगताः ॥

यह न कहा जायगा कि प्रतिभा वाले सर्वथा निर्दोष हैं बहुत लोग उन्हें स्वेच्छा चारित्व तथा विक्षिप्त Eccentric होने का दोष लगाते हैं जैसा शेक्सपियर अलौकिक प्रतिभाशाली थे किन्तु यह नहीं कह सक्ते कि उनके नाटकों में दोष न थे-काल विपर्यास, दुःख और आनन्द पर्यवसान की खिचड़ी, आदि अनेक दोष हैं किन्तु वर्णन की शैली का सहज सौन्दर्य, अच्छे खयालों का प्रवल प्रवाह, इत्यादि ऐसे गुण हैं जिससे वह कबियों की उच्च तम श्रेणी में रक्खे गये-केवल कबिता ही में प्रतिभा नहीं देखी जाती बरन् हनिबाल नेपोलियन टोगो आदि बीर प्रकाण्ड युद्ध कौशल की प्रतिभा के अवतार हुये-जिन्हों ने युद्ध कौशल के नियमों का मन माना अतिक्रमण कर रक्खा है तौभी वीरत्व यश के यशोभागी हुये और यही उनकी प्रतिभा का प्रमाण है और जो प्रतिभा शाली हों उन्हीं को गुण दोष निरीक्षण में पूरा अधिकार है ॥

गणपति जानकी राम दुवे-

## प्रतिभा और पवित्रता

प्रतिभा क्या है सो ऊपर अच्छी तरह बतला दिया गया पर प्रतिभा है और पवित्रता अर्थात चरित्र नहीं है तो वह प्रतिभा एक प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लक्कड़ी सी है; चरित्र शून्य प्रतिभा वाला न तो आदर पाने लायक होगा न संसार का वह काम जिसमें उसको प्रतिभा प्राप्त हुई है भर पूर कर सकेगा-प्रतिभा के साथ पवित्रता वैसी ही है जैसा सोने में सुगन्ध है-प्रतिभावान् पवित्र चरित्र हो तो देव तुल्य पूजनीय होगा किन्तु प्रतिभावाले पवित्र चरित्र बहुत कम पाये जाते हैं प्रतिभा में चरित्र मानो गोट सी लग जाती है-प्रतिभा चरित्र सापेक्ष्य है और चरित्र प्रतिभा सापेक्ष्य नहीं-लोगों पर जैसा चरित्र का असर पड़ता है वैसा प्रतिभा का नहीं–विना प्रतिभा के चरित्रवान् पूजनीय हो जाता है पर प्रतिभा वाला बिना चरित्रके नहीं-इस लिये प्रतिभावान् को चरित्र पालन अत्यावश्यक है--कबियों को चरित्रवान् न होने का दोष लोग लगाते हैं पर यह निर्मूल सा मालूम होता है हम तो यह कहेंगे कि यदि उनमें चरित्र की त्रुटि होती तो कालिदास भवभूति माघ भारवि बाण प्रभृति का काव्य इतना सर्व मान्य न होता--यही बात फारसी के शादी आदि शायर और शेक्सपियर मिलटन आदि अङ्गरेज़ी के पोयट में भी देखी जाती है-प्रतिभा संपन्न रहकर चरित्र का भी दोष उनमें कोई नहीं सुना गया-बल्कि जयदेव गीत गोविन्द के कर्त्ता बड़े भगवद्भक्त और मिलटन बड़ा पक्का इसाई मत का था तो सिद्ध हुआ कि प्रतिभा और चरित्र दोनों बहुधा साथ २ चलते हैं--

## अमर कंटक

यह तीर्थस्थान रीवा राज्य में पेंडरा स्टेशन से प्रायः १५ मील पहाड़ के ऊपर समभू भाग में है--सरिद्वारा पुण्य नदी नर्मदा का निकास यहीं से हुआ है--यह स्थान मनोहर और तपो भूमि है--यहां नर्मदा का एक कुण्ड है चारों ओर छोटे वृक्षों का रमणीक सघन वन है इन वृक्षों में कोई कटीले वृक्ष नहीं हैं--कुण्ड के चहूं ओर श्री रामचन्द्र तथा महादेव जी का मन्दिर है एक मन्दिर नर्मदा जी की मूर्ति का भी यहां बना है--यहां से समीप ही गुलबकावली के सुहावने पेड़ों का समूह है--आगे चल कर कपिल धारा नाम का तीर्थ है यहां किसी समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कपिल मुनि तपस्या करते थे--प्रायः ४० हाथ ऊंचे से दो मोटी धारा नर्मदा की गिरती है--इन धाराओं का इतना वेग है कि पूर्ण धारा में स्नान करना असम्भव है--धारा प्रायः एक एक हाथ मोटी है--स्थान यह अति सुहावना है--यहां की मृत्तिका में धातु का संयोग जान पड़ता है--यह मिट्टी दो रङ्ग की है लाल और पीली--राम रज की यहां कई खदाने हैं जल में यहां के पावन शक्ति अधिक है पर्व के दिन बहुधा मनुष्यों की बड़ी भीर हो जाती है--गत अमावश्या के पर्व पर एक लाख के लगभग मनुष्यों की भीर हो गई थी--पंडा यहां का निपट मूर्ख और दुष्ट है--आमदनी उसको बहुत अच्छी है पर इस स्थान की मरम्मत तथा उन्नति में कुछ भी नहीं व्यय करता--मैंने यहां मेले में जो दूकाने देखीं उनमें विदेशी चीनी का प्रचार पाया--जाड़ा यहां बहुत अधिक पड़ता है मेले में कई मनुष्यों की मृत्यु जाड़े के कारण हो गई यह स्थान राज रीवां में है--महाराजा साहब से प्रार्थना है कि वे यहां का कुछ प्रबन्ध करें तो पंडे का अत्याचार कम हो जाय और जो आमदनी पंडे को होती है वह सब की सब उसे न दे स्थान की मरम्मत में लगाया जाय कुंये और तालाब इत्यादि बनवा दिये जांय जिस्में मेलों में यात्रियों को सुख मिले--विदेशी चीनी काम में न लाने का आन्दोलन यहां भी मेले में बहुत कुछ देखा गया--एक ब्रह्मचारी ने प्रण कर लिया है कि यहां जो साधु महात्मा आये उन्हें यह मालूम नहीं है कि यह हड्डी और लहू से साफ की जाती है--मैं उनको इसकी अपवित्रता प्रगट कर इसका प्रचार उनके बीच बन्द करूंगा--महाराज रीवां नरेश को इस तीर्थ की उन्नति का विशेष ध्यान होना चाहिये-श्रीमान् का सौभाग्य है जो ऐसे ऐसे उत्तम तीर्थ उनके राज्य में हैं इस लिये उनसे सविनय निवेदन है कि इस ओर ध्यान दें और इस तीर्थ की उन्नति तथा पंडे के अत्याचार से यात्रियों को मुक्त करें--अङ्गरेज़ी सलतनत के मेलों में जैसा पुलीस अत्याचार फैलाये रहती है सो बात यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



न देखने में आई--मेले में चोरी का भय कहीं न सुनने में आया--यह सब देख हमारे मन में आया कि अङ्गरेज़ी राज्य से हमारी हिन्दुस्तानी रियासत ही भली कि लोग कानून की बारीकी और प्रवन्ध की छिला वटों के अनेक क्लेश से तो सर्वथा मुक्त हैं—दूसरे यह कि रियासत की प्रजा जो यहां आई थीं प्रसन्न थीं अनेक तरह के कर और टैक्स के बोझ से हलके और छलछिद्र शून्य लोग जान पड़े—अङ्गरेज़ी राज्य की सभ्यता उनमें बिल्कुल न पाई गई—धन्य हैं महाराज रीवां जिनकी रियाया अपने राजा को असीसते चित्तसे राज भक्त हैं ॥

पं० ताराचन्द द्विवेदी बिलासपूर मध्यप्रदेश--

## अमीर साहब हमें क्या सिखा चले

यह कि सब लोगों का मन कैसे अपने मूठी में लेना होता है; प्रजा पर द्रोह क्या चीज़ है, समभाव अर्थात् अपने आश्रित चाहो जो हों सब को एक सा कैसे समझना होता है इत्यादि-हमारी गवर्नमेंट अमीर की अपेक्षा कितना गुना अधिक है गवर्नमेंट के मुकाबले अमीर साहब १६ आने में एक आना भी नहीं हैं पर शिक्षा देने में अमीर ब्रिटिश गवर्नमेंट के गुरू हो गये-अलीगढ़ महामेडन कालेज में६ हज़ार रुपया सालाना दान दे ज़ाहिर कर दिया कि हम से हिन्दुस्तान के आदमियों से कोई सरोकार नहीं तौभी हम को यहां के लोगों के साथ कितनी हमदरदी है--वही हमारी गवर्नमेंट है कि हिन्दुस्तान ही के बदौलत इङ्गलैण्ड की इतनी श्रीवृद्धि है जिस बाटिका के अमृत तुल्य फल फूल का स्वाद अङ्गरेज़ जाति के रगर में भीन गया है उस बाग के वृक्ष तथा छोटे छोटे पेड़ों के सींचने और उन्हें बढ़ाने में उसे कितना सङ्कोच रहता है-यहां वालों के उपकार की बातों में जब कुछ खर्च करना होता है तो मानों निज की गांठ से निकालना पड़ता हो "मालाकार इव प्रयोगनिपुणो राजा चिरं नन्दति" इस नीति का अनुकरण गवर्नमेंट को तभी तक पसन्द आता है जब तक शासक जाति का पूरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



फाइदा है जिसमें केवल शासितों का फाइदा है शासक का नहीं इस तरह की बातों का रास्ता भी सदा बरकाती है-अस्तु गोबध के सम्बन्ध में भी जो रास्ता अमीर दिखा चले उस मार्ग पर यदि गवर्नमेंट चलना पसन्द करे तो भारत में जो गो धन अत्यन्त क्षीण हो गया और होता जाता है वह बच रहे और उससे यहां वालों का कितना कल्याण हो-पर यह निरा प्रजा के फाइदे का है क्यों पसन्द आवेगा अस्तु-

## पांच

हिन्दीप्रदीप जिसमें पांच ही अक्षर हैं तथा और २ पत्रों में एक से चार तक की संख्या पर लोगों ने अपनी २ उक्ति युक्ति जमाया है यह देख पांच भौतिक पंच तत्व का बना मुझे भी ५ पर कुछ लिखने का शौक चर्राया। हम हिन्दू हैं इससे पहिले हिन्दू धर्म में ५ को टटोलना समुचित जान पड़ा। हमारे यहां साधारण गृहस्थ मात्र में बिष्णु शिव शक्ति सूर्य और गणपति पंचायतन पूजन विहित है और देवाधिदेव महादेव भी पञ्च वक्त्र माने गये हैं-शुद्धि के प्रकरण में पञ्च गव्य की बड़ी महिमा गाई गई है-षोड़शोपचार में बिना पञ्चामृत चढ़ाये पूजा ही खण्डित रहती है-पटल पद्धति कवच स्तवराज और सहस्त्रनाम प्रत्येक देवता के ये पञ्चाङ्ग माने गये हैं-शैवी मंत्रों में पञ्चाक्षरी सब के ऊपर है-तीर्थों में पञ्च कोश की यात्रा आवश्यक है। वैष्णवों में पांच रात्र एक संप्रदाय है जिसकी उत्पत्ति नारद पञ्चरात्र से है-चार वेद से सन्तुष्ट न हो व्यास मुनि ने पांचवां वेद इतिहास के नाम से एक लाख श्लोक महाभारत रच डाला। समग्र संसार को अपने बश में लानेवाला पञ्च बाण के वाण भी पांच ही हैं-गुसाईं तुलसीदास ने पांच ही रत्न को सार कहा है "साधु मिलन, अरु हरि भजन, दया, दान, उपकार" पण्डितों ने चतुराई का मूल भी पांच ही माना है-

देशाटनं, पण्डित मित्रताच, वाराङ्गणा, राजसभा प्रवेशः
अनेक, शास्त्राण्यवलोकनं, च चातुर्य मूलानि, भवन्ति पंच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हिन्दुस्तान में झगड़ा निबटाने का सहज उपाय भी ५ पञ्च रक्खा है-"पांच पञ्च मिल कीजे काज। हारे जीते नाहीं लाज॥" छात्र मंडली में पञ्च राशिक गणित सबी जानते हैं-होम करने में पण्डित लोग पञ्च मेवा और पञ्च पल्लव ज़रूर बतलाते हैं-भागवत के दशम स्कन्ध में रहस्य पञ्चाध्यायी की ५ अध्याय सब से प्रधान और सरस है-बन माला भी पांच ही की बनती है तुलसी, मन्दार, कुन्द, पारिजात और कमल--पंचाङ्ग धूप के भी ५ ही पदार्थ हैं चन्दन अगर कपूर केशर और गुग्गुल-तिथियों में ५ मी से समाप्त होती हैं-पञ्चमी सप्तमी अष्ठमी नवमी और दशमी ५ ही मी से हमाप्त होती हैं एकादशी द्वादशी त्रयोदशी चतुर्दशी पञ्चदषी-प्रत्येक वृक्ष के फल, फूल, जड़, पता और डाल को पञ्चाङ्ग वैद्य ने माना है-महाभारत के प्रधान योधा पाण्डव भी ५ ही थे और उनकी पटरानी द्रौपदी पांचाल राजा की कन्या पांचाली कहाई-कर्म और ज्ञान के भेद से इन्द्रियां भी पांच ही पांच हैं—पांचों अंगुलियां बराबर किसी की नहीं होती-बाल कुमार पौगण्ड युवा और वृद्ध मनुष्य के वय भी ५ ही हैं धनिष्टा से रेवती तक ५ नक्षत्र पञ्चक कहलाते हैं-पंच नखवाले ५ जीवों को मनु ने भक्ष्य लिखा है-"पञ्च पञ्च नखा भक्ष्याः" प्राण अपान समान व्यान उदान के भेद से प्राण वायु भी ५ ही हैं। सोना मोती हीरा लाल नीलम ये ५ पंच रत्न कहे जाते हैं। पशुराज सिंह भी पंचानन कहा जाता है। गोदावरी नदी के समीप श्री रामचन्द्र का निवास स्थान पंचवटी था। बाम मार्ग में पंच मकार ही के सेवन की महिमा है। हुमायूं अकबर जहांगीर शाहजहां औरंगज़ेब ५ ही मुगल बादशाहों में बड़े प्रसिद्ध हुये। एशिया यूरोप अफ्रिका आस्ट्रेलिया अमेरिका भूगोल के महा द्वीप भी यही ५ हैं। ऐसा ही महा सागर और पृथ्वी के कटिबन्ध भी पाच ही हैं। झेलम रावी चिनाब व्यासा सतलज ५ नदियां मिल कर पंजाब बनाती हैं। मुसलमानी सलतनत में सरदारों को पंज हज़ारी का खिताब दिया जाता था। हिन्दुस्तान में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



युनिवर्सिटी ५ ही हैं बंग बिभाग कर लफटिनेन्ट गवर्मेरी भी सरकार ने ५ कर दी। इस समय पोशाक का फेशन भी ५ ही है कोट पतलून मोज़ा हैट और नेकटाई। छड़ी घड़ी बूट चश्मा सिगरेट सभ्यता के अंग इस समय ५ ही हैं। व्याकरण में सन्धि का प्रकरण पंचसन्धि कहलाता है। वेदान्त में पंची करण मुख्य विषय है। अखबारों में पंच का लेख पढ़ने लायक और हास्य रस का पोषक होता है। बालकों को लाड़ प्यार की अवधि ५ ही बर्ष लिखा है "लाडयेत् पंच बर्षाणि" विद्यारंभ संस्कार पाचवे ही बर्ष में करना लिखा है। ३३ करोड़ देवताओं से सन्तुष्ट न हो बहुतेरे हिन्दू ५ पीर को पूजते हैं। १० ब्राह्मणों में ५ पंचगौड़ कहलाते हैं ५ पंचद्रविड़। घोड़ा पच कल्याणी अच्छा समझा जाता है। पण्डितों ने ५ जकार दुर्लभ कहा है॥

जननी जन्मभूमिश्च जान्हवी च जनार्दनः।
जाति मध्ये वसोबासः जकाराः पंच दुर्लभाः॥

ऐसा ही कड़ी शीत पड़ने पर ५ तकार का सेवन गुणदायक है

अतिबलशालिनि शीते नितरां सेब्यो तकार समुदायः।
ताम्बूलं तरुणबधू तैलं तूलं तनूनपाततरणिः॥

अब अन्त में श्री राम जानकी भरत लक्ष्मण और शत्रुहन इन ५ मूर्तियों को ध्यान में रख इस पचड़े को समाप्त करते हैं॥

हरिनारायण सिंह बी. ए.
शाहपुरा पट्टी शाहाबाद

——०——

## बायकाट

इस समय बिदेश की बनी बस्तु या बिदेशी पैदावार के बायकाट की बड़ी धूम है। हम कहते हैं उतने से काम न सरैगा बायकाट करने पर उद्यत हुये तो जी खोल बायकाट कर डालिये कसर क्यों रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जाय । समाज में पुराने खयालवालों को वायकाट कर दीजिये, तीर्थों के मूर्ख पण्डों को; लोभ के प्रत्यक्ष मूर्ति नाम मात्र के पण्डितों को; आलस्य और अकर्मण्यता की जननी वेदान्तियों की मुक्ति को; प्लेग के कराल क्रोप में बाल्य बिबाह को; ब्राह्मणों को आलसी और मूर्ख कर देनेवाली दक्षिणा को; हिन्दुस्तान का प्रधान मेवा बैर और फूट को; डाइन सी दिन भर खांव २ करनेवाली बुढ़ियाओं को; स्थानीय कर्मचारियों की हां में हां करनेवाले म्युनिसिपल कमिश्नर तथा समाज के कोढ़ रूप शहर के ऐसे रईसों को; दिखाने मात्र को धर्म धुरीण दम्भ के रूप भक्त जनों को; बिना गांठ का पैसा खोले सेत में पढ़नेवाले नादेहन्द पत्र के ग्राहकों को; इत्यादि सोचते जाइये निकलते आवेंगे जो आप के लिये वायकाट का ज़रिया हैं ॥

## ईश्वर प्रति

हे जगत्कारण ! हे सर्बोत्तम ! हे ज्ञान मूर्ति ! हे अचिन्त्यबल ! हे परम पुरुषपरात्पर परमात्मन् ! मैं तेरे दिब्य भव्य शान्त अचिन्त्य बैभव का प्रेम और भक्ति से ध्यान करता हूं । मेरी बुद्धि को सर्बदा शुभ कामों में लगा ॥

हे शाश्वत ! हे सर्वज्ञ ! हे आनन्द मूर्ति ! हे मंगल धाम ! हे दया मय प्रभु ! मैं नम्र भाव से सर्वदा तेरे शरण हूं । हमारे सर्व दुःखों का नाश कर । हम को अपना प्रिय भक्त बना ॥

हे बिश्वेश ! तू एक निर्मल सुख का अखंड आगार है । जो तुझ से दूर हैं उनको परमानन्द कैसे मिल सकता है ? और हे परम पूज्य ! तू पवित्रता मंगल न्याय ज्ञान और दया का आगार है इसलिये जो तुझे विस्मरण कर देते हैं उन में यह सब गुण किस तहर आसकते हैं ?

हे जगन्निवास ! तू अपने भक्तों का सदा ध्यान रखता है । और तेरे अनन्य भाव में आश्रय पाने से जो आनन्द है वह भक्तों के अतिरिक्त और किसी को नहीं मिल सकता ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हे जगदीश ! तेरी अगाध महिमा एक तू ही जानता है। तेरे अनन्त उत्कृष्ट गुणों के माहात्म्य का ध्यान में लाना भी मेरी बुद्धि के बाहर है। मैं तुझे कैसे जान सकता हूं। तेरे में अनन्य भाव और अनन्त प्रेम ही हमारी जानकारी का सर्वस्व है। तेरे ही ऊपर हमारा सब भार है। तेरी दया की सीमा नहीं ॥

हे देवाधिदेव ! तू अव्यक्त है अर्थात तू किस प्रकार का है यह जानना बहुतही कठिन है। तू अचिन्त्य है अर्थात् मन से तेरे को जान लेना अशक्य है। तू अनादि काल से सर्वदा विद्यमान सर्वतव्यापी और सर्व मूल है। तू परम दयालु है इसके अतिरिक्त हम को तेरे विषय में और कुछ भी ज्ञान नहीं ॥

हे पुण्य पुरुष ! ऐसा कौन है कि जिसको तेरे विषय में अत्यन्त आश्चर्य्य न होता हो ? सर्व विश्व तेरी स्तुति गाता है; तथापि तेरी महिमा पूर्णतया तू ही जानता है ॥

हे जगन्नाथ ! मैं दुर्बल और मूर्ख मनुष्य हूं परन्तु यदि तुझ में दृढ़ भाव धरूं तो तेरा माङ्गल्य तेरी शांति तेरी पवित्रता तेरा ज्ञान मुझे सहजही में प्राप्त हो सकता है। तेरा मैं कितना कृतज्ञ हूं। और नहीं जानता यह कृतज्ञता किस भांत प्रगट करूं। एक तेरा ध्यान सर्वदा करता रहूं इसके अतिरिक्त तेरे विषय में मुझे और कुछ सूझता ही नहीं ॥

हे अमित प्रभाव ! कहां तो तेरा अतर्क्य चातुर्य्य और सामर्थ्य और कहां मैं क्षुद्र ! चाहे जितने विनय Moralcaurage से मैं रहूं, परन्तु तेरे विस्मरण से मुझे ठिकाना नहीं। तुझे अप्रसन्न करने अथवा अपने दुष्कर्मों का फल भोगने का जब समय आता है तब मुझ को तेरी याद आती है। उस समय तेरा ध्यान करते हुये मुझे लज्जा भी नहीं आती। परन्तु तू धन्य है तेरी क्षमा और दया धन्य है। तू माता के समान मुझ पतित पर प्रेम करता है और मेरे तापों को दूर कर शांति की बर्षा करता है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हे तेजोमय आनन्द स्वरूप ! तू हमारे अन्तःकरण में ज्ञान ज्योति अखंड रूप से प्रज्वलित कर। दुर्व्यसन रूप मल के क्षालन करने के लिये मुझ को आत्मज्ञान के बिमल तीर्थ जल में स्नान करने की स्फूर्ति दे। अनित्य वस्तु के विषय में निर्लोभ सत्य और न्याय की प्रीति; नीति विषय में अनुराग और अमित शांति इत्यादि सद्गुण स्वरूप मधुर फलों का यथेच्छ सेवन करने की बुद्धि प्रदान कर। अहंकार महा राक्षस विवेक पद से रगड़ जाय। ज्ञानकी ज्योति अन्तःकरण दीपक में अखंड रूप से जलने के लिये सतत ब्रह्मज्ञान शांति पवित्रता विद्या भक्ति उद्योग परता इत्यादि गुणों का स्नेह (तैल) के समान उपयोग होवे। ज्ञान ज्योति से अज्ञान तम का समूल नाश हो ॥

हे कृपा सागर आज दिन अनेकों राष्ट्र जापान अमेरिका जर्मनी इङ्गलेण्ड आदि आनन्द और स्वतन्त्रता पूर्वक हैं। परन्तु जो आर्य भूमि भारत वर्ष किसी समय पृथ्वी भर में एक ही थी और जहां के पुरुष नर रूप देव थे; उसी आर्य भूमि को आज तू सर्वतोपरि दैन्यता में निमग्न कर रक्खा है। हे करुणा बरुणालय ! अब तू आर्यावर्त्त के समस्त स्त्री पुरुषों को आर्य शब्द के अर्थ को सार्थक करने की शक्ति दे। और अपने में उनका भाव दृढ़ करके उनमें पुण्य का इस प्रकार विकाश कर कि वे तेरी कृपा के शुभ फलों को प्राप्त हों और उनके अन्तरद्रोह और दैन्य का नाश हो जिस से वह "सुवर्ण युग" अथवा "कृतयुग" उनके नेत्रों के सम्मुख देखपड़ने लगे ॥

लक्ष्मीधर बाजपेयी

## लेक्चरों की भरमार

इन दिनों यहां प्रति दिन खूब लेक्चर हुआ किये। दो दिन में ३ लेक्चर बाबू विपिन चन्द्र पाल ने कलकत्ते से यहां आय बायकाट के सम्बन्ध में दिया जिस में उन्हों ने यह सिद्ध कर दिखाया कि बायकाट हमें क्यों करना चाहिये और बायकाट है क्या तथा बायकाट स्वराज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


स्थापन के लिये कितना आवश्यक है। एक हज़ार के ऊपकार स्कूल और कालिजों के लड़कों की भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। दफ़्तरों से लौटे हुये क्लर्क भी इस भीड़ में शरीक होते थे। पर नगर के प्रधान २ नेताओं में कोई भी इनके लेक्चर में नहीं देख पड़े। इससे मालूम होता है कि बिपिन बाबू का कथन सर्व संमत नहीं है-क्यों नहीं है इसका जुदे २ लोग जुदा २ कारण मानते हैं। कोई कहते हैं बायकाट का अभी समय नहीं है;कोई मानते हैं यह चलेगा नहीं और न इससे उतना देश का उपकार है जितना धैर्य और गांभीर्य भाव से हो सकेगा-इस उतावली और चिप्रकारिता से कुछ न होगा। कोई कहते हैं यह आन्दोलन उन्हीं का किया है जो किसी कारण कर्मचारियों के अन्याय और उनकी बिषम भाव की शासन प्रणाली से चिढ़ उठे हैं-जो हो पर ऐसे एक नेता का होना अत्यावश्यक है जो उन बातों का बीज बोता रहे जिस में स्वराज्य वृक्ष का अंकुर निकल कालान्तर पाय उस महा वृक्ष में राजकीय स्वच्छन्दता के स्वादिष्ट और मीठे फल फलैं। उपरान्त ३ दिन मिस्टर गोखलेने अपने सुमधुर और गंभीर कथन में विलाइत के नामी स्टेट्समेन और राज नीतिज्ञों से मिल और उन से बात चीत कर जो कुछ अनुभव किया था बयान किया। उन्हों ने कहा इगलैन्ड में भ षहुत लोग हैं जो हिन्दुस्तान का हित चाहते हैं। पर उन्हें यहां जो अन्याय देशी लोगों के साथ किया जाता है उसका ठीक २ पता नहीं मिलता इस से लाचार हैं। यहां से लौटे हुये सिविलियन सिवाय भलाई और अपनी कारगुज़ारी के यहां के लोगों की क्या शिकायत है और क्या उन्हे क्लेश है सो नहीं प्रगट करते देश की भलाई के लिये उन्होंने ३ बात का होना अति आवश्यक कहा एक यह कि लोग प्रण कर लें कि हम विदेशी बस्तु काम में न लावेंगे, दूसरे यह कि यहां से नौजवान लोग योरप या जापान आदि देशों में जाय तरह २ के शिल्प सीख यहां आय उनका प्रचार करें-पूरी तरक्की तब कहेंगे जब भांत २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


की वे सब कल भी यहां बनने लगें बिलायत का मुह इन कलों के लिये भी न जोहना पड़े। तीसरे यह कि जो रूपयेवाले लाखों का प्रोमेसरी नोट खरीदे रक्खे हैं व अपना रुपया इन कारखानों में लगावें। मिस्टर गोखले की हृदयंगम मधुर बक्तृता लोगों को बहुत रुची॥

---

## अभ्युदय

प्रति मंगलबार को यह पत्र यहां से प्रकाशित होने लगा है। इसके सहायक और इसमें लेख लिखनेवाले नगर के कई एक सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठित विद्वान् लोग हैं। पण्डित वर मालबीय मदन मोहन महोदय का इसकी उन्नति की ओर विशेष ध्यान है। यू० पी० में ऐसे एक पत्र की बहुत दिनों से ज़रूरत थी आशा है वह ज़रूरत इस पत्र से अब पूरी हो जायगी। मूल्य बार्षिक २॥)

---


## बालों को स्याह करने का सुगन्धित साबुन

इस साबुन के मलते ही सुफेद बाल मानिन्द असल के स्याह हो जाते हैं। एक टिकिया साबुन की मुद्दतों के लिये काफ़ी है। मूल्य प्रति टिकिया १) रुपैया।

इस ने दुनिया के ख़िज़ाबों (कल्फों) की क़दर घटा दी।

केवल पहले ही ३ टिकिया के १०० ग्राहकों को टाइमपीस गेरेंटी ३ साल मुफ्त मिलेगी।

मिलने का पताः-

मेनेजर हेअर डाई सोप कम्पनी लाहौर


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# स्काट्स इमलशन

यह सब महीने और सब ऋतु में खाने लायक है; भोजन के सदृश पोषक और दवा की दवा-

Always get the Emulsion with this mark—the Fishman—the mark of the "Scott" process.

यह निर्बलों को बल देता है और पतले दुबले आदमी के शरीर में मांस पैदा कर मज़बूत और दृढ़ांग करता है। अंग प्रत्यंग जो ढीले हो गये हैं उनमें ताकत और फुर्ती लाता है। इसके सेवन से हड्डियां मज़बूत होती हैं और देह के भीतर पट्ठों में मज़बूती लाता है॥

यह रोगी दूधमुहे बच्चे को चंगा कर देता है और कमज़ोर बालकों को सहज़ोर। गर्भिणी और जिस के गोद में बालक है दोनो के लिये यह विशेष उपकारी है। इसलिये कि यह दूधमुहे बालक और मा जिसका दूध बच्चा पीता है दोनो को तनदुरुस्त रखता है॥

खांसी, ज़ुकाम, कफ, फेफड़े और गले को बिमारी, मन्दाग्नि और क्षीणता दूर करने वाली दवाइयों में इसके समान दूसरी दवा नहीं है और सदा गृहस्थी में रखने लायक है॥

लगातार सेवन से शरीर पुष्ट रह निश्चय बहुत तरह के रोगों से बचा रहता है। बालक से बूढ़े तक सब के लिये हित है। इससे नुकसान किसी तरह पर नहीं है। बड़े २ डाक्टरों ने इसकी तारीफ की है। किसी तरह की बीमारी यह पास नहीं फटकने देता। आप अपने डाक्टर से पूछ देखिये। इसके ऊपर एक मनुष्य का चित्र है जो पीठ पर मछली लादे है और वह तुम्हें ज़रूर फाइदा पहुंचावेगी। यह हाथ से छू कर नहीं बनाया गया सब दवाखानों में मिलता है॥

**स्काट ऐन्ड ब्रौन लिमिटेड**

मेन्युफेक्चरिङ्ग किमिस्ट-लण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REGISTERED No. A—308.

# हिन्दी प्रदीप

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

मार्च १९०७

मासिक पत्र

जि० २९ सं० ३

सम्पादक और प्रकाशक पंडित बालकृष्ण भट्ट
प्रयाग

## विषय सूची

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| हम मुसलमानी राज में प्रसन्न थे कि अब हैं | १ |
| अभ्युदय और हिन्दीप्रदीप ... ... | ५ |
| तमाकू और मदिरा ... ... ... | ७ |
| पञ्चायत से फैसला ... ... ... | ८ |
| प्रजा का कर्तव्य ... ... ... | १० |
| अग्निकुल क्षत्रिय ... ... ... | ११ |
| भारत की भावी भलाई का उपाय ... | १९ |
| विशेष द्रष्टव्य ... ... ... | २१ |
| पुस्तक प्राप्ति ... ... ... | २२ |
| संपादक की टिप्पणी ... ... ... | २३ |

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥) समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज २)

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

—:o0:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दीप्रदीप

जि० २९ संं० ३ | प्रयाग | मार्च सन् १९०७ ई०

## हम मुसल्मानी बादशाहत में प्रसन्न थे कि अब हैं ?

हम पुरानी तवारीखों को पढ़ मुसल्मानी सलतनत को बुरा ठहराते हैं किन्तु मुसल्मानी साम्राज्य अधिकांश अब से अच्छा ही माना जायगा। चाहो हम से मज़हबी झगड़ा मुसल्मानों से जब तब उठा करता था कोई २ मुसल्मान बादशाह हम पर कुछ ज़ुल्म भी कर गये हैं परन्तु इस सर्वस्व अपहरण से जो आज कल हो रहा है वह समय हमारे लिये बहुत अच्छा था। अब की तरह तब हम भूखों नहीं मरते थे। उस समय हमारा धन बिदेशों में नहीं ढोया चला जाता था। न अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



की तरह काल और प्लेग तब हमें निरन्तर सताये रहते थे। मरी और प्लेग तभी होते हैं जब आदमी पेट की दुःसह आंच से झुलसने लगते हैं। जापान अमरिका तथा योरप के देशों में प्लेग क्यों नहीं होता? इसलिये कि वहां लोग धनी हैं कदन्न खाकर नहीं रहते उनके दिन चैन से कटते हैं। पृथ्वी वही, नदी वही, पहाड़ वही, पानी भी समय से बरसता है, ऋतुओं के परिवर्तन में कोई अन्तर नहीं पड़ा, तब क्या कारण है कि अकाल देश में निरन्तर छाया रहता है। हमें तो कोई दूसरा कारण नहीं मालूम होता सिर्फ यही कि जितना अन्न यहां पैदा होता है सब सात समुद्र पार ढो जाता है। मान लो बाज़ार में १०००० मन चावल है और उसकी कीमत १००००) रुपया मिल सक्ती है अर्थात् १) रुपये का एक मन चावल। यदि ५००० मन चावल विदेश को चला जाय तो एक मन २) का बिकेगा और एक रुपये की कीमत ॥) हो जायगी। ठीक वही हालत यहां हो रही है। यहां की पैदावार का अधिकांश हर साल Home charge में बिलायत ढो जाता है तब कहिये हम लोग भूखों क्यों न मरैं। बहुधा लोग कहा करते हैं अन्न यहां से जाता है तो उसके बदले रुपया आता है; कुछ भी हो धन बिलायत चला जाता है बला से शान्ति रक्षा हमें कैसी है। हिन्दुस्तानी रियासतों में जैसी बदइन्तिज़ामी फैली रहती है उसके मुकाबिले अंगरेज़ी शासन का सुप्रबन्ध एक बड़ी बरकत मालूम होती है। मुल्क हर एक बातों में रोज़ बरोज़ तरक्की करता जाता है तब और क्या चाहिये॥

हां ठीक है जिसे आप शान्ति और तरक्की कहते हैं वही हमारे लिये विष हो रही है; यह तरक्की निरा हाथी का दांत है। जितना ही देश में तरक्की होती जाती है उतनाही हमारा पोलापन बढ़ता जाता है और शान्ति जो कहो तो अब शान्त न हों तो करी क्या। सक्ते हैं। निपट निर्बल हो गये एक जून आधे पेट अधिकांश प्रजा खाकर सो रहती है शस्त्र छिन जाने से बधिया कर दिये गये हैं तब शान्ति न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ग्रहण करैं तो चले कैसे। प्रभावशाली कर्मचारियों की प्रसन्नता और कृपा के लोलुप रहते हैं, जी से चाहो जो हो ऊपर से परम राज भक्त बना चाहते हैं। इस नकटा जिया बुरे हवाल से तो चित्त में यही आता है कि बिपिन चन्द्र पाल बाबू जो कह रहे हैं वही ठीक है और अन्त में सब ओर से क्षीण दीन और निराश हो ऐसाही करना पड़ेगा। तितिक्षा धर्म की शिक्षा तो हमारे धर्म ग्रन्थों में बहुत अधिक हई है; सब सहते जांय क्लेश पर क्लेश उठाते रहैं और टोटल बायकाट कर गुजरैं। औसत आमदनी हम लोगों की फी आदमी एक पैसे से भी कम है इसी का नाम शान्ति है तो ऐसी शांति हमें न चाहिये। मुसल्मानी राज्य में कागज़ का रुपया नहीं चला था ईश्वर न करे ऐसा समय आवे बिदेशियों का राज्य यहां न रहा तो यह कई अरब से अधिक रुपयों का कोरा कागज़ही कागज़ फिर हाथ लगेगा। पहले ज़माने में पहले तो कहद् कम पड़ता था और पड़ा भी तो राजा प्रजा को जैसा चाहिये वैसी सहायता करता था। अब के समान न था कि भूमि कर एक पैसा नहीं कम किया जाता दूसरे बर्ष पैदावारी होने पर पिछले बर्ष का लग भग सब वसूल कर लिया जाता है। नौवाब शुजाउद्दौला के समय अवध में काल पड़ा था उसी समय लखनऊ में बड़ी २ इमारतैं बनवाई गईं। जिस में लोग भूखों न मरैं बड़े घराने के लोग रात को आ आ के उस में काम करते थे। उन से थोड़ीसी मेहनत ले उनके गुज़र के लायक उन्हें भरपूर दे दिया जाता था। राजा की सच्ची सहानुभूति इसे कहेंगे। बिदेशी और स्वदेशी राज्य में यही अन्तर है॥

शासन कर्ताओं को उचित था ऐसे ढंग से राज चलाते जैसा आरंभ में शुरू किया था कि लोगों के मन से यह बात हट जाती कि हमें कोई विदेशी राजा शासन कर रहा है। ब्रिटिश शासन तब अटल और स्थिर रहता पर लोभ तो बड़ी बुराइयों में है सोने की चिड़िया हाथ आ गई थी लगे उसे नोचने खसोटने, डयना और पंख तक उस चिड़िया का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


नोच खसोट रख दिया। यहां लौं कि वह निर्जीव सी हो गई। चिड़िया अब भीतर ही भीतर फड़ फड़ा रही है और हज़ार २ कोशिशें कर रही है कि कैसे इस लोभी के हाथ से निकल भागें पर बेबश और लाचार है कुछ करी नहीं सक्ती। अस्तु इस बात का पछतावा इतना नहीं है जितना इसका कि इतने पर भी वह चिड़िया अपने पकड़नेवाले के साथ चित्त से हम दरदी रक्खे और कहती जाय कि हम आप के कृतज्ञ हैं। आप ने हमारे नेत्र खोले और हमे शान्ति प्रदान किया। मुसल्मानों ने हमे निः शस्त्र नहीं कर दिया था जैता लोग यहीं बस हमारे सुख दुःख के सब तरह के साथी हो गये थे। तिजारत और दस्तकारी की तरक्की जैसी तब थी वैसी अब कहां है। ढाके का मलमल लखनऊ और बिहार की चिकन तरह २ की ज़रदोज़ी के कामों की तरक्की सब उसी समय की गई। नई सभ्यता ने तो एक तरह पर हमारी पहिली दस्तकारी को बिल्कुल तहस नहस कर डाला परिणाम में उन कारीगरियों के उठ जाने से हम अब भूखों मरने लगे तब हम क्या समझ वर्तमान् शासन को पहले से अच्छा कहें॥

जितना आप ने हमारा उपकार किया उससे सौगुना अधिक हम से भर लिया; हमारी बदौलत आप माला माल हो गये; इगलैंड की पृथ्वी सुबर्णमयी हो गई, अब और क्या चाहिये। अब अपना अटल सुस्थिर साम्राज्य यहां दृढ़ किया चाहते हो तो हम लोगों के साथ वैसीही हम दरदी से पेश आओ जैसी हम दरदी अपने देशी भाइयों के साथ रखते हो। हमारा हक्क हमे भी कुछ २ देते रहो। और हमारे बदौलत तुम्हारी श्री वृद्धि है तब हमें अपने से अधिक नहीं माना चाहते तो अपने बराबर का तो समझो। माना कि तुम्हारा कला कौशल और स्थिर अध्यवसाय परिश्रम तथा व्यवसाय का यह फल है पर उन सब प्रशंसनीय गुणों को काम में लाने के लिये स्थान और मौका भी तो चाहिये था सो ईश्वर की सानुकूलता से यहीं तुम्हें प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ज्ञा । म्याक्सम्यूलर सरीखे विद्वान् ऐसा तुम्हें बहुत दिन हुये चिता भी गये हैं पर इस समय श्री वृद्धि की अन्तिम सीमा को पहुंचे हुये उन्मत्त हो तुम काहे को चेतोगे हमे तो तुम असभ्य और अपने बराबर का मानते ही नहीं तो हमारा कहना कब तुम्हें रुच सक्ता है॥

## अभ्युदय और हिन्दी प्रदीप ।

अभ्युदय–मान्यवर बूढ़े बाबा प्रणाम ।

हि० प्र०—(चौंधरी आंख से टटोलते हुये) भाई तुम कौन हो ?

अ० – हम अभी कल के जन्मे निरे दूधमुहे बालक इस पुराने खुर्राट को क्या अपना परिचय दें अस्तु (प्रगट) हम हैं अभिनव जात अभ्युदय ।

हि० प्र० प्रत्येक छोटे बड़े नगरों से कहीं साप्ताहिक कहीं २ पाक्षिक कहीं से मासिक बल्कि दैनिक तक हर एक विषय के हर एक भाषा में पत्र निकल रहे हैं तब तुम्हे जन्म लेने का क्या काम था ।

अ०–सच है आप ने ठीक कहा ; पर देश सेवा ऐसा बड़ा काम है कि इसका ओर छोर नहीं है । "सर्वः सर्वं न जानाति" "तुण्डे २ सरस्वती" हम कैसे सुधरैं ; हमारी त्रुटियां कैसे दूर हों , हमारे आगे बढ़ने की क्या उपाय हो ; इन बातों में हम से अणु मात्र जन्म भूमि तथा अपने बन्धु जनों का कुछ उपकार हो सके तो हम क्यों न सफल जन्मा कहे जांय । नकि हमारे तो बहुत बड़े २ इरादे हैं जो अभ्युदय इस नाम ही से प्रगट है । इसी के अनुसार हमने अपना सिद्धान्त भी कर रक्खा है "उत्थातव्यम्" उठो "जागृतव्यम्" जागते रहो । "योक्तव्यं भूमि कर्मसु" जिस में अपनी बढ़ती हो वैसे कामों में भिड़ो । तब क्यों हमारा प्रगट होना सर्वथा व्यर्थ है॥

हि० प्र०—भाई तुम तो बड़े दृढ़ सङ्कल्प जान पड़ते हो; तुम ने जैसा ठान ठाना है वैसाही कर गुज़रे तो निश्चय तुम बड़े काम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और अपने नाम के अनुसार गुण वाले भी होगे। देश सेवा के तुम सच्चे अधिकारी बनो गे और सहयोगियों में अग्रसर होगे। तुम तो स्वयं सर्वज्ञ और विचारवान् प्रतीत होते हो तब तुम्हे हम घिसे हुये मस्तिष्क से क्या सिखापन दे सक्ते हैं। तौ भी इतना याद रहे कि उतावले न होना देखो अपनी निराली तान Tone में फरक न आने पावे। जिस बात को हाथ में लेना या जिस बोझ को उठाना उसे बिना परिणाम तक पहुंचाये बीच में न छोड़ देना। संसार में पुरुष रत्न ऐसे भी हैं कि यावत् विषय पर उनका चञ्चल मन दौड़ा करता है मानो संसार के अभ्युदय की जितनी बातें हैं सब का ठीका उन्होंही ने उठा लिया है जैसा कहावत हैं "एक भवानी कुल गांव अन्धा किसे २ आंख दें" अन्त को एकही ओर चित्त की दृढ़ता न रहने से उनके कोई काम यथावत् सिजिल नहीं उतरते परिणाम में उन के पुरुष रत्न होने में फीकापन आ जाता है। एक हमारी इस बात को अवश्य गांठ बांध रक्खो वह यह कि छिछोरों के मुह न लगना "हाथी चला जाता है कुत्ते भूका ही करते हैं" ऐसों से भिड़ना अपना बड़प्पन गवाना है। कोई कैसाही प्रलोभन आ उपस्थित हो अपने निराले अटल सिद्धान्त से न टसकना। दूसरे यह कि खुशामदी टट्टू मत बन बैठना। कितनों को भ्रम हो गया है कि तुम खुशामदी होगे। अस्तु यह तो तुम्हारे बर्ताव से प्रगट होगा कि आगे चल तुम कैसे होते हो। यह मालूम है कि नरम और गरम इन दो दलों में तुम पहलेवाले होना पसन्द करते हो इस से तुम्हारा तो कुछ और ही मतलब है पर जो तुम्हारे आभ्यन्तरिक भावों से और कार्य प्रणाली की स्थिरा शैली से अनभिज्ञ हैं वे तुम्हे प्रतिष्ठा और उच्च पद के लोलुप समझने लगे हैं :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## स्थिरा शैली गुणवतां खलबुद्धया नवाध्यते ।
## रत्नदीपस्य हि शिखा वात्ययापि न शाम्यति ॥

तुम अच्छे समय से प्रगट हुये हमारी टिमटिमाती ज्योति अब दिन२ शिथिल पड़ती जाती है। हे सुधीन्द्र इस समय की प्रचलित पालसी के अब नये बिधाता तुम्ही हुये इसलिये समस्त कार्य भार अब तुम पर छोड़ "त्वय्याधाय सुधीन्द्र भार मखिलं निद्राति स्वस्थो विधिः" खास कर यू० पी० की राजधानी में तुम ऐसे सर्व संमत का प्रगट होना अत्यावश्यक था ॥

## तम्बाकू और मदिरा ।

मैं हूं श्री कलि का चपरासी, नाम तमाखू मेरा है ।
फोकट सब को मज़ा चखाती, घर घर मेरा डेरा है ॥
वह है सत्यानाशी भाई, जो माखुर नहिं पीता है ।
बीड़ी चोंगी हुक्का चीलम, सिग्रेट बिन जो जीता है ॥
गांजा चरस मदक औ चंडू, फर्स्ट ग्रेड है जानों आप ।
पर अब वढ़ती चली भगवती, मदिरा धोती मानस पाप ॥
मदिरा मानो मेम साहबा, उसे नहीं जो करता प्यार ।
है कम अकल गंवार कुढंगा, उसका दूं मैं मान उतार ॥
दारू योग भोग की जड़ है, दारू रोग बिनाशन हार ।
दारू दूर भगावै चिन्ता, लावै मस्ती और बहार ॥
नई सभ्यता के हम दोनों, पति पत्नी हैं सिरजन हार ।
जो दोनों को नित प्रति सेवें, वे जल्दी पाते उद्धार ॥
सेवा का उलटा फल मेरी, तौ भी सेवक लाख हजार ।
दुबले पतले मोटे ताज़े, धनी गुनी सब उमेदवार ॥
जिनके टेबिल पर नहिं सोहे, सिग्रेट बण्डल बोतल लाल ।
वे हैं महा असभ्य जंगली, नई सभ्यता उनका काल ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भाग भाग वे कहां जांयगे, अन्त आंयगे मेरे पास।
बाप नहीं तो बेटा माई, नाती पंती होंगे दास ॥
अन्त सभ्यता की डोरी से, बांध उन्हे हम लेवैंगे।
तब ह्विसकी सिग्रेट पी पी वे, थैन्क्स हमें नित देवेंगे ॥
इस प्रकार कलिकाल बीच हम, राज अनन्त जमावैंगे।
जहां सवारी जाय हमारी, मान वहां ही पावैंगे ॥
हम चाकर श्री कलि राजा के, जानत हम को सकल जहान।
नहीं मानते हैं जो हमको, उनका करें शीघ्र अपमान ॥
इससे यारो हमें न छोड़ो मोड़ो मुह नहिं घालो दाम।
जो रखते हैं पास हमें नित, उनके बिगड़ैं एक न काम ॥

पाण्डेय लोचन प्रसाद

## पंचायत से फैसला

अदालतों में न जांय पंचायतों से मुकद्दमों को फैसल कर लिया करैं तो रुपयों की कितनी बचत हो, अमले तथा वकीलों के पंजे में जान बूझ अपने को छोड़ जो अनेक तरह की झंझट उठाते हैं उससे गला छुटा रहे। Litigation क़ानून की पेचीदगी और बारीकियों से जो अदालती काररवाइयों में हिन्दी की चिन्दी तथा जाल फरेब बढ़ गया है सो घटता जाय। सब के ऊपर यह कि आपस का विश्वास जो उठ गया है फिर जमने लगे। इन दिनों देश में सब ओर बायकाट की धूम है तब ऐसे समय जो इस महोपकारी बात पर ध्यान न दिया गया तो कब दिया जायगा। हम एक बार लिख चुके हैं कि कोई समय आवेगा जब लोग चेत उठेंगे और अदालत जाने से हिचकिचांयगे। बायकाट के आन्दोलन में अब इस ओर हम सब लोगों को मन देनाही चाहिये। समाचार पत्रों में यह पढ़ कि रियासत पटियाला में पंचायत के फैसलों से कई लाख की बचत भई हमें बड़ी प्रसन्नता हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस अदालत के कारण कितनी रियासतें आपस में लड़ कर नष्ट हो गईं और इतना कर्ज़ से लद गई हैं कि बरसों तक ऋण से मुक्त नहीं हुईं। हमारे हिन्दू धर्म में गया करने का क्रम इसी लिये था कि अब हमने पिता के तथा अपने निज के ऋण से उद्धार पाया उसी कर्ज़ को अब अदालत के ज़रिये हज़म करने की फ़िकिर की जाती है। सच के छिपाने को गवाह बनाये जाते हैं इत्यादि कितने दोष अदालत में जाने से पैदा हो गये हैं। हिन्दुस्तान का असंख्य धन अदालतों के द्वारा निकल गया और निकला जाता है। रुपया खीचने का अदालत भी एक बिशाल पम्प है आपस में समझ लेने तथा पञ्चायत से तै कर लेने में कितनी बचत हो सक्ती है। पहले तो जो हम शुद्ध सत्य का बर्ताव रक्खें मनसा बाचा कर्मणा झूठ से अलग रहें तो अपने कारोबार में कभी गांठ पड़ैगी नहीं जिसे हमें सुरझाना पड़ै कदाचित् संयोग बश कोई ऐसी बात आ पड़े तो पञ्चायत से उसे सुरझाने का प्रयत्न करें तो देश का कितना इसमें कल्याण है। आपस का बिश्वास बढ़ने का प्रयत्न देश की भलाई का मुख्य अङ्ग है। आपस का बिश्वास कानून तथा अदालत के कारण नित्य उठता जा रहा है। पंचायत उस बिश्वास के जमाने की बड़ी उत्तम भूमि है। जो बात पहले एक बार ज़बान से कह देने मात्र में पत्थर फोड़ रहती थी उस पर कितना २ स्टैम्प लगाने पर भी दृढ़ होने में कठिनाई रहती है तो सिद्ध हुआ कहां तक हम लोगों में आपस का बिश्वास ढीला पड़ गया है। एक ने ज़रा सी किसी बात में बेइमानी की कि वह दूसरे के लिये बड़ी से बड़ी बेइमानी करने का उदरहरण हो गया। कानून उस पर बन जाने से मानों उसकी जड़ पुष्ट पड़ गई इत्यादि बुराइयां पंचायत से अवश्यमेव घटैंगी इसमें सब तरह की भलाई ही है आशा है पाठक इसका बिचार करैंगे॥

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## प्रजा का कर्तव्य।

राजा के बनाये हुये नियमों का पालन और उसकी आज्ञा के बाहर न होना प्रजा का मुख्य कर्तव्य है। स्मृतिकारों ने इसी बात को दृढ़ करने के लिये राजा को देवांश लिख दिया है और माना है कि दसो दिक्पाल इन्द्र अग्नि वरुण आदि सब राजा में अपने एक २ अंश से बसते हैं। जैसा राजा प्रसन्न हो जब कुछ इनाम पदवी या खिलत दे यह इन्द्र का गुण उसमें है, अपराध करने वाले पर क्रोधित हो दण्ड दे यह यमराज का धर्म उसमें है। मृदुला चन्द्रमा का गुण है। अधिक कर के द्वारा प्रजा का धन खीचना सूर्य का स्वभाव या अंश उसमें है। जैसा सूर्यदेव अपनी खरतर किरणों से ग्रीष्म काल में जल खीच वर्षा में सौ गुना और हज़ार गुना बरस देते हैं ऐसा ही राजा काम पड़ने पर प्रजा के हित के लिये जितना कर उगाहता है उसका सौ गुना खरचता है। राजा पालन करने और बीर्य में बिष्णु के सदृश है; क्षमा में और धारण पोषण में पृथ्वी के समान है; कोस या खज़ाने को भरा रखने में वह कुबेर का गुण अपने में रखता है इत्यादि। सच्ची राजभक्ति क्या है और कैसे की जाती है इसका सूत्रपात सब के पहले यहां ही किया गया। जिसका निदर्शन आज तक मौजूद है कि यहां के लोग सब क्लेश उठा रहे हैं एक जून खाकर सो रहते हैं पर राजा के बिरुद्ध नहीं चला चाहते। सच पूछो तो तब से अब राजा की आज्ञा का परिपालन और उसमें भक्ति का भाव सौ गुना अधिक है इसलिये कि उस समय एक ही चक्रवर्ती राजा होता था तो एक की आज्ञा का पालन तथा उसमें अनन्य दृढ़ भक्ति कोई कठिन काम न था अब तो जितने गौरवर्ण सबी हमारे राजा हैं तो इतने कई लाख राजाओं की आज्ञा पालन में दृढ़ता और भक्ति सहज काम नहीं है। भारतीय प्रजा गऊ के रूप का अनुकरण कर रही है, तृण मुह में दबाये हुये अमृत तुल्य दुग्धदान से मुह मोड़ने वाली नहीं मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मानता जितना चाहो दुहते चले जाओ । गऊ जैसा आप रूखा सूखा जो कुछ मिला खाकर सन्तुष्ट रही पर तुम्हे अमृत ही पान करावेगी । सहिष्णुता धर्म के रूपधः प्रत्यक्ष मूर्ति ये पदाघात को भी महाप्रसाद माने हुये कापोती वृत्ति में प्रवीण हैं " सुख सों आह न भाखि हैं निज सुख करो हलाल" अपने थोड़े से आराम सुख और फाइदे के लिये इन्हें जैसे चाहो वैसे रक्खो सब सहते जांयगे राजा साक्षात् देवांश है तब उसमें दोष देखना या दोष निकालना महापाप है । तो हमे जो कुछ क्लेश मिलता है यह हमारी ही करनी का फल है । तब अपने को हम क्यों न सुधारैं या ऐसे हो जांय कि राजा के कृपा पत्र अपने को बनावें । ब्रिटिश साम्राज्य के सौभाग्य का यह परोमोत्कर्ष है कि उन्हें ऐसे लोग शासन करने को मिले हैं जो मानों राज भक्ति के नमूना हैं खेद है कि ऐसों की कदर उन्हें जैसी होनी चाहिये नहीं है । हम लोगों की राजभक्ति का क्रम स्वदेशी राजाओं के ऊपर जैसा होना चाहिये उस क्रम का है, स्वदेशी बिदेशी का भेद बिना प्रगट किये ही हम राजा को देव तुल्य मानने लगे हैं । प्रजा में स्वदेशी बिदेशी का कोई अन्तर न रहा और राजकीय कर्मचारी हमे अपने स्वदेशी से भिन्न मानते हैं यही कारण है कि प्रजा को उनकी राजभक्ति के अनुसार प्रति फल नहीं मिलता । उन्हें अचरज होता है कि क्यों राजा की ओर से इस तरह का बर्ताव हो रहा है ॥

## अग्नि कुल क्षत्रिय ।

भारत में बौद्ध धर्म के प्रचार होने के पहिले पुराणों में क्षत्रियों के केवल दो वंश देखने में आते हैं अर्थात् सूर्य और चन्द्र वंश । बुध स्वयं सूर्य वंश ही के राज कुमार थे । जब भारत में बौद्ध धर्म यहां तक बढ़ गया कि हिन्दुओं का पौराणिक धर्म प्रायः लुप्त होने लगा तो ब्राह्मणों ने अर्बुदगिरि पर जा यज्ञ किया और होमकुण्ड से चार बीर उत्पन्न हुये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जो भारतवर्ष से बौद्ध धर्म के निकालने तथा हिन्दू धर्म को अचल रखने के लिये बद्ध परिकर हुये। इन्हीं की रक्षा से भारत में हिन्दू धर्म फिर प्रबल हुआ। इन चारों बीरों के द्वारा जो वंश चला सो अग्निकुल क्षत्रियों के नाम से भारत में प्रसिद्ध हुआ। इन क्षत्रियों में इन्द्र के अंश से प्रमर, शिवजी के अंश से सोलङ्की वा चालुक्य, भगवान् विष्णु के अंश से चौहान और ब्रह्मा के अंश से परिहार प्रगट हुये थे। चन्द्र कवि ने अग्निकुल को क्षत्रियों में सब से श्रेष्ठ कहा है क्योंकि मूल में इनका जन्म स्त्रियों से द्वारा नहीं हुआ। रमेशचन्द्र दत्त और जेम्स टाड आदि न जाने कितने इतिहास लेखकों ने अनुमान किया है कि ब्राह्मणों ने नास्तिक बौद्ध आदि से सनातन हिन्दू धर्म बचाने ही के लिये इन चार जनों को हिन्दू धर्म की शिक्षा दे उन्हें अग्निकुल सम्भूत क्षत्रिय कहके बड़ाई दी होगी। जो हो पर ये चार बीर प्राचीन भारत निवासी थे अथवा शाकद्वीप आदि देशान्तर से भारत में आये यह प्रश्न बिचारने योग्य है। यूरोपीय इतिहास लेखक तो अग्निकुल के क्षत्रियों को शाकद्वीप वासी सीथियन राजपूत कहते ही हैं पर खेद का बिषय है भारतवर्षीय भी उन्हीं की रीति पर चल के भारत के प्राचीन इतिहास को भ्रान्ति की दृष्टि से देखते हैं। यह बात न तो सम्भव ही है और न युक्तिसङ्गत है कि यूरोपियनों का कल्पित मत सत्य वा श्रद्धेय हो सके पर अल्प प्रमाण पा के उन्हें ठीक समझना कदापि अच्छी बात नहीं है। शोक का बिषय एक और भी है कि हिन्दुओं के प्राचीन इतिहास ग्रन्थ या तो हैं नहीं वा हैं तो रूपकादि (अलङ्कारों) से ऐसे मिले झुले हैं कि सब किसी के बिश्वास योग्य ऐतिहासिक घटना उनमें से निकालना दुर्घट हो जाता है। पर अग्निकुल क्षत्रियों का शाकद्वीप वासी थियन होना असम्भव जान पड़ता है, यद्यपि यह मान लिया जावे कि ब्राह्मणों ने चार जनों को हिन्दूधर्म की दीक्षा देके अग्निकुल के क्षत्रिय बना लिया हो तथापि उनका सीथियन होना आवश्यक नहीं है। अ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ग्निकुंड से उत्पन्न न होके क्षत्रियों ही के गर्भ से उत्पन्न सही परंतु ये चार वीर सूर्य वा चन्द्रवंश ही के क्षत्रिय हों तो असम्भव नहीं है। इन में से प्रत्येक कुल की दशा देखने से निःसन्देह ये सब जन्म से क्षत्रिय ही हैं और भारत ही के निवासी हैं ऐसा बुद्धि में बैठता है। यह भी सम्भव नहीं जान पड़ता कि विदेशी सीथियन भारत के साथ इतनी सहानुभूति करें कि ब्राह्मणों के सनातन धर्म को अचल रखने के लिये बौद्धों को भारत से निकाल बाहर करें। क्या कभी संभव है कि बिदेशी अङ्गरेज़ लोग हिन्दुस्तान के साथ सहानुभूति कर हिन्दूधर्म के बिरोधी मुसलमानों वा ईसाइयों को हिन्दूस्तान से निकाल बाहर करें और ब्राह्मणों से प्रतिष्ठा पाके उनके मत को अचल रखने के लिये बद्ध परिकर हों? नहीं यह संभव नहीं है हिन्दूधर्म के साथ सहानुभूति करेंगे तो वे ही जिनका मूल क्षत्रियों के द्वार है चाहे महाराष्ट्र होके दक्षिण देश से प्रगट हों अथवा सिक्ख होके पश्चिम से जैसा पिछले दिनों के इतिहास से सिद्ध है। और २ बातों में चाहे अङ्गरेज़ भारत से सहानुभूति प्रगट करें पर मत के सम्बन्ध में विदेशी सहानुभूति नहीं कर सकते प्या प्रायः निश्चय सिद्धान्त किया जा सकता है। अतएव हिन्दूधर्म प्र-पुनरूत्थान बिदेशी सीथियनों के द्वारा न होके भारतवर्षीय क्षत्रियों ही के द्वारा हुआ होगा॥

अग्निकुल के क्षत्रिय यदि सूर्य और चन्द्रवंश ही की शाखा में हों तो फिर उनका सम्बन्ध इन बिशाल वंशों की किसी न किसी शाखा से मिलना चाहिये। बौद्धों के प्रबल होने तथा ब्राह्मण धर्म के घटने पर कदाचित् क्षत्रियों की दशा बिगड़ गई हो और उन लोगों ने ऊंच नीच जाति का बिचार न कर जिसी किसी वंश की सुन्दर कन्याओं से बिवाह करना प्रारंभ किया हो जिससे राजवंश के लोग शूद्र कहे जाने लगे हों पर ब्राह्मणों ने उनकी शूरता बीरता आदि देख अबुर्द गिरि पर ले जा बिशेष प्रतिष्ठा कर यज्ञ होम आदि उत्सव के पीछे उन्हें अग्निकुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



संभूत उच्च जाति के क्षत्रिय कहके हिन्दूधर्म संरक्षण के लिये उत्साह दिलाया हो। और ब्राह्मणों से प्रतिष्ठा तथा निज भुजबल से अधिकार प्राप्त कर ये क्षत्रिय गण इतने प्रभावशाली हुये हों कि इनके साम्हने प्राचीन और शुद्ध सूर्य और चन्द्रवंशी भी दब गये हों॥

अग्निकुल वालों में प्रथम नाम प्रमर देखने में आता है। बिचार करने तथा अनुसन्धान से बिदित होता है कि प्रमर वंश हो न हो सूर्य वंश की एक शाखा है। प्रमर वंश की कम से कम २५ शाखाएं हैं जिन में से एक शाखा का नाम मोरी प्रमर है। ये मोरी लोग मौर्य नृपति मगधराज चन्द्र गुप्त के वंशज हैं। मगधराज चन्द्र गुप्त यूनान के बादशाह सिकन्दर के प्रायः सम सामयिक हैं। इनके पिता महानन्द शिशुनाग वंशी राजा थे। पुराणों में शिशुनाग को शूद्र राजा कहा है और उसे पश्चिम देश के तक्षस्थान से आया हुआ बताया है। टाड ने तक्षस्थान को तुर्किस्तान माना और शिशुनाग को शेषनाग समझ उसका नामान्तर यक्षक बता के उसे तक्षक वंशी (नागवंशी) निर्णीत किया है। भारत में जो लोग बाहर से आये हैं उनके सदा म्लेच्छ यवन वा दस्यु, शक, पल्हव बर्बर आदि नाम प्राचीन ग्रन्थों में मिलते हैं पर वे शूद्र नहीं कहे जाते। शूद्र तो भारतवर्ष ही में रहने वाले नीच वा वर्ण सङ्कर जाति के लोग हैं। मुसलमान, पारसी वा ईसाई आदि को कोई शूद्र नहीं कहता पर अहिर गड़रिया आदि सब शूद्र समझे जाते हैं। निदान शिशुनाग को शूद्र कहा तो वह कभी भारतवर्ष से बाहर किसी देश का रहने वाला नहीं हो सकता। वह भारत ही की सीमा पर तक्ष शिला नाम पुरी का रहने वाला वहीं के राजवंश का कोई रहा होगा। तक्षशिला का राज्य भगवान् रामचन्द्र ने अपने प्रिय भ्राता भरत के पुत्र तक्षक को सौंप दिया था। निदान सूर्यवंशी तक्षक का राज वंश तक्षशिला में राज्य करता था। इस वंश से और तक्षक नाग वंश से क्या सम्बन्ध था यह बिचार और अधिक अनुसन्धान से कदाचित् बिदित हो सके। पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मगधराज बिजयी शिशुनाग भरत के वंश में उत्पन्न होने से सम्भवतः सूर्य वंशी है। इसके उत्पत्ति का इतिहास यदि मिले तो कदाचित् उसके शूद्र कहे जाने का भी कारण प्रकट और निर्णीत होवे। शिशुनाग वंशी महानन्द का पुत्र चन्द्रगुप्त मुरा नाम की किसी नीच कुल संभवा से उत्पन्न हुआ था इसी कारण उसका वंश मौर्य नाम से प्रसिद्ध हुआ इस वंश की एक शाखा दक्षिण की ओर गई और दक्षिण तथा मध्य भारत में उनका राज्य जहां तहां फैलता गया। इस वंश की राज धानियां भी समय २ पर प्रसिद्ध होती गईं जिनमें से महेश्वर (माहिष्मती) धारा, मांडू, उज्जयिनी, चन्द्रभागा, चित्तौर, चन्द्रावती, मऊ, मैदना, परमवती, अमरकोट, लोदुर्वा और पत्तन आदि सविशेष प्रसिद्ध हैं। उज्जयिनी के राजा महाराजा बिक्रमादित्य जिनके नाम से संवत् चलता है प्रमर वंश ही के हैं। धारा महाराज भोज (प्रमरवंशी) की राजधानी थी। चित्तौर में मौरी वंश की एक शाखा का राज्य सन् ७२ ई० तक था। सीसोदिया राजपूतों के पूर्व पुरुष बाप्पा रावल इसी शाखा के राजा के भाञ्जे लगते थे और उन्हीं को बिजय कर बाप्पा ने चित्तौर में सूर्य कुल की जड़ जमाई। अमर कोट के राजपूत भी प्रमर वंशी हैं। हुमायूं बादशाह जब शेरशाह से दिल्ली के सिंहासन से उतारा गया था तब इन्ही राजपूतों ने उसे शरण दी थी और इन्हीं की रक्षा में अकबर का जन्म हुआ था। मुसलमान राजाओं की अत्यन्त श्री वृद्धि के निमित्त कारण येही राजपूत हैं सो लोगों को भली भांति बिदित होगा। और २ स्थानों के प्रमर वंशी राजपूतों का कुछ बिशेष प्रसिद्ध वा उल्लेख योग्य बिबरण यहां नहीं किया जाता पर उन २ स्थानों का इतिहास खोजने से सब बिदित हो जावेगा। मौर्य से भिन्न और और प्रमर वंशी शाखाओं का ठीक २ पता लगाया जावे तो कदाचित् मूल में सूर्य वा चन्द्र वंश ही मिलेगा। कुछ क्षत्रिय लोग प्रमर को उच्च जाति के क्षत्रिय नहीं मानते इसका कारण संभवतः मुरा के सन्तान होना ही होगा॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इसी प्रकार सोलङ्की क्षत्रियों का बिचार करने से बिदित होता है कि निःसन्देह सोलङ्की लोग भी बड़े प्रभावशाली शूर बीर और पराक्रमी प्रसिद्ध हैं। ये लोग गङ्गा के तट पर सुरु नामक स्थान, और लवकोट वा लाहोर को उनकी किसी शाखा का निवास स्थान बतलाते हैं। आठवीं सदी में ये लोग मुल्तान के आस पास के देशों में रहते थे। बम्बई में मलाबार तट पर कल्याण नाम नगरी भी बहुत काल तक इन लोगों की राजधानी थी। पीछे से इन्हीं लोगों ने अन्हलवाड़ा पत्तन के मौरवंशी राजपूतों को राज सिंहासन से उतार वहां अपना राज्य जमाया। यहां पर सौलङ्की राजपूत अलाउद्दीन ख़िलजी ( सन् १२२५-१३१५ ई०) के समय में राज्य करते हुये देखने में आते हैं। तदनन्तर सोलङ्कियों का राज्य छिन भिन्न हो गया और उनकी बघेला नाम्नी एक शाखा ने बघेलखण्ड पर अधिकार किया। हुमायूं बादशाह को बिपत्ति के समय में बान्धवगढ़ के स्वामी ने जो सहायता दी उसका वर्णन अजबेश कवि ने इस प्रकार किया है॥

"बढ़ी बादशाही जैसे सलिल प्रलै के बढ़े राजा राव उमराव सब को निपात भो॥ बेगम बिचारी बही कतहूं न पायो ठौर बांधोगढ़ गाढ़ो गूढ़ ताको पच्छपात भो॥ शेरशाह सलिल प्रलय को बड़ो अजवेस बूड़त हुमायूं के महा ही उतपात भो। बलहीन बालक अकब्बर बचाइवे को बीरभानु भूपति अछैबट को पात भो॥"

सोलङ्की वंश में एक राजा सिद्धराय नामक हुये जिसने सम्बत ११५० से १२०१ तक अर्थात् सन् १०९३ ई० से सन् ११४४ ई० तक राज्य किया। उसके एक पुत्र का नाम बाघराय था इसी बाघराय वा व्याघ्र देव के सन्तान बघेल क्षत्रियों के नाम से प्रसिद्ध हुये। रीवां के बर्त्तमान राजा भी बघेल क्षत्रिय हैं और और ये अपने को भगबान् रामचन्द्र जी के छोटे भाई लक्ष्मण जी के वंश में बतलाते हैं जिससे सिद्ध होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कि बघेल क्षत्रिय अथवा सोलङ्की वंश के अग्निकुल क्षत्रिय लक्ष्मण जी के वंशज हैं अतएव ये राजपूत भी सूर्यवंश ही में उत्पन्न हैं। रीवां के राजा रामानुज के वैष्णव सम्प्रादाय में हैं और इनकी भक्ति भगवान् रामचन्द्र जी में होना यथार्थ ही है। इसी प्रकार यदि सोलङ्कियों की और २ शाखा के विषय में ठीक २ अनुसन्धान किया जावे तो उन सब के भी सूर्य वा चन्द्र वंश में होने का पता लग सकेगा। बाल्मीकीय रामायण में लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु को मल्लभूमि नाम देश का राजा रामचन्द्र जी ने बनाया ऐसा लिखा है। क्या इसी मल्लभूमि का नाम मुलतान तो नहीं है? सिकन्दर ने जब भारत पर चढ़ाई की थी तब मुलतान ही के पास मल्ल जाति के साथ यूनान वालों का संग्राम हुआ था और इनकी वीरता पर सिकन्दर चकित हुआ था। क्या इस मल्ल जाति के लोग लक्ष्मण के वंशज हैं? हां इतना तो अवश्य है कि आठवीं सदी में जो लङ्गहा और तोग्रा नाम क्षत्रिय मुलतान के पास बसते थे वे सोलङ्की राजपूत थे। इससे भी यही जान पड़ता है कि ये सूर्य वंशी थे॥

टाड साहिब के निर्देशानुसार चौहान कुल के आदि पुरुष का नाम अग्निपाल वा अनल है। इनका राज्य काल सन ईस्वी से ६५० वर्ष पूर्व था। और राजधानी महेश्वर वा माहिष्मती बतलाई गई है। चन्द्रवंश की एक शाखा जो हैहय वंश के नाम से प्रसिद्ध है उसकी राजधानी प्राचीन काल में नर्मदा के तीर माहिष्मती थी। इस बंश के प्रसिद्ध राजा सहस्रार्जुन को भगवान् परशुराम ने पितृबैर निर्यातन करते समय सुर लोक पठाया था।

सहस्रार्जुन के वंशज जो राजा माहिष्मती में हुये युद्ध में अग्निदेव उनकी सहायता करते थे ऐसा महाकवि कालिदास ने रघुवंश षष्ठ सर्ग के ४२वें श्लोक में लिखा है। यथा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आयोधने कृष्णगतिं सहायं अवाप्य यः
क्षत्रियकालरात्रिम्। धारां शितां राम
परश्वधस्य सम्भावयत्युत्पलपत्रसाराम्।

अर्थात्–ये युद्ध में अग्निहिं पा सहाई क्षत्रान्तकारी भृगुनाथ जी की। कराल धाराल कुठारहू को लेखैं मृदू पङ्कज पांखुरी सी॥

इससे स्पष्ट है कि अग्निदेव इस बंश के सहायक और पूज्य थे। महाभारत में भी जब महाराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ के अवसर में अपने चारों भाइयों को चारों दिशाओं में दिग्विजय के लिये भेजा तो सहदेव की सेना को (जब वे दक्षिण देश में माहिष्मती पहुंच गये थे अग्निदेव ने जलाना प्रारम्भ किया था और सहदेव की सेना को अग्निदेव की स्तुति और पूजा के द्वारा निस्तार प्राप्त हुआ। निदान अग्नि को सहायक और पूज्य बिचार के इस बंश के उस राजा का नाम जिसका राज्य सन् ईस्वी से ६५७ बर्ष पूर्ब था अनल वा अग्निपाल रक्खा गया हो तो सम्भव है। इस प्रकार चौहान बंश मूल में हैहय वंशियों की एक शाखा है जिसका मूल पुराणों के अनुसार चन्द्र वंश है॥

माहिष्मती के पीछे चौहान क्षत्रियों का अधिकार अजमेर में प्रतिष्ठित हुआ और दिल्ली के तोमर वंशी महाराज अनङ्गपाल ने अजमेर के चौहान कुलभूषण महाराज सोमेश्वर को अपनी कन्या अर्पण की सोमेश्वर के पुत्र पृथ्वीराज चौहान दिल्ली के अन्तिम राजा थे और इन्हीं की मृत्यु के साथ भारत की स्वतन्त्रता का सूर्य डूब गया।

चौहान वंश की भी कम से कम २४ शाखाएं हैं जिनमें से बूंदी और कोटा के हाड़ा क्षत्रियों की बीर जाति सबिशेष प्रसिद्ध है॥

खेद का बिषय है कि परिहार वंश के क्षत्रियों का सबिस्तार वर्णन नहीं मिल सका जिनसे उनका पक्का पता मिल सके। जोधपुर में राठौ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रों के राज्य स्थापन के पूर्व मुखडार में इन लोगों का राज्य था और नाहर राव नाम एक पराक्रमी परिहार वंशी क्षत्रिय का नाम इतिहास ग्रन्थों में देख पड़ता है ॥

परिहार वंश की कई एक शाखाएं हैं जिनमें से इन्दों और सिन्धिल प्रसिद्ध हैं। इन्दों वंश के लोग इन्दु वा चन्द्र वंश की शाखा से निकले हों तो असम्भव है? कुछ अधिक अनुसन्धान करने से कदाचित् निश्चित और सन्तोष प्रद उतर मिले ॥

हमिरङ्गल मिश्र-प्रयाग।

## भारत की भावी भलाई का उपाय।

भारतवर्ष के लीडर (अग्रणी) वही पुरुष हैं जो पढ़े लिखे हैं और जिनमें देशहितैषिता है। इन्हीं लोगों के हाथ में हमारे देश की शोकमय अवस्था का सुधार है। मैंने अपने देश के सुधार के अर्थ बहुत कुछ सोच बिचार किया है और मुझे बिश्वास है कि भारतवासियों के लिये सब से भारी लाभदायक बात सम्बाद पत्रों का पढ़ना है। जिसके द्वारा ज्ञात हो सकता है कि देश के सुधार के लिये किन बातों की आवश्यकता है। इसलिये प्रत्येक भारतवासियों को यह भी अपना धर्म समझना चाहिये कि अपने मित्र वर्गों को ताश, चौसर, शतरञ्ज खेलने और निर्मूल गप्पों में काल व्यतीत करने से रोकें और उनको इस बात की प्रेरणा दिलावें कि वे लोग अपना समय सम्बाद पत्र और पुस्तक पढ़ने में बितावें, हमारे देश भाइयों का कितना अमूल्य समय केवल गप्पबाज़ियों में ही बीतता है यदि वे अपने इस अवसर को समाचार पत्रों के पढ़ने में व्यतीत करें तो उनकी अवस्था इतनी शोचनीय न हो। देखिये जापानी और इङ्गलिस्तान वासी बच्चे से लगा बूढ़े तक सम्बाद पत्रों का नित्य पढ़ना केवल अपना एक नित्य कर्म ही नहीं समझते बल्कि धर्म के समान मानते हैं। उनके जाति और देश की गौ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रवता सम्बाद पत्र ही हैं, अतएव वहां दो तीन लाख पत्र छपा करते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि भारतवर्ष में निर्धनता के कारण सभी लोग पत्र नहीं खरीद सकते हैं, इसलिये मैं भारतबर्ष के समस्त देश हितैषियों से सबिनय प्रार्थना करता हूं कि वे लोग ज़िले २ में और तहसील २ में पुस्तकालय स्थापित करें और करावें जिसमें उत्तम २ ग्रन्थ और पत्र मंगाये जावें और सर्व साधारण को शौक दिलावें कि अपने फुरसत का समय पढ़ने में व्यातीत करें ॥

यूरूप और अमेरिका देश के लोग अपने नित्य के काम काज से छुट्टी पाकर अपने फुरसत का समय पत्रों के पढ़ने में बिताते हैं इसीलिये वहां के लोग अधिक बिद्वान्, देशहितैषी और गुणवान् हैं। भारत वर्ष में यह काम बड़ी सरलता से हो सकता है, क्योंकि यहां गांव २ ज़िले २ में मन्दिर और धर्मशालायें मौजूद हैं जहां उत्तम २ सम्बाद पत्र रक्खे रहा करें और लोग जाकर मुफ़्त में पढ़ा करें। इससे कई लाभ तो प्रत्यक्ष ही हैं-(१) बिना अधिक खर्च किये ही उत्तम स्थान पढ़ने के लिये मिल सक्ते हैं, (२) मन्दिरों का सुधार भी इससे बहुत कुछ हो सकता है, (३) सर्बसाधार अपना काल पढ़ने में व्यातीत कर सकेंगे और देश की अवस्था जान जांयगे तो बहुत कुछ देश को लाभ पहुंचा सकेंगे, (४) उनका समय भी व्यर्थ न जायगा, (५) जब लोगों को मुफ़्त समाचार पत्र पढ़ने को मिलेंगे तो वे भी अवश्य ही अपने देश की बुरी अवस्था को जान कर उसके सुधार के उपाय में तत्पर होंगे। अतएव अपने देशहितैषी भाइयों से प्रार्थना करता हूं कि यदि वे समझते हैं कि देश की अवस्था बहुत ही ख़राब और हमारी अधोगति है, तो वे लोग अपने दया पात्र देश भाइयों के हितार्थ प्रत्येक देवमन्दिरों, धर्मशालाओं ऐसे स्थानों में धर्मार्थ पुस्तकालय स्थापित करें। यदि आप लोग इस बात के करने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर लें तो थोड़े ही से परिश्रम में अपने देश को बड़ा भारी लाभ पहुंचा सकते हैं। मैं प्रत्येक देशहितैषी से सबिनय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



निवेदन करता हूं कि इस कार्य को शीघ्र ही करने पर तत्पर हो जांय-देरा इस्माइल खां में मुझे बहुत कुछ सफलता इस प्रकार से हुई है, अन्य ज़िलों में भी सफलता न हो इसका कोई कारण नहीं हो सकता है। इसलिये मैं अपने देश भाई, मित्र और धनवान् पुरुषों को बार २ चेताता हूं कि मन्दिरों, और धर्मशालाओं में फ्री लाइब्रेरी खुलवा दें, जिनमें उत्तम २ कई पत्र मंगाये जाया करें और लोग उन्हें मुफ़्त पढ़ सकें। बिचार कर देखिये तो यह कैसे पुण्य का कार्य है-अन्त में परमेश्वर से भी प्रार्थना है कि देश हितैषियों के इस धर्म कार्य में सहायता दें॥

भवदीय

प्रयाग २ मार्च टहलराम, गङ्गाराम, ज़मींदार देहरा इस्माइल खां।

कृपा करते इसका अभिप्राय अपने मित्रों और सम्बन्धियों को सुना कर इस पत्र को किसी बिद्वान् महाशय को दे देवें॥

## बिशेष द्रष्टव्य।

३१ मार्च तक हिन्दीप्रदीप के जो नये ग्राहक होंगे उनको लाल बाग लखनऊ के रहने वाले बाबू गोपाल लाल खत्री एक पुस्तक उपहार में देंगे केवल )॥ पैसे का टिकट उनको भेजना होगा यह पुस्तक एक उत्तम रोचक उपन्यास के ढङ्ग की होगी॥

परिचय होने से मालूम हुआ कि पं० देवदत्त अग्नि होत्री निर्लोभ शुद्ध ब्राह्मण हैं मन्त्र शास्त्र में अच्छे प्रवीण हैं। कई ठौर यह अपने मन्त्र शास्त्र की करामात दिखा चुके हैं। यह कह रहे हैं सतयुग बहुत जल्द आने वाला है। इस समय इनके कथन के अनुसार कुछ आसार भी वैसे मालूम पड़ने लगे हैं। अमीर काबुल का बकरा ईद पर गाव कुशी का रोकदेना भी पण्डित जी कहते हैं हमारे कथन का अंकुर है यही अंकुर कुछ दिनों में बिशाल वृक्ष हो उठैगा। स्वामी रामतीर्थ भी कह गये हैं १० वर्ष में भारत की दशा पलटेगी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## पुस्तक प्राप्ति

होली रहस्य-पं० लज्जाराम शर्मा कृत भाषा इस छोटे से रिसाले की बहुत ही सरस है। पण्डित जी कहां तक परिवर्तन बिमुख Conservative और पुरानी लकीर के फकीर हैं यह उनके इस लेख से स्पष्ट है। होली को तेहवार मान गाली बकना नशा पीना आदि गन्दी बातों के समर्थन में भी उन्होंने युक्ति निकाली है। पण्डित जी बड़े लोग हैं हम किस गिनती में हैं कि उनके मन्तव्य को दूषित ठहरावें॥

INDIAN THOUGHT

## इण्डियन थाट

यह त्रैमासिक पुस्तक दो बड़े श्रेष्ठ बिद्वान् जी, थीबो और म्योर सेंट्रल कालेज के संस्कृत प्रोफेसर पं० गङ्गानाथ झा संपादित हर तीसरे महीने निकलेगी जिसका पहिला अङ्क हम धन्यवाद पूर्बक स्वीकार करते हैं। इसमें पहिला लेख श्री हर्ष के खण्डन खण्ड खाद्य का अङ्गरेज़ी में अनुबाद है। दूसरा बिषय बिद्यारण्य माधवाचार्य का बिबरण प्रमेय संग्रह है तीसरा बिषय ज्योतिष् जो बेदांग है उससे भारत के प्राचीन इतिहास से क्या सम्बन्ध है सो इसमें दिखाया गया है। चौथा बिषय वैदिक देवता मित्राबरुण आदित्य आदि की समालोचना का है जिसमें निश्चय किया गया है कि ये देवता क्या हैं। इस पुस्तक का बिशेष बिबरण फिर लिखेंगे इसलिये कि जो बिषय इसमें दिये गये हैं उनको बार २ ध्यान पूर्बक पढ़ने की आवश्यकता है। बार्षिक मूल्य मैं डाक महसूल १०)

## सम्पादकीय टिप्पणी

घी पर चुङ्गी-हम पहले भी लिख चुके हैं कि देश में गोधन की क्षीणता हम लोगों के लिये अनेक और बिपत्तियो में ऐसी भारी बिपत्ति है जिससे हमारा निस्तार कभी हो ही नहीं सक्ता। ज्यों २ इनकी फौज़ बढ़ती जायगी त्यों २ गोधन बराबर घटता ही जायगा। हमारे साथ यथोचित हमदरदी होती तो हमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस बड़ी हानि पर अवश्यमेव खयाल होता अस्तु इस दशा में म्युनि-सिपालिटी भी अपना भरपूर हम से दांव लेने में नहीं चूकती। हम पूछते हैं म्युनिसिपालिटी हम से इतनी कड़ी चुङ्गी उगाहती है तो हमे आराम पहुंचाने को कि पीड़ा देने को? कितनी दूसरी चीज़ों पर चुङ्गी कम कर घी पर कड़ी चुङ्गी जब से कस दी गई है तब से घी घटता ही जा रहा है १५ छटांक तक रुपये का पहुंच गया अब क्या कुछ दिन से रुपये का पाव भर बिकैगा। हमे याद है ५० बर्ष पहले रुपये का ३ सेर घी बिकता था गोधन घटते २ अब इस दशा पर दूध घी पहुंचा। प्रार्थना है म्यूनिसिपल मेम्बर इस पर ध्यान देंगे और घी पर से चुङ्गी बिलकुल उठा देंगे।

स्वदेशी और बायकाट-पालिटिक्स प्रवीण राजनीतिज्ञों के इस समय दो दल नरम और गरम के नाम से अपनी २ ओर बड़ा ज़ोर कर रहे हैं। नरम जो "माडरेट" क्रम के हैं उनका कथन है कि उतावले न हो धीरे २ जैसा अब तक रहे अपना काम करते रहो और भीतर २ देश के उपकार की जो बातें हैं उसमें लगे रहो। गरम "एक्सट्रीमिस्ट" कहते हैं इतने दिनों तक बराबर हम ऐसा ही करते रहे क्या फल मिला इससे बिलकुल उस ओर की आशा छोड़ जो कुछ करना हो आप करो। जो कुछ बिलायत या बिदेशी हो उसको अपने बीच से बहिष्कार बायकाट कर डालो। इनसे कुछ मांगो नहीं इनके प्रसाद की इच्छा न रक्खो। सरकारी नौकरी तथा पदवी या खिताब मिलै भी तो स्वीकार न करो। इस दल के प्रधान नेता बाबू बिपिन चन्द्रपाल और तिलक महोदय हैं कालेजों के छात्र समूह सब बहुधा इसी दल के हैं। एक्सट्रीमिस्ट दलवालों का जोश देख मालूम होता है भारत के ये भविष्य सन्तान देश के बड़े कल्याण कारी होंगे। इतना अलबत्ता हमारी समझ में उनकी अदूर दर्शिता है कि वे गवर्नमेंट से कुछ मांगा नहीं चाहते। हम क्यों न अपना हक्का पाने के लिये बराबर लड़ते झगड़ते रहैं जहां तक पावें लेते जांय और आगे के लिये बराबर पांव फैलाते जांय हां उस पर सर्वथा निर्भरन रहैं जैसा अब तक रहे। जो कुछ हमे कर्तव्य है करते जांय मांगने पर जो कुछ पाय जांय तो उसे भी गटक बैठें और अपना असन्तोष प्रगट करते जांय पर नम्र और बिनीत भाव अपने में कायम रक्खैं। माडरेट दलवाले इतना और कहते हैं कि बिवेक दृष्टि भी रक्खो सत्य और न्याय पर दृढ़ रहो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# स्काट्स इमलशन

यह सब महीने और सब ऋतु में खाने लायक है; भोजन के सदृश पोषक और दवा की दवा–

Always get the Emulsion with this mark —the Fishman—the mark of the "Scott" process.

यह निर्बलों को बल देता है और पतले दुबले आदमी के शरीर में मांस पैदा कर मज़बूत और दृढ़ांग करता है। अंग प्रत्यंग जो ढीले हो गये हैं उनमें ताकत और फुर्ती लाता है। इसके सेवन से हड्डियां मज़बूत होती हैं और देह के भीतर पट्ठों में मज़बूती लाता है॥

यह रोगी दूधमुहे बच्चे को चंगा कर देता है और कमज़ोर बालकों को सहज़ोर। गर्भिणी और जिस के गोद में बालक है दोनो के लिये यह विशेष उपकारी है। इसलिये कि यह दूधमुहे बालक और मा जिसका दूध बच्चा पीता है दोनो को तनदुरुस्त रखता है॥

खांसी, ज़ुकाम, कफ, फेफड़े और गले की बिमारी, मन्दाग्नि और क्षीणता दूर करने वाली दवाइयों में इसके समान दूसरी दवा नहीं है और सदा गृहस्थी में रखने लायक है॥

लगातार सेवन से शरीर पुष्ट रह निश्चय बहुत तरह के रोगों से बचा रहता है। बालक से बूढ़े तक सब के लिये हित है। इससे नुकसान किसी तरह पर नहीं है। बड़े २ डाकृरों ने इसकी तारीफ की है। किसी तरह की बीमारी यह पास नहीं फटकने देता। आप अपने डाकटर से पूछ देखिये। इसके ऊपर एक मनुष्य का चित्र है जो पीठ पर मछली लादे है और वह तुम्हें ज़रूर फाइदा पहुंचावेगा। यह हाथ से छू कर नहीं बनाया गया सब दवाखानों में मिलता है॥

स्काट ऐन्ड ब्रौन लिमिटेड

मेन्युफेक्चरिङ्ग किमिस्ट- लण्डन


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ॥ बच्चोंने तत्काल जानलिया ॥

देखिये दो बालिकायें इस लाभकारी मीठी दवाको देखकर कैसी प्रसन्न होरही हैं

हमारा सुधासिंधु इतना प्रसिद्ध होचला है जिससे अब यह बात निर्विवाद सिद्ध होचुकी है कि नीचे लिखी बीमारियोंके लिये बिना पूछेही लोग मंगाने लगे हैं जैसे कफ, खांसी, जाडेका बुखार, हैजा, शूल, दस्त, संग्रहणी, गठिया, दमा, जी होना, जी मचलाना, बालकों के हरे पीले दस्त और कै करना इनको सिर्फ तीन खुराकमें अच्छा करता है. इसके हजारों सार्टिफिकट मौजूद हैं जिनके लिये प्रायः १२४ सफेकी सचित्र सूचीपत्र मंगा कर देखिये. मुफ्त भेजेंगे सुधासिन्धु की कीमत ॥) की शीशी ६ लेनेसे १ भेट १२ लेनेसे पांच रु०

देखिये श्रीमान् राजा इन्द्रजीत प्रताप शाह बहादुर तमकुही जिला गोरखपुर से क्या आज्ञा करते हैं।

महाशय आपका एक दरजन सुधासिंधु पहुंचा जो आपने भेजाथा यह दवा बहुत लाभ दायक है बुखार और पेटके रोगों में तो बहुतही फायदेमन्द है और बहुत रोगोंमें वैसा ही फायदा करता है और मेहरबानी करके आध पाव चन्दनादि तैल और बालारिष्ट भेजिये।

मगाने का पता—

**क्षेत्रपाल शर्मा मालिक सुख संचारक कम्पनी मथुरा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REGISTERED No. A---308.

# हिन्दी प्रदीप

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

अप्रैल १९०७

मासिक पत्र

जि० २९ सं० ४

सम्पादक और प्रकाशक पंडित बालकृष्ण भट्ट प्रयाग

## विषय सूची


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| अङ्गरेज़ी तालीम और जातीय शिक्षा ... | १ |
| सच्ची सभ्यता ... ... ... | ६ |
| राजा और प्रजा ... ... ... | ९ |
| सह भोजन और बिवाह ... ... | १३ |
| शिव पञ्चक ... ... ... | १६ |
| नाम या शब्द की उत्पत्ति का कारण ... | १७ |
| भारत में दान का सुधार ... ... | २० |


सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज २)

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दीप्रदीप

जि० २९ सं० ४ | प्रयाग | अप्रैल सन् १९०७ ई०

## अंगरेज़ी तालीम और जातीय शिक्षा ।

हिन्दुस्तान में कुल बोझा हमारी तालीम का गवर्नमेंट के ऊपर रहने से हमको वैसी शिक्षा नहीं मिलती जैसी इस समय ज़रूरत है । वह तालीम जिसे English education कहते हैं उससे बहुत फरक है जो विलायत में दी जाती है । विलायत में उच्च शिक्षा का भार गवर्नमेंट के ऊपर न रह लोग वहां अपने ढंग पर अपने बालकों को शिक्षा देते हैं । वहां Primary education प्राथमिक शिक्षा अलबत्ता सरकार की ओर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दी जाती है। यहां बिलकुल इसके बिरुद्ध है। अर्थात् जो कुछ शिक्षा भली या बुरी हम को सरकार देती है उसी पर सन्तोष किये बैठे रहते हैं। शिक्षा बिभाग में पहले तो हमे कुछ अधिकार ही नहीं है जो सभ्य महाशय इसमें कुछ रद्द बदल किया चाहैं भी तो उनकी सुनता कौन है। इससे अब हमें यही आवश्यक जान पड़ता है कि शिक्षा का भार अपने ऊपर लेवैं और निज ढंग पर जातीय शिक्षा का प्रचार करैं। आज कल बहुधा यही देखा जाता है कि जो नव युवक स्कूल या कालिजों को छोड़ अपनी शिक्षा समाप्त कर निकलते हैं वे ऐसे कमज़ोर हो जाते हैं कि केवल इसी लायक रह जाते हैं कि किरानी गीरी या कुछल इछबरी कर किसी तरह अपना कुटुम्ब पाल सकें। ऐसी शिक्षा जिससे हम लोगों में जातीयता का भाव पैदा हो सके गवर्नमेंट के शिक्षा बिभाग में दी ही नहीं जाती। इतना ही नहीं वरन् यहां के शिक्षा बिभाग का ढङ्ग ही निराला है। जिससे हम को लाभ की अपेक्षा हानि अधिक है। यह आप को मालूम होगा कि बिलायत में जो लड़के पढ़ते हैं उनसे यहां के लड़कों में बड़ा अन्तर है। बिलायत में लड़कों को छात्र दशा में किसी तरह की दुनियाबी फिकिर या चिन्ता नहीं रहती बरन् सदा प्रसन्न चित्त केवल पढ़ने लिखने से उन्हें सरोकार रहता है। यहां एक तो यों हीं बहुत कम ऐसे गृहस्थ हैं जो सब भांति खुश हाल हैं और दोनों बख्त आनन्द से भोजन करते हैं बरन् अधिकांश मुफलिस कं-ग्नांच हैं। उस पर लड़कपन के व्याह की कुप्रथा एक तो तितलौकी दूजे चढ़ी नीम वाली कहावत का प्रत्यक्ष उदाहरण हो जाता है। तब कहिये हम किस तरह मुल्की मामिलों की बारीकियों को समझ सक्ते हैं। दूसरे यह कि हम लोगों को जो कुछ पढ़ाया जाता है वह सब दूसरी भाषा में जिसके समझने के लिये पहले हमे उस भाषा में पूरी योग्यता होनी चाहिये। तवारीख हिसाब भूगोल वगैरह बिदेशी भाषा अङ्गरेज़ी में पढ़ाने से दस गुना अधिक मुशकिल हमारे कोमल बुद्धि वाले बालकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



को हो जाता है। इससे उनका बहुत सा समय व्यर्थ नष्ट हो जाता है। या यों समझिये कि यदि यही सब बिषय अङ्गरेज़ के लड़कों को फ्रेंच इटालियन् या जर्मन् में पढ़ाये जांय तो उनको कितना कठिन होगा। यहां के बालकों की बुद्धि या ज़ेहन की तारीफ़ है कि इतने पर भी वे हर तरह पर सबकत ले जाते हैं और इमतिहानों में प्रत्येक विषय में बहुत अच्छा नम्बर पाते हैं। दूसरे एक बात यह भी है कि बिलायत में लड़के २० या २१ वर्ष तक युनिवरसिटी की किसी परीक्षा में नहीं शरीक किये जाते यहां उस उमर तक M. A. की डिगरी पास कर लेना पड़ता है। सरकार भी चाहती है कि हमारी तालीम का भार अपने ऊपर न लिये रहे नहीं तो इतनी तरह की भांति २ की क़ैद फीस का बढ़ा देना कोर्स में व्यर्थ बहुत सी किताबों का बोझ लाद देने का क्या काम था। तो अब हमारा मुख्य कर्तव्य और उद्देश्य यही होना चाहिये कि बालकों को अपने ढङ्ग पर ऐसी शिक्षा दें जिसमें जातीयता का भाव उनमें पैदा हो इसी में हमारा कल्याण और आगे के लिये भलाई है।

जातीय बिश्वबिद्यालय हो जाने से हमारे तथा मुसलमान भाइयों के लड़के अपने मज़हब और देश के प्राचीन महा पुरुषों के चरित्र अपनी भाषा में पढ़ धर्म तथा समाज सम्बन्धी कितनी ऐसी लाभ दायक बातें सीख सकते हैं जो बर्तमान् क्रम की अङ्गरेज़ी तालीम में आना कभी सम्भव नहीं है। राम कृष्ण अर्जुन भीष्म तथा मुहम्मद और उनके जानशीन खलीफाओं में क्या गुण थे कैसे चरित्रवान् प्रभुता शाली बीर पराक्रमी और दृढ़ प्रतिज्ञ तथा दृढ़ संकल्प वे लोग थे इसका ज्ञान जैसा हमे होना चाहिये वह नेलसन आदि की जीवनी पढ़ने से कहां हो सक्ता है। बालकों में जातीयता का भाव पैदा करने को और उन्हें अपनी जाति या समाज में उत्तम नागरिक बनाने को हमे चाहिये जातीय बिश्वबिद्यालय National univercity स्थापित कर जातीय शिक्षा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रचार करैं। जिसमें संस्कृत और अरबी प्रधान भाषा हों। ठौर २ पुस्तकालय और रीडिङ्ग रूम स्थापित किये जांय। हम कालिदास भव भूति भारबि श्री हर्ष बाण तथा शादी हाफिज़ आदि को छोड़ शेक्सपियर मिलटन और ऐडिसन तथा मेकाले को क्यों पूछैं। इससे हमारा यह तात्पर्य नहीं है कि अङ्गरेज़ी के उत्तम और प्रधान कवि या लेखकों को बिलकुल भूल जांय किन्तु जातीय शिक्षा की उन्नति उनसे वैसी नहीं होगी जैसी कालिदास या तुलसी और बिहारी की कविता से हो सक्ती है। हम को बिदेशियों की भाषा तथा उनके ग्रन्थकारों से कोई द्वेष नहीं है बरन अङ्गरेज़ी के जो ग्रन्थ हमारे फायदे के हैं या जिनकी हमारे यहां कमी है उनका प्रचार या अनुबाद हमारा कर्तव्य होना चाहिये। जर्मनी में बिज्ञान की शिक्षा बहुत अच्छी दी जाती है हम अपने युवकों को वहां भेजने का प्रबन्ध करैं। जैसा जर्मनी वाले हमारे यहां के दर्शन और वेदों का प्रचार अपने देश में बहुतायत से कर रहे हैं वैसा ही हम उन के यहां के विज्ञान को अपने देश में फैलाने का यत्न करैं। इतिहास और भूगोल बिद्या की भी कमी हमारे यहां है इसकी तरक्की भी हमे अपनी भाषा में करनी चाहिये। जैसा स्काटलैण्ड और इङ्गलैण्ड के लड़के अपनी ही भाषा में अपने देश के इतिहासों को पढ़ जो लाभ उठाते हैं हम को कहां वर्तमान् शिक्षा प्रणाली से वैसा फल मिलता है। हमे चाहिये शिवाजी, रणजीत सिंह, भोज, बिक्रम, पृथ्वीराज, अकबर ऐसे विशिष्ट पुरुषों का चरित्र किस्सों की भांति बालकों को सुनाय उनकी बाल्य अवस्था ही से पक्का कर रक्खें। परन्तु यह महा संकल्प करै कौन? इसके लिये हमारे यहां के बड़े २ बिद्वान् महानुभाव राजा महाराजा ज़मीदार तअलुकेदार सेठ साहूकारों की सहायता आवश्यक है और उन्हीं से यह हमारी बिनती है।

अमेरिका में तालीम का ढङ्ग ऐसा रक्खा गया है जिससे दिनों दिन अच्छे २ कारीगर निकलते जांय। उनका मत भी यही है कि बालकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



को किताब का कीड़ा न बना कर ऐसी शिक्षा दी जाय कि उनकी दिमागी कूबत और तरह २ का कला कौशल रोज़ रोज़ बढ़ता जाय। ऐसा कहा जाता है कि वहां के प्रेसिडेंट के तरफ से स्टेट की लग भग आधी आमदनी के शिक्षा विभाग में लगाई जाती है। और यही बिचार रहता है कि जहां तक हो सके हर एक रियाया को इसका फायदा पहुंचे। दूसरा उदाहरण जापान का है वहां भी यही कायदा रक्खा गया है कि जो कुछ शिक्षा दी जाय अपने पश्चिमी ढङ्ग पर दी जाय जिससे जापान वाले किसी कौम को अपने से बढ़ा हुआ न देख सकें और अपना मुल्क स्वयं अपने ही हाथ में रक्खें। वहां बालकों को ६ वर्ष की उमर से शिक्षा देने लगते हैं और Primary education के लिये कोई फीस नहीं रक्खी गयी। (कला इत्यादि) की तालीम प्रधान अङ्ग इनके यहां के शिक्षा का है। औरतों को पढ़ाना भी वहां बहुत आवश्यक समझा गया है और उसका भी प्रबन्ध अलग है। हम लोग भी यदि कुछ करना चाहें तो इन्हीं का अनुकरण करें। आज कल यहां के २३ करोड़ आबादी में से केवल ४० लाख शिक्षा पाते हैं बाकी सब कोरे रह जाते हैं। अर्थात् १ आदमी फी सदी कुछ तालीम पा रहे हैं। यहां की सरकारी आमदनी १२४ करोड़ है इसमें से सिर्फ ४ करोड़ शिक्षा विभाग में लगाया जाता है। अपने यहां के Arts industry and commerce के तरफ बिलकुल ही ध्यान नहीं है। पूना और रुड़की में अब इसका कुछ प्रबन्ध किया गया है पर इतने से हमको होता ही क्या है।

यह कौन नहीं जानता कि जापान जो आज कल उन्नति के शिखर पर चढ़ रहा है और सब का शिरोमणि समझा जाता है। ५० वर्ष पहिले किसी गिनती में न था। कारण इसका यही है कि वहां कला इत्यादि की शिक्षा का मायर ज्यादा है और तरह २ शिक्षा भी सब अपने ढङ्ग पर दी जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इससे स्पष्ट बिदित है कि जब तक हम अपने यहां की कारीगरी की उन्नति न करेंगे और शिक्षा का भार अपने ऊपर न लेंगे हम कुछ नहीं कर सक्ते। आज कल के कांग्रेस के नये दलवाले जो बायकाट २ चिल्ला रहे हैं उनका भी भीतरी यही आशय है कि हम लोग बिदेशी वस्तु न लेंगे और दृढ़ मत हो जायगें तो अन्त में हमको अपने बाहुबल का आसरा पकड़ना पड़ेगा और देश में कारीगरी स्वयं बढ़ेगी। परन्तु यह सब सिर्फ चिल्लाने ही से न होगा कुछ करना भी हमारा धर्म है। जब कोई समय ऐसा आ जायगा तो स्वराज भी हम को आप से हो जायगा। देखैं पाठकों को हमारे इस सरमग़ज़न करने का कुछ असर पड़ता है कि नहीं॥

---

## सच्ची सभ्यता।

आज कल बहुधा लोग बाहरी ठाठ और अपनी हर एक बातों में चमक दमक को ही सभ्यता मानते हैं। बाहरी वेशभूषा सभ्यता का एक अङ्ग अवश्य है पर निरी इस बनावट को सभ्यता का बीज हम कभी न कहेंगे बरन गंभीर बिचार, दया, प्रेम, परस्पर की सहानुभूति, आपस में एक दूसरे के सुख दुख के साथी हो जाना, इत्यादि इसके आभ्यन्तरिक गुण हैं जिनका होना सभ्य समाज के लिये ज़रूरी बात है। इसी से हमारे शास्त्रों में बाहरी आडम्बर का निरादर कर सभ्यता की कसौटी भीतरी बातों में की गई है। सभ्यता समाज का एक मुख्य गुण है सभ्य के लिये समाज प्रिय (Social) होना भी बहुत उचित है। सो तभी होगा जब समाज से हमारा सब तरह का सरोकार है। बल्कि समाज सभ्यता की शिक्षक और परीक्षक है। समाज के लोगों की चाल ढाल, रीति, नीति, धर्म कर्म, आचार व्यवहार कोई ऐसी बात नहीं है जिसे सभ्य मनुष्य न जानता हो। एक महात्मा का मत है कि जो मनुष्य समाज से अलग रहता है वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



या तो देवता है या पशु; मनुष्य में उसकी गिनती नहीं है। तात्पर्य यह कि मनुष्य का सभ्य होना एक स्वाभाविक गुण है जिसमें यह गुण नहीं उसे मानव तनधारी पिशाच कहें तो अनुचित न होगा। सभ्य सज्जन साधु सत्पुरुष लगभग एक ही अर्थ के बाचक शब्द हैं। असभ्य खल कापुरुष आदि इसके बिपरीत हैं। ऐसों को सभ्यता के गुणों से हीन कहना चाहिये। इस समय के भेख पुजाने वाले रामदास पीताम्बर दास को कभी सच्चा साधु न कहेंगे बरन मन और इन्द्रियों को काबू में रख उनसे यथोचित काम लेने वाला ही सच्चा साधु है। सभ्य मनुष्य का मन बच कर्म एक होता है उसका हृदय कमल स्वार्थ परता की कुटिल बासनाओं से कभी संकुचित और दूषित नहीं होने पाता बरन परार्थ चिन्ता की बसन्ती बायु से सदा प्रफुल्लित बना रहता है वह दूसरों की भलाई में अपनी भलाई समझता है। आत्मत्याग को अपने लिये एक बल मानता है; प्रतिक्षण उसे ईश्वर का भय रहता है; इसी से कुत्सित और निन्दित कर्म करने का साहस उसे नहीं होता। दूसरे के अणु मात्र भी गुण को बहुत मानता हैं जैसा भर्तृहरि ने कहा है।

"मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णास्त्रिभुवन मुकारश्रेणिभिः पीडयन्तः। परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥"

सभ्यजन के पास न्याय और इनसाफ की ऐसी उत्तम कसौटी होती है जिस पर पक्षपात का असर कभी पड़ता ही नहीं अज्ञ और मूर्खों को चाहो पहिले वह हानि कारक जंचे पर परिणाम उसका अवश्य लाभदायक होता है। ऐसे लोग उदार भाव गांभीर्य बाहर और भीतर की पवित्रता की मूर्ति होते हैं। खलों में इसी के बिपरीत देखा जाता है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दृढ़ संकल्प और अपने इरादे का पक्का होना सभ्यजन की एक दूसरी कसौटी है "यद्यपि शुद्धं लोक बिरुद्धं" वाली कहावत से डर ऐसे लोग कभी अपने पक्के इरादे से नहीं डगमगाते। पहले तो जो शुद्ध है वह लोक बिरुद्ध क्यों होने लगा और जो वास्तव में लोक बिरुद्ध है वह शुद्ध कहां रहा? यद्यपि लोक शब्द से यहां देश और काल का तात्पर्य है पर बर्ताव में इसका खयाल नहीं करते अतः हम दोनों तरह हानि उठाते हैं। जो लोक बिरुद्ध करते हैं तो अपवाद और बदनामी की दुन्दभी हमारे लिये पीटी जाती है और जो लोकानुकूल चलते हैं तो उस शुद्ध मार्ग का बतलाने वाले का अनादर होता है। इसका भेद कुछ नहीं खुलता कि पूर्व प्रचलित शुद्ध मार्ग क्यों लोक में दूषित ठहराया गया। इससे मालूम हुआ कि देश काल परिवर्तन शील है नहीं तो उस शुद्ध रीति का अनुकरण समाज में क्यों नहीं किया जाता। जो रीति किसी समय शुद्ध थी वह अब हम लोगों की अयोग्यता से निन्दनीय हो दूर हटा दी गई। शनैः २ समाज के सब लोगों ने बिचार शक्ति और बिवेक को खो बहाया गतानुगतिक के क्रम पर चल अन्ध परम्परा के अनुयायी हो गये। बिचार पूर्वक अच्छा काम करने का साहस न रहा घर के भीतर स्त्रियों की नाईं रहने लगे। सभ्य जन इस लोक निन्दा का भय न रख समाज में जो कुरीतियां चल पड़ी हैं उनके उठाने और देश काल के अनुसार उनकी जगह दूसरी प्रथा चलाने में लोक निन्दा का कुछ खयाल नहीं करते। संशोधक समाज के नेताओं को उचित है कि वे बिवेक और बिचार को काम में लाय ऐसा उपाय करें जिसमें इस लोक निन्दा पिशाची का शुद्ध रूप प्रत्यक्ष दीख पड़े।

यथार्थ में लोक निन्दा उसके लिये है जिसमें किसी काम के करने की योग्यता और क्षमता रह कर भी वह अपनी उस योग्यता प्रगट करने का भरपूर साहस Moral courage नहीं रखता। जैसा पण्डित और बुद्धिमान् की निन्दा तब है जब उसका पाण्डित्य या बुद्धि दूसरों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हित का काम न करे। सज्जन की निन्दा तब है जब उसकी सज्जनता कार्य में परिणत न हो। धनवान् तब निन्दनीय है जब उसके धन का सद् व्यय न हो। राजा या शासन कर्ता तब निन्ध्य है जब वह प्रजा या आश्रितों पर जुल्म या सख्ती करे। सन्तान वह निन्द्य है जो अपने जन्म दाता मा बाप का ऋण न चुकावे। मनुष्य वह निन्दा के योग्य है कि नर तन पाय अपना जन्म सार्थक न करे। गुरु या शिक्षक वह निन्दनीय है जो शिष्य को कुराह से न हटावे इत्यादि। हमे प्रतिक्षण देखते रहना चाहिये कि हमे किस बात की योग्यता है; जाति में समाज में परिवार में तथा देश में हमारा कहां तक अधिकार अपनी योग्यता प्रकाश करने का है; और उस योग्यता को कर्तव्य पालन की बुद्धि से काम में लावें। ऐसा नहीं करते तो हम अवश्य निन्दा के योग्य हैं इसी को गीता में भगवान् ने "संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते" कहा है।

अनन्तराम पाण्डेय।

## राजा और प्रजा।

भाषाओं में बहुत कम ऐसे शब्द हैं जो ठीक Root धात्वर्थ के बोधक बराबर रहे आये हैं। राजा राज धातु से बना है जिसका अर्थ दीप्ति या प्रकाश है। ऐसा ही प्रजा भी जन धातु से बना है। जिस के अर्थ अब सन्तान और सर्व साधारण रियाया मात्र के हैं। "प्रजास्यात्सन्ततौजने" जैसे २ समय बीतता है वैसे ही वैसे शब्दों के अर्थ में कुछ अदल बदल होता जाता है पर अपने धात्वर्थ से कुछ न कुछ उस शब्द का लगाव अवश्य बना रहता है और कभी २ तो इतना अंतर पड़ जाता है कि उन शब्दों को गढ़ने वालों को कभी स्वप्न भी न सूझा होगा कि इस शब्द का प्रयोग आगे चल के इस माने में किया जायगा। राजा और प्रजा इन दो शब्दों के सम्बन्ध में यही बात देखी जाती है। आज कल राजा शब्द का अर्थ प्रायः हमारे देश में बहुत लोग यह समझते हैं कि राजा उसे कहते हैं जो पृथिवी के कुछ हिस्से का मालिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हो अपनी कुल आमदनी को अपनी जमा समझता हो और चैन से गुलछर्रे उड़ाया करता हो। उन मनुष्यों पर जो उसकी पृथ्वी पर रहते हों उन्हे मारने उनकी मिल्कीयत छीन लेने या जो चाहे सो करने का पूरा अधिकार रखता हो। राज भक्ति के अर्थ भी यही समझे जाते हैं कि राजा जैसा कहे अच्छा या बुरा वैसा करता जाय। जितना कर मांगे चुपचाप देता रहे उसके लिये औरों से लड़े उसके बिरुद्ध कभी कोई बात मुह से न निकाले न राज बिद्रोह की कोई बात सोचे। प्रजा से उन मनुष्यों का अर्थ लिया जाता है जो राजा की पृथ्वी में बसते हैं और जिनका धर्म है कि बिना चूं किये राजा की कुल बातों का सहन करता जाय। परन्तु बिचार कर देखो तो इन शब्दों के असली अर्थ इस समय के अर्थ से बिलकुल उलटे हैं॥

प्राचीन समय अधिकांश यूरोप के देशों में जब मनुष्यों का कोई समूह किसी कारण से अपने स्थान को छोड़ दूसरे स्थान में रहने के लिये जाता तो था यह आवश्यक होता था कि उस दूसरे स्थान के रहने वालों के साथ लड़ाई में बिजय पाने को अपने में से किसी एक ऐसे मनुष्य को चुने जो युद्ध में नेता या अफ्सर बनने का काम कर सके और जिसके अनुसार चलने से लड़ाइयों में हम निपुण हो जावें। इस अवस्था में जिसे वे चुनते थे वही राजा होता था। जब राजा किसी कारण काम करने योग्य न रहा अथवा मर घया तब सब लोग दूसरा राजा अपनी लड़ाई के कामों के लिये चुन लेते थे। राजा का धर्म यह था कि वह सदा अपने आश्रितों का या अपनी जाति वालों का हित सोचे और करे। जब किसी लड़ाई में कोई नई पृथ्वी वह समूह जीतता था तो उस समूह के लोग हिस्से रसदी राजा को बांट में सब से अधिक हिस्सा देते रहे होंगे। इस कारण से कि वह चुना हुआ राजा अपनी जाति में औरों से अधिक बुद्धिमान् और बीर था उसका सन्मान उस की जाति वाले अधिक करते थे। इससे यह न समझना चाहिये कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



राजा और मनुष्यों से पृथ्वी या धन में अधिक रहा हो बल्कि उसका सन्मान भी तभी तक था जब तक वह अपनी जाति की सेवा में तत्पर था। फूडलसिसटेम के अनुसार लड़ाई के समय के पहिले मनुष्यों को कभी आवश्यकता नहीं पड़ी कि वे किसी को राजा बनावें। ऐसे समय राजा और प्रजा में कोई भेद न था। जैसे २ वह जाति बढ़ती गई और बहुत से लोग लड़ने का काम छोड़ और २ काम करने लगे तैसे २ यह आवश्यक हुआ कि राजा को बंधी हुई फौज़ दी जाय और बंधे हुये उतने मनुष्यों का वह मालिक या अधिकारी समझा जाने लगा। इस तरह उसका अधिकार और ज़ोर या प्रभुता बढ़ती गई। इस कारण कि लड़कों में प्रायः पिता का गुण रहता है इसलिये यह प्रथा चल पड़ी कि राजा का लड़का राजा हो। राजा और प्रजा का यह नाता नहीं है कि राजा जो चाहे सो कर गुज़रे और प्रजा उसे सहती जाय। इङ्गलैंड अमरिका फ्रांस आदि देशों में राजा और प्रजा में क्या नाता है सो लोग अच्छी तरह समझते हैं। वे भली भांति जानते हैं कि राजा और प्रजा को ईश्वर ने एक ही तरह का बनाया है राजा का लहू मांस पञ्च तत्व के किसी दूसरे परमाणुओं से रचा गया हो सो नहीं। राजाज्ञा और राजभक्ति क्या है इसके तात्पर्य को भी वे ठीक २ समझते हैं॥

समय के अनुसार सबी में अदल बदल हुआ करता है यूरोप और अमेरिका के सभ्य देश और असभ्य जातियों में अब यहां तक परिवर्तन हो गया कि वहां राजा या राजवंश तथा ऊंच नीच का भाव रहा ही नहीं। वहां प्रजा प्रभुत्व है प्रजा में एक २ समाज के लोग अपने में से जिसे बड़ा लायक समझते हैं चुन लेते हैं और वे चुने हुये लोग जिसे सब से अधिक शासन की योग्यता वाला समझते हैं उसके लिये वोट देते हैं। जिसके नाम पर सब से अधिक वोट आया वही उनका प्रिसिडेंट किया जाता है। ५ या ७ वर्ष तक वही देश के शासन का सब प्रबन्ध करता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इसके लिये उसकी कुछ तनखाह मुकर्रर रहती है। शासन के जुदे २ महकमों से जो कुछ धन उन २ महकमों का खर्च काट इकट्ठा होता है वह सब एकजाई रह खज़ाने में जमा कर दिया जाता है और वह धन मुल्की दौलत या सर्वसाधारण प्रजा मात्र की पूंजी समझी जाती है। हमारे यहां प्रति वर्ष "कानग्रेस" जातीय महासभा भी उसी प्रजा प्रभुत्व की एक छोटी सी तसबीर है। ईश्वर सानुकूल रहा तो कोई समय आवेगा जब हमारे यहां भी प्रजा प्रभुत्व हो जायगा। हम लोग चाहते हैं वह दिन जहां तक हो बहुत जल्द आवे। कर्मचारी गण चाहते हैं उसके आने में जहां तक देर हो सके उस तरह की शासन प्रणाली से हमारा शासन किया जाय। इसलिये कि उनके देश का फायदा इसी में है। "सर्वः स्वार्थं समीहते" स्वार्थ तो ऐसी बुरी बला है कि इस से देवता भी न छुटे होंगे तो मनुष्य की कौन। देशहितैषी तथा समाज के प्रधान नेता सुरेन्द्र गोखले पाल तिलक आदि और गवर्नमेंट के प्रधान कर्म चारियों में परस्पर बिवाद और झगड़े की यही बुनियाद है। लार्ड रिपन महोदय लोकल सेल्फ गवर्नमेंट के नाम से एक २ नगर में आत्म शासन की बुनियाद इसीलिये डाल गये थे। जो अब म्युनिसिपलिटी के नाम से अनेक तरह का क्लेश पहुंचा और कड़ी से कड़ी चुङ्गी और अनगिनती टैक्स उगाहने का द्वार अलबत्ता हो रही है। कहने को म्युनिसिपलिटी का धन प्रजा का है पर वह धन वैसा ही है कि घर द्वार तुम्हारा, डेहरी के भीतर पांव न रखना। प्रजा प्रभुत्व का क्रम शासन का नया है हमारे यहां पुराणों में पृथु आदि के किस्सों से मालूम होता है कि कभी प्रजा प्रभुत्व यहां भी था पर वह इतना पुराना हो गया कि उसे हम बिलकुल भूल गये। ब्रिटिश गवर्नमेंट और तालीम के अनेक फायदों में इसे भी हम अवश्य एक कहेंगे कि हम आत्म शासन स्वराज्य या प्रजा प्रभुत्व क्या है जानने लगे हैं। एक तीसरा क्रम शासन का कनस्टिटूशनल गवर्नमेंट है इसमें राजा नाम मात्र को थाप दिया जाता है कार्य प्रणाली सब पार्लियामेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



की महासभा करती है ब्रिटिश शासन उसी प्रकार का है जिसका बिव रण आगामी अङ्क में रहेगा ॥

## सह भोजन और विवाह ।

समाज की उन्नति चाहने वाले नये लोग इस समय Interdine and Intermarriage सह भोजन और एक जाति का दूसरी जाति के साथ बिवाह होने के बड़े उत्सुक हैं। महाराज गइकवाड़ तो यहां तक बढ़ गये हैं कि हिन्दुस्तान के लोग एक कौम हुआ चाहें तो हिन्दू मुसल्मान में व्याह शादी की अटक मिट जाना चाहिये । जब तक दोनों में यह खटक रहेगी कि हम दो जाति हैं तब तक मुल्की तरक्की हम से दूर हटी रहेगी । महाराज गइकवाड़ बड़े लोग हैं उनके इस मन्तव्य को दूषित कहना छोटे मुह बड़ी बात होगी । किन्तु जाति का अभिमान बड़ी चीज़ है । हम आर्य हैं जब यह खयाल हम में न रह गया हमारा रूपान्तर हो गया तब हमने तरक्की ही किया तो क्या । तारीफ तो तब है कि हमारा प्राचीन वैदिक धर्म और हम आर्य जाति के हैं यह अभिमान हमारे में कायम रहै और हम उन्नति भी करैं । बङ्गाल और बाम्बे प्रान्त में तो ऐसों का दल बहुत बढ़ गया है जो धर्म परलोक और विश्वास पर कुल्हाड़ा चला रहे हैं और जिह्नोंने ते कर रक्खा है कि जब तक हम धर्म कर्म के जाल में फसे रहेंगे इन बातों को लगो न मान इनके पीछे हैरान सिर मारते रहेंगे तब तक कभी तरक्की न करैंगे । हमारे प्रान्त में भी पढ़े लिखे बहुधा उन्हीं का अनुकरण कर रहे हैं और इस तरह के बन्धन को तोड़ निकल भागने ही को तरक्की और स्वराज संस्थापन की बुनियाद मानते हैं। किन्तु याद रहे जिन ऋषियों का चलाया यह आर्य धर्म है उनमें जो सच्चा तपोबल था और लोभ से वे मुक्त थे तथा शुद्ध देशोपकार की इच्छा से चार वर्ण की प्रथा उन्होंने चलाया है तो यह कभी मिटाये न मिटैगी । एक न एक रङ्ग रूप में चली जायगी और ये बहके हुये भी अंत को उसी में आ घुसैंगे ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अस्तु खान पान और परस्पर का यौनिक सम्बन्ध इन दोनों में पहले हम सह भोजन को लेते हैं जिसमें दो क्रम बांधा गया है। एक अनाचार दूसरा अत्याचार और दोनों के अन्तिम छोर के उदाहरण यहां मौजूद हैं। एक वे हैं जो बराबर कह रहे हैं "सबै भूमि गोपाल की यामे अटक कहां" और इस कहने पर दृढ़ रह खान पान में किसी तरह की रोक टोक उन्हों ने रक्खा ही नहीं। धोबी चमार और पंक्ति पावन तथा कुलीन से कुलीन अग्र जात ब्राह्मण सब एक हैं। पवित्र होटलों में सब एक साथ हम निवाले न हुये तो उन्नति क्या हुई। दूसरे वे हैं जो "आठ कनौजिया नौ चूल्हा" के पैरोकार हैं। सहोदर भाई हैं पर सह भोजन में हिचक रखते हैं जान चली जाय पर साथ बैठ एक पंक्ति में कभी न खायंगे। एक ओर महा अनाचार अपना रङ्ग दिखा रहा है दूसरे ओर महा अत्याचार ओर छोर को पहुंच गया है। एक ओर अनाचार पांव फैलाये हुये है दूसरे ओर बिचार की छिलावट का अन्त है। पर बिवेक की त्रुटि दोनों ओर पाई जाती है। ऐसी दशा में मध्यम श्रेणी Middling course का अवलम्ब हमारी समझ में बड़ी बुद्धिमानी है। उचित है कि पहले एक २ जाति वालों का सह भोजन हो; फिर द्विजाति सब एक हो जांय; उपरान्त अन्त्यज को बरकाय शूद्र को भी अपने साथ समेट लें। धर्म प्रवर्तक ऋषियों ने उच्छिष्ट भोजन पर बड़ा ज़ोर दिया है सो बरकाना बहुत उचित है नवीन वैज्ञानिक भी अपने बिज्ञान से उच्छिष्ट को हानि कारक ठहरा रहे हैं। इस समय लोग समुद्र यात्रा के बड़े उत्सुक हो रहे हैं और सच है बिना बाहर पांव निकाले अब देश में धन का बढ़ना बहुत असम्भव है। हम ऋषियों के बचनों से सिद्ध कर सके हैं उच्छिष्ट भोजन त्यागे रहे तो बिदेशों में जानेसे कोई हानि नहीं है। जो हम वहां से लौट प्रायश्चित्त कर फिर अपने धर्म में आ जांय। पर वे जो बिलायत गये हैं वे तो यहां ही से लोहे तांबे उतर सर्ब भक्षी हो वहां जाते हैं। बिलायत में रह हम शूद्र पाचित कच्ची रसोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तक खा लेने में भी धर्म में कोई हानि नहीं मानते और इसमें प्रमाण दे सक्ते हैं पर किसी अनार्य म्लेच्छ जाति का स्पर्श भोजन में न होने पावे तो। इस समय के प्राज्ञं मन्य इसे काहे को मानेंगे यही कहेंगे यह बेहूदा है बे अक्किली की बात बक रहा है अस्तु ॥

अब दूसरा पक्ष बिवाह को लेते हैं हमारे यहां के पूर्वज बुद्धिमानों को जैसा भोजन का बुरा असर बुद्धि पर अनुभव हुआ है वैसा ही इस सङ्कर जाति का होना भी अनुभूत सिद्ध है। एक ही जाति या वर्ण के लोग किसी आबो हवा में रहते हों उनसे जो औलाद होगी वह सब भांति अच्छी शरीर बुद्धि तथा गुण कर्म किसी में हेठी न होगी और उनकी औलाद सदा फलती फूलती चली जायगी। हमारे यहां के ऋषियों ने एक गोत्र में बिवाह का निषेध किया है उसके यही माने हैं कि समान गोत्र को छोड़ दूसरा गोत्र वाला कहीं हो आपस में यौनिक सम्बन्ध कर सकता है। अब जो हम लोगों की सैकड़ों जाति और फिरके हो गये हैं वह इसी से कि परस्पर का आवा गमन रहा नहीं मुसल्मानों का अत्याचार बे हद्द था जो जहां बसे वहीं के हो गये उनके एक २ फिरके बन गये। अब इस बर्तमान शासन के स्वास्थ्य में एक छोर से दूसरे तक रेल के द्वारा आवा गमन खुल गया है तब उस Conservatism परिवर्तन बिमुखता को छोड़ देने में कौन सी हानि है। पर हमारे संशोधकों का ध्यान ऐसी २ बातों की ओर नहीं है वे उछल कर अंत की सीढ़ी पर जाया चाहते हैं। पुराने खयाल वालों को जो पुरखों से होता आया है उससे बाल बराबर भी इधर उधर हट जाना महा पाप है इन दोनों के दो मत की कशा कशी से सत्यानाश हो रहा है। यूरेशियनों की तरह दो जाति के सङ्कर से जो औलाद होगी उस में माता पिता दोनों में से किसी का तेजस्वी गुण न आवेगा। बहुधा देखा गया है पहले तो ऐसों की औलाद ही नहीं चलती, चली भी तो उनकी खच्चर की सी पैदाइश का अंत वहीं से हो जाता है। औलाद चली भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तो निस्तेज निकम्मी किस प्रयोजन की। इसलिये यौनिक सम्बन्ध अपनी ही जाति और अपने ही वर्ण में होना ठीक है। सह भोजन अलबत्ता एक जाति के समस्टिका दूषित न होगा अनाचार तथा अत्याचार की सीमा के बाहर न होना चाहिये। यौनिक सम्बन्ध में जिस घराने की लड़की हम लावें उसको भर पूर परख लें तो औलाद तेजस्वी और सब तरह बड़ी उत्तम होगी। खान पान में भी दूषित चरित्र वाले को तो बरकाना ही चाहिये। पर यह हमारे नव शिक्षित काहे को मानेंगे अस्तु॥

## शिव पंचक।

( शिखरणी )

न जानू मैं पूजा जप तप न जानूं शिव अहो।
न मेरे में विद्या धन बल न तौ भी सुख चहों॥
महा पापी हूं मैं कुटिल अति कामी सच कहौं।
कृतघ्न क्रोधी हा! चरण तव कैसे शिव लहौं॥ १॥
फिरा भूला हा! हा! बिषय रत हो दुःख सहते।
पिता माता दारा सुत मम सभी हाय! कहते॥
सदा ईर्षा हिंसा कपट मद से देह दहते।
बिना तेरी सेवा सुख विभव औ शान्ति चहते॥ २॥
हुई है जो भूलें शिव अब उसे माफ करके।
मुझे दीजै स्वामी शरण सब दोषादि हर के॥
करूं जैसे सेवा प्रभु तव सदा शुद्ध मन हो।
हरूं सारी बाधा भव भय हज़ारों दहन हो॥ ३॥
जरै है हा! छाती तन मन दुखाग्नी दहत है।
न सूझै क्या कीजै दुख नित हज़ारो सहन है॥
मुझे तो तेरी ही शरण शिव बाधा हरन है।
कृपा कीजे स्वामी शिव! अब नहीं तो मरन है॥ ४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बनों में राजा वा बन २ फिरौं रङ्क बन के ।
कहाऊं साधू वा अधम अति सङ्गी कुजन के ॥
फिरौं स्वेच्छा से वा शिव ! करहु सेवा कुजन के ।
न छोड़ूं मैं ध्याना प्रभु तदपि तेरे चरन के ॥ ५ ॥

लछमन प्रसाद पाण्डेय बालपुर ।

---

## नाम या शब्द की उत्पत्ति का कारण ।

सृष्टि कर्ता ने अपनी इस अद्भुत रचनासमष्टि की उत्पत्ति और बिस्तार में कैसा घना चक्कर छोड़ रक्खा है कि क्या मज़ाल कि परिन्दा पर मार सके । पर इनसान एक ऐसा शैतानी खिल्त का मख़लूक है कि कोई चीज़ नमूद नहीं हुई कि उसकी पैदाइश का नाम व निशान तथा उसके वजूद का ज़माना अर्थात् वह कब तक क़ायम रहेगी सब का पूरा पूरा पता लगा लेता है । इतना ही नहीं वरन् उसकी जब जैसी ज़रूरत हुई वैसा एक प्रचलित नाम उसका क़ायम कर लेता है । इतना ही नहीं बल्कि उसके नाम की चित्थाड़ कर डालता है । एक बात यहां पर हम और कहा चाहते हैं कि नाम कोई न कोई शब्द होगा और वह किसी न किसी शब्द में बोला या लिखा जायगा तो सिद्ध हुआ कि अक्षरों की योजना या शब्द ही एक नाम है । इन्हीं शब्दों का बिचार कर हम सोते २ चौंक उठे हैं और जो शब्द या नाम चल पड़े हैं उनकी उत्पत्ति क्या है या उनका उसका ऐसा नाम क्यों पड़ा इसका कारण जो हमारी बुद्धि में आया उसे नीचे प्रगट करते हैं आरम्भ से लीजिये ॥

दो आदमी आपस में लड़ झगड़ रहे हों कुछ ते न हुआ तो चट कह बैठते हैं "ईश्वर जानता है" "ईश्वर हमारा साक्षी है" मानो ईश्वर को संसार के इतने जगड्वाल में कोई दूसरा काम ही न रहा सिवा इन दोनों के झगड़ों को एक टक दृष्टि जमाय देखते रहने के । तो निश्चय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digltized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हुआ कि दो की लड़ाई झगड़ा ईश्वर की साक्षी के उत्पत्ति का कारण हुआ ॥

प्रयाग समाचार मर गया था फिर जी उठा पर नाम इसका ठीक न रहा इसका नाम होना था "मालवीय निन्दा समाचार" जब से इसने फिर के जन्म ग्रहण किया तब से इसको दूसरी कोई बात ही न मिली कि उस पर यह अपनी लेखनी की कारीगरी झलकाता सेवाय माननीय मालवीय महोदय के कामों की समालोचना के। तो मालूम हुआ कि मालवीय महोदय के काम इसके ऐसा लिखने की बुनियाद हैं। ऐसा ही राघवेन्द्र संसार भर के मनुष्यों के चरित्र के संशोधन का बीड़ा उठाये हुये औरों की छींट उड़ाने को हातिम बन रहा है। तो संसार के चरित्र का संशोधन राघवेन्द्र के हातिम बनने का बाइस हुआ। बिदेशों में यहां का अन्न ढोया चला जाता है इसलिये कि हम लोग ज़ियादह खाने के आदी न हो जांय और अजीर्ण के कारण प्लेग और अधिक न बढ़ जाय। तो प्लेग के बढ़ जाने का खौफ़ बिदेशों में अन्न ढो जाने का कारण हुआ। ऐसा ही अन्न के बदले रुपया हमे दिया जाता है सही पर अनेक बिलायती कारीगरी तथा दूसरे २ ज़रियों से हम से फिर छीन लिया जाता है। इसलिये कि हमारे यहां उसके रखने की जगह नहीं है अथवा हमे रुपया सौंत के रखने का शऊर नहीं है। या प्राकृतिक नियमों की काररवाई दिखाई जाती है कि चीज़ों के हेर फेर या अदला बदली में रुपयों की क्या दशा होती है। अथवा जैसा बरसात में पानी तालाब और नदियों में थोड़े दिन ठहर अन्त में सब का सब जा समुद्र में मिलता है। "सर्व देव नमस्कारं केशवं प्रतिगच्छति" ऐसा ही रुपया सब हर एक बहाने यहां से ढोया जा रहा है। और कितने तरह के टैक्स छोड़ नमक का महसूल कम कर दिया गया है इसलिये कि नमक सस्ता हो और हम लोग इतने दिनों तक पेट भर खा खा कर बहुत मोटाय गये अजीर्ण होने लगा है तो अब कुछ दिन अन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



छोड़ नोन ही फांक कर अपनी बलवाई पचावें। या इस बात के सबूत के लिये नोन का टैक्स कम कर दिया गया है कि तुम चिल्लाया करो क्या होता है अन्त में निंबुआ नोन चाटने को तुम्हे मिलेगा सो नोन की तो कमी न रही निम्बू अलबत्ता तलाश करना पड़ेगा सो मालटा से इम्पोर्ट हो आजायगा। मालटा का नीम्बू डाकृर लोग बड़ा ज्वरघ्न भी बतलाते हैं अब प्लेग को भी आप यहां से हटा हुआ समझो। अथवा दयालु सरकार ने जगह २ नहर और नल के द्वारा पानी का बन्दोबस्त करी दिया है नोन सस्ता हई है तो अब नोन खाय पानी पी पी हिन्दुस्तान के कुदिनों को सरापा करो। या नोन का कर इसलिये माफ किया गया है कि जब तक तुम नोन सेतुआ बांध आन्दोलन करने में उद्यत न होगे तब तक निम्बुआ नोन चाटते बैठे रहोगे॥

बंगाल के दो टुकड़े किये गये इसलिये कि आपस के फूट की बीमारी इतनी बढ़ गई थी कि बंगाल जो हिन्दुस्तान के बगल में है या हिन्दुस्तान के जिस्म का बगल समझा गया है कखरवार की बीमारी समान उस में नश्तर दे देने से गन्दा खून सब निकल गया। अब इसकी एक २ रगों में जोश भर रहा है मुमकिन है हिन्दुस्तान अब फूट की बीमारी से सेहत पा जाय। ऐसाही माडरेट भीतर २ देश की भलाई के खयालों में चूरंचूर हो रहे हैं पर लोग उन्हें यही समझते हैं कि ये गवर्नमेंट के खुशामदी हैं और कोई ऊंचा पद या टइटिल के ख्वाहिशमंद हैं इसी से नरम रहते हैं गरम कभी होते ही नहीं। एक्सट्रीमिस्ट बायकाट से जल्द देश को उभाड़ा चाहते हैं और देश की पोलिटिकल आबो हवा Atmosphere में हरारत पैदा कर दिया चाहते हैं। पर नरम दल वाले यही समझते हैं कि ये काम बिगाड़ रहे हैं मुल्क अभी तैयार नहीं है कि वहां बायकाट के वसूल काम में लाये जांय। इस तरह पर टटोल लिया गया कि कार्य और कारण का सम्बन्ध ऐसा दृढ़ है कि कभी ढीला पड़े ही गा नही कार्य भया नहीं कि कारण रूप एक नाम उसका जन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समूह में पड़ जाता है और सृष्टि के अंत तक उस शब्द का संकेतित अर्थ लोगों में प्रचार पाय जाता है। किसी वस्तु का प्रादुर्भाव हुआ नहीं कि उसके होने का कारण या उसका एक नाम उस वस्तु की उत्पत्ति के पहले मालूम होने लगता है। संसार के स्थावर जङ्गम जितने पदार्थ हैं कीटानु-कीट से ले ब्रह्मा पर्यन्त अथवा एक परमाणु से ले बड़े उच्च पर्वत तक सृष्टि की रचना से पहले उसको एक नाम से पुकारने की आवश्यकता मालूम पड़ने लगती है और उस वस्तु की पहिचान के लिये उसका नाम धर दिया जाता है। जैसा आज कल बायकाट के नाम से एक नई हवा बह चली है। पहले सर्व साधारण में कोई बतला दे कि बायकाट इस शब्द को कोई जानता रहा हो; कानग्रेस करते २ लोग ऊब गये कुछ न हुआ; जब सृष्टि कर्ता जगन्नियन्ता ने यह सोचा कि अब New spirit नये तरह का जोश लोगों में फैलने की ज़रूरत है लार्ड कर्ज़न के द्वारा नई गरमी लोगों में पैदा हो गई और बायकाट उसका नाम भी धर दिया गया। यह भी याद रहे संसार में जितने पदार्थ हैं निरर्थक कोई भी नहीं हैं। मन में पहले खाहिश पैदा होती है धीरे २ मन और खाहिश की रगड़ से चट वह चीज़ उपज खड़ी होती है तुर्त ही उसका एक नाम भी रख दिया जाता है। इस सूत्र के अनुसार आज कल नये जोश का पैदा हो जाना ख़ास कर भारत के भावी कल्याण रूप नव युवकों में किसी तरह फिज़ूल या निरर्थक नहीं है। निरर्थक होता तो इसके पैदा होने की कोई आवश्यकता हो न थी और जैसा सावन भादों की नदियों की बाढ़ सा यह रोज़ २ बढ़ता जा रहा है इससे आशा की जाती है कि भारत का उद्धार इसी से होगा॥

महादेव प्रसाद भट्ट

# भारतवर्ष में दान का सुधार॥

इस में सन्देह नहीं है कि भारतवर्ष में दान का विषय बहुत बिगड़ा हुआ है शास्त्रों में विद्या दान सब से उत्तम कहा गया है और साधु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ब्राह्मणों और अतिथियों का कर्तव्य विद्या का प्रचार और देश सेवा थी इसलिये यही लोग दान के सुपात्र माने गये हैं जब तक इस देश में विद्या की उन्नति रही तब तक ये महात्मा लोग विद्वान् होकर अपने सत् कर्त्तव्य का पालन करते रहे। परन्तु विद्या के लोप होजाने से ये लोग भी मूर्ख बन कर अपने कर्त्तव्य को भूल गये और केवल नाम के साधु ब्राह्मण रह गये। पिछली १९०१ की मनुष्य गणना के अनुसार ५२ लाख मनुष्य साधु या भिक्षुक बतलाये गये हैं। जैसा कि साधारण लोगों में राजा और रईस हैं वैसाही इस साधु मण्डली में भी बहुत से धनवान् हैं जिनकी आमदनी लाखों रुपये साल कीहै जैसे महंत गया की सालाना आमदनी ६ लाख से ज्यादा है, लखनऊ के साधु हज़ारा बाग के रियासत की आमदनी साढ़े तीन लाख रुपया साल।ना है। इसी तरह स्वामी शंकराचार्य के मठों और अन्य २ साधुओं के आखाड़े रियासतों और रईसों से लाखों रुपया दान में पाते हैं। करीब दो करोड़ भारतवर्ष में ब्राह्मणों की गणना है इन में से फी सदी ५ ऐसे हैं जो स्वयं व्यापारादि उत्तम रीति से धन उपार्जन कर जीविका करते हैं बाकी सैकड़ा पीछे ९५ केवल दान ही पर निर्भर हैं। यदि ४) फी मनुष्य का माहवारी पोषण पालन का ख़र्च हो तो ७ करोड़ रुपया माहवार ब्राह्मण लोग केवल दान में लेते हैं। इन के अतिरिक्त ५२ लाख साधु के पोषण में भी करीब २ तीन करोड़ रुपया माहवार हिन्दू जाति खर्च करती है क्योंकि साधु लोग पोषण के अलावा भारत वर्ष के तमाम तीर्थों में प्रायः रेलगाड़ी के द्वारा भ्रमण करते हैं और इसलिये हर एक साधु पर ६) माहवार से कम ख़रच नहीं पड़ता क्योंकि प्रायः साधु लोग तमाकू गांजा चरस अफीम आदि पदार्थों के सेवन में लिप्त हैं इस तौर दस करोड़ रुपया हर महीने भारत वर्ष का दान में खरच होता है। अब प्रश्न यह है कि दस करोड़ रुपया माहवारी दान के बदले हिन्दू जाति को क्या और कितना लाभ पहुंचता है, सो इन साधु और ब्राह्मणों में सैकड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पीछे एक भी अपने शास्त्रोक्त कर्त्तव्य का पालन अर्थात विद्या और स्वदेश वस्तु का प्रचार और देश भक्ति नहीं करते। इन में साधु और ब्राह्मणों का इतना दोष नहीं है जितना कि दान देने वाले लोगों का क्योंकि कुपात्रों और मूर्खों के दान देने से इन लोगों को सुस्त और दुराचारी बनाना है, और इसी कारण कुपात्रों और मूर्खों के दान देने वाले भी पाप के भागी हैं। क्योंकि यदि दान देनेवाले इन मूर्ख साधुओं और ब्राह्मणों को दान न देते तो कदापि यह लोग दुराचारी न होते। निस्सन्देह बहुत से लोग भिखारी बन गये हैं और भिक्षा मांगना इन्होंने अपना एक पेशा बना रक्खा है। चूंकि प्रायः यह लोग भिक्षा मांगते समय बहुत तङ्ग और दिक्क करते हैं। इसलिये बहुत से देश के शुभचिन्तकों की राय है कि जैसा अन्य सभ्य देश यूरुप और अमेरिका में नियम है कि भीख मांगना एक जुर्म है याने यूरुप और अमेरिका के देशों में भीख मांगने वाले को ६ महीने कैद मिलती है, क्योंकि वह सभ्य जातियां अपने देश में सुस्ती और दुराचार फैलाना नहीं चाहतीं, मगर भारतवर्ष में कानून के द्वारा भीख मांगना बन्द कराने का यत्न करना बहुत ही बुरा है क्योंकि दान का विषय एक धार्मिक बात है इसलिये धर्म की बातों में सरकार कभी दख़ल न देगी और सरकार से धर्म के विषयों में प्रार्थना करना अपनी मूर्खता और अयोग्यता जतलाना है। इसके सिवाय यदि भीख मांगना अन्य सभ्य देशों की न्याईं जुर्म भी माना जावे तो पुलीस जो आगे ही मूर्ख और असमर्थों पर बहुत जुल्म कर रही है उसको इन साधुओं और ब्राह्मणों पर जुल्म करने का अधिक मौका मिलेगा॥

इसके सिवाय भारतवर्ष में भिक्षुकों की गणना ज़ियादा बढ़ने का कारण यह भी है कि इस देश में सब प्रकार के लाभदायक व्यापार और कारख़ाने बिलकुल बंद हो गये हैं जिस से यहां के लोगों को जीविका नहीं मिल सकती और सब सभ्य देशों और जातियों में हर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



के कारखाने कायम हैं जिन कारखानों की बनी हुई चीजें संसार के हर एक देश में भेजी जाती हैं और इन्हीं कारखानों में हर एक देश के सैकड़ा पीछे ८५ लोग आजीविका प्राप्त करते हैं । इन्हीं कारखानों से यह सब देश और जातियां करोड़ों और अरबों रुपये हर महीने पैदा करके धनवान् हो रहीं है, परन्तु भारतबर्ष में विदेशियों के व्यापारियों ने यहां के सब कारखानों और लाभदायक व्यापारों को नष्ट कर दिया है जिससे कि लोग या तो नौकरी जिस को शास्त्रों में सब से नीच माना गया है "उत्तम खेती मध्यम बांज, निकृष्ट चाकरी भीख निदान", या भीख से लोग पेट पालन करते हैं" इस का मुख्य कारण यह है कि यहां के महाराजे, और रईस लोग अपने देश में बनी हुई चीज़ों को छोड़ विदेशी लोगों और चीजों के गुलाम बन गये और इसी कारण यहां से हर साल दो सौ करोड़ रुपया अन्य २ विदेशी लोग बाहर ले जा कर इस भारत वर्ष को निर्धन बना रहे हैं । इसी से इस देश में पाप ज़्यादा बढ़ने के ज़िम्मेवार वही हैं जो स्वदेशी चीजों को छोड़ बिदेशी चीज़ें बरतते हैं तो निश्चय हुआ कि वे लोग धर्मात्मा या धर्म के रक्षक हैं जो केवल स्वदेशी चीज़ों को बरतते हैं ताकि इस देश में फिर सब प्रकार के कारखाने स्थापित हो जावें जिनमें सब लोगों को आजीविका प्राप्त हो और फिर हमारा सारा दान विद्या की उन्नति ग्राम २ में पाठशाला और हर एक मन्दिर और धर्मशाला में पुस्तकालय और समाचारपत्रालयों के खोलने में लगे । ताकि फिर भारतबर्ष जापान और अन्य सभ्य देश और जातियों की न्याई स्वतन्त्र, धनवान् सभ्य और धर्मात्मा बने ॥ टहलराम, गङ्गाराम, ज़मींदार देहरा इस्माइल खां ।


## बालों को स्याह करने का सुगन्धित साबुन

इस साबुन के मलते ही सुफेद बाल मानिन्द असल के स्याह हो जाते हैं । एक टिकिया साबुन की मुद्दतों के लिये काफ़ी है । मूल्य प्रति टिकिया १) रुपैया ।

इस ने दुनिया के ख़िज़ाबों (कलफों) की क़दर घटा दी ।

केवल पहले ही ३ टिकिया के १०० ग्राहकों को टाइमपीस गेरेंटी ३ साल मुफ़्त मिलेगी । मिलने का पताः-

मेनेजर हेअर डाई सोप कम्पनी लाहौर


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# स्काट्स इमल्शन

यह सब महीने और सब ऋतु में खाने लायक है; भोजन के सदृश पोषक और दवा की दवा-

Always get the Emulsion with this mark —the Fishman—the mark of the "Scott" process

यह निर्बलों को बल देता है और पतले दुबले आदमी के शरीर में मांस पैदा कर मज़बूत और दृढ़ांग करता है। अंग प्रत्यंग जो ढीले हो गये हैं उनमें ताकत और फुर्ती लाता है। इसके सेवन से हड्डियां मज़बूत होती हैं और देह के भीतर पट्ठों में मज़बूती लाता है॥

यह रोगी दूधमुहे बच्चे को चंगा कर देता है और कमज़ोर बालकों को सहज़ोर। गर्भिणी और जिस के गोद में बालक है दोनो के लिये यह विशेष उपकारी है। इसलिये कि यह दूधमुहे बालक और मा जिसका दूध बच्चा पीता है दोनो को तनदुरुस्त रखता है॥

खांसी, ज़ुकाम, कफ, फेफड़े और गले की बिमारी, मन्दाग्नि और क्षीणता दूर करने वाली दवाइयों में इसके समान दूसरी दवा नहीं है और सदा गृहस्थी में रखने लायक है॥

लगातार सेवन से शरीर पुष्ट रह निश्चय बहुत तरह के रोगों से बचा रहता है। बालक से बूढ़े तक सब के लिये हित है। इससे नुकसान किसी तरह पर नहीं है। बड़े २ डाक्टरों ने इसकी तारीफ की है। किसी तरह की बीमारी यह पास नहीं फटकने देता। आप अपने डाक्टर से पूछ देखिये। इसके ऊपर एक मनुष्य का चित्र है जो पीठ पर मछली लादे है और वह तुम्हें ज़रूर फाइदा पहुंचावेगा। यह हाथ से छू कर नहीं बनाया गया सब दवाखानों में मिलता है॥

## स्काट ऐन्ड ब्रौन लिमिटेड

मेन्युफेक्चरिङ्ग किमिस्ट-लण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ॥ बच्चोंने तत्काल जानलिया ॥

देखिये दो बालिकाएं इस लाभकारी मीठी दवाको देखकर कैसी प्रसन्न होरही हैं

हमारा सुधासिंधु इतना प्रसिद्ध होचला है जिससे अब यह बात निर्विवाद सिद्ध होचुकी है कि नीचे लिखी बीमारियोंके लिये विना पूछेही लोग मंगाने लगे हैं जैसे कफ, खांसी, जाडेका बुखार, हैजा, शूल, दस्त, संग्रहणी, गठिया, दमा, कै होना, जी मचलाना, बालकों के हरे पीले दस्त और कै करना इनको सिर्फ तीन खुराकमें अच्छा करता है. इसके हजारों सार्टिफिकेट मौजूद है जिनके लिये प्रायः १२४ चित्रों सहित सूचीपत्र मंगाकर देखिये. मुफ्त भेजेंगे सुधासिन्धु की कीमत ॥) का शीशी ६ लेनेसे १ भेट १२ लेनेसे पांच रु०

देखिये श्रीमान् राजा इन्द्रजीत प्रताप शाह बहादुर तमकुही जिला गोरखपुर से क्या आज्ञा करते हैं।

महाशय आपका एक दरजन सुधासिंधु पहुंचा जो आपने भेजाथा यह दवा बहुत लाभ दायक है बुखार और पेटके रोगा में तो बहुतही फायदेमन्द है और बहुत रोगोंमें वैसा ही फायदा करता है और महरबानी करके आध पाव चन्दनादि तैल और बालारिष्ट भेजिये।

मगाने का पता:—

**क्षेत्रपाल शर्मा मालिक सुख संचारक कम्पनी मथुरा**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REGISTERED No. A--308.

# हिन्दी प्रदीप

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट है आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भा[illegible]॥

मई १९०७

मासिक पत्र

जि० २९ सं० ५

सम्पादक और प्रकाशक पंडित बालकृष्ण भट्ट प्रयाग

## विषय सूची


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| स्वावलम्बन ... ... ... | १ |
| नये दल की नई तान ... ... | ५ |
| एक नई तपस्विनी ... ... ... | १४ |
| विषमप्यमृतं क्वचिद्भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया ... ... ... | १५ |
| शोक ! ... ... ... | १८ |
| बिक्रमाङ्क देवचरित चर्चा ... ... | ” |
| हिन्दी केशरी ... ... ... | ” |
| प्राचीन नाम माला ... ... ... | १९ |
| खबरज ... ... ... | २४ |


सभाये पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥३)
समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज २)

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दीप्रदीप

जि० २६ } प्रयाग { मई
सं० ५ } { सन् १९०७ ई०

## स्वावलम्बन ।

अभी तक हमारे भोले भाले देशवासी स्वावलम्बन के गुण को नहीं समझते थे; अभी तक वे उन लोगों के ऊपर निर्भर थे जो कहने मात्र को हमारे मित्र हैं। जो ऊपर से तो बड़ी चिकनी चुपड़ी बातें करते हैं पर भीतर से यही चाहते हैं कि हमे निःसत्व कर डालें। पर अब हम लोग समझने लगे हैं कि स्वावलम्बन ही हमारा उद्धार करने वाला होगा। अङ्गरेज़ी में एक मसल भी है God helps those who help themselves

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अर्थात् जो अपनी मदद करते हैं उनकी परमेश्वर भी मदद करता है। जो अपने ऊपर निर्भर रहते हैं; अपने पैरों पर खड़ा होना जानते हैं वे ही उन्नति के भागी होते हैं। १५० वर्ष से हम लोग इसी आशा में थे कि सर्कार हम को हमारे हक़ दे देगी इसी से Memorials पर Memorials अर्ज़ियां पर अर्ज़ियां, Resolutions पर रिज़ोल्यूशनस् सर्कार के पास भेजे जाते थे; कानूग्रेस का सालाना जलसा भी इसी आशा से २२ वर्ष बड़ी धूम धाम से किया गया पर अब लोगों की आंखें खुली हैं कि इस भीख मांगने से कुछ नहीं मिलेगा। मिलेगा तभी जब तुम अपने पैरों पर खड़ा होना सीखोगे; भीख मांगना छोड़ दोगे। बहुत से अङ्गरेज़ नीतिज्ञ Statesman जो अपने को Liberal उदार कहते हैं हमको आशा दिलाते हैं कि तुम इसी तरह Agitation आन्दोलन करते जाओ जैसा कि करते रहे तो तुम्हारे सब हक तुम को मिल जावेंगे। लेकिन ५० बर्ष में हमको हमारे हक नहीं मिले तो हमको कोई क्या ग्यारएटी देता है कि आगे हमको ये दे देंगे। सन् ५७ के घोषणा पत्र के अनुसार हमारा एक हक यह भी है कि हिन्दुस्तानियों के साथ वैसा ही सलूक किया जायगा जैसा कि और सब British रिआया के साथ किया जाता है। यह हक कहां तक अदा किया जाता है यह Australia और South Africa में हिन्दुस्तानियों के ऊपर जुल्म से बिदित है। हिन्दुस्तानी South Africa और Australia में घूमने तक के लिये नहीं जाने पाते रोज़गार करना तो दूसरी बात है। योरप के और २ देशों में Germany, France और America में तो हिन्दुस्तानियों के साथ अच्छी तरह सलूक किया जाय लेकिन खास British coloneys में हिन्दुस्तानियों के साथ यह जुल्म हो। हिन्दुस्तान का दरवाज़ा तो सबों के लिये खुला है लेकिन हिन्दुस्तानियों के लिये सब जगह का दरवाज़ा बन्द है! बहुत से अङ्गरेज़ Statesmen हमारी दिल-जोई करने के लिये हमे फुसलाने के लिये या कहिये हमे धोखा देने के लिये हम लोगों को Fellow subjects कहते हैं पर यह बात कहां तक सच है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उनके बर्त्ताव से बिदित ही है। किन्तु जो सच्चे अङ्गरेज़ हैं वे साफ २ कह देते हैं कि तुम हमारे Subjects हौ। गुलाम हौ। मानो वे चेताते हैं कि तुम्हे गुलामी से छूटने के लिये कोशिस करनी चाहिये। अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये॥

हम लोगों को बड़ी आशा थी कि Liberal govt के होने पर हमको हमारे हक मिलेंगे लेकिन उसने साफ़ निम्बुआ नोन चटा दिया। हम तो तब जानते कि Liberal govt हमारे साथ सहानुभूति Sampathy करती है जब वह बिदेशी माल पर कर लगा कर स्वदेशी के उन्नति करने में सहायता देती। आज कल हमारे और हम पर शासन करने वालों के बीच में भेड़िया और बकरी का, चोर और जिसके यहां चोरी की जाती है उसका रिश्ता है तो बतलाइये क्या यह कभी सम्भव है कि ये हमारा उपकार करेंगे। हमारा हक हमे दै देंगे। हम लोगों की आदत पड़ गई है कि हम कोई काम बिना किसी की मदद के नहीं कर सकते। कोई भी काम करेंगे उसमें गवर्नमेंट की मदद ज़रूर लेंगे। जैसा किसी ने कोई इमारत बनवाया तो न और कोई मदद सही तो लाट साहेब या कलक्टर साहेब से उसे खुलवावेंगे। ये सब बातें भी हमारे उन्नति में बाधा पहुंचाने वाली हैं। हम को अब यह सीखना चाहिये कि हम गवर्नमेंट की बिलकुल मदद न लेकर काम करैं। स्कूल, कालेज, अस्पताल और भी जितने काम हैं हमे बिना गवर्नमेंट की मदद लिये हुये करना चाहिये। बिना गवर्नमेंट की मदद लिये हुये हमको बहुत सी कठिनाइयों से सामना करना पड़ेगा क्योंकि हम दूसरे की मदद लेने के आदी हो रहे हैं। पर हमको इन मुशकिलों से न डरना चाहिये क्योंकि एक मसल है मुशकिल मुशकिल को हल करती है। और अब भी हम सब इन बातों को न सिखेंगे तब कब सिखेंगे। गवर्नमेंट तो यही चाहती ही है कि हम थोड़ी सी मदद दे कर इन्हें अपना कृपापात्र बना लें जिससे ये हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जाल से न भाग जांय, इसी से कभी २ यह एकआध टुकड़ा हमारी तरफ़ फेंक दिया करती है। मसलन नोन का टैक्स कम कर देना हम इसी में निहाल हो जाते हैं और मारे खुशी के फूले नहीं समाते। लाला लाजपत राय का कथन है। भीख मांगने वाले को या तो भीख मिलती है या ठोकर खाता है; यदि भीख में कोई चीज़ मिल भी जाती है तो वह बहुत दिन तक नहीं ठहरती; देने वाला जब चाहे तब छीन सकता है। जैसा कि लार्ड रिपन महाशय ने हमको Lo al self gov't स्थानीय आत्म शासन दिया, लेकिन उधर लार्ड रिपन साहेब जहाज़ पर सवार हुये इधर उनके स्कीम पर पानी फेरने की दूसरी स्कीम तैयार होने लगी। लेकिन जो वस्तु अपने पुरुषार्थ से पैदा की जाती है वह कभी कोई नहीं छीन सकता यदि तुम स्वराज्य लेना चाहते हो तो तुम को इस भिखमङ्गी पालिसी को छोड़ कर मर्दानगी पालिसी इख्तियार करनी चाहिये। अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये। जब तक तुम अपने पैरों पर नहीं खड़े होगे तब तक तुम इसी तरह कर्मचारी अङ्गरेज़ों के अत्याचार की चक्की में पिसते रहोगे, यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारी सुनवाई हो तो तुम को पूरा इरादा कर लेना चाहिये कि हम अपना हक ज़रूर लेंगे। जब तक तुम इस तरह का पक्का इरादा न करोगे आज़ादी तुम्हारे पास नहीं आ सकती क्योंकि आज़ादी एक देवता है, और तुम्हारे काम ऐसे नहीं है कि उस देवता के मन्दिर में पांव धर सको। यदि तुम इस देवता के मन्दिर में जाना चाहते हो तो तुम अपने को आत्म त्याग Self sacrifice से पवित्र करो और स्वावलम्बन सीखो तुम्हें स्वच्छन्द जाति कर देने का यही एक मात्र द्वार है। कोई समय था जब तुम दुनिया की समस्त सभ्य जाति के अग्रगण्य थे काल चक्र की वक्र गति से तुम अब सबों के पैरों की धूल हो गये। अस्तु अब भी चेतो स्वावलम्बन का सहारा ले सुबह का भूला सांझ को घर पहुंच जाय तो उसे भूला न कहेंगे। तुम अपना सब खो बैठे अब उसे फेर पाने का यत्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करो सचाई के साथ कोशिश करोगे तो अवश्यमेव कृतकार्य होगे। सब के सब दिन एक से नहीं बीतते उठे हुये गिरे हैं गिरे हुये उन्नति के शिखर पर जा बैठते हैं। अब तुम्हारे उठने की बारी आई है स्वावलम्बन अपने में लाओगे तो स्वराज तुम्हारे लिये संचित रक्खा है बहुत जल्द पाय जाओगे॥

## नये दल की नई तान।

इस समय का प्रचलित विज्ञान सिद्ध करता है कि संसार के कोई काम विना कारण के नहीं होते जिन कामों का विज्ञान से अभी तक पता नहीं लगाया गया उन से यह नहीं निकलता कि वे काम बिना कारण के हो रहे हैं। किन्तु मनुष्य की बुद्धि अभी उस दरजे तक नहीं पहुंची कि उन कार्यों का कारण जान सके। इसी को साधारण लोग ईश्वर की अद्भुत लीला कहते हैं। कारण के अलावा ज़रूरत भी कामों के साथ २ लगी रहती है। विना ज़रूरत के संसार में कोई काम नहीं होता और हर एक कामों की ज़रूरत को हम जल्दी नहीं समझ सक्ते। अनेक विद्वानों का यह मत है कि हर एक ज़रूरी कामों का अन्तिम परिणाम भला है। आज हिन्दुस्तान के Political field मुल्की जोश के मैदान में एक नया दल पैदा हो गया है। निश्चय है कि इसके पैदा होने का कारण और ज़रूरत मौजूद हो। मुल्की जोश जो हिन्दुस्तान में उठ रहा है अङ्गरेज़ी शिक्षा से पैदा हुआ है दिन प्रतिदिन इसकी बढ़ती होना २२ वर्ष की कानग्रेस का नतीजा है बल्कि इसकी उत्पत्ति का कारण भी कानग्रेस ही को कहना चाहिये। २२ वर्ष तक बराबर जो गीत यह हर साल गाता रहा उसमें सफलता न देख इसकी कार-रवाईयों में अदल बदल होने की ज़रूरत जान पड़ी। पुराने ढर्रे पर चलने से लाभ की कोई आशा न रही। उस ढर्रे में परिवर्तन एक दम तो हो नहीं सकता इसलिये किसी बात का पहले अभ्यास डालने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बड़ी आवश्यकता है। यह नया दल कानग्रेस का Tone और तरीका Method के बदल जाने का बड़ा भारी चिन्ह है। इसका पैदा हो जाना स्वाभाविक है। किसी नई घटना का सहारा लेना बहुत ज़रूरी बात नहीं है। बल्कि यों कहना चाहिये कि यह नया दल न पैदा हुआ होता तो हानि थी। बहुतों का यह मत है कि इस नये दल के उपज खड़े होने का सबब बेसबरी और नाउम्मैदी है। पर हमारी तुच्छ बुद्धि में यह सत्य नहीं है। सबर के यह माने नहीं है कि हम सदा पुरानी लकीर के फकीर बने रहें। किसी अच्छे काम को हाथ में ले बिना पूरा किये छोड़ देना बुरा है सही। किन्तु इस लगे रहने और धीरज धरने से यह मतलब नहीं है कि हम हठी हो जांय। समय और वर्तमान देश दशा को Over look उपेक्षा कर दें। बरन सबर के यह माने हैं कि हम साबित कदम रह उस काम को बिना पूरा किये न छोड़ें। उसे पूरा करने की जब कोई दूसरी तरकीब देख पड़े तो पहला तरीका छोड़ने में हठ न करें। हमारे देश के लोग स्वभाव ही से परिवर्तन बिमुख Conservative हैं किसी नई बात के करने में अनेक तरह की अड़चन देख तरद्दुद और क्लेश उठाने से हटते हुये जिस काम को एक बार कर चुके हैं उसी को फिर २ करने में सुख समझते हैं। किन्तु इस क्लीवत्व के दूर हटाने को ईश्वर ने दृढ़ संकलपता की शक्ति Will power मनुष्य को दी है। जिस शक्ति को काम में लाने से हम को अपने कार्य की सिद्धि सुगम हो जाती है। उनका खयाल Ideal जिसको Praitical men करके दिखाने वाला कहेंगे वही उनके धीरज का सबूत है और धीरज तभी तक रहता है जब तक फल मिलने की आशा है और वह फल प्राप्ति "प्राक्टिकल" मनुष्य को भी उसके काम पर निर्भर है। जब फल का मिलना दूसरे के हाथ में है तो धीरज तभी तक रहेगा जब तक यह विश्वास है कि वह हमे अवश्य उस काम का फल देगा और जब फल की प्राप्ति अपने ही परिश्रम और मेहनत से है तो धीरज सदा बना रहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है। नरम दलवाले "माडरेटों" के धीरज का परिणाम गवर्नमेंट के हाथ में है और अब तक जो लाभ उन्होंने ऐसे धीरज और बिश्वास से उठाया है वह देश की वर्तमान् दशा गवाही दे रहा है। तो अब उनके धीरज को हम धीरज कहें या हठ इसका निर्णय पाठक स्वयं कर लें। हम ऐसे धैर्य को दूर ही से प्रणाम करते हैं॥

नाउम्मैदी बुरी बात है सही पर बिना बिवेक और बिचार के आशा रखना उससे भी अधिक बुरा है। यह आशा आदमी को कमज़ोर बना देती है और वह आशा निराशा है जो दूसरे के भरोसे पर की जाय। जिस आशा का फल अन्त में साफ़ जवाब है वह हमारे में कमज़ोरी का पूर्ण लक्षण प्रगट करती है। नरम दलवालों की आशा सर्कार पर निर्भर है जिसके आगे ३० करोड़ मनुष्य Dumb inert mass गूंगे बहिरे जड़ जन्तुओं का एक समूह है। जब ऐसा है तो गवर्नमेंट से कुछ उम्मेद करना निरी मूर्खता है। ऐसी आशा रखने वालों में मानो उनके पुरखों के बड़प्पन का जोश बिलकुल मिट गया है। नरम दलवालों की यह आशा मृग तृष्णा तुल्य है जो साफ़ २ धोखा है और देश के लिये हानिकारक है। चित्त से लगी आशा और बिश्वास का झूठा हो जाना मनुष्य जीवन में सब से कठिन और असह्य चोट है। गरम दलवालों की आशा अपने और अपने लोगों के पुरुषार्थ पर निर्भर है नरम दलवाले चाहो इसे नाउम्मैदी कहें पर वास्तव में सच्ची उम्मैद यही है। नये दल वालों ने उम्मैद नहीं छोड़ दी किन्तु गवर्नमेंट से उसे उठा कर अपने लोगों पर रख दी है जिसमें उनको सफलता हो चोट भी लगने से बचे रहें और मृग तृष्णा में न फसें॥

नरम दलवालों का कथन है कि अभी गरम दल का पैदा होना बे मौक़े और बिना ज़रूरत है। देश अभी उनके सिद्धान्तों पर चलने लायक़ नहीं हुआ बल्कि उनके सिद्धान्तों पर चलने से हमारी हानि है। सैत में बिरोध और बिगाड़ पैदा करना अच्छा नहीं जल में रह मगर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बिरोध करना कहां की अकिलमन्दी है। दो दल में आपस की फूट से काम पूरा होने में देर होगी और डर है कि कदाचित् काम पूरा न हो सके। इसलिये आपस का मेल और सुलह चाहते हो तो यह नया दल भी हमारा कहना माने और हमारे समान नरम हो जाय। अगर देश को लाभ पहुंचाना चाहते हो तो इस गरम दल को कमज़ोर करो। जो कुछ हमारे ऊपर ज़बरदस्ती की जाय उसे काल चक्र की महिमा समझो और निराश न हो कि ऐसी ही ज़बरदस्ती सदा बनी रहेगी। बहुत करो तो इस बात का शोक प्रगट करते रहो कि हम पर ज़बरदस्ती की जाती है। अगर उस ज़बरदस्ती का बदला लेना या तङ्ग करने का मन करोगे तो यह Morally धर्मनीति के अनुसार बुरा है। राजा से बैर करना तुम्हारे आर्य सिद्धान्त के सर्वथा बिरुद्ध है और समयानुकूल भी नहीं है। हमारे पास हथियार नहीं कि बदला ले सकें इससे जो नाच नचावें नाचते जाओ बोलो मत कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ भलाई होने वाली हो वह भी रोक दी जाय। क्योंकि हिन्दुस्तान की किस्मत बिलायत के हाथ गिरी है। तुम्हारा भला या बुरा जो कुछ है सब इङ्गलैंड के आधीन है। अगर स्वराज और स्वच्छन्दता भी चाहते हो तो British supramacy ब्रिटेन निवासियों की उत्कर्षता और सर्वाधिपत्य के साथ चाहो। अब देखना चाहिये नये दलवालों के सिद्धान्त या उसूल क्या हैं। क्या इस दल में कोई ऐसी बात है जो हिन्दुस्तान के लिये हानि कारक है? नये दलवालों का सब से बड़ा उसूल Self help अपनी सहायता अपने आप करना है। जिसके पूरा करने को वायकाट की बड़ी ज़रूरत है। दूसरा उसूल Self presevation आत्म रक्षा है। अब तक हमारी रक्षा का भार सरकार के हाथ में था जिसका नतीजा यह हुआ कि हमारी हालत रोज़ २ अबतर होती गई और मालूम हुआ कि अगर अपनी रक्षा का भार खुद अपने हाथ में न लिया गया तो कुछ दिन में फिर हम इस योग्य न रहेंगे कि अपनी रक्षा अपने आप कर सकेंगे। इसलिये कि हमारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और गवर्नमेंट का Interest नफा नुकसान आपस में ऐसा मिला झुला है कि गवर्नमेंट को लाचार हो ऐसा करना पड़ा। इसमें सरकार का कोई कुसूर नहीं, कुसूर अपनी कम अकली का है। हम लोगों ने Human nature मानुषी प्रकृति का यथोचित अभ्यास नहीं किया था यदि किये होते तो आत्म रक्षा का भार गवर्नमेंट के हाथ में न सौंप देते ॥

प्रत्येक जाति को अपनी उन्नति का खयाल सब के पहले रहता है। हर एक जाति का सिर्फ यह खयाल ही नहीं बरन् उसका कर्तव्य है कि वह अपनी रक्षा करे। हमारे मुकाबिले अङ्गरेज़ की कौम ने इस कर्तव्य का पालन अपने लिये भर पूर किया और गवर्नमेंट के ऐसा करने से हमारा नुकसान हुआ तो वह क्या करे। हमारा ही कुसूर था कि हम पहले ही से न चेते और अपनी रक्षा की तरकीब न सोंचा। अपनी रक्षा का भार गवर्नमेंट पर छोड़ मज़ा उड़ाते रहे। नये दलवाले कहते हैं हम अपनी रक्षा अपने आप करेंगे और ऐसा करने से यदि सरकार का नुकसान है तो उसका होना ज़रूरी है क्योंकि दोनों के नफा नुकसान Interest ऐसे ही मिले झुले हैं तो हमे उसकी कुछ परवाह नहीं। इसी को नरम दलवाले बदला लेना और तङ्ग करना Retaliation and coercion कहते हैं। परन्तु बदला न लेने की हद्द है। अगर दो आदमियों का झगड़ा है तो एक को चाहिये कि वह दूसरे को माफ कर दे चाहो उसने उसका कुछ नुकसान भी किया हो और अगर बदला लेने की पालिसी पर चला जायगा तो झगड़ा कभी रफा न होगा। माफ़ करने की हद्द भी व्यक्ति गत Individual तक है किन्तु जब एक जाति का झगड़ा दूसरी जाति के साथ है तो माफ़ करना Sencide आत्मघात करना है। तवारीखों में ऐसे उदाहरण नहीं पाये जाते कि ऐसी दशा में जब एक कौम का नफा नुकसान दूसरी कौम के साथ आ मिला हो तो एक ने दूसरी कौम को माफ कर दिया हो। ऐसे मौके पर सब ने अपनी रक्षा धर्म समझ की है। हिन्दुस्तान ने भी इस धर्म को इतना नुकसान सह कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सीखा है अस्तु अन्त को सीखा तो सही । इसी को नरम दलवाले बदला लेना Retaliation और तङ्ग करना Coercion कहते हैं तो कहा करें कोई हर्ज़ नहीं । हम अपनी रक्षा तभी कर सक्ते हैं जब हमारे में अपनी मदद अपने आप करने की ताक़त और जोश हो । वह ताक़त और जोश तभी आ सक्ता है जब हम दूसरों का सहारा लेना छोड़ दें । माडरेट दल वाले कहते हैं अभी हम अपनी सहायता आप नहीं कर सक्ते बिना गवर्नमेंट के सहारे के । बहस के लिहाज़ से यह बात मान भी ली जाय तो इसमें किसका दोष हमारा या सरकार का ? लोग अपनी सहायता आप तभी कर सक्ते हैं जब उनको इसके सीखने का मौका दिया जाय । अगर १५० वर्ष तक अङ्गरेज़ी राज के उपरान्त भी हम लोग जो कोई बहशी कौम नहीं थे न बुद्धि में किसी मनुष्य जाति से हेठे हैं इसे न सीखा और अपनी मदद अपने आप न कर सके तो यह हमारे शासन कर्ताओं की खुद गरज़ी का सबब है । हम लोगों में इसका माद्दा है हिन्दुस्तानी भाइयों ने जहां तक मौका मिला है गवर्नमेंट को अपने काम से दिखा दिया है । इस गुण को प्रगट कर दिखाने के पहिले दूसरे के सहारे को बिलकुल त्यागना पड़ेगा । इसी को नये दलवाले वायकाट कहते हैं । अपनी रक्षा करने और अपने पैरों से खड़ा होने का यह एक मात्र उपाय है । यह कोई नई बात नहीं है इसका चलन हिन्दू समाज में पहले से चला आया है । जब समाज को किसी मनुष्य के कामों से हानि पहुंचती है तो उसे वायकाट अर्थात् जाति बाहर कर देते हैं । जिसमें उस मनुष्य से समाज की रक्षा रहे "त्यजेदेकं कुलस्यार्थे" आदि वाक्य इसकी गवाही दे रहे हैं । इस वायकाट में आत्म रक्षा का बहुत भारी भाव है दूसरों को हानि पहुंचाने के बिपरीत उसके कामों के सुधार और शिक्षा का प्रयोजन इसमें है । वायकाट शब्द के कान में पड़ते ही नरम दलवालों को चौकना न चाहिये इससे उनके दल को कोई भय नहीं है । इसके अनेक रूप हैं उनमें सब से बड़ा Industrial और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



Political व्यवसाय सम्बन्धी और राजनीति सम्बन्धी वायकाट या वहिष्कार है। व्यवसाय में वहिष्कार इसलिये है कि हम अपने देश के वनिज को फ्रीट्रेड की पालिसी से कंपिटीशन में अपने को बचावें और अपनी उन्नति करें "कंपिटीशन" रोज़गार में दूसरी जाति के साथ होड़ में "फ्रीट्रेड पालिसी" व्यवसाय में स्वच्छन्दता वाले क्रम के अनुसार वही जाति और देश पार पा सक्ता है जो Manufacture दस्तकारी में बढ़ा हुआ है और विज्ञान के नये २ हाल के निकले उसूलों को काम में ला सक्ता है। पर कृषक जाति या कृषि प्रधान देश को फ्रीट्रेड से नुकसान है बिलायत इसका सबूत है। जब इङ्गलैंड की तिजारत इस ऊंचे दरजे तक नहीं पहुंची थी तब जो माल बाहर से वहां आता था उस पर भारी महसूल लगा कर उसको उन्होंने महंगा कर दिया और अपने देश की Industry कारीगरी को साथ ही साथ फैलाते भी गये। बिलायत में स्वराज था Protective terrif वाले कानून से रोज़गारियों को बांध रखने में कोई देर न लगी। हिन्दुस्तान में आज न स्वराज है न कानून बनाने का इख्तियार अपने हाथ में है तब हम कैसे बिलायत वालों के साथ कंपिटीशन में पार पा सकते हैं॥

कानून बनाने में हम लोगों को कहां तक अधिकार है इसे लेजिसलेटिव कौंसिल के मेम्बर खुद जानते हैं। गवर्नमेंट की पालिसी है। "होइहैं वही जो हम रचि राखा। क्यों करि तर्क बढ़ावहु शाखा॥" अङ्गरेज़ी माल का वायकाट न किया जायगा तो यहां का ब्योपार जड़ पेड़ से उखड़ जायगा। गवर्नमेंट तथा कंपिटीशन और फ्रीट्रेड के चाहने वाले ज़रूर इसे बुरा कहेंगे क्योंकि हिन्दुस्तान के व्यौपार का बढ़ना इङ्गलैंड के फायदे के बिरुद्ध है किन्तु हमारा धर्म है कि हम अपनी रक्षा करें इङ्गलैंड या गवर्नमेंट को इसमें नुकसान है तो हमारा दोष नहीं। जैसा इङ्गलैण्ड की तिजारत बढ़ने से हिन्दुस्तान का व्यौपार नष्ट होने में वहां के लोग अपना कुसूर नहीं समझते बरन इसे अपना धर्म और कर्तव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मानते हैं वैसाही हम अब उसका बदला चुकाते हैं तो क्या बुराई है॥

राजनैतिक Political बायकाट ब्रिटिश जाति की सर्व श्रेष्ठता Supremacy हटाना है। इसका Ideal स्वराज है स्वराज से यह मतलब है कि हम लोगों की हालत और इज्जत अपने देश में वैसाही हो जैसा अङ्गरेज़ों की इङ्गलैण्ड में फरासीसियों की फ्रान्स में जरमनों की जरमनी में जापानियों की जापान में है। इससे यह प्रयोजन है कि हम अपने मुल्क में अपने लिये कानून खुद बनावें। टैक्स लगावें और मुल्क की आमदनी के रुपयों के खर्च का सब अधिकार अपने लोगों के हाथ में रहे। इसका प्रयोजन सर्कार को तङ्ग करने या बैर भाव का नहीं है बरन गवर्नमेंट के ऐबों को दूर करने और शासन प्रणाली अपने लोगों के हाथ में आने से है। सारांश यह कि हिन्दुस्तान को गुलामी से छुटाय हिन्दुस्तानियों को एक आज़ाद बनाना है और अपनी पोलिटिकल हैसियत दुरुस्त करना है। माडरेट कहते हैं १८३३ के चारटर में और ५८ के घोषणा पत्र में जो हक हमे दिया गया मिल जाय तो हमारा मतलब निकल आवे इसके पाने के लिये हम इण्डियन गवर्नमेंट और इङ्गलैण्ड की पबलिक से प्रार्थना करें दलीलों से कायल करें। इसको भीख मांगना नहीं कहते अगर मांगने से आज़ादी मिल जाय तो कौन ऐसा दुरात्मा है जो इसका बिरोध करे। तब यह बात मानी जाती है कि हमारा हक है और दे दिया भी गया तौ भी हमे न मिला तो यह कोई धोखा है। ३३ का चारटर हमे तब मिला था जब हमे अपना हक पहचानने का शऊर भी न था और देश में हल चल फैला था उस समय क्या निश्चय था कि अङ्गरेज़ी राज्य यहां ऐसा सुस्थिर होगा। दूसरा ५८ का घोषणा पत्र हमे किस समय मिला उसे पाठक स्वयं सोच लें। हम लोगों ने न जानिये कितना रुपया और बुद्धि Energy इस मांगने में खर्च किया पर कुछ फल न हुआ। आज तक मांग कर किसी ने आज़ादी पाई है कौन ऐसी वेवकूफ़ कौम है जो मांगने से हुकूमत दे दे। क्या अमेरिका ने मांग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कर पाया है। अब सवाल यह पैदा होता है कि मांगने से न मिलैगी तो क्या वायकाट हमें आज़ाद कर देगा ?

गवर्नमेंट से हमे आज़ादगी तभी मिलैगी जब हम यह दिखा दें कि बिना सर्कार की सहायता के हम अपना शासन अपने आप कर लेते हैं। स्वच्छन्द होने के पहिले हम सबों को एक जाति Nation बनना पड़ेगा। इसके यह माने नहीं है कि मुसलमान ईसाई पारसी इत्यादि जुदे २ मज़हब के लोगों को अपना २ धर्म छोड़ एक हो जाना पड़ेगा ऐसा होना असम्भव है। किन्तु हर एक जाति वालों को अपना फायदा मुल्क के फायदे के लिये छोड़ देना पड़ेगा और हर एक जाति वालों में यह भाव पैदा करना होगा कि हिन्दुस्तान हमारा है और इसी की भलाई या बुराई से हमारा नफा नुकसान है। एक २ आदमी में वह जोश पैदा करना पड़ेगा जो देश के लिये जान दे देना सुलभ कर दे। पत्थर को बिना तराशे मूर्ति नहीं बन जाती बिना तकलीफ़ उठाये आज़ादी नहीं मिल सकती जब तक ऐसे २ भाव मन में उदय न होंगे तब तक गुलामी का जामा हम से न उतरैगा और इन भावों की उत्पत्ति अङ्गरेज़ी शिक्षा का फल है। शिक्षा भी गवर्नमेंट के भरोसे न रह अपना निज का स्कूल कालिज तथा युनिवर्सिटी हमे करना होगा इसलिये कि सर्कार जो हमे शिक्षा देती है वह उतनी ही कि हम राज भक्ति में दृढ़ रह सर्कारी नौकरी कर सकें। गवर्नमेंट हमे Liberal education देने से हिचकती है। नये दलवालों का सब से बड़ा उद्देश्य शिक्षा बिभाग को अपने हाथ में लेना है जिसमें लड़कों को जी खोल उदार शिक्षा Liberal education दिया जाय। पढ़ लिख सर्कारी नौकरी के पीछे न दौड़ हम स्वछन्द जीविका कर देश सेवा में अपने को लगावें। वायकाट के नाम से कौमी जोश का उभाड़ देश भर में छा रहा है इस अग्नि को शान्त करने का उपाय सोचना मूर्खता है। यह आग देश की दुर्गति को बिना मिटाये बुझैगी नहीं। इस वायकाट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आन्दोलन की कितनी ज़रूरत है सो नरम दलवाले और गवर्नमेंट भी आगे चल कर देखैगी ॥

मदन मोहन शुक्ल।

## एक नई तपस्विनी।

एक समय की बात है कि एक गौरांगिनी माऊन्ट आबू की चोटी के एक सूनसान बङ्गले में कठिन तप को करती भई। कुछ दिन तक केवल मटन चाप ही चबा कर रही कुछ दिन तक खाली ऐक्स्ट्रा नम्बर १ (Extra No. 1) ही लेती रही यहां तक कि आख़िर को खाली सोडा वाटर और लीमोनेड ही से उदर पोषण करने लगी। तमाम पर्बत उसके तप से हिलने लगा, समस्त पशु पक्षी व्याकुल होने लगे, बड़े २ पादरियों के दिल में वहिशत सवार हो गई न रहा गया प्रभु ईशू को याद किया और पुकारा माई लार्ड न जाने क्या होने वाला है एक मेम अपने कठिन तप से क्या करना चाहती है। क्या हम लोगों की पोल खोलने ही को तप कर रही है? या हमारी जमात तथा सुसाइटी की उन्नति नहीं देख सकती? जो हो आप जल्द इस दावानल रूपी तप से हमे वायकाट करिये। आवाज़ आई घबड़ाओ नहीं तुम लोग भी वहीं चलो। कहना था कि बात की बात में तमाम बङ्गला पादरियों से भर गया। गुड फ्राइडे के ठीक 12 A. M. पर हज़रत मसीह प्रगट हुये और बोले "ऐ मेरी भोली भाली तपस्विनी तू क्या चाहती है?" मेम बोली "या मसीह हम अब कब तक तपस्या का दुख भोगेंगी कमवख्त हिन्दुओं में सात स्वर्ग हैं मैं चाहती हूं कि एक ईशू लोक मेरे लिये बनाया जाय और वहां वे ही लोग जाने पावें जो तुम्हारे अनन्य भक्त हों"। हज़रत ईसा बड़े प्रसन्न हुये और हंस कर बोले "एव मस्तु जाओ आज से तुम उस लोक की लफ्टेनेन्ट गवर्नेस नियत की गई हो। तुम्हारा वहां अखंड राज्य रहेगा, हिन्दुस्तान के जितने काले कोयला से किरंटे सब तुम्हारे सेवक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



होंगे। बिलायत के लौटे हुये इङ्गिलिसाइज़ड नव युवक और राय बहादुरी चाहने वाले खुशामदी तुम्हारे शिकारगाह के जानवर होंगे। सेरों सुंघनी सूंघने वाले पुराने स्टाइल के घोंघा पण्डित तुम्हारी गाउन के बिलायती बटन होंगे। लखनऊ के आवारा स्टूडेंट तुम्हारे पियर्स सोप के बक्स होंगे। बिलायत जाने वाली भारत ललनायें तुम्हारे मुख की पाउडर होंगी। विधवा बिवाह और जात पात उठाने वाले सोशल कानफ्रेन्स के मेम्बर तुम्हारी बाईसिकिल के लैम्प होंगे। कर्मचारियों की हां में हां मिलाने वाले खुदगर्ज़ तुम्हारे जूता पोछने के ब्रुश होंगे। अपने फायदे के लिये स्वदेशी के प्रचार में बाधा डालने वाले कलकत्ते के माड़वारी और पुराने ढर्रे वाले अमीर तुम्हारी टोपी के खूबसूरत चिड़ियों के पर होंगे। इस समय के कोई २ हिन्दी पत्र के छिछोरे संपादक तुम्हारे गुसल खाने के कमोड होंगे। मुफ़्त में पत्र पढ़ने वाले नादिहन्द ग्राहक तुम्हारे लेटर वाक्स Letter-Box होंगे। जाओ हमारे बर प्रदान से तुम वहां अटल राज्य करोगी। यह कह प्रभु ईशू अन्तर्ध्यान हो गये। वह तपस्विनी भी अपनी तपस्याका फल पाय सन्तुष्ट हो ईशू लोक को सिधार गई॥ इति श्री मसीह पुराणे तपश्चर्या फल निरूपणं नाम प्रथमोऽध्यय:॥

लक्ष्मी कान्त भट्ट।

---

## विषमप्यमृतं क्वचिद्भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया।

ईश्वर की इच्छा से विष भी कभी अमृत हो जाता है और अमृत विष। हत भाग्य हिन्दुस्तान के लिये विष अमृत हो गया हो ऐसा कभी न देखा गया हां अमृत अलबत्ता विष हो जाता है। लार्ड रिपन महोदय ने देश में लोकल सेल्फ गवर्नमेंट इसलिये स्थापित किया था कि हम लोगों में आत्म शासन का माद्दा आवे अपने आप अपना शासन हम कर सकैं। लार्ड रिपन का धन्यवाद है कि उन्होंने शुद्ध देश की भलाई की नीयत से यह क्रम निकाला था जो प्रत्यक्ष अमृत स्वरूप था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पर हमारे हत भाग्य से वह अमृत विष हो गया। आत्म शासन अर्थात् अपनी हुकूमत तथा अपने मुल्क का इन्तिज़ाम हम अपने आप करने लग जांय या उसे सीखें सो तो खाक भी न भया। दुखदायी म्युनिसिपलटी का जन्म नगर २ अलबत्ता हो गया। म्युनिसिपलटी का क़ायम होना भी बुरा न था जो उसकी चूंदी ज़िला के कलक्टरों के हाथ में न रहती और मेम्बर केवल प्रजा की ओर से चुने जाते। इसके चुनने में गवर्नमेंट को टांग अड़ाने का क्या काम था। इस टांग अड़ाने का यह फल हुआ कि कलक्टर साहब उसी को मेम्बर मुकर्रर कर देते हैं जो सर्कार के खुशामदी और कर्मचारियों के हां में हां मिलाने वाले होते हैं। जिससे नुकसान यह हुआ कि जहां गवर्नमेंट और प्रजा के Interest नफा नुकसान में Competition परस्पर की उतरा चढ़ी आ पड़ती है वहां खुशामदियों का नम्बर अधिक होने से गवर्नमेंट के ओर का बोट अधिक हो जाता है और वह मन्तव्य Resolution पास कर दिया जाता है। उससे गवर्नमेंट फायदे में रहती है प्रजा पिस जाती है इसी कारण भारी भारी चुङ्गी तथा अनेक तरह के टैक्स बराबर बढ़ते गये और बढ़ते जा रहे हैं। जिस चीज़ का ज़ियादह खर्च देखा गया उस पर कड़ी चुङ्गी कस दी गई जिसका कम खर्च मालूम हुआ उस पर चुङ्गी भी मामूली रक्खी गई। जैसा घी और मसालों में घी का खर्च अधिक पाया गया तो उस पर चुङ्गी बढ़ा दी गई मसालों में कम कर दी गई ऐसा ही और २ चीज़ों में भी है। घी के बारे में तो हम कई बार लिख चुके हैं कि गो धन छीण होने से बल और पुष्टि देने वाले घी और दूध हम लोगों को यों ही दुर्लभ हो रहे हैं तो घी दूध पर चुङ्गी कस देने का क्या काम था। क्या यही मनजूर है कि हम सर्वथा निर्मूल हो जांय। जब हमी न रहैंगे तब चुङ्गी किससे वसूल की जायगी। हाय बड़ा दुःख होता है किससे कहैं अत्याचार का अन्त है। यह हम लोग नहीं चाहते कि ये भांति २ के कर और चुङ्गी सर्वथा उठा दी जाय किन्तु इतनी मृदु रहे कि किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



क्यो न अखरै। जेठ की कड़ी धूप कैसा अखरती है वही माघ पूस का मृदु घाम सोहावना मालूम होता है। जो कहो टैक्स और चुङ्गी साधारण और मृदु कर देने से खर्च जो नहीं अांटता। तो क्यों इस क़दर खर्च म्युनिसिपलिटी बढ़ाये है "एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः प्राणैर्विमुच्यते" इस लोगों के शरीर का रस खींच Luxury अमीरी बढ़ाई जाती है। अस्तु हमे तो उस अमीरी का भी कोई सुख नहीं मिलता अङ्गरेज़ी बस्ती के आराम और आशाइस में हमारे शरीर का प्राण सदृश लाखों रुपया लगाया गया ता हमे क्या लाभ। जा केवल हिन्दुस्तानियों के सिपुर्द म्युनिसिपलिटी रहती ता कदाचित् ऐसा न होता। कहां तक अपने लोगों की वर्तमान दीन दशा पर खयाल न किया जाता। इसी से हमने कहा हमारे अभाग से अमृत भी विष हो गया। जा आत्म शासन के लिये था वह महा दुःख अत्याचार के रूप में परिणत हो गया। इस चुङ्गी के सम्बन्ध में हमे न जानिये कितनी बातें कहना है जिनमें संशोधन बहुत आवश्यक है। इस समय म्युनिसिपलिटी के अधिकारियों से इतना निवेदन करना बहुत ज़रूरी जान पड़ता है कि स्टेशन से उतरतेही तलाशी में जो भले २ लोगों की बे इज्ज़ती की जाती है सो उठा दी जाय। हमने अपनी आंखो से देखा है कि साहब लोग या कोई बड़े रईस बराबर बग्घी पर चढ़े चले गये हैं उन्हें किसी ने नहीं पूंछा गरीब मुसाफिर जो इक्के पर हैं वें घंटों तङ्ग किये गये हैं और उनकी तलाशी ली गई है। दूसरे घी की चुङ्गी ता अवश्य उठा देनी चाहिये नहीं तो कुछ दिनों में रुपये का आधासेर घी बिकैगा। इससे यही सिद्ध हुआ कि हम लोग रूखा सूखा खा किसी तरह प्राण पोषण करते हुये विदेशियों की सेवा टहल के लिये जीते रहैं। हमारे में बल और पौरुष की जड़ कटी रहे। अस्तु

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## हा शोक !

इतने थोड़े वय में बाबू राधाकृष्ण दास का इस असार संसार को त्यागना हिन्दी साहित्य को बहुत हानि कारक हुआ। ये हमारे श्रद्धास्पद सुग्रहीत नामधेय हिन्दी साहित्य के एक मात्र जन्म दाता बाबू हरिश्चन्द्र के फुफेरे भाई थे। यद्यपि अब इस समय हिन्दी में लेखकों की कमती नहीं है किन्तु लेख की वह प्रणाली जिसे भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र निकाल गये थे उसका कुछ स्वाद पढ़ने वालों को बाबू राधाकृष्ण ही के लेख में मिलता था। बिशेष शोक इनकी कुसमय की मृत्यु का है। ४२ वर्ष भी कोई उमर है किन्तु इस कलिकाल कराल ब्याल को कौन मना कर सकता है कि वह अपना प्रभुत्व प्रगट करने से रुका रहै। "पापी चिरंजीव सुकृती गतायुः" ॥ उक्त बाबू साहब हिन्दी के सुलेखक ही केवल न थे वरन सौजन्य के प्रवाह, शील के सागर, वैष्णव सम्प्रदाय के पक्के हिन्दू और पुष्टि मार्ग के दृढ़ प्रेमी थे। गो लोकवासी कृष्ण भगवान् इनकी आत्मा को सायुज्य दें॥

## विक्रमाङ्क देवचरित चर्चा।

उक्त पुस्तक को हम सहर्ष और धन्यबाद पूर्वक स्वीकार करते हैं। यह पुस्तक द्विवेदी जी ऐसे कृत विद्य की योग्यता का एक नमूना है। महाकवि विह्लण की प्रतिभा का निचोड़ समालोचना के ढङ्ग पर इसमें रख दिया गया है। मूल्य ≡) है। संस्कृत साहित्य के रसिकों को यह बहुत ही मनोरंजक होना चाहिये-पता इण्डियन प्रेस प्रयाग॥

## हिन्दी केशरी।

राज नैतिक आन्दोलन के अग्रणी तिलक महोदय के केशरी का अनुवाद रा० रा० माधोराव सप्रे के प्रबन्ध से नागपुर से प्रति सप्ताह निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य अग्रिम वार्षिक मै पोष्टेज के २) है। इसकी लेख प्रणाली टाइप और कागज़ सबी बढ़िया हैं। इससे अधिक सस्ता साप्ताहिक और क्या हो सक्ता है। भाषा में कहीं २ मराठी की झलक आ गई है आशा है आगे चल वह भी न रहैगी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## प्राचीन नाम माला ।

अङ्ग-गङ्गा के दक्षिण तट से कौशिकी नदी तक का भूभाग अंग देश कहलाता था । अब इस समय भागलपुर के पास का सब देश इसमें शामिल है । इसकी राजधानी प्राचीन समय में चम्पा थी जिसे लोमपाद पुरी कर्णपुरी या मालिनी भी कहते हैं । दण्डी ने दश कुमार चरित में ऐसा लिखा भी है । "अंगेषु गङ्गातटे बहिश्चम्पायाः" जेनरल कनिंगहैम का मत है कि चम्पा भागलपूर से २४ मील पूर्व थी । एक गांव वहां इस नाम का अब भी है जिसे चम्पापुर कहते हैं । धर्मशास्त्र वालों ने बिना तीर्थ यात्रा के अंग, बंग, कलिंग, सौराष्ट्र और मगध में जाने से पुनः संस्कार करना लिखा है "अंग वंग कलिंगेषु सौराष्ट्र मगधेषु च तीर्थ यात्रां विना गत्वा पुनः संस्कारमर्हति" ॥

अन्तर्वेदी अन्तरबेद या दो आबा प्रयाग से हरिद्वार पर्यन्त गंगा और यमुना के बीच का देश । पुराणों में यह देश बहुत पवित्र माना गया है ॥

अन्ध-अब यह तिलङ्गाना के नाम से प्रसिद्ध है । इसकी पश्चिमी सीमा घाट पर्वत थी । गोदावरी और कृष्णा इसकी उत्तर और दक्षिण की सीमा थी १५० मील लम्बी कोलेर नाम की झील यहां ही है । अङ्गरेज़ी पलटन में पहले यहीं के लोग भरती हुये इसी से फौज़ के सिपाहियों का नाम तिलङ्गा पड़ा । ऐसा मालूम होता है जिस समय मुसलमान आये अन्ध देश वाले सम्पूर्ण दक्षिण में अपना प्रभुत्व जमाये थे । अब्धि नगरी, द्वारिका ॥

अम्बा नदी-ससुरखदेरी एक क्षुद्र नदी जो बरसात के महीनों में फतहपूर के पास से निकल प्रयाग के पश्चिम यमुना में जा मिली है । महाभारत के उद्योग पर्व में काशिराज कन्या अम्बा के इतिहास से इसकी दन्त कथा मिलती है ॥

अर्द्ध जाह्नवी, कावेरी नदी । अर्बुदगिरि, आबू का पहाड़ । अलकनन्दा-गङ्गा की एक शाखा ॥

अश्मक-दक्षिण का एक देश-किसी २ का मत है । ट्रावनकोर का नाम अश्मक है जो मदरास प्रेविडेन्सी में समुद्र के दक्षिण तट तर एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स्वच्छन्द पुराना राज्य है। वृहत् संहिता में बाराह मिहरने कूर्म्म विभाग के प्रकरण में अश्मक को पश्चिम और उत्तर दिशा में लिखा है "पश्चिमोत्तरस्यां दिशि माण्डव्य तुषारतालहन मद्राः। अश्मक कुलूतलहड़स्त्री राज्य सिंह वनखण्डाः"। इसमें कुलूत कदाचित् किलात है॥

अवन्ती–इसका दूसरा नाम बिशाला भी है। कालिदास ने मेघदूत में "श्री बिशालां बिशालां" लिखा है। अवन्ती पुराने समय उस देश की राजधानी थी जहां शकारि बिक्रमादित्य राज करते थे। अब यह सिप्रा नदी के तट पर उज्जैन के नाम से प्रसिद्ध है। जहां ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर का प्राचीन मन्दिर है। मालवा का दूसरा नाम अवन्ती है। सप्तपुरियों में एक "अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका। पुरी द्वारावती, ज्ञेया, सप्तैता, मोक्षदायिका"। महाभारत के समय यह देश दक्षिण की ओर बिस्तार में नर्मदा तक था और पश्चिम की ओर माही नदी तक था। अवन्त्य देश के उत्तर एक दूसरा छोटा सा राज्य था जिसकी राजधानी चर्मण्वती या चम्बल पर दशपुर थी जो अब धौलपुर या धवलपुर के नाम से प्रसिद्ध है॥

आनर्त–सौराष्ट्र भी इसी का दूसरा नाम है। अब यह काठियावार के नाम से प्रसिद्ध है। प्राचीन समय द्वारिका इसकी राजधानी थी पीछे बल्लभीपुर हुई। राणा वंश के वंशी यहीं से जाकर उदैपुर में बसे प्रभास क्षेत्र जहां यादव वंशी आपस में लड़ कट मरे यहीं है। यह तीर्थ समुद्र के तट से थोड़ी दूर पर एक झील है। पुरानी द्वारिका हाल की द्वारिका से ७५ मील दक्षिण पूरब को रैवतक पर्वत के समीप जूनागढ़ के पास थी। रैवतक अब गिरिनार के नाम से प्रसिद्ध है। माघ कवि ने शिशुपाल बध में रैवतक का वर्णन बड़ी धम धाम के साथ अति उत्कृष्ट कविता में किया है। बल्लभीपुर भावनगर से १० मील पर वायव्य कोण को था जिसके उजड़े ढूहे वहां अब भी पाये जाते हैं। यहां की स्त्रियों के सौन्दर्य की कवियों ने बहुत प्रशंसा की है॥

आभीर–कोंकण देश के अधोभाग में तापी नदी के पश्चिम विन्ध्य पर्वत के ऊपर यह देश है "श्री कोंकणादधो भागे तापीतः पश्चिमे तटे आभीर देशो देवेशि विन्ध्यशैले व्यवस्थितः" और पुराण इसे उत्तर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मानते हैं किन्तु महाभारत और रामायण के अनुसार यह पश्चिम में था। अर्जुन के दिग् विजय में इसका नाम आया है ॥

इन्द्रप्रस्थ पुरानी दिल्ली के नाम से प्रसिद्ध है। यह यमुना के बांये तट पर हस्तिनापुर से ३० मील नैर्ऋत्य कोण की ओर है हरिप्रस्थ या शक्रप्रस्थ भी इसे कहते हैं। इन्द्रप्रस्थ वृकप्रस्थ जयन्त वारणावत ये सब एक साथ वेणी संहार में भट्ट नारायण ने लिखा है इससे मालूम होता है कि वे सब भी इसी के पास ही पास थे और पाण्डवों के अधिकार में रहे ॥

इरावती–रावी लाहोर इसी नदी पर है ॥

उत्कल–उड़ेसा ताम्रलिप्ता नदी के दक्षिण कपिशा नदी तक। रघुवंश में कालिदास ने लिखा है ॥

स तीर्त्वा कपिशां सैन्यैर्बद्धद्विरदसेतुभिः।
उत्कलादर्शितपथः कलिङ्गाभिमुखं ययौ ॥

कुतुबुद्दीन ऐबक के समय तक यह स्वच्छन्द राज्य था अब यह बङ्गाल की लफटिनेंटी में शामिल है। यहां की भाषा और ब्राह्मण प्रसिद्ध हैं। "सारस्वताः कान्यकुब्जाः गौडा मैथिल उत्कलाः" पञ्च गौड़ों में उत्कल भी है। "जगन्नाथप्रान्तदेश उत्कलः परिकीर्त्तितः" इस का दूसरा नाम ओड्र भी है उड़ेसा कदाचित इसी से बना है ॥

एकचक्रा–आरा ज़िला महाभारत के समय बकासुर के अधिकार में यह देश था ॥

कच्छ–काठियावार से लगा हुआ प्रायद्वीप कच्छ या भुज्ज के नाम से प्रसिद्ध यहां की धरती निपट बलूली है कच्छी घोड़े प्रसिद्ध हैं ॥

करतोया–दिनाजपुर और रङ्गपुर के ज़िलों में यह नदी बही है। इसका नांघना बर्जित है। गण्डकी बाहु तरणात्करतोयाविलंघनात्। कर्मनाशाजलस्पर्शात्पुण्यक्षरति कीर्तनात्। गण्डकी में तैरने से करतोया को नांघने से कर्मनाशा का जल छूने से और पुण्य के कामों को मुह से कहने से पुण्य जाता रहता है ४

कर्मनाशा–यह नदी बनारस के पूर्व बिन्ध्य पर्वत से निकल गङ्गा में जा मिली है पुराणों में लिखा है कि त्रिशंकु की लार टपकने से यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नदी बनी है कदाचित इसीसे इसका जल अपवित्र समझा गया है। बरसात में यह बड़ा ज़ोर करती है एक बारगी बढ़ उठने से पास के रहने वालों की बड़ी हानि करती है॥

कलिङ्ग—उड़ेसा के दक्षिण गोदावरी और समुद्र के सङ्गम तक का देश। अब इसे कारोमण्डल कहते हैं। नार्दरन् सरकार और राज महेन्द्री भी इसी में है। अङ्ग बङ्ग कलिङ्ग उत्कल सुंह सब मिले २ हैं अन्ध्र या तिलङ्गाना को कलिङ्ग देश से छाड़ा मेंड़ी है। अपवित्र देशों में कलिङ्ग भी गिनाया गया है॥

काशिकोशल--यह अयोध्या और काशी के बीच का कोई देश था॥

कांची-प्राचीन काल में यह द्रबिड़ देश की राजधानी थी; सप्तपुरियों में एक कांची भी है। यह दो हिस्सों में बटी है बिष्णु कांची और शिव कांची बिष्णु कांची में बरदराज का पुराना मन्दिर है यह बनावट में जगन्नाथ के मन्दिर से बहुत मिलता है। दक्षिण की ओर बिष्णु कांची है। उत्तर को शिव कांची। इसका दूसरा नाम कंजिबरम् है। किसी समय यह बड़ा भारी शहर था अब उजाड़ पड़ा है। बिष्णु और शिव के दो मन्दिर अलबत्ता पुरानी बस्तु बिद्या की साक्षी दे रहे हैं जो इन दिनों के इञ्जीनियरों के दांत खट्ट किये देते हैं। मन्दराज से नैऋत्य कोण की ओर वेगवती नदी के तट पर है। यह नदी केवल बरसात में बहती है ८ महीने सूखी पड़ी रहती है। कांची का दो हिस्सें में बंट जाना प्रगट करता है किसी समय वैष्णव और शैवों में बड़ा झगड़ा बढ़ गया था॥

काम्बोज--यह देश गिलगिट से बलख या बाल्हीक को हिन्दूकुश पहाड़ के द्वारा अलग करता हुआ लद्दाक तक फैला हुआ है घोड़े और लम्बे २ रोयें वाले जानवरों के लिये प्रसिद्ध है। यहां अखरोट के बहुत पेड़ हैं कालिदास ने रघु के दिग् बिजय में ऐसा लिखा भी है॥

**काम्बोजाः समरे सोढुं तस्य बीर्जमनीश्वराः।**
**गजालान परिक्लिष्टैरक्षोटैः सार्धमानता॥**

कामरूप--कामरूकामक्षा-एक प्राचीन राज्य जो करतोया नदी से आसाम के छोर तक फैला हुआ था। इसका बिस्तार उत्तर की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हिमालय तब और पूर्व को चीन तक था इसकी राजधानी प्राग् ज्योतिष ब्रह्मपुत्र या लौहित्य नद के दूसरे तट पर थी। कामरूप का राजा महाभारत के युद्ध में दुर्योधन की सहायता के लिये चीनियों की सेना लेकर आया था। रघु के दिग् विजय में भी। "चकम्पे तीर्ण लौहित्ये तस्मिन् प्राग् ज्योतिषेश्वरे। तद्गजालानतां प्राप्तैः सहकालागुरुद्रुमैः॥"

(शेष आगे)



## उत्तमोत्तम उपन्यास !!!

पढ़िये। पढ़िये !! पढ़िये !!!

नीचे लिखे उत्तमोत्तम "उपन्यास" इसी "उपन्यास" नामक मासिक पुस्तक द्वारा क्रमशः छप कर पूरे हुये हैं और बिक्री के लिये तैयार हैं। ये सब उपन्यास अत्यन्त मनोहर, चित्ताकर्षक, कौतूहलवर्द्धक, शिक्षाप्रद, सरस और हिन्दी-साहित्य में अपूर्व रत्न हैं। इन्हें यदि उपन्यास के प्रेमीजन मंगाकर पढ़ेंगे, तो उन्हें रुपये खर्च करने का पछतावा न होगा। एक बार अवश्य मंगा कर देखिये॥

(१) चपला, वा नव्यसमाज चित्र (उपन्यास) चार भागों में २)
(२) लखनऊ की कब्र वा शाही महल सरा (उपन्यास) चार भाग २)
(३) तारा (अद्वितीय उपन्यास) तीन भागों में १॥)
(४) लीलावती (पढ़ने योग्य उपन्यास) १।)
(५) रज़ीयाबेगम (दिल्लीवाली) उपन्यास। दो भागों में १।)
(६) मल्लिकादेवी, वा बंगसरोजिनी (उपन्यास) दो भागों में १।)
(७) राजकुमारी (अत्युत्तम उपन्याय) ॥।)
(८) स्वर्गीय कुसुमकुमारी (उपन्यास) ।॥)
(९) तरुणतपस्विनी, वा कुटीरवासिनी (उपन्यास) ॥=)
(१०) हृदयहारिणी, वा आदर्शरमणी (उपन्यास) ॥)
(११) लवंगलता, वा आदर्शबाला (उपन्यास) ॥)


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(१२) याकूतीतख्ती वा यमजसहोदरा (उपन्यास) ।=)
(१३) कटे मूड़ की दो दो बातें, वा तिलस्मी सीसमहल ।-)
(१४) कुमारी चन्द्रकिरण (उपन्यास) २)
(१५) कनककुसुम, वा मस्तानी (उपन्यास) ।।)
(१६) सुखशर्वरी (उपन्यास) ।)
(१७) प्रेममयी (उपन्यास) ॥)
(१८) गुलबहार, वा आदर्श भ्रातृस्नेह (उपन्यास) ≡)
(१९) इन्दुमती, वा वनविहंगिनी (उपन्यास) =)
(२०) लावण्यमयी (उपन्यास) ।)
(२१) प्रणयिनीपरिणय (उपन्यास) =)
(२२) ज़िन्दे की लाश (उपन्यास) =)
(२३) चन्द्रावली, वा कुलटाकुतूहल (उपन्यास) =)
(२४) चन्द्रिका, वा जड़ाऊ चम्पाकली (उपन्यास) =)
(२५) हीराबाई, वा बेहयायी का बोरका (उपन्यास) -)

डांक महसूल ज़िम्मे खरीदार होगा ।

मिलने का पताः-मैनेजर "उपन्यास मासिक पुस्तक" बनारस सिटी ।

## अचरज ।

बंग देशियों में बीरता-मुसलमान तअस्सुब से खाली । ब्राह्मणों में एका । काहिलों में अकिल । तीर्थली पण्डों में बिद्या । कुञ्जड़ों में सभ्यता । वेश्याओं में सतीत्व । बनियों में जोश । पुलिस के मुहकमे में दया । ऐङ्गलो इण्डियन में हिन्दुस्तानियों से हमदरदी । शराब खारों में मज़हबी पाबन्दी । ईसाईयों में परछिद्रान्वेषण का अभाव । लाड़रियों में नई रोशनी । बिलायत के लोगों में हमवतनी के जोश का होना । अमलों में रिशवत का न होना । आर्यसमाज में ब्राह्मणों से स्नेह । नेचरियों में सदाचार । हिन्दुस्तान के अमीरों में स्वादेशी भाव । मेम साहबा में संकोच । गवर्मेंट के मुल्की इन्तिज़ाम पालिसी से रहित हिन्दी पत्रों में मुनाफा ॥ L

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ॥ बच्चोंने तत्काल जानलिया ॥

देखिये दो बालिकायें इस लाभकारी मीठी दवाको देखकर कैसी प्रसन्न होरही हैं।

हमारा सुधासिंधु इतना प्रसिद्ध हो चला है जिससे अब यह बात निर्विवाद सिद्ध होचुकी है कि बच्चे स्त्रियों व मर्दोंके बीमारियोंके लिये बिना पूछेही लोग मंगाने लगे हैं जैसे कफ, खांसी, जाडेका बुखार, हैजा, शूल, दस्त, संग्रहणी, गठिया, दमा, कै होना, जी मचलाना, बालकों के हरे पीले दस्त और कै करना इनको सिर्फ तीन खुराकमें अच्छा करता है. इसके हजारों सार्टिफिकट मौजूद हैं जिनके लिये प्रायः १२४ चित्रों सहित सूचीपत्र मंगाकर देखिये. मुफ्त भेजेंगे सुधासिन्धु की कीमत ॥) फी शीशी ६ लेनेसे १ भेट १२ लेनेसे पांच रु०

देखिये श्रीमान् राजा इन्द्रजीत प्रताप शाह बहादुर तमकुही जिला गोरखपुर से क्या आज्ञा करते हैं।

महाशय आपका एक दर्जन सुधासिंधु पहुंचा जो आपने भेजाथा यह दवा बहुत लाभ दायक है बुखार और पेटके रोगों में तो बहुतही फायदेमन्द है और बहुत रोगोंमें वैसा ही फायदा करता है और महरबानी करके आध पाव चन्दनादि तैल और बालामृत भेजिये।

मंगाने का पता—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

**क्षेत्रपाल शर्मा मालिक सुख संचारक कम्पनी मथुरा**

REGISTERED No. A—308.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दी प्रदीप

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै।

जून १९०७

मासिक पत्र

जि० २९ सं० ६

सम्पादक और प्रकाशक पंडित बालकृष्ण भट्ट प्रयाग

## विषय सूची

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| प्राचीन भारत और इसकी वर्तमान अवस्था | १ |
| शस्त्र शिक्षा ... ... ... | ४ |
| प्रजा में शान्ति ... ... ... ... | ९ |
| कौंसिल की मेम्बरी ... ... ... | १४ |
| मुक्ति और भक्ति ... ... ... | १५ |
| गुरुकुल ... ... ... | १७ |
| पंचों की सोहबत ... ... ... | १८ |
| सामयिक हलचल में किसका दोष है ... | २१ |

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥) समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज २)

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

—:००:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दीप्रदीप

जि० २६ } प्रयाग { जून
सं० ६ } { सन् १९०७ ई०

## प्राचीन भारत और इसकी बर्तमान अवस्था ।

भारत का एक वह समय था जब यहां के लोग बराबर खुशहाल थे। यहां का जल बायु, स्वर्णमयी उर्वरा पृथ्वी, पहाड़ अनेक प्रकार की खाने और बड़ी २ नदियां सब मिल अटूट संपत्ति यहां बढ़ाये हुये थीं। पुराने लोगों में एक छोटा सा मनुष्य भी अपने को राजा के बराबर सुखी मानता था। यहां के लोग ऐसे प्रतिष्ठित और आदरणीय थे कि संसार भर के लोग इनकी प्रतिष्ठा करते थे और इनकी रहन सहन तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चाल ढाल के अनुकरण को अपना बड़प्पन मानते थे। राजा लोग बड़े शूर वीर असंख्य धन संपत्तिवाले थे और बेलौस प्रजा का इन्साफ करते थे। प्रजा भी ऐसी राज भक्ति थी कि प्राणपण से अपने राजा का साथ देने में अपना कर्तव्य माने हुये थी। व्योपारी दूर के देशों में यहां की उपज और शिल्प पहुंचाते हुये धन में कुबेर तुल्य बने थे। हेरोडोटस जो पांचवी सदी में हुआ बतलाता है कि यहां के लोग ईजिप्ट वालों के साथ उस समय व्यापार करते थे और बेबीलन और सीरिया तक पहुंचे हुये थे। उसका यह भी कथन है कि हिन्दू जाति दुनिया की सब जातियों में श्रेष्ठ समझी जाती थी। राजा प्रजा से बहुतही कम कर उगाहते थे। यावत् पदार्थ सस्ते और सुलभ थे अकाल और मरी का कहीं नाम भी न था। लोग सर्वथा रोग दोष मुक्त थे। यहां के प्राचीन ब्राह्मण और ऋषियों का कहना ही क्या मानो बुद्धि के सागर थे। उनके पवित्र विचार, सर्व भूत दया, सब पर समान दृष्टि और समभाव तथा तितिक्षा मानो उनका भूषण था। उन्ही से हम को शिक्षा मिली है कि हम अपने को कैसे सुधारें अपने भाइयों के साथ कैसा बर्ताव करें और जगत् पिता परमेश्वर में कैसी अनन्य भक्ति रक्खें। इन्ही कारणों से यहां की भूमि सुवर्णमयी कहलाई। अब ऐसी बिगड़ी दशा में भी अंगरेज़ लोग इसे Golden Land कह कर पुकारते हैं। शोक है कि यह सोने की चिड़िया अब इस समय दाने दाने को तरस रही है। जब अंगरेज़ पहले पहल यहां पधारे थे उस समय दुनिया के सब मुल्कों में यह दस्तकारी में बढ़ा था। यहां के बने हुये सूती तथा रेशमी कपड़े शाल दुशाले, ढाका के चिकन, अहमदाबाद के कीनखाब, सिंध के मिट्टी के बरतन और तरह २ के जवाहरात वगैरः बहुत दूर तक पाये जाते थे। अब वही सब कारखाने मिट्टी में मिल गये। करोड़ों मनुष्य जो इसके बदौलत मालामाल थे अब फ़ाक़ेमस्त हो रहे हैं। अब तो ऐसा हो गया है कि यहां जो कच्चा बाना Raw Materials उपजता है सब विला-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यत वाले ढो ले जाते हैं। वे लोग जो कुछ छोड़ देते हैं उसी से हम अपना निर्बाह करते हैं भीतर से पोले बने ऊपर से अपने को लाल गुलाल बनाये बैठे हैं। इस में संदेह नहीं गवर्नमेंट ने बहुत से मुहकमे जैसे रेल तार डाक तथा बहुत सी पनचक्की, कोयले की खान और चाय की खेती का बन्दोबस्त कर रक्खा है जिस से बहुत से दुखिया मेहनत मज़दूरी कर अपना पेट पाल लेते हैं पर यह सब कारखाने अपने निज के न होने से उनका कुल फायदा विलायत वालों ही को होता है। यही कारण है कि हम दिन दिन क्षीण होते जाते हैं। इतने पर भी सरकारी टैक्स, फौज़ का खर्च, बड़े २ अफ़सरों की तनखाह, बिलायत वालों को पेन्शन यहां से देना, तथा मुल्की मुआमिलों में हमारा कुछ भी इख्तियार न होना इत्यादि हम को प्रति क्षण क्षीण ही करता जाता है। इस में सन्देह नहीं गवर्नमेंट ने हमारे लिये बहुत कुछ आशाइस के सामान और उत्तम बन्दोबस्त कर दिया है जिस से शेर बकरी एक घाट पानी पी सकै पर जब पेट कल्लाता है तो दुनिया की सब नियामतें फीकी मालूम पड़ती हैं। हमारी शिक्षा के लिये जो कुछ सरकार ने किया है उस को भी हम धन्यबाद पूर्बक स्वीकार करते हैं। पर जो कुछ भलाई इस भांत सरकार करती है वह दाल में निमक के बराबर भी नहीं है। इसलिये हम को ऐसा मालूम देता है कि जब तक हम अपने ऊपर निर्भर हो अपने देश भाइयों में सहानुभूति रख तथा अपने निज स्वार्थ को ताक पर रख कोई काम न करैंगे तब तक हमारा कल्याण न होगा। आज कल देश में स्वदेशी और बायकाट की चर्चा अधिक फैल रही है बड़े २ लेकचर भी हुआ करते हैं अखबारों में भी कालम के कालम इसी विषय पर लिखे जाते हैं पर असल में काम कम होता देख पड़ता है। मसल है "जो गरजता है वह बरसता नहीं" केवल बातों ही से हमारा भला न होगा कुछ करना भी हमारा मुख्य कर्तव्य है। हम को टोगो जापान के बादशाह का उदाहरण मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करना चाहिये । कहा जाता है कि टोगो कभी १० मिनिट भी अपनी ज़िन्दगी में नहीं बोला और काम उसने वह किया जो जापान की वर्तमान् उन्नति का कारण समझा गया । इतना अवश्य है कि बिना आन्दोलन किये सर्व साधारण अपने सुधार के लिये कटिबद्ध नहीं हो सकते इसलिये थोड़ा बहुत जैसा कि आज कल के गरम दल वाले करते हैं ज़रूरी है पर काम करने में सब को एक मत होना बहुत आवश्यक है । कुछ ध्यान में नहीं आता कि हम लोग किस क्रम पर चलें। इधर बहुत अधिक आन्दोलन किया गया तो उसका फल यह मिला कि लाजपत से पुरुष रत्न जलावतन कर दिये गये । चुपचाप बैठे रहते हैं तो लोगों की नीन्द नहीं टूटती । देखिये बुद्धिमान् देश हितैषी अब हमारे लिये क्या क्रम निकालते हैं जिस पर चल हम अवश्य कृतकार्य हों ॥

---

## शस्त्र शिक्षा ।

"विद्या शस्त्रं च शास्त्रं च द्वे विद्ये प्रतिपत्तये" यूरोप के देशों में जैसी शिक्षा दी जाती है उस से यहां की शिक्षा प्रणाली में बड़ा अन्तर है । यहां शिक्षा विभाग गवर्नमेंट के हाथ में है वह अपने प्रयोजन से जिसमें क्लर्की का काम निकल सके हमे शिक्षा देती है । यूरप में शिक्षा का प्रचार प्रजा के हाथ में है वहां के लोग जिस तरह की शिक्षा से देश को लाभ समझते हैं वैसी शिक्षा देते हैं । इन भांत २ की शिक्षाओं में सब से बढ़ कर शस्त्र शिक्षा Military education है और यह शिक्षा प्रजा मात्र को दी जाती है । बल्कि जरमनी और प्रूशिया में तो ऐसा नियम है कि चाहो कितना ही अमीर का लड़का हो साधारण शिक्षा समाप्त करने के उपरान्त दो वर्ष फौज़ में रह कवायद आदि युद्ध विद्या का सब काम उसे अवश्य सीखना पड़ता है । यह शस्त्र शिक्षा इतनी उपकारी है कि देश की उन्नति या अवनति का कुल दार मदार इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पर आ लगा है। यूरोप के देशों से और यहां से यह बड़ा फर्क शिक्षा के सम्बन्ध में है। यहां जो शस्त्र चलाने और युद्ध में प्रवीण हैं वे पढ़ना लिखना बिलकुल नहीं जानते यूरोप के देशों में बड़े २ विद्वान् वैज्ञानिक तथा दार्शनिक शस्त्र विद्या में प्रवीण रहते हैं जिससे लाभ यह है कि दोनो विद्याओं की सम्मिलित शक्ति से युद्ध के नये २ नियम और नई २ तरह की तोप और बन्दूकें डिनामाइट इत्यादि निकलते आते हैं और वहां के लोग पृथ्वी पर अपना राज्य बढ़ाते चले जा रहे हैं॥

पहले जब हमारा देश उन्नति के शिखर पर आरूढ़ आस पास के देशों का सिरताज बना था उसका प्रधान कारण यही था कि यद्यपि युद्ध करना क्षत्रियों का काम था पर शास्त्र पारंगत ब्राह्मण भी धनुर्विद्या बिशारद और धनुर्वेद में सम्यक् निष्णात होते थे। विश्वामित्र और बशिष्ठ का युद्ध इसे सिद्ध करता है कि ब्राह्मण और तपस्वी ऋषि भी शस्त्रों के प्रयोग में भरपूर कुशल थे। बशिष्ठ शस्त्र चलाना न जानते होते तो निःसहाय अकेले बिश्वामित्र की बड़ी सेना का सामना न कर सकते। यहां तक कि बिश्वामित्र को लाचार हो यह कहना पड़ा "धिग् बलम् क्षत्रियबलं ब्राह्मणस्य बलं बलम्" युद्ध विद्या कुशल ब्राह्मण अपने बुद्धि बल से नई २ युक्तियां निकाल क्षत्रिय शिष्यों को उन्हें सिखा कर निपुण कर देते थे। पुराणों से यह स्पष्ट है कि बनों में कन्द मूल से अपना गुज़र और आहार वृत्ति करने वाले ब्राह्मणों पर जब क्षत्रियों ने अन्याय करना आरंभ किया और उस समय के प्रधान ऋषि यमदग्नि को मार डाला तब वेद पाठी ब्राह्मणों ने परशुराम का आश्रय लै कैसी प्रचण्ड युद्धाग्नि भारत वर्ष में प्रज्वलित की और २१ बार क्षत्रियों का नाश किया। ऐसा ही महाभारत के युद्ध के पहिले जब भारत में प्रताप और बीर्य के सूर्य का मध्यान्ह था निष्किञ्चन द्रोणाचार्य ने अपने पुत्र अश्वत्थामा को आटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पानी में घोल दूध की जगह उसे पिला प्रसन्न किया और अश्वत्थामा को सन्तोष हो गया कि हम ने सच्चा दूध पिया। पर द्रोणाचार्य को ब्राह्मण वृत्ति पर घृणा आई और अपने गुरु भाई पांचाल देश के नरेश द्रुपद के पास गये। इस आशा से कि यह हमारे सहपाठी और मित्र हैं हमारी दरिद्रता दूर कर देंगे। राज सिंहासन पर द्रुपद को सुशोभित देख द्रोण ने अपनी पहिली मैत्री का बहुत कुछ परिचय दिया पर द्रुपद ने जब उनको अपरिचित की भांत देखा जैसा बहुधा धनवानों का क्रम है और हंस कर बोला "अरे ब्राह्मण संसार में यह नियम चला आया है कि मैत्री बराबर वाले की होती है पण्डित की पण्डित के साथ धनी की धनी के साथ ऐसा ही राजा की मैत्री राजा के साथ तब हमारी तुम्हारी मित्रता कैसी। "हम हैं राजा तुम परम निष्किञ्चन ब्राह्मण। तुम झूठ बोलते हो हमारी और तुम्हारी मैत्री सर्वथा असंगत है" द्रोणाचार्य को द्रुपद की यह बात वज्रपात सी लगी क्रोध से नेत्र लाल हो आये बोले "अच्छा द्रुपद यदि तुम को ऐसा ही अभिमान है तो मैं राजा ही होकर तुम से मित्रता करूंगा"। अब द्रोण उस समय के सब से बड़े राजा महाराज धृतराष्ट्र का आश्रय लेने के विचार से हस्तिनापुर पहुंचे और नगर के बाहर एक कुयें पर संध्या कर रहे थे कि वहीं कई एक राज कुमार गुल्ली खेलने आये और खेल में गुल्ली उनकी कुयें में चली गई। राज कुमार गण उसके निकालने का यत्न करने लगे पर गुल्ली न निकली तब द्रोण ने उनसे धनुष लेकर ऐसा एक बाण कुयें में मारा कि गुल्ली आकर कुयें के बाहर गिरी राज कुमार सब अचरज में आये और घर जाय यह बात भीष्मपितामह से कहा। भीष्म बड़े आदर के साथ द्रोण से मिले और राज कुमारों को बाण विद्या सिखाने के लिये इन्हे नियत किया। जब अच्छी तरह शस्त्र विद्या सीख चुके तब अपने प्रधान शिष्य अर्जुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से यही गुरु दक्षिणा चाहा कि द्रुपद को जीता पकड़ लाओ। सब राज कुमारों को साथ ले द्रोण पांचाल देश पर चढ़ गये और घनघोर युद्ध के उपरान्त अर्जुन द्रुपद को बांध द्रोण के सन्मुख लाये। तब द्रोण हंस कर द्रुपद से बोले "मैं इस समय पांचाल देश का राजा हूं और तुम साधारण कैदी हो। किन्तु दक्षिण पांचाल का राज्य मैं करूंगा और उत्तर का हिस्सा तुम्हे दिये देता हूं क्योंकि राजा की मैत्री राजा के साथ हो सकती है"।

हिन्दुस्तान के ऐसे २ बीर शिरोमणि महाभारत के घोर युद्ध में कट मरे साथ ही यहां की बीरता युद्धोत्साह बुद्धि विद्या सब जाती रही और देश के अत्यन्त बुरे दिन आये। महाभारत के युद्ध के उपरान्त बौद्ध धर्म हिन्दुस्तान का प्रधान धर्म हो गया इसी बुद्ध धर्म में चन्द्रगुप्त अशोक कनिष्क आदि बड़े २ प्रतापी राजा हुये जिन के समय में यूनान देश के बीर नरेश सेलूकस आदि अपनी कन्या यहां के राजाओं को दे उन्हे प्रसन्न करते रहे। समस्त प्रजा युद्ध विद्या में उस समय प्रवीण थी किन्तु शंकर स्वामी ने बुद्ध धर्म को यहां से उच्छिन्न कर फिर से वैदिक धर्म स्थापित किया और चार वर्ण की प्रथा चलाई। पर इस पुनः संस्थापित प्रथा में चार वर्ण के लोग अपना ही अपना काम करने लगे सर्व साधारण से युद्धोत्साह और शस्त्र प्रयोग की निपुणता दूर हो केवल क्षत्रियों ही में रह गई। ज़र्रारी तर्रारी भूल लोगों में सुकुमारता आने लगी चारो ओर धर्म ही धर्म की पुकार होने लगी और धर्म के सम्बन्ध में अन्धेर खाता मच गया। पढ़ना लिखना केवल ब्राह्मण में बच रहा क्षत्रिय और बैश्य विद्या पढ़ना छोड़ अपना निज का काम जैसा क्षत्रिय केवल लड़ना भिड़ना और बैश्य केवल वनिज मात्र में लगे। विद्या न पढ़ने से क्षत्रियों में लड़ना ही भिड़ना मात्र बच रहा चुस्ती चालाकी सहिष्णुता गाम्भीर्य श्रम इत्यादि बुद्धि के व्यवसाय सब जाते रहे। क्षत्रिय मद्यप कामी और भोग लिप्सू हो गये पृथ्वी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज सरीखे राजाओं का रनवास रानियों से भर गया Polygomy बहु विवाह की प्रथा तो पहिले ही से यहां विद्यमान रही भोग लिप्सू कामी क्षत्रिय राजाओं की बन पड़ी एक २ राजाओं के सौ २ तक रानियां होने लगीं। किसी बुराई का ज़रा सा अंकुर भी कौम के कमज़ोर हो जाने पर उसे और भी नीचे गिरा देने को काफी होता है। इस सब का परिणाम यही हुआ कि होशयारी और कूट तथा दगाबाज़ी से लड़ने वाले मुसलमानों के सन्मुख हिन्दू बीरों के पांव उखड़ गये युद्ध में पृथ्वी राज के मरते ही भारत गुलामी की जंज़ीर में जकड़ दिया गया। क्योंकि ब्राह्मण तो उस समय घंटा नाद ही करते रहे; शान्ति प्रिय बैश्य व्यापार में लगे रहे; शूद्रों की कोई गिनती ही न थी। क्षत्रिय पराजित हो गये तो कौन विजयी मुसल्मान का सामना करता॥

अब इस समय हिन्दुस्तान सच्ची इज्ज़त तभी पा सकता है जब जातीय कालेज और स्कूलों के साथ युद्ध शिक्षा Military Education भी बालकों को दिया जाय। राज कुमार गण योरप और जापान में भेजे जांय और अपनी सेना की अफसरी के लिये युद्ध विद्या उन्हे सिखाई जांय। सच्चा गौरव बिना इसके प्राप्त होना असंभव है। मुल्की जोश में केवल मुह से बड़बड़ाने से काम नहीं हो सकता जब तक बास्तविक शस्त्र बल हमारे में नहीं आवेगा। पर यह तो तब होता जब हमारे राजा लोग रेज़ीडेटों के चंगुल से छुटकारा पाते और शासकों की पालिसी को समझने में प्रवीण होते। हमारे गोरे कर्मचारी इन राजाओं को ऐसे ढंग से रक्खे हैं कि वे ज़रा भी उभड़ कर स्वच्छन्द नहीं हो सक्के वरन कश्मीर नरेश सदृश खुशामद में लगे हैं। तब हमारे उभड़ने की कौन आशा बच रही॥

बेणी प्रसाद शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## प्रजा में शान्ति ।

अर्थ शास्त्र Political Economy के जानने वालों को मालूम है कि इस विज्ञान का Ideal उद्देश्य यह है कि कंगाली संसार से उठा दी जाय। ऐसा ही Politic राजनीति का भी लक्ष्य यही है कि उन सिद्धान्तों की खोज की जाय जिस से प्रजा में शान्ति बनी रहे और संसार के मनुष्य मात्र राज काज सम्बन्धी हैसीयत में बराबर हो जांय। हर एक व्यक्ति व जाति को ऊपर उठने का मौका दिया जाय जिस से बलवा या हलचल कभी न हो। नीतिज्ञ और देश भक्तों का तो काम ही यह है कि प्रजा और सरकार में शान्ति रखने का उपाय निकालें और सरकार के कामों की समालोचना कर गवर्नमेंट और प्रजा में झगड़ा पैदा होने से रोकें। अब सरकार की तरह २ की काररवाइयों को ध्यान से देखा जाता है तो मालूम होता है कि उन सब काररवाइयों का यही मतलब है कि प्रजा में सदा शान्ति बनी रहे क्योंकि प्रजा में अशान्ति का परिणाम द्रोह या बलबा है जिस से राजा और प्रजा या दोनों को कुछ न कुछ नुकसान पहुंचता है। अब यह भी देखा जाता है कि चाहो राजा राज्य Monarchy हो चाहो प्रजा प्रभुत्व Republic हो चाहो सनदी राज्य Constitutional Government हो अशान्ति की संभावना रहती ही है और प्रत्येक प्रकार के शासन में अशान्ति के रोकने के भिन्न २ उपाय भी किये जाते हैं। तो अब सवाल यह पैदा होता है कि इतनी काररवाई और बिशाल बुद्धि नीतिज्ञों के बुद्धि कौशल पर भी अशान्ति होने का क्या कारण है? क्या शान्ति हो जाने से (Politic) राजनीति का यावत् कर्तव्य समाप्त हो जाता है? क्या जिस राज्य में प्रजा के बीच शान्ति रहे तो मान लिया जाय कि वह राज्य अच्छा है?

इसका उत्तर प्रत्येक संप्रदाय के राज्य की काररवाइयों की छान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


धीन करने से मिल सकता है। इन सब प्रकार के राज्यों का Ideal उद्देश्य शान्ति रक्षा होने पर उनको सफलता कैसे होती है इसका जानना ज़रूरी है किन्तु इसके पहले शान्ति शब्द का ठीक उद्देश्य Ideal भी हम को होना चाहिये ॥

राज नैतिक विषयों में शान्ति से तात्पर्य प्रजा का राजा पर बिश्वास स्थापित करना है। बिश्वास में एक आकर्षण शक्ति होती है इसी आकर्षण शक्ति को राज भक्ति Loyalty कहते हैं। जैसा कि बहुत से वैज्ञानिकों का मत है कि भूडोल तभी होता है जब पृथ्वी की आकर्षण शक्ति में कुछ अन्तर पड़ जाता है वैसे ही Politic में भी जब बिश्वास हट जाता है तब हलचल या बलवा होता है। इन हलचलों से चाहो राजा या प्रजा या दोनो को हानि हो किन्तु उनका होना ऐसे मौके पर स्वाभाविक है और उनके होने से फिर राजा और प्रजा में शान्ति और बिश्वास हो जाता है। सुतराम् जब किसी देश में अशान्ति हो तो यह न समझ लेना चाहिये कि कोई बुराई की बात है बरन यह राजा और प्रजा दोनो के लिये भलाई की कोशिश हो रही है। अब इस बात की जांच होना चाहिये कि बिश्वास कैसे हट जाता है। क्या संसार में कोई ऐसी भी शासन प्रणाली है जिस में सदा शान्ति रहने की गेरंटी हो? हमारी राय में तो कोई राज्य चाहो जिस शासन प्रणाली का हो सदा शान्ति की गेरंटी कोई नहीं कर सकता। इस में दोष किसी तरह की शासन प्रणाली का नहीं है दोष उसे ठीक तौर पर काम में न लानेवालों का है। यह कोई बात नहीं कि प्रजा प्रभुत्व Republic Government सब से अच्छा है अगर प्रजा प्रभुत्व अच्छा होता तो इङ्गलेण्ड के इतिहास में क्रामवेल का चलाया नियम आज वहां क्यों न स्थापित रहा। Monarchy राजा राज्य जरमनी में अच्छा है पर उसी के बगल में रूस के ज़ार अन्याई समझे जाते हैं और कहा जाता है कि प्रजा प्रभुत्व होने ही से वहां की अशान्ति दूर होगी। जरमन का राजा अपने ऊपर रक्खा हुआ शासन के भार का पूरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


प्रजान देकर प्रजा को दिखा रहा है कि वह उन्हीं की भलाई के लिये मौजूद है। इसी से जरमनवाले उस पर विश्वास करते हैं। जरमन गवर्नमेंट प्रजा के तिजारती धार्मिक तथा प्रजा के और २ उपकारी कामों में सदा शरीक रहती है यही कारण है कि वहां की प्रजा में राज भक्ति और देश भक्ति दो जुदी २ बातें नहीं है। हिन्दुस्तान में देश भक्ति और राज भक्ति दोनो में इस समय बड़ा अन्तर है जो राज भक्त है वह देश भक्त नहीं जो देश भक्त है वह राज भक्ति से कोसों दूर हटा है। ऐसे मौके पर प्रजा में राज भक्ति कायम रखने को तलवार काम में लाई जाती है किन्तु तलवार से भी झूठी शान्ति तभी तक रहेगी जब तक विश्वास बिल्कुल नहीं मिट जाता। जब विश्वास पूर्ण रूप से हटा तो तलवार भी काम नहीं देती। क्योंकि प्रजा को दृढ़ निश्चय हो जाता है कि राजा हमारे भले के लिये नहीं है। ऐसे मौके पर तलवार ही तलवार से शान्ति रखने वाले को शान्त कर देती है॥

प्रजा राज्य या प्रजा प्रभुत्व के भले होने का कारण यह है कि वहां शान्ति अशान्ति दोनो का बोझ प्रजा के सिर मिढ़ा जाता है और कौमीयत का जोश लोगों के नस २ में व्याप्त रहता है। प्रजा मात्र अपनी पोलिटिकल हैसीयत में एक सी रहती हैं ऐसी दशा में अशान्ति तभी होती है जब कोई विशेष व्यक्ति उन पर अपना रोब जमाया चाहते हैं॥

जहां सनदी Constitutional नियम पर राज्य किया जाता है वहां कानून का ज़ोर शान्ति रखने का [illegible] बांधता है। पर कानून प्रजा में थोड़े से लोग जानते हैं जब तक लोगों को उन पर बिश्वास रहता है कि वे अपने कानूनदानी से हमारा भला करेंगे तो शान्ति रहती है नहीं तो ऐसे २ खुदगर्ज़ प्रजा प्रतिनिधि निकाल दिये जाते हैं। अमरिका में स्वच्छन्द होने के पहले सनदी राज्य प्रणाली थी किन्तु जब इङ्गलैण्ड की खुदगर्ज़ी ने अमरिका वालों पर प्रजा बिरोधी कानून बनाये तो अशान्ति फैली और अन्त में इसका परिणाम यह हुआ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अमरिका के यूनइटेड स्टेट वाले स्वच्छन्द हो गये और प्रजा को लाभदायक शान्ति स्थापित हुई ॥

अब यह बात मालूम हुई कि प्रजा में सच्ची शान्ति स्थापित करने के दोही उपाय हैं या तो प्रजा को उसकी भलाई का पूर्ण बिश्वास दिया जाय नहीं तो Revolution हलचल सच्ची शान्ति लाता है। अब हिन्दुस्तान की Politic राजनीति में इन उसूलों को घटा कर देखना चाहिये। हिन्दुस्तान में सनदी राज्य है यह राज्य उस प्रकार का है कि अगर इसकी काररवाई की ओर ध्यान दिया जाय तो तीन उपाय से शान्ति रखना राज्य के मुखिया लोगों ने मान रक्खा है। पहिली पालिसी दूसरा कानून तीसरी तलवार। इन तीनों के होने पर भी आज यहां शान्ति नहीं है इसका क्या कारण है। पहले जब श्वेताङ्ग यहां पधारे तो यहां घोर अशान्ति थी आपस में बिश्वास न था तब श्वेताङ्गों ने पहला उपाय पालिसी को काम में लाना आरंभ किया जिससे अशान्ति कुछ २ मिटने लगी और अङ्गरेज़ी राज्य स्थापित होने लगा। हिन्दुस्तानियों में बिश्वास तो बहुत सस्ता हुई है तनिक देर न लगी सब लोगों ने इन श्वेताङ्गों पर बिश्वास जमा लिया परन्तु दृढ़ बिश्वास न जमा था कि कानून और बिलाइती इनसाफ की आकाशबाणी हुई कि हम पर बिश्वास करो तो मुक्ति पाओगे। उसी समय १८३३ और ५८ की तावीज़ हम लोगों की रक्षा के लिये दी गई बाद तलवार भी जल्द हाज़िर की गई और बिश्वास दिलाया गया कि गवर्नमेंट हिन्द के भले के लिये है। लोग कानून की काट छाट और बारीकियों को जानते ही न थे दूसरे बिश्वास करने में सब से अधिक धोकड़ थे। प्रजा में कुछ दिन तक शान्ति रही और बहाने २ भांत २ के बिलाइती पंपों के द्वारा इनके शरीर का रस खींचा जाने लगा। उन पंपों के प्रताप से जब सब रस खिच गया दिन पर दिन लोग कंगाल होने लगे; इनका बनिज व्योपार भी मिटने लगा; सन ५८ की दी हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


तावीज़ भी इनकी Politic राज नैतिक हैसीयत दुरुस्त न कर सकी बल्कि मालूम हुआ कि वह सब केवल फुसलाने के लिये दिखाने वाले हाथी के दांत रहे खाने के नहीं; बरन रोज़ २ गुलामी की जंज़ीर में अधिक२ जकड़े जाने लगे तब इनका बिश्वास डिगा। कानग्रेस शुरू हुई जो इसकी जांच करने लगी कि हम लोग बिश्वास किये रहैं या अपने बिश्वास को ढीला कर दें। २२ बर्ष की लिखा पढ़ी के उपरान्त बिश्वास तो पहिले ही से डिगमगा चला था अब और गायब हो गया। उपरान्त करजन ने तो अपने कामो से उस बिश्वास की जड़ ही उखाड़ के फेक दिया। नतीजा यह हुआ कि सब लोग अबिश्वासी कट्टर नास्तिक बन बैठे। जिन से गवर्नमेंट का कुछ सम्बन्ध है वे चोरी से छिपा कर नास्तिक अबिश्वासी बना चाहते हैं। पर मन के भीतर जो बात रहती है उसे कितना ही छिपाओ अन्त को उघर उठती है। जिसका परिणाम यह हुआ कि आज देश भर में अशान्ति फैली हुई है। सर्कार शांति लाने को वेही ३ उपायों को फिर काम में ला रही है। भीतर २ ऐसी पालिसी काम में लाई जाती है कि हिन्दू मुसल्मान दोनो आपस में लड़ झगड़ कमज़ोर हो जांय; फिर भी कुछ तेज़ी रही तो कानून तुम्हारा मुह और लेखनी बन्द करेगा; और तब भी बर्राओ गे तो पायोनियर इङ्गलिशमैन टाइम्स आदि गवर्नमेंट के हिमायती साफ कहें गे तलवार ने हम पर तुम्हारा बिश्वासस्थापित किया है और अब फिर उसी को काम में लाना पड़ेगा इसलिये कि पुराना सिद्धान्त है Might is right अस्तु इतने पर भी जो तुम्हे बिश्वास न आया तो अशांति तो शांति को लाती ही है नीतिज्ञों का यह सिद्धांत पुकार २ कह रहा है। शांति दो ही बात से होती है सच्चा बिश्वास या अशान्ति। विज्ञान की इस कारिका को कोई झूठा नहीं कर सकता॥

मदन मोहन शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## कौंसिल की मेम्बरी ।

२८ मई को यहां के मेओहाल में छोटे लाट की कौंसिल में एक मेम्बर भेजने के लिये डिसट्रिक्ट बोर्डस के प्रतिनिधियों की एक मींटिङ्ग हुई । मुन्शी माधो लाल, राजा प्रताप बहादुर सिंह, राजा नौशाद अली के नामों का प्रस्ताव किया गया । प्रतिनिधियों की पहलेबार संमति लेने पर १० वोट राजा प्रताप बहादुर सिंह को ६ मुन्शी माधो लाल को और ३ नौशाद अली को आईं । इसलिये कि बिना ११ वोट आये कोई मेम्बर नहीं चुना जा सकता फिर से सम्मति ली गई तो इस बार राजा प्रताप बहादुर सिंह को ११ मु० माधो लाल को ६ और राजा नौशाद अली को १ वोट आईं । राजा प्रताप बहादुर सिंह कौंसिल में जाने के लिये डिसट्रिक्ट बोर्डस से चुने गये । यहां पर हम इन तीनों मनुष्यों की भिन्न २ योग्यता पर कुछ अधिक नहीं कहा चाहते परंतु इतना अवश्य कहेंगे कि यह बात बिल्कुल हमारी समझ में नहीं आती कि राजा प्रताप बहादुर किन गुणों से चुने गये । आज तक राजा साहब का नाम देश सेवा के सम्बन्ध में कभी एक बार भी नहीं सुना गया । एक बार पहले भी राजा प्रताप बहादुर ने Honerable बनने का यत्न किया था परन्तु उनके किसी प्रकार के यत्न उठा न रखने पर भी प्रतिनिधियों ने उनको न चुन मु० माधो लाल को चुना । हम नहीं समझते अब के बार प्रतिनिधियों ने किन प्रभावों के बश हो, उनको लेजिसलेटिव कौंसिल के मेम्बर होने के योग्य समझा है। जहां तक हमें मालूम है उक्त राजा साहब अंगरेज़ी भाषा से सर्वथा अपरिचित हैं और न देश सेवा के हम्बन्ध में आज तक कभी उनका नाम सुना गया है तब हम क्या आशा करैं कि वे कौंसिल की बहसों को समझ सकैंगे और अपना ऐसा स्वतंत्र बिचार प्रगट करैंगे जिस से देश का कल्याण हो । परंतु इन बातों पर अधिक झीखना केवल अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


चित्त को दुखाना है। सच तो यह है कि थोड़े से अंगरेज़ी तालीम याफ्ता चाहो जितना ज़बानी जमा खर्च करें हमारे देश के अधिकांश अभी यह भी नहीं समझते कि स्वराज्य के प्राथमिक सिद्धान्त क्या हैं और देश की दशा का उनमें इतना भी विचार नहीं है कि अपने थोड़े से धन और मान तथा प्रतिष्ठा के स्वार्थ को देश भाइयों के कल्याण के लिये छोड़ सकें। म्युनिसिपलिटी की मेम्बरी को तो हम झीखते ही थे अब कौंसिल की मेम्बरी भी उसी ढंग की हो गई। अस्तु लाट साहब के साथ कुरसी पर बैठ इन्द्र के छोटे भाई तो बन जांयगे जिस के मुकाबिले देश का कल्याण किस गिनती में है॥

---

## मुक्ति और भक्ति।

मुक्ति तब भक्ति यह उलटी बात कैसी? भावुक पहले अपने आराध्य इष्ट देव की भक्ति करता है तब क्रम २ उसका अन्तःकरण शुद्ध होने पर ज्ञान का अधिकारी हो मोक्ष पद पाता है। पर यहां यह बिलकुल उलटा क्रम कैसा? मुक्ति जो अन्त की सीढ़ी है उस पर पहले ही उछल कर चढ़ गया पीछे नीचे उतर भक्ति की भावना में रेंगता हुआ यह जीव अब कब मुक्ति का अधिकारी हो आवागमन के बन्धन से छुटकारा पावेगा। प्यारे नहीं २ ऐसा नहीं टुक चित्त को एकाग्र कर सोचो तो बिना मुक्ति के सच्ची भक्ति कभी हो ही गी नहीं सच्ची भक्ति से हमारा मतलब निष्काम भक्ति से है। जब तक अपना स्वार्थ किसी कामना के रूप में लगा है तब तक वह भक्ति न कहलावेगी वह तो अपने मतलब की खुशामद है भक्ति कहां ठहरी। जो सच्चे भक्त जन हैं वे मुक्ति को लात मारते हैं। भक्त का मुक्त से बहुत बड़ा दरजा है। भक्त ने तो पहले ही अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया अब बच क्या रहा जिस की चिन्ता में व्यग्र रह चिन्ता और फिकिर से वह अपने को मुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पावे। सर्वथा निस्पृह सुख दुःख में एक सा न सुख में सुखी न दुःख में दुखी जैसा गीता में भगवान् कृष्णचन्द्र ने कहा भी है॥

दुःखेष्वनुद्विग्नमना सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते॥

दुःखों में जिसका मन व्याकुल नहीं होता सुख के लिये जो आशा बद्ध नहीं है; जिसको धन पुत्र आदि से स्नेह; भय, क्रोध इत्यादि इन्द्रियों के विकार नहीं चलायमान् कर सकते वह मुनि और स्थिर बुद्धि है॥

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति॥

जो पुरुष सब कामनाओं को छोड़ इच्छा रहित हो विचरता है। ममता अर्थात् यह हमारा है इस अहंकार से रहित है वह शान्ति पाता है। शान्ति भक्ति का पहला अंग है जिस में शान्ति न हो वह बनावटी भक्ति मुक्ति की पहली सीढ़ी क्योंकर है। जिसको प्रभु में ऐसी भक्ति है उसके जीवन्मुक्त होने में फिर क्या कसर रही पर यह भाव उसी को होता है जिसको उस परम पुरुष ने अपनालिया है। जो ऐसे दृढ़ हैं उन्हें नित्य की प्राण यात्रा और भोजनाच्छादन की भी कोई चिन्ता नहीं रहती॥

योसौ विश्वंभरो देवो स भक्तान् किमुपेक्षते।

"जो तुम्हारे में राई भर भी विश्वास हो तो इस पर्वत को कहो हट जाय तो हट जा सकता है" इस वाक्य की सचावट के उदाहरण ऐसे ही लोग हैं। ऐसे मनुष्य नर तन में साक्षात् देव रूप हैं। ऐसों के दर्शन में पुण्य है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## गुरुकुल ।

यह गुरुकुल हरिद्वार से ४ मील कांगड़ी ग्राम के समीप पतित पावनी श्री गंगा जी के तट पर पूर्वज ऋषियों के शान्त आश्रम का अनुकरण कर रहा है । यह भारत के भावी सुसन्तानों की Nursery प्रादुर्भावभूमि अथवा उत्पत्तिस्थान है और ६००० बीघा ज़मीन के रक़बा में बना हुआ है । शान्त और पावन इस आश्रम में पहुंचते ही मार्ग में चलने का जो कुछ श्रम सब दूर हो जाता है । १८० ब्रह्मचारियों की शान्त और तेजस्वी मूर्ति का अवलोकन कर वैदिक आर्य ऋषियों का चित्र चित्त में चित्रित हो जाता है । लाला मुन्शी राम सरीखे कई एक भारत हितैषी इस गुरुकुल का उत्तमोत्तम प्रबन्ध रखने के लिये अपना जीवन समर्पण कर चुके हैं । पाठक यह जीवन समर्पण उस तरह का न समझ बैठना जैसा बहुधा इस समय सभ्य समाज में जीवन समर्पण की भी एक प्रथा चल पड़ी है । एक आदमी तीन २ काम में अलग २ तीन बार जीवन अर्पण कर चुके हैं और समग्र जीवन भर में कभी एक पल के लिये भी उन्हे किसी प्रतिज्ञा किये हुये काम में लगे न देखा वरन गुरुकुल के महोदय गण वास्तव में इसकी उन्नति में कटि बद्ध हैं । ७ बर्ष से १० वर्ष तक के बालक इसमें लिये जाते हैं और २५ बर्ष तक उनको अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता है । इस बीच उस बालक को अपने घर से कोई सरोकार नहीं रहता । साल में एक बार वार्षिकोत्सव के समय बालक अपने घर वालों से भिक्षा लेने वहीं पर आने पाता है । गुरुकुल की सीमा के भीतर स्त्रियों के जाने की कतई मुमानियत है । अब तक इसमें १० क्लास खुले हैं । हम ने प्रत्येक वर्ग में लड़कों से दो एक प्रश्न प्रत्येक विषय के पूछा और उनके उचित उत्तर से अत्यन्त सन्तुष्ट रहे । दसवें दरजे के लड़के अच्छी तरह शुद्ध संस्कृत और अंगरेज़ी बोल सक्ते हैं । अंगरेज़ी में उन्हे इनट्रेन्स तक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



योग्यता है और संस्कृत में तो भाष्य आदि सबी आर्ष ग्रंथ के पाठ में प्रबीण पाये गये। भगवान् उत्तरोत्तर इसकी उन्नति करता रहै ॥

---

## पंचो की सोहबत।

अहाहाहा क्या गुल खिले हुये हैं ज़रा पञ्चों की भी कैफीयत देखने लायक है। अबे तुझे कुछ होश है आज सोहबत का मेला है देखता नहीं चौथ के चन्द समान प्रकाशमान ये कौन चले आते हैं। इनका इसिम शरीफ है पुंश्चली बल्लभ गणिका दास। आंख के अन्धे नाम नैनसुख। एतने दिनों से हम इन पर हाथ मल मल रहते थे आज ऐसे गाढ़े लगने लगे कि सिमटी देखलाते चले ही जाते हैं गोया कि मुरौवत की कहीं छींट भी नहीं पड़ी। मियां तुम ऐसे गुलबदन के तन को ज़ेब यह नहीं देता कि बरसों का मुलाहिज़ा गजी सा चीर फाड़ अलग कर डालो। क्या बाल आल पाके से कोई बूढ़ा हो जाता है दिल का शौक तो वैसा ही चीकन बना है तब तो मेला देखने आये हैं। हुश अबे ओ पाइजामे चारजामे की भी तुझे कुछ सुध बुध है। बड़ा मुहज़ोर हुआ है तेरे मुह में लगाम नही है। अगाड़ी पिछाड़ी की कुछ खबर रखता है हम भी कुछ कहेंगे तो तोबड़ा सा मुह लटका तङ्ग हो घर की ओर सरपट भागेगा। देखता नहीं शहर के बड़े २ रईस महाजन और धनवानों की मण्डली यहां एकट्ठी है। लाला शतरञ्जदास वा बाबू फीलदास राय शुतरबख्श लाला घोड़मुहे राय अपने २ पार्षद वर्गों को साथ लिये उत्पात केतु ग्रह के समान आसमान में अपनी २ पतङ्ग बढ़ाये उड़ा रहे हैं। उमदा २ लटाइयां अपने मालिक की खूबसूरती का अभिमान ज़ाहिर कर रही हैं। हर एक लटाइयों में डोर क्या चढ़ी है मानो उन लम्पटों को नर्क में खीचने की रस्सी है। देखो यह लोगों के मज़ेदार डेरे खड़े हैं, कनात लगी है, सुथरा फर्श बिछा हुआ है, तुक्कल और डोर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पिण्डों से पूर्ण यह संदूक मानो कह रही है कि इन कूढ़ बुद्धियों के दुर्व्यसन और दुष्कर्म के खज़ाने इसमें भरे हुये हैं। जो जल्दी छिन्न भिन्न नहीं होंगे। ठौर २ घड़ों में जल भरे हुये ऐसे मालूम होते हैं मानो बिपत्ति राजधानी में इन को राज गद्दी का अभिषेक करने के लिये बैतरणी और कर्मनाशा आदि नदियों से जल मंगाया गया है। तीन मन की तोंद लिये यह लट्टूदार पगड़ी कौन हैं। मतिमन्द लाला तिलोक चन्द। ओ लाला ज़रा सम्हल कर आसमान ताकना कहीं लट्टूदार फिसल न पड़े। पतङ्ग उड़ाते २ पसीने में लोथ पोथ डाढ़ी फड़काये यह छज्जू भाई कौन चले आते हैं। मियां मीरू। मियां खुदा के वास्ते ज़रा होश में आओ हमें खौफ लगता है कि पसीनों में पिघल पानी ही पानी कहीं न हो जाओ। डेढ़ दमड़ी की पतङ्ग लिये यह कौन आये। लाला फुकाऊ लाल। वह काटे बस फिस्स तिलिलि। भाई वाह सत्यानासी दास का एक्का तो खूब फर्राटे का है। सेठ बुड़न्त साह की पालकी भी खूब सजी है और यह मूर्खताभक्त बाबू कूढ़चन्द्र का टमटम तो रावण के रथ से भी अधिक ऊंचा है। अहा यह चिस्सी मल के कनकौये धर्म कर्म और विद्या गुण का कान काटे कैसे उड़े जाते हैं। ओ मियां खच्चू खबरदार रहना पेच पड़ी है देखना कोई तोड़ न ले। चलो २ अभी बहुत देखना है। ये कौन हैं धनिकों का धन चूसने वाली जोंक। आहा धन्य हैं ये कलि कल्मष सिद्ध पीठ की योगिनी। यह इन्ही की कामदार जूतियों की नोक में इतना असर है जिसकी ठोंकर रसिकों के जी पर भरपूर लगती है। इनके चारो ओर कहकहे उड़ाते ये महादेव के गण कौन खड़े हैं। ओ बीबी ज़रा एक नज़र यारों की तरफ भी। अबे तू किस गुन का है। जान साहब ऐसा मत कहो हम तुम पर धारोधार बहे जाते हैं। तुम हम से किनारा कश हो तो लाचारी। तुम तो एक ही खेवे में सैकड़ों को पार कर देती हो। तुम्हारी मुहब्बत तो घनघोर घटा सी सदा उमड़ी रहती थी अब क्या हो गया जो हम पर ज़रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


भी तवज्जो नहीं । तो अब हम नाले भर भर मर जांयगे। बस बस चलो यहां से इनकी नज़र एक बार बिजली सी इस ओर भी चमक अब बदली सो बदली। अहा यह क्या तिलिस्मात है। अबे यह भी नहीं जानता इसी की बदौलत तो यह सोहबत का मेला है । देख यह जगह जगह गाज़ी मियां के झंडे खड़े हैं और रौज़े पर बड़े ज़ोर शोर की भीड़ हो रही है हर एक झण्डे के पास डफाली लोग रवाना बजाते और गाते हैं (पञ्च महाराज खड़े हो सब चरित्र देखने लगे) नीचजाति की स्त्रियां सिर हिला हिला नाचती कूदती उछलती चली आती हैं डफाली लोग उन से पूछते हैं। हज़रत आप कौन हैं ? अरे तू हमें नहीं जानता हम गाज़ी मियां हैं हम फातिमा बीबी हैं । इसने हमारे नाम की रोट नहीं चढ़ाई इसे मार डालूंगा छोड़ंगा नहीं । उन स्त्रियों के घरवाले पांव पर गिर नाक रगड़ माफ। करो हम अंधे आदमी कच्चा पिण्ड हम तुम्हारा भेद का जानी तोबा सौ बार तोबा । चिराग़ जलता है कितने भले मानुष रेवड़ी मलीदा और शरवत चढ़ाय २ दण्डवत कर चले जाते हैं। डफाली रवन्ना बजाय २ जो गीतैं गाते थे उनका स्वर और तान एक निराले ही ढङ्ग का था पंच महाराज ने बड़ी सावधानी से कान लगा कर जो सुना उसे नीचे लिखते हैं ॥

॥ डफालिक गीते रवाना ताले। रवाना बजता है ॥

झकनी क झकझक झकनी क झकझक ।
अरे मोर कुदक्कड़ी घोड़ी पर चढ़ि आवहु देवतः ॥
लम्बी लट छिटकाय खूब कुदरावहु देवतः ।
सुहबत मेलवा मंझार सुरंग बरसावहु देवतः ॥
सब दिन लाज शरम की कसक मिटवाहु देवतः ।
रसियन छैल चिकनियन मन ललचावहु देवतः ॥
प्रेम की डोर बढ़ाय खूब तरसावहु देवतः ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अंचरा खुलि २ जांय पेट चमकावहु देवतः ॥
सब को अन्ध बनाय खूब पुजवावहु देवतः ।
सीधा रतन पदारथ को झरि लावहु देवतः ॥
गंठपूरे अंख अन्धे हिन्दुस्तन धरि लावहु देवतः ।
मुसलमान हुशियार दूर टरकावहु देवतः ॥
बकरी मुर्ग गले पर छुरिआ फेरावहु देवतः ।
बनिया भूंज कलार सबै पचपिरियन देवतः ॥
जो फुसलाय फसावें बड़ लोगवन देवतः ।
इलिम हुनर की बात जल्द छोड़वावहु देवतः ॥
धरम करम की लीक सबै मिटवावहु देवतः ।
सब ह्वै जांय गवांर हमैं पुजवावहु देवतः ॥
पोथिया पुरान छिपाय हमै मनवावहु देवतः ।
रूपा जीवा सबै आय तुम्हें पूजैं देवतः ॥
सुहबत मेलवा बढ़ाय पतंग उड़वावहु देवतः ।
बड़ अदमी कोठीवालन मुढ्ढ बनवावहु देवतः ।
हम सब करैं कलोल सोई ढङ्ग लावहु देवतः ॥ इत्यादि ॥

---

## सामयिक हलचल में किसका दोष है ।

हिन्दुस्तान के एक छोर से दूसरे छोर तक देश में स्वदेशी इत्यादि अनेक बहानें से भयंकर हलचल मच रहा है इसमें किसका दोष है ? कर्मचारी गण तथा ऐंग्लो इण्डियन्स के Organs अपनी बातों की हिमायत करने वाले औज़ार पायोनियर, इङ्गलिशमैन, सिविल मिलिटरी गज़ट टाइम्स सरीखे पत्र धृष्टता के साथ यही कह रहे हैं कि इसके कुसूरवार केवल हिन्दुस्तानी हैं गवर्नमेंट तथा गवर्नमेंट के गौरांग कर्मचारियों का इसमें कोई दोष नहीं है । यह उनका कथन हम लोगों को मानो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



घाव पर नोन छिड़कने की तरह होता है। हम को हर तरह हीन दीन कर रहे हो सब भांत दबाते ही जाते हो तब हम कहां तक दबते जांय जिस ओर हम ज़रा भी उभड़ने की कोशिश करते हैं उसी ओर बड़ा भारी रोक खड़ा कर दिया जाता है हमारा सन्तोष तथा हमारी भलाई की कोई सच्ची आशा हमें नहीं दिलाई जाती। हमें निर्जीव और गुलाम बनाये रखने की चाल अलबत्ता प्रधान कर्मचारी चलते हैं। कैसे हो सकता है कि वह जाति Nation जो दिमागी कूवत में कभी हेठी नहीं रही इतना प्रबल अत्याचार सह ले जैसा गौरांग कर्मचारी इन दिनों अपने कामों से प्रगट कर रहे हैं। हम अपने देश की भलाई और अपने को गुलामी से छुटकारा पाने के लिये जो कोशिसें कर रहे हैं वह स्वाभाविक और प्राकृतिक है। दूसरे हम तो वैसे हैं भी नहीं कि जैसा आयरलैण्ड और Canada केनाडा तथा Colony उपनिवेशों के रहने वाले हैं। जो सर्वथा वृटिश गवर्नमेंट से स्वच्छन्द हो केवल नाम मात्र को वृटिश गवर्नमेंट का अधिकार अथवा Supremacy श्रेष्ठता स्वीकार कर रहे हैं। हमे तो रुपये में चार आना भी ये आज़ादगी का हक्क दे देते तो हम निहाल हो फूले न समाते और इनके शासन को स्वर्गीय शासन मानते। पर ये तो सर्वग्रास के यत्न से नहीं चूकते मसल है "ज्यों २ भीजै कामरी त्यों २ भारी होय" ज्यों २ हम दबते गये, इनका प्रभुत्व स्वीकार करते गये, गौ के माफिक तिनका मुह में दबाये गिड़गिड़ाते गये; त्यों २ ये हमें अधिक २ तुच्छ और नाचीज़ समझते गये तो अब यही सोचा गया कि "न शयानः पतत्यधः" गिरा हुआ क्या गिरेगा। मुरदे के ऊपर जो कबर में सोया है सौ मन खाक लाद दो तो उसे क्या। देश के पढ़े लिखे शिक्षितों के मन में ऐसे २ ख्यालात उपज खड़े हुये कि अब कहां तक सहैं जीवन तक को न्योछावर करते अब यही ताक लगाये हुये हैं कि जैसे हो तैसे हम अपना उद्धार करैं "देहम्पातये कार्यं वा साधये"॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स्वदेशी आन्दोलन उसी नैराश्य का परिणाम है हमे ऐसा मालूम होता है अब यह आन्दोलन घटने वाला नहीं है। उसी के दबाने को ये सब भांत २ के प्रबन्ध गवर्नमेंट की ओर से हो रहे हैं। यह आन्दोलन एक दिन अवश्यही उभड़ता। अब तक जो लोगों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया यह हिन्दुस्तानियों की शान्तिप्रिय जाति होने का कारण है। हम अब भी अपनी शान्ति में बाधा नहीं छोड़ा चाहते यदि सरकार हमे अपने ढंग पर चले जाने दे। इस हलचल और बढ़ते हुये जोश की उफान पर पानी छोड़ने की भांत उस जोश को अपनी सर्वतोमुखी प्रभुता की पूरी ताकत के द्वारा दबाना उचित नहीं है बरन उनको आश्वासन देना और उन्हे किस बात की शिकायत है इस पर कान देना है। हमे पछतावा है कि समस्त वृटिश जाति की जाति क्यों इतना स्वार्थान्धहो रही है। इनकी श्री वृद्धि की इस समय परा काष्टा है। जिन्हो ने यही तै कर छोड़ा है कि हमारे दिन सदा ऐसे ही चले जांयगे न्याय अन्याय तथा मनुष्य को मनुष्य मात्र के साथ प्रकृति के नियमानुसार कैसी सहानुभूति होना चाहिये इसका कुछ खयाल उन्हें नहीं है। अफसोस बड़े २ राजनीति कुशल लोग बिलाइत में पड़े हैं क्यों उन्हें इस पर ध्यान नहीं होता। स्वार्थ और लोभ का महा सागर जो सब ओर से उमड़ता चला आ रहा है उसे तो दबाया नहीं चाहते हमें अलबत्ता सब तरह पर दबाने के यत्न से नहीं चूकते जो सर्वथा प्राकृति के नियम के विरुद्ध है। विदेशी लोग हमे आगे बढ़ते देख चाहो जितनी कठिनाई हमारे आगे ला रक्खें अब तो यहां से स्वदेशी का प्रवाह नहीं रुकने वाला है। हमारे में स्वदेशी भाव पुष्ट पड़ जाय और हम अपने पाओं खड़ा होना सीख जांय तो हमे स्वराज की भी कुछ परवाह नहीं है। स्वदेशी के लाभ को तो हम कुछ २ समझने लगे हैं अब दो बात के लिये हमे यत्न करना बाकी रहा। एक यह कि हमारे यहां का अन्न तीसी सरसों रुई इत्यादि बिदेशों में न जाय दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अदालतों में न जा अपना फैसला हम आप कर लिया करें। पर इसके पूरा करने में न जानिये कितनी बाधायें हमारे रास्ते में छोड़ी जांयगी न जानिये कितने सच्चे देश हितैषियों का जलावतन Deportation होगा। धन्य हैं वे बीर पुरुष। धन्यबाद उन बीर प्रसबिनी माताओं को जो ऐसे सुसन्तान पैदा किये हैं दशपूर्बान्दशापरान् अपने पूर्ब पुरुखों को उस बीर पुरुष ने तार दिये। सच्ची देश हितैषिता का मर्म समझने वालों को देश हित के मुकाविले अपनी जान भी इतनी प्यारी नहीं है किमुत तुच्छ सुखबासनायें। ऐसे पुरुष श्रेष्ठ देश के प्रत्येक प्रान्त में उपज रहे हुये हैं और उपजते जांयगे "कालो ह्ययं निरबधिर्विपुला च पृथ्वी" हम फिर भी एक बार सबिनय गवर्नमेंट को चिताते हैं कि वह उचित मार्ग का अनुसरण नहीं कर रही है। मुल्क में देशी कारीगरी और शिल्प की बढ़ती हुई उन्नति देख बोध होता है वह दिन जल्द आनेवाला है कि बिलाइत के बड़े २ कारखाने और फर्म जो हिन्दुस्तान के वदौलत मालामाल थे हमारे शरीर का रस खींच आमोद प्रमोद करते हुये खूब गुलछर्रे उड़ा रहे थे और अपनी Luxurious habits भोगलिप्सा को ओर छोर तक पहुंचाये हुये थे उनके कारखानों का माल यहां न खपने से दिवालदारिये बन बैठेंगे। हा क्या यही मनुष्यता Humanity का सारांश है? कि दया सागर दीन दयालु जगदाधार जगत पिता परमेश्वर के एक पुत्र एक भू भाग में दाने २ को तरसते हुये पेट भर अन्न के लिये ललाते फिरैं कुटिल पालिसी और हिकमत अमली की काररवाइयों में पिसे जांय। गुलामी का बोझ उठाये हुये दिन रात गाढ़ी मेहनत और शीतातप का क्लेश उठाते अन्न उपजावें और उसे काम में लाने से महरूम रहैं। धरती के दूसरे हिस्से में उसी रहीम ख़ालिक के बनी आदम तनिक भी दया का भाव मन में न लावें। क्या ईसा के पवित्र धर्म की यही पवित्रता है? उनसे तो हमी लोग भले कि इस तरह की निठुराई से कोसों दूर हैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


एक जाति की दूसरी जाति का शासन सुकर और सहज तब होता है जब दूसरी जाति या तो निपट जंगली हो या दोनो जाति Similar blood एक ही रक्त वीर्य वाली हों। जब शासित जाति शासकों से दिमागी कूवत में ज़रा भर भी कम नहीं हैं ऐसी हालत में हुकूमत में पायदारी तभी आ सकती है जब हुकूमत करनेवाली जाति तमा और लालच की पुजेरी न हो, और कहने मात्र को नहीं बरन बर्ताव में भी उसके शासन में उदार भाव हो। जब तक मुल्क में शासक जाति का पंजा पूर्णतया नहीं जमा था तब तक बहुधा शासन में निष्कपट उदार भाव झलक उठता था वाइस राय भी अकसर ऐसे आये जिन से सच्चा देश हित साधन हुआ। जब एक राट् प्रभुत्व जम गया तब फिर क्या "भावै तुम्है करो सोइ सोई" पर निश्चय रहे उदार नीति के प्रबल प्रताप के आगे शस्त्र बल कुछ नहीं है। उदार नीति के द्वारा शासित जाति का सन्तोष राज्य की स्थिरता के लिये बड़ी बरकत है। बैठे बैठाये बंगाल के दो टुकड़े करने की क्या ज़रूरत थी। हुआ भी था तो लार्ड कर्ज़न की नासमझी और भूल का संशोधन क्यों न किया गया। तो सिद्ध हुआ इस हलचल का दोषी गवर्नमेंट या उसके गोरे कर्मचारी हैं यहां के लोगों का इसमें कोई दोष नहीं है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ॥ बच्चोंने तत्काल जानलिया ॥

देखिये दो बालिकाएं इस लाभकारी मीठी दवाको देखकर कैसी प्रसन्न होरही हैं

हमारा सुधासिंधु इतना प्रसिद्ध होचला है जिससे अब यह बात निर्विवाद सिद्ध होचुकी है कि नीचे लिखी बीमारियोंके लिये बिना पूछेही लोग मंगाने लगे हैं जैसे कफ, खांसी, जाडेका बुखार, हैजा, शूल, दस्त, संग्रहणी, गठिया, दमा, कै होना, जी मचलाना, बालकों के हरे पीले दस्त और कै करना इनको सिर्फ तीन खुराकमें अच्छा करता है. इसके हजारों सार्टिफिकट मौजूद हैं जिनके लिये प्रायः १२५ चित्रों सहित सूचीपत्र मंगा कर देखिये. मुफ्त भेजेंगे सुधासिन्धु की कीमत ॥) फी शीशी ६ लेनेसे १ भेट १२ लेनेसे पांच रु०

देखिये श्रीमान् राजा इन्द्रजीत प्रताप शाह बहादुर तमकुही ज़िला गोरखपुर से क्या आज्ञा करते हैं।

महाशय आपका एक दरजन सुधासिंधु पहुंचा जो आपने भेजाथा यह दवा बहुत लाभ दायक है बुखार और पेटके रोगा में तो बहुतही फायदेमन्द है और बहुत रोगोंमें वैसा ही फायदा करता है और महरबानी करके आध पाव चन्दनादि तैल और वासारिष्ट भेजिये।

मगाने का पता—

**क्षेत्रपाल शर्मा मालिक सुख संचारक कम्पनी मथुरा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दी प्रदीप

## मासिक पत्र।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायु सों मणिदीप समथिर नहिंटरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामे जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जूलाई १९०७ | जिल्द २९ | संख्या ७

## विषय सूची।


FREE TRADE
स्वतन्त्र बाणिज्य ... १
मौखिक राजभक्ति ... ४
कर्मचारियों का भ्रम ... ६
स्त्रियों का कर्तव्य ... ... ७
अर्थ शास्त्र पोलिटिकल इकानमी क्या है? ... ... १०
श्रीयुत लाला लाजपतराय १२
सह लेने में भलाई है ... १३
सिक्खों के धर्म का एक साधारण इतिहास ... ... १५
चुहल ... ... ... ... १९
पुस्तक प्राप्ति ... ... ... २०
प्राचीन नाममाला... ... २२


पण्डित बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक

के लिये पं० केदारनाथ मिश्र ने अभ्युदय प्रेस प्रयाग में छापा

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियें तथा असमर्थों से अग्रिम १।।=) समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीः ॥

# हिन्दी प्रदीप

जिल्द २९ सं० ७ | प्रयाग | जुलाई सन् १९०७ ई०

## FREE TRADE स्वतन्त्र वाणिज्य ।

सौ वर्ष के ऊपर हुये आदम स्मिथने पहले पहल स्वतंत्र वाणिज्य का ख़याल लोगों में फैलाया । उद्देश्य जिसका यह था कि बिना किसी रोक टोक के आपस का द्वेष मिटाय सब लोग स्वतंत्र व्यवसाय करैं और संसार में भ्रातृभाव बढ़ावें—स्वतंत्र वाणिज्य का यदि असली उद्देश्य यही है तो कौन ऐसा अभागा है जो इसे बुरा कहैगा – "केहि पापी जेहि राम न भावा" भ्रातृ भाव किसे न रुचैगा, हम लोग और चाहते ही क्या हैं—पर यह भ्रातृ भाव तो कहने ही मात्र का है । यहां के सीधे सादे रोज़गारी पालिसी से चलने वालों की चाल क्या पहिचाने—"तुम हमारे भाई हो हम तुम्हारे लिये सब तरह का Risk नुकसान सहने को मुस्तैद हैं" यह कहते हुये भी हमारी मूड़ी कूचने में ज़रा संकोच मन मे न लावैं । ऊपर से कहने को धन पूत लक्ष्मी घर द्वार सब तुम्हारा है पर देहली के भीतर पांव न रखना । सब के ऊपर इस फ्रीट्रेड की कसौटी इसी से है कि इससे यदि हमारा फायदा और बिलायत का नुकसान हुआ होता तो वह कभी का उठ गया होता और स्वतंत्र वाणिज्य का राग विदेशियों में फिर कोई भी अलापने का मन न करता। यह इसी फ्रीट्रेडकी महिमा है कि हम दाने दाने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरस रहे हैं—जिस देश में कारीगरी की तरक्की है और जो देश Competition आपस की उतरा चढ़ी में पार पा सकता है उसके लिये स्वतंत्र वाणिज्य बड़ी बरकत है। लेकिन जो कृषि प्रधान देश है, जो सिर्फ कच्चाबाना Raw material पैदा करता है उसके लिये यह फ्रीटेड ज़हर है। हिन्दुस्तान जो कच्चा बाना पैदा कर इंगलैंड के बड़े २ कारख़ाने और मिलों को मुहैया करता है सब भांत घाटे में रहता है। रुई सन पेटुआ आदि कच्चे बानों को साफ़ कर उनके कारखानों की चटकीली चमचमाती चीज़ों पर मोहित हो उसको ईजाद करने वालों को दशगुना मुनाफा दे हम उन्हें खरीदते हैं और विलायत के लोगों को माला माल किये देते हैं। उसी कच्चे बाने को साफकर अपनी मेहनत से उन चीज़ों को जो हम यहीं तैयार करें तो कितना फायदा हो—सोचना चाहिये यह फ़ायदा हमारी मेहनत का है कच्चे बाने का नहीं। बहुधा ऐसा भी है कि जब दूसरे देश वाले जो कारीगरी में तरक्की करना चाहते हैं तो वे दूसरे देश के माल पर भारी टिकस लगाय उसे रोक देते हैं। जब समझ लेते हैं कि कंपिटीशन उतरा चढ़ी में हम ठहर सकेंगे तो आप भी स्वतंत्र व्यवसाय मे लग जाते हैं। जो इससे संसार में सुहृद्भाव की वृद्धि मानते हैं उनसे पूछना चाहिये कि तब रूस और जापान ने लड़कर क्यों लाखों की जान स्वाहा कर डाला और करोड़ों रुपयों का नुक़सान सहा। और जब फ्रीट्रेड ही से भ्रातृभाव रहता है तो क्यों हमारी सरकार करोड़ों रुपया फ़ौज में बेफायदा ख़र्च करती है। भ्रातृभावही का स्नेह तो है कि हमारे खेतिहर मर पच दिन रात की मेहनत कर अन्न उपजावें और उपज के पहिले ही तकावी की भांत रेलीब्रदर रुपया दे उन्हें अपने कब्ज़े में कर कुल अन्न बिलायत ढो ले जांय—करोड़ों मनुष्य आधे पेट खाय भूखों मरें और रेलीब्रदर प्रतिवर्ष कई करोड़ का फ़ायदा उठावें। सौहार्द और दया का छोर है—उस अन्न के बदले हमे बिलकुल क्याश रुपया मिलता हो सो भी नहीं नकद रुपया तो बरायनाम देश में आता है लोहा लक्कड़ कांच वर्तन आदि जो उनकी मेहनत Labour का प्रतिफल है सो हमें उस कच्चा बाना Raw materials. के बदले में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलता है—जब हम भूखों मरने लगते हैं तब उसी लोहा लक्कड़ को बेंच फिर अन्न खरीदते हैं—सस्ता वेचते हैं और महंगा खरीदते हैं। जो कहो अपना माल है क्यों बेचते हो तुम्हारे साथ कोई जबरदस्ती नहीं की जाती तुम तो अपनी खुशी से बेचते हो। इसके उत्तर में यही कहा जायगा कि न बेचैं तो करैं क्या बड़े से बड़े ज़मीदार इतना टूट गये हैं कि बिना फसल का अन्न बेचे मालगुज़ारी नहीं चुकता कर सकते। हमारे यहां के बुड्ढे पहले ज़माने की तारीफ करते हैं और उनके समय हर एक चीज़ कितनी सस्ती रहा करती थी इस का बड़ा घमण्ड उन्हे है। यह उन्हें कैसे समझाया जाय कि उस ज़माने में फ्रीट्रेड की पेचीदा पालिसी काम में नहीं लाई जाती थी। कुल पैदावार विलायत नहीं ढो जाता था, न इतनी कड़ी मालगुज़ारी तब थी—अब के समान तब ४५ और ५५ का बन्दोबस्त न था, रुपये में दो आना तीन आना ज़मीन का कर लिया जाता था इसी से रुपये का मन भर गेहूं बिकता था—इतने गाय बैल रोज़ नहीं काटे जाते थे इसी से रुपये का ५ सेर ६ सेर घी बिकता था। पशु तो कहीं रही न गये, मांसाहारियों की उदर दरी में जा समाने जो बच रहे हैं वे समाते जाते हैं। रुपये का १० छटांक घी इतने पर भी हमे मिलता जा रहा है यही अचरज है—मान लो मेनचेस्टर और लिबरपूल आदि तिजारती शहर हिन्दुस्तान में हैं और इंगलैंड को कच्चा बाना यहां मुहैया करना पड़ता है और यहां की कारीगरी विलायत को रवाना होती है तब इस फ्रीट्रेड को इङ्गलैंड के लोग कभी अच्छा न कहेंगे बल्कि इसके रोकने की कोशिश करेंगे। इनसाफ पसन्द दो चार अङ्गरेज़ दो एक स्पीच भी इस पर देदें तो उनकी कौन सुनता है "नक्कारख़ाने में तूती की आवाज़" जब कि समग्र वृटिश जाति की जाति स्वार्थान्ध हो रही है; हिन्दुस्तान के फायदे के लिये ज़रा भी अपना नुकसान नहीं उठाया चाहती तब हम लोगों का यत्न फ्रीट्रेड के रोकने का सब तरह पर व्यर्थ है। जैसा गेहूं और सरसों तीसी इस साल यहां पैदा हुई थी सब का सब यहीं रह जाता तो अन्न देश में समाता नहीं पर सब विलायत ढो गया हम लोग वही दुर्भिक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोग रहे हैं। यह भी कोई न्याय है पर क्या किया जाय परवश हैं जैसे रक्खोगे वैसेही रहना पड़ेगा। स्वदेशी और बायकाट से कुछ नहीं होना है न देश से दरिद्रता दूर होने वाली है जब तक यह फ्रीट्रेड कायम रहेगा। पर हम चाहें जो दुर्गति सहैं विलायत वाले इसे कायम रक्खैंगे।

## मौखिक राजभक्ति

महाकवि भारवि का कथनहै है "हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः" ऐसा बचन दुर्लभ है जो हित हो और चित्त को भी प्रसन्न कर दे। हम लोग कड़ी से कड़ी बात कह डालते हैं पर मन से गवर्नमेंट की भलाई ही चाहते हैं। बनावटी खैरखाहों की भांति Mouth loyalty मौखिक राजभक्ति चाहो हमसे न बने किन्तु अङ्गरेज़ी राज की स्थिरता देश में अवश्य चाहते हैं। इसी से कर्मचारियों के दोषों के उद्घटन में निःशङ्क रहते हैं और उनके दोषों को दिव्य दृष्टि से देखा करते हैं। इतना अलबत्ता कहेंगे कि कोई २ हममें से जोश में आय कभी २ सीमा के बाहर हो जाते हैं किन्तु चित्त में उनके कुछ बुराई हो सो नहीं। इसलिये कि ये लोग सुशिक्षित हैं, इतिहासों की अनेक घटनाओं को जांचे और तौले हुये हैं; मुक्तकण्ठ हो बृटिश शासन के गुण भरपूर समझते हैं और शासन के उसूलों को उदार शासन स्वीकार कर रहे हैं। कर्मचारियों की करतूत से जब उस उदार शासन में त्रुटि देख पड़ती है तो उसे संशोधन की दृष्टि से Point out प्रगट कर देखाते हैं इसी से कर्मचारी उन्हें अराजक कहने लगते हैं। मार्ली और मिन्टो आदि प्रधान कर्मचारी ऊंचे से ऊंचे पद के अधिकारी हैं और पालिटिक्स में महा प्रवीण हैं उनके इस हृद्गत भाव को न जानते हों सो नहीं है पर क्या किया जाय वर्तमान् शासन का चक्र ही कुछ ऐसे ढङ्ग पर चल रहा है, इङ्गलैंड और बृखिया का रिश्ता तथा हानि लाभ Relation and interest कुछ ऐसे मिले झुले हैं कि प्रधान कर्मचारी मार्ली तथा मिन्टो में इतनी हिम्मत और साहस Moral courage नहीं है कि अपने आप स्वच्छन्द कुछ कर सकें अपिच विलायत के एक अदना से अदना मनुष्य को खुश रख वे कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया चाहते हैं। चना का चबाना और शहानाई का बजाना दोनों एक साथ कभी निभा है? विलायत के लोगों को ही खुश रख लें या यहां वालों के साथ न्याय कर लें। दूसरे यह भी वे ख़ूब समझे हुये हैं कि हिन्दुस्तान में जैसी आपस की फूट है उससे निश्चय है ये कमज़ोर हैं और ऐक्य का बल इनमें न होने से इन्हें जितना ही दबावैंगे दबते जायंगे। न इनमें स्वार्थ के मुकाबिले देश के बनने बिगड़ने का कुछ ख़याल है तब "भावै हमें करैं सोइ सोई" वाली नीति का अनुसरण न करना मूर्खता है। अब इस मौखिक राजभक्ति को भी ज़रा टटोलना चाहिये। अब तक हमारे कर्मचारियों को पञ्जाब की ओर से बड़ा खटका था और पञ्जाब का बहुत बड़ा गौरव लोगों के मन में था पर इस आधुनिक हल चल में पञ्जाब ने कांच खोल दी, इसके हर एक कोने से लायलटी की चिट्ठी और अर्ज़ियां आ रही हैं पर कर्मचारी इस मौखिक भक्ति को समझे हैं उन्हें इस भक्ति और खैरखाही का सब भेद खुला हुआ है। हा! पञ्जाब का यह क्रम देख बड़ा अफसोस होता है। इस समय लाला लाजपतराय पर जो अन्याय किया गया उसके लिये कुल हिन्दुस्तान शोक प्रगट कर रहा है पर पञ्जाबी दुम दवाये अलग होते जाते हैं और लाजपतराय को दोषी ठहरा रहे हैं। आर्य समाज का पालिटिक्स से अलग होना भी देश का अभाग्य है। इसके स्थापक स्वामी दयानन्द ने इसे शुद्ध पोलिटिकल बुनियाद पर कायम किया था। हमको आर्य समाज पर जो श्रद्धा है सो इसी से कि संस्कृत पढ़े हुये कोरे पण्डितों में एक दयानन्द ही तो ऐसे हुये जिन्हें देशकी दुर्गति पर ध्यान गया और संशोधन के क्रम पर अपने मत का उद्देश्य उन्होंने राजनीति रक्खा—जिसमें हिन्दू जाति में एका हो, आपस की सहानुभूति बढ़े प्रचलित पाखण्डों से छुटकारा पाय सब का एक मज़हब वेद रहे। हां यह अलबत्ता कहा जायगा कि आर्य समाज किसी तरह अराजक नहीं है और अराजक तो प्रजा मात्र में कोई नहीं है। यह कोई नहीं चाहता कि अङ्गरेज़ी राज यहां से चला जाय हां अपना हक्क पाने को सबी इस समय लड़ रहे हैं और बराबर लड़ते जायंगे। इस हल चल के Main agent प्रधान कर्ता पु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिस वाले और डिटेक्टिव हैं जो अङ्गरेज़ी राज के कलङ्क और धब्बा हैं । पुलिस न केवल प्रजा को दुखदायी है बरन प्रजा और गवर्नमेंट के बीच Wide gulf बिगाड़ करने का मुख्य द्वार है जो बहुधा शासन के काम में कर्मचारियों को गुमराही के रास्ते में ले जाती है । अंत में इस सब दन्त कथा का निचोड़ यही है कि हम सब लोग मौखिक राज-भक्ति न कर शुद्ध भाव से सरकार के हितैषी हैं और चिताया करते हैं कि गवर्नमेंट न्याय के मार्ग पर चलती रहे जिसमें बदनामी का टीका न लगे और प्रजा में असन्तोष न फैले । प्रजा का सन्तुष्ट रहना ही राज्य की स्थिरता का निदान है । यह समझना कि ये दुर्बल हीन दीन हैं असन्तुष्ट हो क्या करेंगे बड़ी भूल है जब प्रजा में सन्तोष राज्य की स्थिरता का प्रधान हेतु और अङ्ग है तब उसे बिगाड़ना भूल है "तुषेणापि परिभ्रष्टा नप्ररोहन्ति तन्दुलाः" प्रजा का सन्तोष उन्हें दबाने और अत्याचार से न होगा बरन उनकी प्रार्थना पर ध्यान देने से होगा । जिसे हमारे कर्मचारी जान कर भी अजान बनते हैं तो इसका परिणाम शुभोदर्क नहीं है ॥

---

## कर्मचारियों का भ्रम ॥

इस समय सर्कारी कर्मचारी जिस शासन पद्धति का अनुसरण कर रहे हैं उस से मालूम पड़ता है कि वे सर्वथा भ्रम में पड़े हैं, और इस भ्रम का कारण स्वार्थान्धता है । मारली इत्यादि कर्मचारी लोगों को यही धुन सवार है कि जैसे हो इङ्गलैंड और ऐंगलो इण्डियन्स को फाइदा पहुंचे । सर्वथा अन्याय हो बला से इण्डिया का एक रूपये का नुकसान कर इङ्गलैंड को चार आने का फायदा होता है तो कोई हर्ज नहीं । इङ्गलैंड और हिन्दुस्ताम वर्तमान् शासन प्रणाली के चक्र से ऐसे मिले झुले हैं कि हिन्दुस्तान का उसी में फायदा है जिस में इङ्गलैंड का नुकसान है । तब मारली साहब कहां से इतना साहस लावें कि सरीहन अपने मुल्क का नुकसान कर उसे फायदा पहुंचावें जो देश उनके मुल्क के ज़ेर साया में है । कदाचित् बड़ी हिम्मत कर किया चाहें तो उनके मुल्क वाले उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नींच खांय और उसी दिन मंत्रित्व के पद से खारिज किये जांय। यही सब बातें उनके भ्रम का कारण हैं। हमलोग नाहक मारली साहब पर तान मारते हैं, शासन प्रणाली की कल ही कुछ ऐसी है कि ज़रा उसमें उलटी कल उमेठ देने से सब बिगड़ता है। अब भ्रम की बात सुनिये, यहां तथा विलायत के प्रधान कर्मचारी यही चाहते हैं कि हिन्दुस्तानी पालिटिक्स में पटुता प्राप्त न करें इसीसे स्कूल और कालिजों में विद्यार्थियों पर सख़्ती हो रही है, नये २ रिज़ोल्यूशन पास होते हैं जिसमें वे पालिटिक्स में हस्तक्षेप न करें, पोलिटिकल लेक्चरों में शरीक न हों—न साधारण प्रजा राजनीति के मर्म को। जानने पावें पर यह बात तो वैसीही है कि दिया सामने ला रख दिया गया है और कहते हो कि उसकी रोशनी को तुम काम में न लाओ। तालीम की रोशनी तो मुल्क में फैलती जाती है और उस रोशनी के अंजाम को काम में लाने से रोकते हो। सन् ५८ के बलवे के बाद यही सोचा गया कि यह राज विराजी मूर्खता के कारण हुई, सब लोग पढ़ लिख लें तो सल्तनत में पायदारी पहुंचे। ठीक है सर्व साधारण राज काज के मर्म को पहुंचने लगेंगे तो राज्य की स्थिरता और पायदारी में जो त्रुटि है उसे गवर्नमेंट से निवेदन करेंगे। सर्व साधारण को राजनीति की मर्मज्ञता से रोकना तो वही बात हुई कि हिरन चर लेंगे इसलिये खेती मत करो। नये २ रिज़ोल्यूशन पास कर राजनीति के ज्ञान को लोगों में रोकना मानो इसकी जानकारी के लिये उन्हें उसकाना है। इसी से हम कहते हैं कि यह हमारे कर्मचारियों का भ्रम है। इस भ्रम में न पड़नेही से उनका कल्याण है पर हमारा कहना उन्हें काहे को रुचैगा। लाचारी है।

---

## स्त्रियों का कर्तव्य

स्त्रियों का पहिला कर्तव्य विद्या पढ़ना है। भारत में स्त्रियां जो ऐसी गिरी दशा में आगई हैं उसका कारण केवल उनकी मूर्खता है। उनमें विद्या न होने से ये यह नहीं समझ सक्तीं कि किसमें हमारा लाभ है और किसमें हानि। विचार और दूरदर्शिता जो विद्या के बड़े फायदे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं दोनों से सदा वंचित रह थोड़े से तात्कालिक लाभ के सामने होनहार अपनी बड़ी भलाई को वे नहीं समझ सक्तीं। पुरुषों में स्वदेशी आन्दोलन का बड़ा ज़ोर है पर स्त्रियां इसे बिलकुल नहीं जानतीं कि स्वदेशी किस चिड़िये का नाम है। जब तक इसके गुण हमारी ललनायें न जानेंगी तब तक स्वदेशी में मज़बूती न आवेगी। घर के टहलुये और टहलिनियों को अपने बस में रखने को थोड़ा गणित भी अधिक नहीं तो त्रैराशिक तक बहुत आवश्यक है जिसमें घर गृहस्थी का खरच बरच लिख लिया करैं। नई सभ्यता के अनुसार केवल पढ़ना ही स्त्रियां का कर्तव्य नहीं है वरन गृहस्थी के कामों में चतुराई घर और वस्त्र आदि की सफाई, भांत २ के व्यंजन तैयार करने में निपुणाई भी इनका उचित कर्तव्य है। शिशु पालन भी उनका एक कर्तव्य है। बहुधा स्त्रियां अपने फूहरपने और मैली तथा गन्दी आदतों से लड़कों को भी मैला कुचैला रखती हैं। ऐसा कि उनके लड़कों को देख ओकलाई आने लगती है। दूसरे यह कि बीमार होने पर दवा दारू करने के बदले झार फूक में कितने लड़के हर साल जाया जाते हैं। यह सब स्त्रियों के अपढ़ होने का बाइस है। यहां इतना और भी याद रहे कि पढ़ाने से हमारा मतलब केवल अक्षर मात्र सीख लेने या ब्रजविलास, इन्दरसभा, लैलामजनू सरीखी नष्ट किताबों के पढ़ने से नहीं है किन्तु सदुपदेश पूर्ण पुस्तकें भूगोल तथा इतिहास के पढ़ने से है। यह उनकी मूर्खता ही का कारण है कि विवाहों में महा अश्लील सिठनियों का गाना इत्यादि कुरीतियों को परंपरागत मान छोड़ा नहीं चाहतीं—लड़के वाली स्त्रियां जिनके बच्चे दूध पीते हों उन्हें खाने पीने में बड़ा संयम रखना चाहिये और अपने निज के स्वास्थ्य की भी भरपूर फिकिर रखना चाहिये इस लिये कि उनके स्वास्थ्य का असर दूध पीने वाले बच्चों पर पड़ता है। बहुतेरी स्त्रियों का दूध विषैला होता है उन्हे चाहिये उत्तम औषधियों का सेवन कर दुग्धके विषैले होने का दोष दूर करें। कितनी ऐसी भी हैं जिनमें भर पूर दूध होता ही नहीं कि बालक की पूरी तरह तृप्ति होसके उन्हें उचित है शतावरी इत्यादि दूध बढ़ाने वाली दवाइयों का सेवन किया करें। घर की जो बड़ी बूढ़ी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरखिनें हैं उनसे सदा इस बात की तथा और २ घरैलू बातों की सलाह पूछा करें और पुरखिनो को भी चाहिये कि वे अपनी बहुओं को ऐसे ढंग से रक्खें और आप ख़ुद भी ऐसे ढंग से रहें कि उन की पत और इज़्ज़त उनके बीच बनी रहे—कितनी पढ़ी लिखी बहुयें अपनी सास का पत पानी इस लिये नहीं रखतीं कि वे अपने पढ़ने लिखने के घमण्ड में चूर रहती हैं और समझती हैं हम इस डोकरी से अधिक बुद्धिमती और पढ़ी लिखी हैं—पर यह उनकी ख़ाम ख़याली है—पुरानी बुढ़ियायें जो "पुरन्ध्री" पुरखिन हो गई हैं वे यद्यपि पढ़ी लिखी नहीं होतीं पर ज़माना देखे हुये हैं और सब तरह की ऊंची नीची दशा झेले हुये हैं-इस लिये यद्यपि शिक्षिता नहीं हैं तो क्या हुआ गृहस्थी की सब बातों को ख़ूब समझे हुये हैं। वे आदर के साथ पूंछने पर अच्छी सलाह देंगी। बहुधा देखने में आता है जो सुशीला और नेक चलन बहुवें हैं वे कर्कशा से कर्कशा सास ननद तथा दूसरी २ घर की पुरखिनों को अपने गुन से वश में करलेती हैं—यहां तक की वह थोड़े ही दिनों में घर की मलकिन या गृहेश्वरी बन बैठती हैं और सास ननद उसका दिया पाती हैं। स्त्रियों को पाक कर्म की ओर विशेष ध्यान रखना चाहिये क्योंकि रसोई बनाने की चतुराई पढ़ने से भी कठिन और लाभकारी है। दूसरे नवन्ता कुलकामिनियों की शोभा है बहुधा स्त्रियां जब अपने बाप के घर में रहती हैं तब उनका औद्धत्य और अठखेलियां पल्ले सिरे की रहती हैं विशेष कर भौजाइयों के साथ उन्हें इसका बिलकुल ख्याल नहीं रहता कि ससुर के घर जाय हमें भी भौजाई बनना पड़ेगा । पर जो पद्धती चाल के घराने हैं वहां बेटियां अपने माइके ही से दबाई जाती हैं और उद्धत नहीं होने पातीं। इसी से समझदार लोग जिस घर की लड़की लेते हैं उस घर के लोगों के शील स्वभाव और हर तरह के बर्ताव को अच्छी तरह परख लेते हैं। धन के लोभ में आय भरे मुंह नहीं गिरते। ऐसे ही घराने की भारी भरखं ललनायें समाज की लाज निभाते हुये सराही जाती हैं।

एक अबला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ शास्त्र पोलिटिकल इकानमी क्या है ?

हिन्दुस्तान के लिये यह बिलकुल नई बात हैं। अर्थ शास्त्र क्या है साधारण लोग इसे समझी नहीं सकते। पर यह विषय बड़े मार्के का है; विलायत में इसका बड़ा मान है। वहां राजनीतिज्ञ पुरुषों की शिक्षा बिना इसके अपूर्ण रहती है। वे इसे विवेचना पूर्बक अच्छी तरह मनन किये रहते हैं। इसकी साधारण परिभाषा धन सम्बन्धी विद्या है। इस शास्त्र में यही बतलाया जाता है कि धन या संपत्ति का स्वरूप क्या है और उसकी उत्पत्ति कैसे हो सक्ती है। एक धन को दूसरे प्रकार के धन से कैसे बदला किया जाय और उसका वितरण तथा लोगों में उसका खपना किस तरह पर हो। How wealth is produced exchaged distributed and consumed इस का उद्देश्य धनोपार्जन के उत्तम नियम वा कायदे ढूंढ कर निकालने का है न कि केवल मन में धन पैदा करने का प्रेम मात्र है। इसके पढ़ने या अभ्यास से धनोपार्जन की तृष्णा कुछ घट जाती है, लोभ अपना विकराल रूप धारण नहीं कर सक्ता जिससे एक मनुष्य निज लाभ निमित्त अपने भाई का गला काटने की इच्छा भी नहीं करता बरन सब के हानि लाभ को विचार काम करता है। पोलिटिकल इकानमी हमे यह भी सिखाती है कि धन किस तरह उत्तम रीति पर मिल सकता है और कैसे उसे काम में ला सकते हैं तथा एक धन को दूसरे धन से कैसे अदल बदल लाभ उठा सकते हैं। यह अर्थ शास्त्र मनुष्यों के हृदय में केवल धन के प्रेम का अंकुर ही नहीं उपजाता बरन यह दृढ़ देशानुराग उपजाता है जो हमारे में उन्नत विचारों के पैदा होने का हेतु है। बहुत लोग पोलिटिकल इकानमी को अदला बदला Exchange का विज्ञान कहते हैं अर्थात् जिस बस्तु को दूसरी बस्तु से हम बदल सकें वही धन है किन्तु समाज में यह अदला बदली अनेक भांत हो जाती है—जैसा मीठी बोल के बदले मीठी बोल अच्छे बर्ताव के पलटे अच्छा बर्ताव। इस दशा में उनकी यह परिभाषा ग़लत है। बरन धन वही बस्तु है जिसका कुछ मूल्य हो। यहां एक नया शब्द मूल्य या कीमत हमे मिला तो अब इसकी भी कुछ परिभाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होनी चाहिये। कीमत या मूल्य वह शक्ति है जिसके बल उस वस्तु के स्वामी को कोई दूसरी वस्तु अथवा मेहनत या मेहनत का प्रतिफल मिल सके किन्तु इस अदला बदली में क़ानून या प्रेम की अपेक्षा न हो। उदाहरणार्थ माता अपने पुत्र के दुःख या बीमारी में जो होस उसकी शैया के पास बैठी रहती है, खाना, पीना, काम करना सब छोड़ देती है पर बदले में उसे क्या मिलता है।

हम कह आये हैं समाज में अदला बदली कई तरह की होती है जैसा नम्रता के बदले नम्रता इत्यादि। ये गुण यद्यपि धन नहीं हैं तथापि धन से बढ़कर हैं। बहुत से बिद्वान् सत्य, नम्रता, ज्ञान, बल, स्वास्थ्य को एक प्रकार का धन मानते हैं। जिस जातिमें दहेज के लिये करार की पृथा है उनमें पुत्र एक बड़ा धन है, सरकेशिया वालों में सुन्दर कन्या धन है। हमारे देश में धन सम्पत्ति तथा जायदाद में विशेष अंतर नहीं मानते पर अङ्गरेज़ी में इसका पूरा २ भेद दिया गया है। Wealth का अनुबाद बहुतेरे लोग "अर्थ" करते हैं पर बहुत से विद्वान् अर्थ को वेल्थ का उपयुक्त भाव सूचक शब्द नहीं कहते। Property जिसे संपत्ति या जायदाद कहेंगे इन दोनों में बहुत बड़ा भेद है। मिल साहब ज़ेवर और ज़मीन का उदाहरण देकर इसका भेद इस तरह समझाते हैं। ज़ेबर और ज़मीन उस मनुष्य की संपत्ति स्वरूप है जो उन्हें बेच अपना कर्ज़ अदा कर सकता है पर वह देश की सम्पत्ति स्वरूप नहीं है। इससे सिद्ध होता है जिस बस्तु पर साधारण रीति से देश के सब मनुष्यों को सत्ता प्राप्त हो सके वही धन है और देश का कल्याण उसी धन या उसी प्रकार के परिश्रम या मेहनत से है जिसमें सब शरीक हों या जिस पर सबों का अधिकार हो। अर्थ शास्त्र के मुख्य चार भाग हैं उपज Production अदला बदला Exchange वितरण Distribution खपना Consumption जिसकी अलग २ विवेचना हम फिर कभी करेंगे।

पांडेय लोचन प्रसाद।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## श्री युत लाजपतराय

धन्य आर्य कुल वीर लाजपत नर वर श्रीयुत।
धन्य बन्धु हित करन धन्य भारत सुयोग्य सुत॥
धन्य दया के पुञ्ज बुद्धि विद्या के सागर।
सहन शील गम्भीर धन्य पञ्जाब दिवाकर॥
मृदु भाषी निष्कपट साधु भारत हितकारी।
सदाचार पटु श्रमी देश स्वातन्त्र्य भिखारी॥
नीतिविज्ञ बाचाल न्याय के रूप गुणागर।
अति उदार दृढ़ वीर हृदय निश्छल करुणाकर॥
सरस भाव परिपूर्ण जासु केहरि सम बानी।
राजनीति उपदेश अनेकन रस से सानी॥
दुखी प्रजायुत मातृ भूमि की दशा सुधारक।
तशासन के अन्याय–जनित–संताप निवारक॥
भारत जन सर्वस्व सुमन्त्री वृटिश राज के।
स्वहृदय पोषक बायकाट इच्छुक स्वराज के॥
तन मन धन से रहत सदा जो देश कार्यरत।
वीर भूमि को वीर पुत्र सोइ वीर लाजपत॥
देश बन्धु हित छांड़ि आपनो यश चिरसंचित।
तज्यो पिता प्रिय पुत्र मित्र वन्धुन स्वदेश हित॥
प्यारे तेरो नाम सुयश अतिशय प्रिय पावन।
पराधीनता शोक व्यथा संताप नसावन॥
भारत के इतिहास बीच तेरो गुण विस्तृत।
स्वर्णाक्षर में आर्य! होयगो निश्चय मुद्रित॥
प्यारे तेरे विमल कीर्ति की सरस कहानी।
पढ़ि पढ़ि अति हिय मोद लहैंगे बुध भट ज्ञानी॥
कविजन आदर सहित तुम्हारो गान करैंगे।
ईर्षी तुव यश सुनत दांत तर जीभ धरैंगे॥
करि तेरो अनुकरण देश के जेते बालक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश होंयगे मातृ भूमि के दृढ़ प्रति पालक ॥
बुधि विद्या कछु नाहिं कहांलौ तुव गुण गाऊं ।
तुव छाया तर बैठ सदा तुव कुशल मनाऊं ॥

माधव प्रसाद शुक्ल—प्रयाग ।

---

## सह लेने में भलाई है

Every step of progress which the world has made, has been from scaffold to scaffold, and from stake to stake. Wendell philips

एक अङ्गरेज़ विद्वान् का कथन है कि संसार में जो उन्नति हुई है वह सब सूली के द्वारा हुई है। यदि पांच मिनट के लिये संसार के भिन्न २ देशों के इतिहासों के पन्ने उलटे जांय तो मालूम हो जायगा कि ऊपर कहा हुआ वाक्य बिलकुल सही है। क्या कभी स्पेन देश वालों के हांथ से जेटलेंड का उद्धार हो सकता था यदि स्पेन उन देश-निवासियों को अत्यन्त पीड़ा न पहुंचाता? क्या इटली कभी स्वतंत्र हो सकती थी यदि आस्ट्रिया उस पर घोर अत्याचार करना आरम्भ न करता? क्या अमेरिका की कीर्ति आज सब संसार में फैल सक्ती थी यदि इंगलैंड उस पर नये २ कर न लगाता और उसे पीड़ा न पहुंचाता? क्या कभी अफ़ीमची चीन अपनी गहरी नींद से जाग सकता यदि उस पर यूरप की ईसाई शक्तियों के अत्याचार न होते? क्या कभी डरपोक कहे जानेवाले बङ्गाली नवयुवक अङ्गरेज़ों के हृदय में भय उत्पन्न करा सकते और National Volunteers की सेना या जातीय अखाड़े बना "इङ्गलिश मैन" पत्र को भौचक्का बना सकते यदि उन पर गोरखों के डन्डे न पड़ते? क्या कभी गुरू गोबिन्द सिंह और छत्रपति शिवाजी भारत में उत्पन्न हो ऐसे शान्त और धार्मिक सिक्ख और महाराष्ट्र जातियों को इतना शक्तिशाली कर सकते कि वे मुग़ल सम्राज्य को जड़ मूल से उखाड़ दें यदि औरंगज़ेब हिन्दुओं के संहार और हिन्दू धर्म के नाश करने में तत्पर न होता? हमे अत्याचारियों को धन्यबाद देना चाहिये जिन्होंने भारत को समय समय पर चैन की गहरी नींद से जगाने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्न किया है। इस कारण हम लार्ड कर्ज़न से लाट तथा फुलर और इबर्टसन से छोटे लाट को हृदय से धन्यबाद देते हैं जिन्होंने हमे सुझा दिया कि हमारी यथार्थ अवस्था क्या है। हिन्दुओ अब तुम्हारे अभ्युदय का समय आ गया है। अब तुम्हें दैवी तथा मानुषी अनेक कष्ट सहने के लिये हर समय तैयार रहना चाहिये। इसी से ही तुम्हारा उद्धार होगा। यही तुम्हें स्वराज्य देगा; और तुम्हें एक जाति बनावेगा। क्या आर्यसमाजियोंको अपना धर्म राजनैतिक कहे जाने से डरना चाहिये? ईसाईयों को इस बात का बड़ा घमंड है कि उनका धर्म मनुष्यों को स्वतन्त्र चित्त बनाने वाला है, जिस देश में पहुंचता है स्वाधीनता से भरी हुई वायु की लहरों को बहाता है। हमे भी इसका अभिमानी होना चाहिये कि हमारा धर्म मनुष्यों को स्वतन्त्रता का प्रेमी बनाता है और दासत्व से घृणा उत्पन्न करता है। वह धर्म ही किस काम का जो राजनीति न सिखाता हो। क्या तुम थोड़े से देश निष्कासन तथा जेलख़ानों से डर जाओगे? क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है ईसाई धर्म को हज़ारों जाने खोनी पड़ी थी? तब इसके बाद यह इटली देश में प्रवेश कर सका था। वह रूम राज्य जिसका डंका संसार में किसी समय बज रहा था और जिसने हज़ारों इसाइयों को मार इसाई धर्म का निर्मूल करना चाहा था आज संसार में न रह गया पर वही ईसाई धर्म आज आधे संसार में व्याप्त हो रहा है। ऐसाही सिक्ख धर्म अपने ऊपर अत्याचार करने वाले राज्य का नाश कर जगमगा रहा है। याद रहे सत्य की सदा जय होती है। इस कारण सत्य पर दृढ़ रहो; अपने अधिकारों को पाने के लिये कमर कस रक्खो। संसार में कोई शक्ति नहीं है जो तुम्हें इस सत्य की लड़ाई में परास्त कर सके। तुम्हारी ही जय होगी। तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। सब दुःख दूर हो जायंगे। कुछ परवाह नहीं कि थोड़े समय के लिये झूठ ठहर सके पर अन्त में तुम्हारी ही जय होगी। टामस जोन्स (Thomas gones) नामक एक अंगरेज़ विद्वान् ने कहा है :–

You may try to overcome error by persecution. The coarsest, clumsiest and most vulgar form of persecution is that which kills the body. It says "you do not believe with us, and therefore you shall not live on

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

this earth. we will burn up your very existence'." Fools ! Truth can not be consumed with fire; therefore, it is useless to destroy its disciple. When the body of the faithful has been reduced to dust and his spirit has ascended to heaven the truth he loved, like the fabulous bird of old, shall arise from the ashes of martyrdom, young strong, and beautiful as ever.

"तुम अपनी भूल को दबाने का प्रयत्न कर सकते हो । कष्ट और दुख देने का सब से भद्दा और गन्दा तरीका शरीर को नाश कर डालना है । कष्ट पहुचाने वाला कहता है 'तुम हमारी बातों पर विश्वास नहीं करते इस कारण तुम पृथ्वी पर ज़िन्दा भी नहीं रह सकते । हम तुम्हारे नाम निशान भी मिटा देंगे ।' मूर्ख ! सचाई आग से नहीं जल सकती; इस कारण उस सचाई पर चलने वालों का नाश करना व्यर्थ है । जब उस सत्यवादी का शरीर मिट्टी में मिला दिया जायगा और उसकी आत्मा स्वर्ग को प्रस्थान कर जायगी तो उसकी प्रिय वस्तु सचाई उस सत्यवादी की खाक से शक्ति शाली और सुन्दर एक नवीन रूप धारण कर उठेगी ।

खन्ना ।

---

## सिक्खों के धर्म का एक साधारण इतिहास ।

इस प्राचीन आर्यावर्त की प्राचीनता का अभिमान प्राचीन से प्राचीन देशों के साथ करने से वे देश मानों कल्ह के जन्मे मालूम होते हैं । हमारे प्राचीन आर्यों के देखते २ कितने नये २ देशों का इतिहासों में उदय हुआ और अस्त भी हो गया; कितनी नई क़ौमें उठीं और तरक्की के छोर तक पहुंच नीचे गिर गईं; उनकी उस पहली तरक्की का कोई निशान भी बाकी न रहा । इतिहास लेखकों की लेखनी यहां का अनन्त हाल लिखने में असमर्थ है और २ देशों में किसी मे एक परिवर्तन हुआ किसी मे दो चार किन्तु यहां समय २ कितने परिवर्तन होते गये उसका ओर छोर नहीं । थोड़ा बहुत पता लगाने से मालूम होता है कि वेदों के समय जो व्यवस्था थी वह मनु तथा रामायण और भारत के समय न रही । बौद्धों के समय कुछ और ही उलट पलट हुआ जैनियोंने और का. और ही कर डाला । पारस और यूनान वालों की चढ़ाई के समय जैसा भारत था इसलाम के आने पर वैसा न रहा । अरब वाले आये लूटा पाटा चम्पत हुये—अफ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गानों के कई घराने हुये पीछे मुगल बढ़े और नष्ट भी हो गये। जाट मरहठे सिक्ख पुर्तगीज़ फरासीस और अंगरेज़ एक शताब्दी तक लड़ाई झगड़ों में विताया किये। न जानिये यहां के जल वायु में क्या गुण या असर है कि स्थिरता यहां सदा के लिये किसी की न रही। मज़हबी ढंग पर यह देश सारी दुनिया का केन्द्र है—दुनिया की कुल आबादी का आधा तो अब भी उन मतों का अनुयायी है जिनका निकास निःसन्देह इसी देश से है। दूसरा आधा जिसका बड़ा हिस्सा ईसवी या मुहम्मदी है वहुत कुछ मज़मून इसके भी यहीं के बुद्धिमानों की शिक्षा से लिये गये हैं। ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या से लेकर नीचे दरजे की मूर्ति पूजा तक; प्रगाढ़ भक्ति से खोखले अविश्वास तक; कोई मत नहीं जो इस देश में समय २ प्रगट हो उन्नति न की हो। जिसका पता उन मज़हबों के किस्से कहानियों से लगता है और उसमें कितना सच्च है और कितना झूठ है इसकी भी टटोल हो जाती है—मुसलमानों के समय ऐतिहासिक घटनाओं का पता मिलता तो है पर उनको लिखनेवालों ने बादशाह के हरम और महलों में क्या होता रहा इसी को अधिक लिखा है। कौम का हाल लिखने की बहुत कम परवाह वे रखते थे, उनकी तवारीख़ रोज़नामचा है जो दरबार की बातों को साफ साफ बतलाता है मुल्क की लड़ाई झगड़ों के हालात उनमें नहीं पाये जाते। इससे यह पता नहीं लगता कि जिस समय मुसलमान बादशाह चारो ओर लड़ाई कर रहे थे और हिन्दू राजाओं को नष्ट कर रहे थे उस समय किन किन कारणों से और किस २ समय में देशका कौन २ हिस्सा इसलाम मज़हब में आ गया और उस समय हिन्दू तथा मुसलमान आबादी का आपस में क्या सम्बन्ध था। मुसलमान बादशाह जिन्हों ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की चांदी सोने को स्वर्गीय लाभ से अधिक समझते थे और यहां की बहारों के मुकाबिले विहिश्त की बहारों को हेच मानते थे इस लिये दीन इसलाम के लिये उन्होंने केवल उतनाही किया जितना करने से वे न रुक सके। पर उसके फैलाने का यथार्थ विशेष उद्योग न कर सके। उन्होंने हर तरह के जो जुल्म किये लोगों के गले काटे घर लूटे गुलाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाये वह सब दीन इसलाम के लिये नहीं बल्कि अपने फाइदे, ऐसो-इशरत और आमोद प्रमोद के लिये तो मालूम हुआ कि उस समय जो बदसलूकी इस देश के साथ की गई वह इन लुटेरों की लालच के कारण से हुई मज़हब के फैलाने का एक बहाना मात्र था। दिल्ली में बादशाहत के जम जाने पर भी दांये वाये कितनी स्वच्छन्द रियासतें हिन्दू राजाओं की बहुत दिनों तक कायम रहीं। बादशाहों को लड़ाई से बहुत कम फ़ुरसत मिलती थी जो फुरसत मिली भी तो ज़बरदस्त सूबेदारों की बग़ावत का डर लगा रहता था। बहुत दिनों से झूठे ढकोसले और असत्य बातों ने मर्दानगी को हिन्दुओं के दिलों से ऐसा दूर कर दिया था कि मर्दानगी इनकी आदत ही में न रही। हिन्दू वहुधा धर्म सम्बन्धी मुसमानों का अत्याचार सह लिया करते थे इतनी हिम्मत वाकी न रही कि धर्म के लिये अपने को बलिदान कर देते। जो हाल अब तक मिले हैं उनसे यह पता लगता है कि गयासुद्दीन बलवन पहला बादशाह हुआ जिसने मज़हबी अत्याचार का खूब बन्दोबस्त किया। उसने इसके बारे में दो नियम जारी किये एक जज़िया जो हर एक हिन्दू से टिकस की भांत लिया जाता था दूसरा यह कि हिन्दू प्रतिष्ठित जगह पर दरबारशाही में नौकर न रहैं जो पहले से नौकर हों वे अलग कर दिये जांय। बलबन को लड़ाई झगड़ों से छुट्टी न मिली नहीं तो क्या अचरज कि धर्म सम्बन्धी अत्याचार करने को और सामान तालाश करता। उपरान्त गुलामों की सलतनत नष्ट होने लगी और धर्म सम्बन्धी अत्याचार उसी के साथ समाप्त हुये। बाद लोदी खानदान के राज्य पर्यन्त जो बादशाह देहली के तख़्त पर बैठे उन्होंने हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों के नष्ट होने का अधिक यत्न किया; हिन्दू धर्म को गिराने के बदले अपने को कायम रखने की कोशिश की।

इसमें सन्देह नहीं जब लोदियों की सलतनत देहली में जम गई तो इस घराने के निर्दयी बादशाह अत्याचार के लिये प्रसिद्ध हो गये। सिकन्दर लोदी ने जज़िया के अलावा तीर्थ यात्राओं को रोकने में विशेष यत्न किया, मन्दिर और पूजा के स्थान ढहा दिये, कितने कुण्ड और ता-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाशों को मिट्टी से पटवा दिये । एक ब्राह्मण ने मथुरा मे इतना ही कहा था कि हिन्दू और मुसलमान दोनों का दीन ईश्वर की ओर से है इस पर उसकी जीभ कटवाली और उसे मरवा डाला । इसी अन्यायी सिकन्दर लोदी के समय एक महात्माने धर्म प्रचार करना प्रारम्भ किया पर दिल्ली से सैकड़ों मील दूर होने से इनके उपदेश की आवाज़ बादशाह के कानों तक न पहुंची । पहले उनका उपदेश थोड़े से ग्रामोंही तक रहा किन्तु उनके परंधाम जाने पर जो खलबली पड़ी और नये २ घराने के राजा हुये वे उस महात्मा के चलाये हुये धर्म के प्रचार में सहायक हुये । सचाई से भरे हुए उनके बचनों और भक्तिभाव भरे हुए उनके भजनों ने देश पर जादू सा छोड़ दिया—उन की साधारण और पवित्र जीवनी मनुष्यों के हृदय में ऐसी चुभ गई कि उन के जीवन काल ही में उन के शिष्यों का एक बड़ा गरोह बन गया । पंजाब के बहुत से गांव और हर एक जाति और फिरके में सिक्ख हो गये ।

यह महात्मा गुरू नानिक जी थे । गुरू नानिक के उपरान्त उनके तीन साथियों ने अच्छी तरह काम किया शिष्य सेवक भी बराबर बढ़ते ही गये जिनका फैलाव इतना अधिक हो गया कि उस का प्रबन्ध करने की आवश्यकता हुई । पांचवें गुरू ने उसकी आवश्यकता समझ ग्रन्थ साहब को ठीक किया जिसमें गुरुओं की बानी के अतिरिक्त प्रसिद्ध २ भक्तों के जी में चुभ जाने वाले भजन भी दर्ज किये गये ।

जहांगीर के राज्य के आरम्भ में उस का बेटा खुसरो सेना समेत एक दिन व्यासा नदी के किनारे गोंदवाल में जा ठहरा—इसी जगह पांचवें गुरू अर्जुन जी रहा करते थे । शाहज़ादा उन से मिलने गया उन्हों ने उसके माथे पर तिलक लगा दिया । जहांगीर को यह बात बहुत बुरी लगी । गुरू अर्जुन जी को गिरफ़ार कर उन का सब माल असबाब ज़ब्त कर कुटुम्ब समेत उन को एक सर्दार मुर्तज़ा खां को सिपुर्द किया । मुर्तज़ा ने चन्दू नामी एक अहलकार को उन्हें दे दिया । चन्दू को इन से पहले की कुछ लाग थी इसने इन्हें ऐसा सताया कि यह उस के अत्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


चार को न सह सके। एक दिन स्नान के बहाने रावी नदी में डूब सुरधाम सिधार गये। यह पहला कष्ट है जो मुगलों ने गुरूओं को दिया। शेष

गुरुकुल का एक छात्र

## चुहल।

(१) विलाइत के तार द्वारा खबर आई है कि वहां एक कंपनी खुलने वाली है जो एक ऐसा यंत्र निकाला चाहती है जिससे हिन्दुस्तान के ज़रखेज़ टुकड़े इंगलैंड में ले जाये जा सकें। रेलीब्रदर के हाथ बेचने वाले अन्न के व्योपारियों को चाहिये अभी ही से सियापा बैठा दें नहीं तो पीछे से किराये पर भी रोने वाले न मिलेंगे।

(२) सेठ खूसट दास की सिठानी की गुड़ियों के लिये एक गुड्डे की ज़रूरत है। जो कम से कम मिडिल पास हो, खानदानी हो, और जहां तक मुमकिन हो स्वदेशी आन्दोलन का पक्का विरोधी हो।

(३) बीबी—(मियां से) शुक्र है हमारे मुल्क की आबोहवा तो अच्छी है।

मियां—चुप रहो—आहिस्ते बोलो। ऐसा न हो कोई डिटेकटिब सुन ले और उस पर भी टैक्स लगा दिया जाय तो और भी मुसीबत बढ़े।

(४) साहब—वेल टुम कौन।

खुशामदी—हुज़ूर खाकसार यहां का एक अदना सा ज़मीदार है। हुज़ूर की कदमबोसी को आया है।

साहब—टो इस दोपहर को क्यों आया।

खुशामदी—गुलाम हुज़ूर की जूतियों का सदका है हुज़ूर का दिया खाता है। हुज़ूर इस हकीर के मा बाप हैं। कौन बेहूदा कहता है यह दोपहर है। खासी चांदनी छिटकी हुई है।

साहब—क्या मांगटा।

खुशामदी—हीं हीं-हीं-हीं कौंसिल की मेंबरी।

(५) एक लाला की बारात की साइत ६ बजे की थी लेकिन सामान ठीक न रहने से देर हो रही थी। साइत टलती देख लाला जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित से पूछने लगे । महाराज अब क्या किया जाय सामान तैयार नहीं और साइत बीतती है ।

पण्डित जी—क्या चिन्ता । घड़ी में जब ६ बजने को ५ मिनिट रहै तो घड़ी बन्द कर दीजिये । बारात सज जाने पर फिर चला देना । बारात भी सज जायगी और साइत भी न टरैगी । लक्ष्मीकान्त भट्ट

## पुस्तक प्राप्ति ।

जापान दर्पण—इण्डियन प्रेस प्रयाग की छपी मूल्य १) जपान का पूरा इतिहास और वहां की प्रत्येक बातों का वर्णन इसमें बहुत उत्तम और ललित पदावली में किया गया है । इस पुस्तक को पढ़ने लगो तो जी नहीं ऊबता अपिच जापान की सामाजिक तथा राजनैतिक अनेक बातों को पढ़ अचरज और जापान यात्रा के लिये उत्साह होता है । डेढ़ सौ वर्ष से विदेशियों के चंगुल में पड़ा गुलामी की जंजीर से जकड़ा हुआ हिन्दुस्तान नवाभ्युत्थानशील जापान का भला क्या अनुकरण कर सक्ता है ।

प्रेमा—एक उपन्यास; यह भी इण्डियन प्रेस का छपा है । मूल्य ॥=) दो विधवाओं के विवाह का प्रस्ताव इसमें है। लिखने वाले ने तो अपने समझ में विधवा विवाह की प्रथा के अनुमोदन में इसे लिखा है पर सो नहीं विधवा विवाह की जीट इससे भले ही उड़ती है । इण्डियन प्रेस के मालिक को चाहिये ऐसी पुस्तक न छापा करें ।

अकबर के राजत्व काल में हिन्दी—पं० सूर्य नारायण दीक्षित बी० ए० लिखित नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित । हिन्दी की उत्पत्ति तथा उसमें कब २ कैसा परिवर्तन होता गया और हिन्दी के कई एक पुराने कवियों का संक्षिप्त हाल भी इसमें दिया गया है। पुस्तक बहुत ही मनोरञ्जक है । यह पुस्तक ऐसे काम की न होती तो काशी नागरी प्रचारिणी सभा क्यों इसे आदर देती । भाषा इस की कहीं २ बे मुहाविरे अलबत्ता है ।

कला कुशल—हनुमत् प्रेस कालाकांकर की छपी बा० शिवनारायण सिंह द्वारा सम्पादित । इस मासिक पत्रिका के तीसरे वर्ष का एक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो अङ्क हमारे पास आये हैं। हिन्दी में ऐसी पत्रिकाओं की आवश्यकता है। यदि थोड़े दिन प्रकाशित हो बन्द न हो जाय तो इससे शिल्प और कला की बहुत उन्नति हो सक्ती है। मूल्य १॥) वार्षिक है।

कविता रत्नाकर—स्वर्गवासी बा० कार्तिक प्रसाद द्वारा संग्रहीत। संस्कृत श्लोकों के टुकड़े कहावत के ढंग पर अनुवाद सहित इस में दिये गये हैं मूल्य।) पता सिद्धेश्वर प्रेस बनारस सिटी। संग्रह बहुत उत्तम है।

संकल्प विधि—इसमें पिण्डदान इत्यादि के संकल्प की विधि है। अब इस समय इस तरह के संकल्प विकल्प व्यर्थ हैं। इस समय तो "नाहमस्मीति साहसं" के संकल्प को विधि होनी चाहिये।

देवनागर—कलकत्ते की एक लिपि परिषद से यह सचित्र पत्रिका निकलने लगी है ८ भाषाओं का नमूना हिन्दी अक्षरों में दिया गया है मूल्य ३) वार्षिक॥

वाल मनुस्मृति—इण्डियन प्रेस ने वाल का एक नया ढंग पुस्तकोंमें निकाल लिया है नाम वाल का रहता है पर काम तरुण और बूढ़ों का इससे होता है। मालूम होता है कुछ दिनों में वाल नाम की सीरीज़ चल पड़ैगी और वेदादि यावत् धर्मग्रन्थ सब बाल इस नाम से छप जांयगे। रचयिता इस के पं० रामजीलाल शर्मा हैं। ऊपर मनु का श्लोक लिख नीचे यह अनुवाद रहता तो और अच्छा होता जैसा मानवधर्मसार राजा शिवप्रसाद ने छापा था। मूल्य।) है। पता इण्डियन प्रेस–प्रयाग।

उपदेश प्रस्रवण—श्रीमत्स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती विरचित। इस पुस्तक में बहुत अच्छे २ उपदेश दिये गये हैं और वह सब स्वामी जी की एक निराली कल्पना के साथ हैं मूल्य १।)

लाजपत महिमा—देशभक्त श्रीमान् लाला लाजपत राय का नाम कौन नहीं जानता– उन्हीं के स्मरणार्थ यह छोटी सी पुस्तक रची गई है। जिसमें उक्त श्रीमान् का ग्लेज़ड कागद पर एक चित्र, उनकी संक्षिप्त जीवनी तथा भारतवर्ष की दशा पर एक लेख है जो मार्च मास के माडर्न रिव्यू में प्रकाशित हुआ है। यह छोटा लेख उसी लेख का अनुवाद है इस में लाला जी ने भारत की वर्तमान दशा का अच्छा खाक़ा खींचा है। उचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि इस लेख को सब लोग पढ़ें और दूसरों को पढ़ावें या सुनावें। हिन्दी इसकी क्लिष्ट और कहीं कहीं वे मुहावरे है। मूल्य मय डाक० ≈)

## प्राचीन नाम माला।

पहिले के आगे से।

कीकट—गया के ज़िले का एक हिस्सा जो गया के पूर्व है।

कुन्तल—चोल देश के उत्तर नीज़ाम हैदराबाद की रियासत का दक्षिण और पश्चिम का हिस्सा। कल्याण दुर्ग इस्की पुरानी राजधानी थी। पुराणों में कुन्तल का बहुधा नाम पाया जाता है।

करूष—वायु पुराण और मत्स्य पुराण के अनुसार यह देश विन्ध्य पर्वत पर था पर भागवत में दन्तवक्र को यहां का राजा लिखा है। चेदि का राजा शिशुपाल था और दोनों मित्र थे इस से बोध होता है चेदि "चंदेली" और करूष दोनों पास ही पास थे।

कुरुक्षेत्र—थानेश्वर के दक्षिण। उत्तर की ओर दृशद्वती और दक्षिण में सरस्वती इन दो नदियों के बीच का मैदान कुरुक्षेत्र है। समन्त पञ्चक नाम की एक झील यहां है और वह बड़ा पवित्र तीर्थ है। परशुराम ने क्षत्रियों के रुधिर से इसे भरा था।

कुलूत—जलन्धर—दो आवा के ईशानकोण का भूभाग जो सतलज के दहिनी ओर है। मुद्राराक्षस में इसका नाम पाया जाता है।

कुशावती या कुशस्थली—पुराने समय यह दक्षिण कोशल की राजधानी थी नर्मदा के उत्तर और विन्ध्य के दक्षिण बुन्देलखण्ड में रामनगर के पास राजशेखर जो संस्कृत के बड़े कवि हुये हैं यहीं के राजा थे।

केकय—सिन्धु देश के समीप विपाशानदी के पश्चिम का देश—केकयी यहीं के राजा की कन्या थी।

केरल—कावेरी के उत्तर और पश्चिम घाट तथा समुद्र के बीच का देश। नेत्रवती सरस्वती काली नदी जिसे कालिदास ने रघुवंश में मुरला इस नाम से लिखा है यहां की प्रधान नदियां हैं। मुरलामारुतोद्धूतमगमत्कैतकं रजः। तद्योधवारवाणानामयत्नपटवासताम् ॥ कनारा और मालावार भी इसी में हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोशल—वाल्मीकि रामायण के अनुसार सरयू या घाघरा के दोनों तट पर का भूभाग। यह दो हिस्सों में बटा हुआ था उत्तर और दक्षिण कोशल। अयोध्या के उत्तर गोंड़ा बहरायच आदि ज़िले इसी में थे। अज और उनके पूर्व पुरुष यहीं राज करते थे पीछे अयोध्या राजधानी हुई। उत्तर कोशल के बारे में कालिदास ने रघुवंश में यों लिखा है। पितुरनन्तरमुत्तरकोशलान्समधिगम्य समाधिजितेन्द्रियः। दशरथः प्रशशास महारथो यमवतामवतां च धुरिस्थितः॥ महाभारत में पूर्व और पश्चिम कोशल भी लिखा है। वायु पुराण और पद्मपुराण के पाताल खण्ड में लिखा है कि रामचन्द्र के पुत्र कुशस्थली या कुशावती में जो विन्ध्य पर्वत की चोटी पर थी राज करते थे। कुश का अयोध्या में फिर लौट आना रघुवंश से भी प्रकट होता है। रामचन्द्र तक सूर्यवंशी सगर आदि राजाओं की राजधानी अयोध्या रही। उसके उजड़ जाने पर कुश ने अपने नाम की नगरी बसाया। लव ने गङ्गा तट पर श्रावस्ती को अपनी राजधानी उत्तर कोशल में बसाया। तब से कोशल दो हिस्सों में बट गया। पुराणों में सात जगह ऐसी हैं जिनका कोशल नाम दिया है। छत्तीस गढ़ में रतनपुर के पास गड़ा हुआ एक ताम्र पत्र मिला है जिसमें लिखा है कि पृथ्वी देव मल्ल कोशलेश्वर ने सम्वत् ९१५ में मन्दिर बनवाये तालाब खुदवाये। इससे जाना जाता है गङ्गा के पार दक्षिण तक कोशलदेश था। टालमी ने भी अपनी पुस्तक में एक जगह कोशल का नाम लिखा है वह भी इन्हीं सात कोशल में कोई एक रहा होगा।

कौशाम्बी—प्रयाग से ३० मील पश्चिम पपोसा के नाम से प्रसिद्ध है जो अब एक छोटा सा ग्राम है और जैनियों का एक तीर्थ है। प्राचीन समय वत्सराज की यह राजधानी थी कथासरित्सागर और रत्नावली नाटिका में इस का बहुत बड़ा वर्णन है। वत्सराज परीक्षित के वंश के राजा थे।

कौशिकी—अब इसे कुसी कहते हैं जो दरभंगा के पूर्व भागलपूर के उत्तरी हिस्से और पूर्निया ज़िला के पश्चिमी हिस्सों में बहती हुई गङ्गा में जा मिली है। ऋष्यशृङ्ग का आश्रम इसी नदी के तट पर था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गण्डकी—कई शाखों में बंट हाजीपूर के पास गङ्गा में जा मिलती है। इस में हिन्दू धर्म के अनुसार तैरना मने है हिरण्यगर्भ शालग्रम इसी में मिलते हैं।

गोमती—लखनऊ और जवनपूर आदि कई शहरों के पास होती हुई सई आदि कई एक नदियों को अपने में मिलाती बनारस और गाज़ीपूर के बीच गङ्गा में जा मिली है। इसी नाम की कोई नदी द्वारिका के पास भी है। गोमती चक्र इसी में से निकलते हैं।

गोमन्त—कोंकण देश का एक भाग। यह देश वहीं पर मालूम होता है जहां पर अब गोआ है।

गोवर्द्धन—ब्रजभूमि का प्रसिद्ध पर्वत।

गौड़ या पुन्ड्र—वंगाल का उत्तरी हिस्सा—भागल पूर के पास गौड़ नाम का एक नगर किसी समय बसता था। उजड़े ढिये वहां अब तक पाये जाते हैं। गौड़ जाति के ब्राह्मण कदाचित् इसी से सम्बन्ध रखते हों।

गान्धार—कन्दहार के चारों ओर का देश किसी समय काबुल भी इसी में शामिल था। गान्धारी यहीं की थी। शेष

# अनुभूत औषधियां।

पीयूष बटी—हाज़िमा और पेट के दर्द में इससे दूसरी औषधि बढ़कर नहीं है दाम =) एक डब्बी का जिसमें एक दर्जन गोली रहती हैं।

अपूर्व दन्त मंजन—हिलते हुए दांतो का मज़बूत करना इस का मुख्य गुण है। दाम ।) एक डब्बी का।

रेचक बटी—दस्त खुलासा लानेकी अपूर्व गोली—।) एक डब्बी का।

दशतिक्त कषाय—रोज़ आने वाला बुखार, चौथिया, तिजारी, अतरा, मेलीरियसज्वर और बिषम ज्वर आदि अनेक प्रकार के ज्वर प्लीहा (तापतिल्ली) आदि रोग इसके सेवन से जाते रहते हैं—यह दवा जंगल की दस बूटियों से बनाई गई है। दाम ॥=) अद्धा बोतल का।

**मिलने का पता—**

**वैद्य रमाकान्त ब्यास—कटरा—प्रयाग**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ बच्चोंने त[illegible]ल जानालया ॥

देखिये दो बालिकायें इस लाभकारी [illegible] दवाको देखकर कैसी प्रसन्न होरही हैं

हमारा सुधासिंधु इतना प्रसिद्ध होचला है जिससे अब यह बात निर्विवाद सिद्ध होचुकी है कि नीचे लिखी बीमारियोंके लिये विना पूछेही लोग मंगाने लगे हैं जैसे कफ, खांसी, जाडेका बुखार, हैजा, शूल, दस्त, संग्रहणी, गठिया, दमा, कै होना, जी मचलाना, बालकों के हरे पीले दस्त और कै करना इनको सिर्फ तीन खुराकमें अच्छा करता है. इसके हजारों सार्टि[illegible] जिनके लिये प्रायः १२५ चित्रों सहित सूचीपत्र मंगाकर देखिये. मुफ्त भे[illegible] [illegible]सिन्धु की कीमत ॥) फी शीशी ६ लेनेसे १ भेट १२ लेनेसे पांच रु०

देखिये श्रीमान् राजा इन्द्रजीत प्रताप शाह बहादुर तमकुही जिला गोरखपुर से क्या आज्ञा करते हैं।

महाशय आपका एक दरजन सुधासिंधु पहुंचा जो आपने भेजाथा यह दवा बहुत लाभ दायक है बुखार और पेटके रोगो में तो बहुतही फायदेमन्द है और बहुत रोगोंमें वैसा ही फायदा करता है और महरवानी करके आध पाव चन्दनादि तैल और वासारिष्ट भेजिये।

मंगाने का पता—

**क्षेत्रपाल शर्मा मालिक सुख संचारक कम्पनी मथुरा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दी प्रदीप

## मासिक पत्र ।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायु सों मणिदीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामे जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जिल्द ३० | अगस्त १९०७ | संख्या ८

## विषय सूची ।


| | |
|---|---|
| गोरे कर्मचारी और हमारे अगुआ ... १ | सच्चा साधु ... ... ... १३ |
| समुद्र यात्रा क्यों निषिद्ध है ६ | इंडियन पालिटिक्स का झुकाव ... ... ... १४ |
| चिन्ता ... ... ... ... ८ | देश-भक्ति क्या है ... ... १९ |
| महाराज बीकानेर की लायलटी ... ... ... ९ | पुस्तक प्राप्ति ... ... ... २० |
| सिक्खों के धर्म का साधारण इतिहास ... १० | प्राचीन नाम माला ... २१ |


पण्डित बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक

के आज्ञानुसार पं० केदारनाथ मिश्र ने अभ्युदय प्रेस प्रयाग में छापा

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीः ॥

# हिन्दी प्रदीप

जिल्द २९ सं० ८ | प्रयाग | अगस्त सन् १९०७ ई०

## गोरे कर्मचारी और हमारे अगुआ ।

इस समय जो कुछ हलचल मचा है और यहां के Political atmsophere राजनैतिक वायु मण्डल में जो अदल बदल होने के लिये हमारे अगुआ Leader सिर उठाये हुये हैं उस सब का कारण दोनों में परस्पर की स्पर्द्धा है । इस समय हमारे हाकिमों को अपना Prestige रोब क़ायम रखने की बड़ी फ़िकिर है । वे इसके लिये अपने भर सक सब२ कोशिशें कर रहे हैं । हाल में मारली साहब ने अपनी एक स्पीच में कहा भी है कि हमारे हाकिमों का अब वैसा रोब न रहा जैसा रहना चाहिये । इस से उनके हाथ में अब अधिक सत्ता Power देनी चाहिये जिस से उनका रोब बना रहे और उनके शासन के दोषों को कोई Criticise दूषित न कर सके । यहां पर यह प्रश्न उठता है कि वे लोग जिह तरह पर शासन कर रहे हैं उस से उनका रोब रह सक्ता है ? लोक मत Public opinion क्या है इस बात को सरकार से निवेदन करने वालों को जलावतन या उन्हें क़ैद कर देने से क्या उनका रोब जम सकता है ? मिस्टर मारली को यह कौन समझावे कि हाकिमों को यह मालूम है कि ऐसा करने से उनका रोब दिन पर दिन घटता जारहा है; इससे तो जो कुछ रोब है वह भी चला जायगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे हाकिमों की पालिसी पहले कुछ और ही थी । तब वे इस तरह पर नहीं खुल खेले थे; कभी को किसी बात में अपने मन की भी कर डालते थे तो लोक मत Public opinion का इस तरह निरादर नहीं करते थे जैसा अब कर रहे हैं । इसी से उनका रोब भी तब सब लोग मानते थे । बीसवीं सदी के लगतेही उनकी पालिसी बिल्कुल बदल गई । उसी बदली हुई पालिसी के जोश में आय उन्हों ने बंगाल के दो टुकड़े कर डाले । सर्व साधारण मे इस का बड़ा हलचल मचा पर इसकी परवाह हमारे हाकिमों ने कुछ न की । हमारे अगुआओं को यह बात बहुत बुरी लगी जिसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दुस्तान की राजनैतिक बातों के दो दल हो गये । एक दल गोरे हाकिमों का, दूसरा दल प्रजा के अगुआओं का । हाकिमों को सर्कार की ओर से सब तरह की ताक़त हासिल है बल्कि उनके बहुत से इख़्तियार बढ़ा दिये गये हैं जिस के द्वारा इन अगुआओं पर मनमाना सख़्ती गोरे हाकिम कर सक्ते हैं । लोक मत Public opinion की अवज्ञा से सब लोग चिढ़ गये हैं और उनके शासन की कड़ाई से इतना ऊबे हुये हैं कि अहर्निश इसी चिंता में लगे हुये हैं कि कैसे उनकी हुकूमत का क्रम बदलें और कैसे हमको शासन में अधिकार मिले । पर सब भांत इतने हीन दीन हैं कि उनका कुछ बश नहीं चलता । यद्यपि अगुआओं के अनुयायी होने और उनके कहे अनुसार चलने से सब तरह का भय है, गवर्नमेंट की कड़ी निगाह का होना सब से बड़ी बुराई उनके लिये है तौ भी सर्व साधारण गोरे कर्मचारियों के प्रभुत्व को जी से नहीं पसन्द करते; न गवर्नमेंट की प्रसन्नता का लाभ उठाना बहुतेरों को मंजूर है । पग २ में भय और शंका पैदा करने वाली इन अगुआओं की पैरवी और उनके कहे अनुसार चलना वे मंजूर करते हैं । जब तक हाकिम और कौम के अगुओं की राय से सब काम होता था और लोक मत की परवाह हमारे गोरे कर्मचारी करते थे तब तक प्रजा में असन्तोष न था, अगुआ लोग भी कर्मचारी से मिले रहते थे दोनों में स्पर्द्धा भी न थी । अब इस समय कर्मचारी और अगुआओं में होड़ लग रही है । कर्मचारी तो यह चाहते हैं कि पढ़े लिखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभ्यों में भी पालिटिक्स की चर्चा न रहे और अगुआ लोग इस फ़िकिर में हैं कि छोटे२ किसान बाज़ार के अपढ़ दूकानदार और मज़दूरी करने वाले कुली तक राजनीति के मर्म को समझने लगें और उसमें अपनी राय भिड़ाया करें। यह प्रयत्न हमारे अगुओं का निःसन्देह बड़ा उत्तम और सराहने योग्य है। देश की वर्तमान् दुर्गति और हम लोगों की गुलामी की दशा में आजाने का मुख्य कारण राजनीति में हमारी अनभिज्ञता ही है। जिस समय मुसल्मानों ने हमला किया था उस समय भारतीय प्रजा में किसी तरह की त्रुटि न थी। संस्कृत के प्रत्येक विषय के उत्तम से उत्तम ग्रन्थ उसी समय बने, प्रसिद्ध२ कवि और दार्शनिक भी तभी हुये; बाणिज्य और शिल्प भी तब अच्छी हालत में था; केवल अपने में पालिटिक्स में पटुता न रखने के कारण मुसल्मानों ने देश को अपने आधीन कर लिया। अब के समान तब जो मुल्की जोश हमारे में होता तो कभी सम्भव था कि हिन्दुस्तानियों ही की पलटन के सिपाही हैदर और पेशवा के मुक़ाबिले लड़ देश को अङ्गरेज़ी गवर्नमेंट के हाथ में करा देते? अब इस समय हमारा धर्म कर्म सामाजिक रीति नीति सब राजनीति ही होना चाहिये। जिस से क़ौम में कमज़ोरी आती हो वह धर्म नहीं अधर्म है, रीति नीति नहीं कुरीति और कुनीति है। हाकिम और अगुआओं में यही ख़ास बात Main point वेबनाव की है कि हाकिम लोग हमे पालिटिक्स के मर्म समझने से अलग रक्खा चाहते हैं और अगुआ लोग उसका घरेलू बातों के समान प्रचार चाहते हैं। कर्मचारी इसके प्रचार को बल पूर्वक रोकते हैं यही अगुआओं को खटकता है। इस खीचा खीची का परिणाम यही होगा कि जिनमें बनावटी देशानुराग है वे हाकिमों की नाराज़गी और ख़फ़गी से डर अलग हो जांयगे जिनमें सची देश-भक्ति है वे निःशङ्क हो देशका काम करैंगे। तब देश के कल्याण का मार्ग हमें स्वराज के केन्द्र तक पहुंचने में सहायक हो निश्चय हमें सफलोद्यम करेगा। इसमें कर्मचारियों के बाधक होने से चाहे यह हमारा मनोरथ जल्दी सफल न हो पर यह प्रयत्न खाली न जायगा जितनाही देर से होगा उतनाही दृढ़ता के साथ होगा। मसल है "देर आये दुरुस्त आये"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परदा फाश हो जायगा लोगों में असन्तोष फैलेगा और हमारे शासन की बदनामी जो अभी थोड़े से बीहड़ सम्पादक और कतिपय पढ़े लिखे लोगों में है प्रजामात्र में विस्तार पा जायगी। अब इस के रोकने की बढ़िया तरकीब सब के पहले छात्र मण्डली को दबाना और विद्यार्थियों को उभड़ने न देना है। क्योंकि भारत के भावी भद्र और भलाई का भार इन्हीं पर निर्भर है; ये कोमल मन वाले मनस्वी न होने पावें इसकी फिकिर पहले ही से कर रखनी चाहिये; इन्हें जो शिक्षा दी जाय वह भरसक राजनैतिक न हो। पर बहुधा देखा जाता है सावन भादों में जब नदी की बाढ आने लगती है तब कितनाही बांध बांधो नहीं रुकती। जो काम राज़ी और प्रसन्न रखने से होता है वह बल पूर्वक नहीं होता। गवर्मेंट के कर्मचारी ऐसी बात क्यों न करें कि ये नवयुवक जैसा अब तक होते आये, लायलटी के रूप और ब्रिटिश शासन के परम प्रेमी भक्त बन जायं। पर सो कैसे हो सकता है कर्मचारी गण अभी ज़रा सा वक्र और अतीचार वाली गति छोड़ सीधी और सरल चाल पर आ जायं तो विलाइत के स्वार्थ में बाधा आ पड़े और ऐसा करने वाला उनके दल में अंगुश्तनुमा और बदनाम हो उठे। सारांश यह है कि शासक और शासित में परस्पर स्पर्द्धा और होड़ का एक अद्भुत समय आ उपस्थित हुआ है देखैं इस उतरा चढ़ी में कामयाबी का पलरा किधर को झुक पड़ता है।

---

## समुद्र यात्रा क्यों निषिद्ध है।

बहुत दिनों से हम हिन्दुओं के दिलों में समुद्र यात्रा का निषेध इतना बद्ध मूल हो रहा है कि जहाज़ पर पांव रक्खा कि धर्म रूठ कर भागा। कुछ दिन हुये थोड़े से पण्डितों ने व्यवस्था दे दी है और समुद्र यात्रा शास्त्र संमत सिद्ध कर दिया है। किन्तु सर्व साधारण में उसका कुछ भी असर न हुआ। बड़ी हिम्मत कर कोई चला भी जाता है तो वह सदा के लिये समाज से निष्कासित होता है। खान पान आदि व्यौहार में समाज से उसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहता। इन दिनों हमारे नव युवक भांत भांत की युक्तियों से विदेशों में गमन की आवश्यकता दिखाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके लिये यत्न और परिश्रम कर रहे हैं। विशेष कर जापान जाने के तो बड़े ही उत्सुक हैं । किन्तु आम तौर पर वहां जाने की प्रथा हिन्दुओं की किसी जाति में अभी तक नहीं निकली । कितने सुशिक्षित नवयुवक मुल्क के फायदे के लिये इङ्गलैंड आदि देशों में जाने का विचार कर रहे हैं किन्तु इस बात को सोच विचार कि वहां से लौटने पर जाति बिरादरी वाले अपनी सहानुभूति हमारे साथ न रख हमे अलग कर देंगे तो हम कहीं के न रहेंगे कचा जाते हैं और जाने का इरादा तोड़ देते हैं। विशेष कर हमारे इस संयुक्त प्रान्त के लिये तो यह एक बिलकुल नई बात होगी । हम नहीं जानते अन्त में इसका क्या परिणाम होने वाला है जहां तक देखा जाता है ये नवयुवक बे तरह समुद्र यात्रा के उत्सुक हो रहे हैं । जाति पांति की सब कैद तोड़ अपने बड़ों का जी दुखाते ये नौजवान लोग अन्त को अपने समूह से खारिज हो होटल अथवा ब्रह्म समाज या आर्य समाज ऐसी समाजों का आश्रय लेंगे । कई एक जगह जैसा वर्ताव उनके साथ किया गया उससे तो हम उन्हे किसी तरह दोष न देंगे । इस बात को सोंच दुःख होता है कि कोई तरह का निषिद्ध काम नहीं बचता जो लोग नहीं करते और कोई दंड समाज से उन्हे नहीं दिया जाता । यह मनुष्य जो विदेशों में जाय लियाकत का पुंज बन कर आया है समाज में उसकी कदर होना एक ओर रहा ऐसा पतित समझा जाय कि उसका छुआ पानी पी लेने से धर्म चला जाय तो ऐसे धर्म को तो दूर ही से नमस्कार करने का मन होता है । समाज से खारिज हुये ये लोग भी समाज को दूषित ठहराते अपना दल बढ़ाने की कोशिशें करने लगते हैं परिणाम में आपस का विरोध बढ़ता है बची खुची जो सहानुभूति उसे भी हम खोये देते हैं। इससे बेहतर यही होगा कि उससे प्रायश्चित्त करा उसे अपने में शरीक कर लें । बल्कि उसके जाने के प्रहिले जाति बिरादरी वालों के सामने उसे खड़ा कर सूचित कर दें कि यह देश की भलाई के लिये विदेश में जाता है हम लोग हृदय से इसके साथ सहानुभूति रक्खैं । भक्ष्याभक्ष्य का विचार यदि उसने पूरी तरह से निवाहा तो प्रायश्चित्त भी उससे साधारण कराया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाय । इस गिरी दशा से भारत के उद्धार के लिये अब जापान आदि देशों में जाना बहुल आवश्यक है। जो लोग जापान से लौट आवें उनके द्वारा यहां सब तरह के कारखाने जारी होने से देश की आर्थिक दशा बहुत कुछ सुधर सकती है। इससे सिवाय लाभ के हानि नहीं है अतः पाठकों से हमारी बिनती है कि उनके समूह से जो इसके लिये सन्नद्ध हो उसके उत्साह को बढ़ाते रहैं। जापान का एक यात्री ।

---

## चिन्ता ।

चिन्ता चुड़ो तेरी महिमा कहं लगि गाय सुनाऊं ॥
एकानन से का गुन बरनहुं सहसानन कहं पाऊं ॥
अति लघु काय जीव से लेकर अति बिशाल बपुधारी ॥
तेरे वश्य होय नहिं नाचे को अस है तनुधारी ॥
जल थल अरु नभ चारी जेते जीव जन्तु जग माहीं ॥
तव चंगुल से जुदा भये हों देखा कोउ अस नाहीं ॥
अपने प्रानन की रक्षा हित अरु परिवारहि लागी ॥
चिन्ता व्यापि नहीं जेहि ऐसो को दृढ़ बुद्धि बिरागी ॥
पेट भरन की प्रवल चिन्तना काहि न नाच नचावै ॥
प्रगट देखिये बानर नाचै नटहू स्वांग बनावै ॥
याही के बश रङ्क बार बहु बिनती करत सुनाई ॥
याही के बश राव रहैं नित राखैं सैन सजाई ॥
काहुहि कहू भांति यह व्यापै काहुहि काहु भांती ॥
का गणना मनुजन की करिये देवनहू जो सताती ॥
कामहि प्रिया मिलन की चिन्ता लोभिहि धनकी जानों ॥
क्रोधी क्रोध वेग बश कोपै अधिक मोहते मानो ॥
ज्ञानिहि ब्रह्म ज्ञान की चिन्ता ध्यानिहि इष्ट मिलन की ॥
अज्ञानी को अति ही पेरै कथा कहैं फिर किनकी ॥
चतुरानन को सृष्टि रचन की विष्णुहि पालन हेता ॥
प्रलय करन की रुद्रहि व्यापै सुनिये सुजन सचेता ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े बड़न की जब गति ऐसी छोटेन की का कहिये ॥
चिन्ता को शुभ संकल्पन महं सदा लगाये रहिये ॥
बिन चिन्ता कछु काज न होइहै चतुर कहैं यहि भांती ॥
विद्या की जेहि चिन्ता नाहीं तेहि विद्या नहिं आती ॥
है अपार गुन चिन्ता ही में औ औगुन बहुतेरे ॥
जानत हैं सुविचारी जन सब कहे होत का मेरे ॥
शक्ति समान कीजिये चिन्ता बश न हूजिये ताके ॥
राधाकृष्ण सुखी रह वाही चिन्ता अधिक न जाके ॥

राधाकृष्ण—ग्वालियर

---

## महाराजा बीकानेर की लायलटी ।

रूटर ने ऐंगलो इंडियन पत्र टाइम्स को एक तार भेजा है कि महाराज बीकानेर बंगाल और पञ्जाब के आन्दोलन को दूषित ठहराते हुये विलायत के लोगों को यकीन दिलाते हैं कि हिन्दुस्तान के लोग वृटिश राज के भक्त हैं और बहुत थोड़े लोग ऐसे हैं जो इस आन्दोलन में हिस्सा ले रहे हैं। उक्त महाराज को इस खुशामद का फल कोई बड़े से बड़ा खिताब अब जल्द मिल जायगा जैसा कदाचित् काश्मीर के महाराज को भी नहीं मयस्सर हुआ। यद्यपि महाराज कश्मीर ने भी लार्ड मिंटो सरीखे गवर्नमेंट के उच्च पदाधिकारी बाला हाकिमों को प्रसन्न रखने में अपनी ओर से कुछ छोड़ नहीं रक्खा और खैरखाहों में अपना औवल दरजा कायम कर रहे हैं पर बीकानेर के महाराज सबकत ले गये। अथवा हम इन राजाओं को क्या दोष दें ये वेचारे भी तो रेज़ीडेण्टों के बश में रहते हैं। अभी ज़रा सा किसी बात में अपना स्वातन्त्र्य दिखलाना चाहें तो उनकी लेव देव कर दी जाय। महाराज बीकानेर अपने को सुशिक्षित मानते हैं पर हमें उनकी शिक्षा पर अफ़सोस होता है। शिक्षा का बड़ा फायदा अपने मुल्क को इस गिरी दशा से उभाड़ना और चरित्र का पवित्र और पक्का होना है। अपने देश के साथ सहानुभूति उन्हें जैसी है सो तो इनके इस पत्र से प्रगट है रहा चरित्र सो महाराजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा तथा बड़े तअल्लुकेदार जिन पर कर्मचारियों का ज़ोर है प्रजा के पक्षवाले कभी हो ही नहीं सकते न उनमें इतनी हिम्मत और सरगरमी आ सकती है । हमको अपने बनने की आशा मध्यम श्रेणी वालों से अलबत्ता है । राजाओं में तो कुछ दिनों में ऐसा हो जायगा कि स्वदेशी की चर्चा भी महापाप में दाखिल कर ली जायगी और स्वदेशी बर्ताव करते जिसे देखेंगे उसे रियासत के रेज़ीडेंट कदाचित् जला वतन करा दें । मध्यम श्रेणी वालों को भी नये नये रिज़ोल्यूशन रोकेंगे तो स्वदेशी लोहे के चने चाबने को खूब मज़बूत दांत होने चाहिये । अस्तु महाराज बीकानेर को लायलटी और राजाओं में सबसे बड़े गिने जानेकी मृगतृष्णा ने इतना धर दाबा कि वे अपने घराने के पुराने गौरव को भी भूल गये और बिला ज़रूरत खुशामद की बातें करने लगे । हम यह नहीं कहते कि महाराज लायल न हों किन्तु उन्हें अपने देशके साथ लायलटी प्रगट करना पहिला काम था । मसल है घर में दिया जलाय तब मसजिद में जलाना उचित है । विलायत गये थे वहांके लोगोंको देश की सच्ची दशा दिखलाना था न कि ऐंगलो इंडियन कर्मचारियों के साथी बन गये । लाचारी है ॥ महाराजा साहब राठौर क्षत्री हैं—जैचन्द्र जिन्होंने मुसलमानों को यहां बुलाया राठौर ही थे । तब क्या आशा की जाय कि वे हमारे उद्धार के लिये कुछ करेंगे ।

---

## सिक्खों के धर्म का साधारण इतिहास ।

( गतांक के आगे से )

पांचवें गुरू अर्जुन जी के पुत्र और उनके एक साथी गुरू हरगोविन्द जी थोड़ा घना लड़ाई झगड़ों में रहे पर वे सब इतने छोटे और स्थानीय झगड़े थे कि दिल्ली तक उसकी खबर न हुई । सातवें गुरू हरिदास जी ने चुपचाप अपनी ज़िन्दगी काटी । आठवें गुरू हर कृष्ण जी २५ ही वर्ष की उमर में सुरधाम सिधार गये । सम्वत् १८२१ में नवें गुरू तेग बहादुर जी गद्दी पर बैठे और इन्होंने सिक्ख धर्म की बहुत उन्नति की । आदि गुरू के उपरान्त जो गद्दी पर बैठे उन्होंने धर्म प्रचार के लिये फिरने को बहुत कमकर दिया था परन्तु ये सारे पञ्जाब में भ्रमण कर हि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्दुस्तान के और २ प्रान्तों में भी गये । यहां तक कि आसाम में पहुंच वहां के राजा को अपना शिष्य बनाया । धीरे २ उनकी प्रतिष्ठा की शोहरत दिल्ली के शाही महलों तक पहुंची । उस समय कठोर हृदय औरङ्गज़ेब देहली के तख़ पर था, इसने उन्हें बुला कर मुसलमान करना चाहा । इनकार करने पर कैद किये गये और वहीं कतल भी किये गये ।

गुरू तेग बहादुर की कतल ने सिक्खों में एक नई तरह की रूह पैदा कर दी । स्वामी शङ्कराचार्य की शिक्षा यह है कि संसार सब मिथ्या है, शरीर मरता है, आत्मा नित्य और जन्म मरण रहित है, शरीर कपड़े के समान है कि उतार डाला दूसरा पहन लिया इत्यादि । परन्तु यह सब कहने ही मात्र के लिये है इसका आचरण इस समय जहां तक देखा जाता है किसी में भी नहीं पाया गया कि किसी महात्माने धर्म के लिये जान दे दी हो और जो इस समय हमे अपने देश की भलाई के लिये जोश दिलाता और उमंग पैदा करता । इसमें सन्देह नहीं इसके पहिले न जानिये कितने वीराग्रगण्यों ने लड़ाई में सन्मुख युद्ध कर जानें दे दीं परन्तु इस जान देने का असर सिवाय लड़ाई भिड़ाई के और किसी बात पर न पड़ा । गुरू तेग बहादुर के कतल का असर समस्त हिन्दुओं पर पड़ा चाहे वह सिक्ख हों या किसी दूसरे मत मतान्तर के मानने वाले हों । हिन्दू मात्र में खलबली पड़ गई । एक तो यह साधू उसमें भी वैसे जिनकी ज़िन्दगी मानों पवित्रता मौक्तिकहार की एक अटूट लड़ी थी, जिन्होंने बादशाह तो क्या एक गरीब किसान को भी कभी कष्ट नहीं पहुंचाया था, जिनकी मानता और इज्ज़त सिन्ध से आसाम तक थी, जिनके घराने की प्रतिष्ठा सब ठौर व्यापी थी, और यह सब किसी साधारण पुरुष में नहीं होतीं वरन उसी में जिसका अपूर्व पुण्योदय रहता है । पूर्व जन्म के किसी योगभ्रष्ट में यह सब होता है । जैसा गीता में कहा है "शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते" इसलिये उनके क़तल का हाल सुन सब लोग कांप उठे और दुष्ट कातिल औरङ्गज़ेब को बुरा कहने लगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिक्खों में तो इस्का दोहरा असर पड़ा एक ओर तो उनको बदला लेने का जोश पैदा हुआ दूसरे ओर यह कि अपने मरने तक का डर उन्हें न रहा—इस भांत एक गिरी हुई कौम में नई जान आ गई— हज़ारों सिक्ख जो पीछे से सिंह बन गये गुरू तेगबहादुर का नाम लेते पाप और मौत के डंके से बेख़बर रहे। यह असर नवें गुरू तेग बहादुर के बेटे गोबिन्द सिंह और उनके साथियों पर सब से अधिक पड़ा— जिन्हों ने इस एक के कतल के बदले को कुल कौम के कतल में बदल दिया और एक के बलिदान को कुल कौम भर के बलिदान में बढ़ा कर सिक्खों में एक नई शकल पैदा कर दी। आप तुर्कों के हाथ में नहीं आये और न बादशाही गज़ब की तेग पर बलिदान हुये तो भी उनकी पूरी ज़िन्दगी निठुर मुगल बादशाहों के क्रोध में जो बलिदान हुये उस्की एक लड़ी सी है जिस्का वर्णन यहां अप्रासंगिक है—किन्तु इतना सूचित करना यहां आवश्यक है कि औरंगज़ेब के जीते जी सिक्खों का दल बहुत बढ़ गया था और उस्के मरने के उपरान्त तो उनका एक भयानक समूह हो गया।

औरंगज़ेब के साथियों ने सिक्खों के नष्ट करने में बड़ा उद्योग किया। फर्रुखसेर के समय सरहिन्द और लाहोर के सूबेदारों को हुक्म मिला कि हर एक गांव के मालिकों से मुचलके ले लिये जांय कि कोई सिक्ख उनके गांव में न रहे और जो रहता हो तो कैद कर सूबेदार के पास भेज दिया जाय—जासूस भी नियत किये गये जिनका काम यह था कि कहां कितने सिक्ख हैं और गांव के मुखियाओं ने इस्की ख़बर सूबेदार को दी है कि नहीं—और इनाम मुकर्रर किये गये। सूचना देने वाले को २०) पकड़वा देने वाले को ४०) और किसी सिक्ख का सिर काट ले आने वाले को ८०) रु० इनाम रक्खा गया—मुग़ल बादशाहों का यह अत्याचार मुहम्मदशाह के समय तक जारी रहा—जब कि मुग़लों की सलतनत कमज़ोर हो गई और इस तरह का ज़ुल्म करने लायक़ न रही।

इस समय कितने दुर्बल चित्त वाले कम हिम्मत सिक्खों ने केस कटवा डाले परन्तु उनके एक भारी समूह ने निज धर्म छोड़ना स्वीकार न किया चाहो कितनी आफत भोगनी पड़े— उनके समूह मे से हज़ारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़े गये और क़तल किये गये हजारों अपना घर बार छोड़ शहर और गांवों से दूर जंगलों में जा छिपे—वृक्षों के तले और पहाड़ों की गुफा में जा रहे और जंगली फल फूल खा कर अपना जीवन बिताया—जहां यह भी न मिल सका वहां लूट मार कर पेट पालते थे। इन्ही लोगों में जो प्रसिद्ध सिक्ख थे वे पन्थ कहलाये और गुरू के कायम मुकाम या प्रतिनिधि समझे जाते थे—उस समय सिक्खों की दशा ऐसी थी कि वे ज़िन्दगी का कुछ भरोसा न करने लगे। न जानिये किस जून काल के कलेवा बन जांय—खानाबदोश, रहने को जगह नहीं, हर वक्त दरिन्दे जानवर शेर भालू के पंजे में पड़ जाने का डर, इधर तुर्कों के खंजर का खौफ उन्हें जीवन से निरास किये था— सिक्खों के जी में यह उमंग थी कि अपनी ज़िन्दगी को जहां तक हो सके गिरां करें। उन्में ऐसे वीर बहुत हुये जिन्हों ने अकेले पांच पांच सौ का मुकाबिला किया और सैकड़ों की जानै लै अपनी जान दी—पर इस समय हमारा प्रयोजन उन महात्माओं से है जिन्हों ने अपना बचाव लोहे और चमड़े के सिपुर्द न कर उसे सौपा जिसने लोहे में सख़्ती और चमड़े में नरमी दी— जिन्हों ने मौत की गोद को भयानक न पाय उस्में अपने परलोक का सुख और अपने धर्म की उन्नति देखी—जिन्हों ने सिक्ख धर्म की महल बनाने में अपने रूधिर को गारे की जगह दे दिया—ऐसे महात्मा बहुत हुये हैं परन्तु जिनका चरित्र हमें हाथ लगा ऐसे महाशय बहुत थोड़े हैं। (शेष)

---

## सच्चा साधु।

तन मन से जो पर कारज में अपना जन्म बिताता है।
पुनि स्वदेश बंधुन प्रसन्न लखि जिस्का दिल हरषाता है॥
प्यारी जन्मभूमि की दुर्गति जिससे सही न जाती है।
अपने पुरुषों के यश की सुध जिस को सदा सुहाती है॥
जो 'स्वदेश' की मूरखता पर क्षण भर चैन न पाता है।
लोगों के आलसी हृदय में जो उत्साह बढ़ाता है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निज भाई सम जान सबों को सत उपदेश सुनाता है ।
अरु कुपंथ से तिन्हें बचाकर धर्म राह ले जाता है ॥
जो 'स्वदेश' हित दुष्ट जनों की गाली भी सह लेता है ।
उनकी निन्दित बातों की भी ओर ध्यान नहि देता है ॥
जिस्के हृदय लोभ, स्वारथ, का रंचक भी लवलेश नहीं ।
आत्मीयता देश बन्धुन संग कितनी, जिस्का शेष नहीं ॥
सोते जगते खाते पीते यही सोच जिस्को भारी ।
किस विधि 'भारत' में 'स्वतन्त्रता' होवे मुद मङ्गलकारी ॥
जिस्के लिये नरक भी सुखकर, अनुचित कारागार नहीं ।
अरु 'स्वदेश' हित प्राण त्यागने में भी कुछ इनकार नहीं ॥
जिसने यह दृढ़ ठान लिया है, "कुछ हो कष्ट उठावैंगे ।
पै दुर्दशा ग्रस्त भारत को उच्चासन बैठावेंगे" ॥
गर्व रहित हो इस प्रकार से निज कर्त्तव्य दिखाता है ।
वही धन्य अरु पृथ्वी तल पर, "सच्चा साधु" कहाता है ।

माधव प्रसाद शुक्ल

---

## इण्डियन पालिटिक्स का झुकाव।

हिन्दुस्तान की राजनीति में आज दिन यह दोष लगाया जाता है कि यह धर्म और नीति के विरुद्ध जा रही है। थोड़े से आन्दोलनकारी Morality नीति तत्व से इसे अलग कर इस में Sedition राजविद्रोह भर रहे हैं । ये लोग अपने भाइयों को उनकी ठीक राजनैतिक और आर्थिक दशा बतलाकर बलवा करवाना चाहते हैं । उन के इस बुरे झुकाव को रोकने के लिए सर्कार ने बहुत से नये २ एक्ट और सरक्युलर जारी कर दिये। लाजपत ऐसे बागियों को जलावतन कर दिया क्योंकि उनके रहने से बलवा होने का डर था। रेज़ली साहब की दया से स्कूल और कालिजों के विद्यार्थी और प्रोफ़ेसर राजनैतिक विषय में हस्तक्षेप करने से अलग किये गये क्योंकि ऐसा करने से उन के चरित्र के बिगड़ने की संभावना है । डिटे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिव भी इसी लिए नियुक्त किये गये कि वे छिप २ लोगों के गुप्त चाल चलन वा सीक्रेट सोसाइटी के कायम होने की खबर सर्कार को दें। जिस में चाल चलन जो पुरुष में एक रत्न है बिगड़ने न पावे। पोलिटिकल लेख लिखने वाले वा स्पीच देने वाले पर सर्कार की कड़ी निगाह रहती है और कई एक एडिटर और राजनैतिक स्पीच देने वाले इस निगाह में बलिदान भी हो चुके हैं। समाचार पत्र जो अनेक राजकीय संकटों से उद्धार के द्वार और प्रजा में एक बड़ा बल समझे जाते हैं दबाए जा रहे हैं जिन एडीटरों को सज़ा होती है उन का प्रेस इत्यादि ज़ब्त कर लिया जाता है क्योंकि वे अपने लेख से अपने पढ़ने वालों की चाल चलन बिगाड़ना चाहते हैं। इन सब काररवाइयों को देख यही निष्कर्ष निकलता है कि हमारी दयालु गवर्नमेंट इण्डियन पालिटिक्स को इम्मोरालिटी से बचाया चाहती है।

हिन्दू सदा से धर्म और नीति तत्व को सर्वोपरि मानते आये हैं। क्या कारण कि वे आज इस कुराह पर चल रहे हैं? क्या सच २ जैसा गवर्नमेंट सोचे हुए है वही है? क्या इस कलंक को हम में से दूर कर देना सर्कार का काम है? क्या इससे सच २ प्रजा की हानि है? किस से हानि है और किससे लाभ है इस बात के जानने के पहिले इस का जानना ज़रूरी हो गया कि Morality नीति तत्व का Politics राजनैतिक से कहां तक लगाव है। जब हम उन देशों की राजनैतिक दशा पर अपनी राय कायम करते हैं जिनसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं, जिनके बिगड़ने या बनने से हमें कोई हानि या लाभ नहीं तब हमारे राजनैतिक विचार धर्मयुक्त और पक्षपात रहित होंगे। किन्तु जब उन देशों की दशा पर हमारी राय कायम की जाती है जिनसे हमारा किसी तरह का सम्बन्ध है तो हमारे विचारों का धर्मयुक्त और पक्षपात शून्य रहना बहुत कठिन है। हम यह नहीं कहते कि ऐसे मौक़े पर हर एक राजनीतिज्ञ राजनीति को धर्मनीति Morality से अलग कर देगा बरन ऐसे राजनीतिज्ञ बहुत कम हैं जो पक्षपात रहित अपनी राय को साहस और हिम्मत के साथ प्रगट कर सकें। हर एक देश में राजनीतिज्ञों मे अधिकांश ऐसे ही लोग हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनमें अपने मुल्क की तरक्की और वतन दोस्ती का बड़ा जोश है। वे अपने देश की हीनता या हेठापन को कभी ख़ाब में भी नहीं ख़याल कर सकते। देश के शासन की प्रणाली ऐसे ही लोगों के हाथ में रक्खी जाती है जो अपने देश की भलाई करें हीं गे वह भलाई चाहो शुद्ध नीति से चले या अनीति से। इङ्गलैंड के लिबरल दल वाले हों या कनसरबेटिव सब आज दिन रशिया के आन्दोलनकारियों के साथ सहानुभूति रखते हैं और उनको उत्साह भी दिलाते हैं किन्तु जब वे हिन्दुस्तान के आन्दोलन की समालोचना करते हैं तो वे उसको बग़ावत बतलाते हैं और उसे जड़ से उखाड़ डालने की कोशिश करते हैं। याद रहे ग्लेडस्टन ही ने जो पालिटिक्स में इङ्गलैंड में ही नहीं बरन यूरोप भर में माननीय थे आइरिश होम रूल बिल पास होने से रोका था। हम यह नहीं कहते कि ये लोग अधर्मी हैं बरन यह दिखाया चाहते हैं कि उनकी पालिटिक्स देशानुराग Patriotism से न कि Philanthropy मनुष्य मात्र से प्रेम के सिद्धान्त पर चलाई जाती है, और यह भी दिखाया चाहते हैं कि वे लोग जो हम पर धब्बा लगाते हैं वह कहां तक Morality नीति तत्व को राजनीति Politics में निबाहते हैं। दूसरा हिस्सा ऐसे राजनीतिज्ञों का होता है जो अपने राजनैतिक सिद्धान्तों को पक्षपात रहित हो लिखते हैं और स्पीचों में कहते भी हैं। लेकिन जब उनको उन सिद्धान्तो को अमल में लाने का मौका दिया जाता है तब उनकी मोरालिटी और पक्षपात रहित पालिटिक्स आपस में मेल नहीं खाती, साहस और अपने सिद्धान्त की दृढ़ता न जानिये कहां जा छिपती है। उनमें अपने देश भाइयों की राय का भय व्याप जाता है। मारली साहब जब तक मन्त्री के पद पर नहीं थे तब तक उनकी राय पक्षपात रहित थी लेकिन जब से उन्हों ने इस पद को ग्रहण किया तब से केवल Theory ख्याल में लिबरल उदार दल वाले रह गये और उन्हीं पहले के राजनीतिज्ञों में गिन लिये गये। तीसरा हिस्सा राजनीतिज्ञों का वह है जो अपनी राजनीति को समाज-नीति Mo.ility के साथ चलाया चाहते हैं, पर ऐसों की गिनती बहुत ही थोड़ी है, दूसरे उनकी आवाज़ नक्कारखाने में तूती के समान कौन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनता है। जब इंगलैंड की आर्थिक दशा स्पेन और फ्रांस से युद्ध के कारण बहुत बुरी होगई थी तब इंगलैंडके लोगोंने स्वार्थान्ध हो अमेरिका के यूनाइटेड स्टेट पर जो उस समय उनके आधीन था टैक्स लगाना शुरू किया। बर्क और पिट ऐसे ऋषियों ने इस अनुचित टैक्स को रोकना चाहा पर उनके कहने को किसी ने ध्यान न दिया, और अन्त को हुआ वही जैसा बर्क और पिट ने पहले से कह दिया था कि अमेरिका हाथ से निकल जायगी। सर हेनरी काटन ऐसे लोग जिन में बहुधा पक्षपात नहीं रहता, हिन्दुस्तान के सम्बन्ध में भी चेताते रहते हैं पर सुनाई नहीं होती।

पोलिटिकल साएन्स अभी उस उच्च भाव तक नहीं पहुंचा कि लोग अपने देश की राजनीति को वसुधैव कुटुम्बकम् वाले भाव से चलावें। देशानुराग सब देशों की राजनीति को चला रहा है, जहां पूरा देशानुराग है वह देश उन्नति की सीमा को पहुंचा हुआ है हम इसे अधर्म न कह केवल यह दिखलाना चाहते हैं कि जो दोष इण्डियन् पालिटिक्स पर लगाया जाता है कि यह धर्म विरुद्ध है सो कहां तक ठीक है। हिन्दुओं का सब से बड़ा धर्म मुक्ति या छुटकारा माना गया है सो इस धर्म का जिस से लोप हो उसे अलबत्ता हम Morality नीति तत्व के विरुद्ध कह सक्ते हैं। हिन्दुओं की पुरानी उन्नीसवीं शताब्दी की राजनीति में दासत्व की बू थी, आत्म गौरव का बिलकुल जोश न था, इस समय की राजनीति में ये दोनों नहीं हैं उसी को फिर प्राप्त करने का प्रयास Immorality नीति तत्व का विरोध कहा जाता है और इसी को हमारे शासन कर्ता हिन्दुस्तान की राजनीति Polities में दोष मानते हैं। तो यह दोष हमारे लिये कोई शोक की बात नहीं है। राजनीति "पालिटिक्स" में प्रवीणता क्षत्रियों का धर्म है, रजोगुण और वीरता का होना इसके लिये आवश्यक है। इस में दासत्व के भाव का होना ही अधर्म है। अक्बर के समय सच्चे राजनीतिज्ञ महाराणा प्रताप ही थे। सत्य बोलना, साफ बोलना, साहस के साथ बोलना, आत्म गौरव का ख्याल रख कर बोलना, दूसरे के सहारे को लात मारना इत्यादि सब मोरालिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के चिन्ह हैं। इन सब गुणों को अब ही तो हमने सीखा है और यही हमारे पूर्वजों के गुण थे तथा उनका दृढ़ सिद्धान्त था। जो सिद्धान्त हमें स्वतंत्र कर देने के बड़े सहायक हैं उनके अनुसार चलना तो हमने अब ही शुरू किया है। उनके इन सिद्धान्तों की गवाही आज दिन दुनियां के इतिहास दे रहे हैं। जब तक हम इन सिद्धान्तों पर दृढ़ रहे और उन पर दृढ़ रहने से हमारे में मुल्की जोश था तब तक हमने सब तरह की उन्नति की। उन सिद्धान्तों को छोड़ देना ही हमारे गिर जाने का कारण हुआ। साथ ही साथ हमारा साहित्य, व्यापार, इ़ज्जत, प्रतिष्ठा सब सिधार गई। हमने अब ही तो अपनी उन्नति के सच्चे रास्ते को पहिचाना है। स्वतन्त्रता Liberty के खयाल मात्र से हमारे में मोरालिटी आ रही है और कौमीयत का जोश भी व्याप रहा है। new generation नौजवानों के लिये तो स्वतंत्रता का यह "अइडियल" उन्नति का परम उत्कृष्ट मार्ग है। करज़न मारली सिंटो रेज़ली आदि जो हमारे में इन सिद्धान्तों को दृढ़ कर रहे हैं उनको अन्तःकरण से धन्यवाद देकर कहते हैं कि ये लोग सच्चे Indian Nationality भारत में जातीयता के भाव की बुनियाद डालने वाले हैं। अन्धे की आंख खोलने वाले को राह दिखलाने वाले से अधिक धन्यवाद देना चाहिये। इन लोगों को हम अपनी उन्नति के विरोधी मानते हैं किन्तु याद रहे विरोधी ही के होने से उन्नति के नये२ रास्ते सूझते हैं। इंगलैंड के लोगों ने कहां तक हमारे साथ पोलिटिक्स में मोरालिटी को बरता है हमारी वर्तमान् दशा उसकी गवाही दे रही है। अंगरेज़ जाति इस समय स्वतंत्रप्रिय जातियों में अगुआ समझी जाती है। तब किसी कौम की स्वतंत्रता उस कौम के सुधार के बहाने छीन लेना मारल है? किसी कौम या देश के व्यापार को अपने देश के व्यापार की तरक्की के लिये नष्ट कर देना और नष्ट कर देने की कोशिश करना मारल है? इंगलैंड के राजनीतिज्ञ इस बात को ख़ूब जानते हैं कि Free trade स्वतंत्र वाणिज्य हिन्दुस्तान के लिये निपट हानिकारक हैं फिर भी अपना स्वार्थ उन्हें अजान कर रहा है। अंगरेज़ बड़े घमंड के साथ कहते हैं कि हम लाखों की जान देश में शान्ति रख खून खराबा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बचाये हुये हैं यह कितने पुण्य का काम है । लेकिन आज जो लाखों की जान प्लेग के मुख में गिर रही है लोग अकाल के गाल में पड़ पिसे जाते हैं इस बड़े पुण्य का भार किस पर छोड़ा जाय । हमारे साथ इस समय जैसा व्यौहार किया जारहा है वह सुनीति Morality कही जायगी ? तब यह क्योंकर कहा जा सकता है कि हिन्दुस्तान की पालिटिक्स धर्म और नीति के विरुद्ध है ।

## देश भक्ति क्या है ।

देश-भक्ति क्या है ? वह कैसे आती है ? देश को क्षति ग्रस्त देख तन, मन और धन से उसको उन्नति शाली बनाना; अहर्निश देशोन्नति की चिन्ता में ग्रस्त रहना ! यही देश-भक्ति है ! उसके ग्रहण करने का उपाय यही जान पड़ता है कि देश की बनी हुई वस्तुओं को काम में लाना; उन्हीं से प्रेम करना; उनके ग्रहण करने में स्वयं कटि बद्ध होना और अन्य देश वासियों को उनके ग्रहण करने के लिए उत्साहित करना; देश वासियों के साथ सुजनता का व्यवहार करना, आदि बातों से देश-भक्ति प्राप्त होती है । प्रत्येक भारत वासी को चाहिये कि स्वदेशी वस्तु ग्रहण के लिये अचल रूप से दृढ़ प्रतिज्ञ होकर "देश-भक्ति" तथा सच्चे आर्य्य सन्तान होने का परिचय दे । जिस भारत वर्ष के लिये पुराणों तथा आख्यायिकाओं में इस प्रकार पढ़ते, तथा सुनते हैं कि—"इस भारत भूमि में अमृतरस सदृश दाख फल और केशर आदि दुष्प्राप्य वस्तुयें उपजती थीं; यह वह भारत वर्ष है जहां किसी समय में दूध की नदियां बहती थीं; प्राकृतिक बहु मूल्य पदार्थों से इसका कोश खचा खच भरा था; अन्य देशों को सम्पत्ति शाली बनाने के लिये पारस पत्थर की भांति यही भारतवर्ष है; इसी भारतवर्ष की भूमि के लिये सुवर्णमयी, रत्न, गर्भा, बीर प्रसूता आदि विशेषण उपयोग में लाये जाते थे, इन सब को "देश-भक्तिकर" प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कर सक्ते हैं और जो बातें कहानी के रूप में परिणत हो गयी हैं उन्हें प्रगट रूप से देख लें और संसार को देखा दें । अन्त में निवेदन है कि यदि आप लोगों को देशीय और जातीय सत्ता सुरक्षित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखनी है, 'यदि देशोन्नति के दुर्गम मार्ग में अन्य देश वालों के साथ साथ चलना है तो देश भक्ति ग्रहण कीजिये । यह बात किसी से छिपी नहीं है कि एक छोटे से टापू जापान ने प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध करके दिखा दिया है कि देश भक्ति और देशानुराग में यह चमत्कार है कि जिस के प्रताप से थोड़े ही समय में बालू के किणका को सूर्य्य मण्डल की उपाधि मिल सकती है। से भाइयो अब शीघ्र ही स्वदेश भक्ति को राजर्षि दधीच की तरह (जिन्हों ने देश-भक्ति के लिये अपनी हड्डी तक समर्पण कर दी थी) तथा लाला लाजपति राय की भांति (जिन्दों ने देश-भक्ति के लिये अपना सुखमय जीवन ही सङ्कल्प कर दिया) ग्रहण करो । शम्

बाबादीन शुक्ल एकडला ।

---

# पुस्तक प्राप्ति ।

## हर के हाथ निवाह ।

इसमें दया आदि कई एक धर्म पर उपदेश पूरित छोटे २ लेख हैं । रायबहादुर बाबू लालबिहारी बी० ए० कृत संग्रहीत—अभ्युदय प्रेस प्रयाग में मुद्रित । मूल्य मै पोस्टेज ‒)

## लाजपत महिमा ।

भारतहितैषी लाला लाजपतराय की अद्भुत भविष्य वाणी का स्वाद चखना हो तो इस पुस्तक को मंगा कर पढ़ो अब केवल ३०० कापी बच रही है । पुस्तक के साथ उनका एक चित्र भी उसमें है और उसका अनुवाद है जो अपने जलावतन के एक महीना पहिले भविष्य वाणी या पेशगोई की भांत उक्त लाला जी ने माडरन् रिव्यू नाम मासिक पत्र में दिया था उसी का पूरा अनुवाद उसमें है । मै पोस्टेज ‒) का टिकट भेजने से मिलैगा । महादेव भट्ट, अहियापुर—प्रयाग ।

## केसरी ।

श्रीयुत तिलक महोदय की निर्भीक लेखनी का उद्गार यह साप्ताहिक पत्र है—जो माधव राव सप्रे महाशय के प्रवन्ध से हिन्दी में नागपूर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकलता है। तिलक महोदय की लेखनी ने पढ़ने वालों पर कुछ ऐसा जादू सा फेर दिया है कि जब तक नियत दिवस को यह नही आवता तब तक स्वाती के विन्दु को चातक सदृश लोग परखते रहते हैं और ज़रूरी से ज़रूरी काम छोड़ जब तक इसे पढ़ नहीं लेते तब तक चैन उन्हें नहीं मिलती। मूल्य इस्का मै डाक्व्यय २) है—ऐसे नाजुक समय में राजनैतिक विषयों पर निडर अपनी राय ज़ाहिर करना तिलक महोदय ही का काम है। ईश्वर इसे सब तरह की आन्धी बौखा से बचाये रहे—

## सुन्दर सरोजनी।

पं० देवी प्रसाद शर्मा रचित—सच्चा प्रेम और सच्ची मैत्री निवाहने में कितना कष्ट उठाना पड़ता है इसी को सुन्दर और सरोजनी के कथानक से इसमे ग्रन्थ कर्ता ने दिखाया है—नावेल पढ़ने मे रोचक अवश्य है भाषा भी उत्तम है कहीं २ दो एक ठौर पूर्वी बोली की झलक इसमे आगई है—भारत जीवन प्रेस बनारस की छपी है—मूल्य ।=)

पता—सिद्ध प्रसाद उपाध्याय बनारस।

---

## प्राचीन नाम माला।

गतांक से आगे से

चन्द्रभागा—चिनाब पंजाब की पांच नदियों में एक।

चर्मण्वती—चम्बल जो इटावा के पास यमुना में मिली है।

चेदि—चन्देली शिशुपाल यहीं का राजा था। यह बुन्देलखंड का एक नगर है। पगड़ी डुपट्टा साड़ी यहां की प्रसिद्ध है। कोई २ चेदि को दशार्ण के अन्तर्गत मानते हैं। कोई इसे छत्तीस गढ़ में मानते हैं। किसी का मत है कि यह नागपूर के पास था। जो हो चन्देले राजपूतों की बुनियाद यही चेदि है। कोई २ कहते हैं हैहय वंशी क्षत्री भी यहीं हुये जो माहिष्मती में राज करते थे। भेड़ा जो जबलपूर के पास है जहां से नर्मदा के शिवलिंग निकलते हैं वहीं विन्ध्य तथा ऋक्ष पर्वत के बीच माहिष्मती थी। कोई २ कहते हैं नर्मदा के तट का देश चेदि था त्रिपुर इसकी राजधानी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोल या कर्णाट—मैशोर का दक्षिण भाग कारोमंडल का दक्खिनी हिस्सा जो कावेरी के किनारे है। कोई २ तंजोर को चोल देश मानते हैं। किसी का मत है कि लङ्का और द्रविड़ के बीच का देश चोल है।

जनस्थान—दंडकारण्य का एक भाग जो प्रस्रवण गिरि के पास है। पञ्चवटी जो नासिक से दो मील है यहीं है भवभूति ने उत्तर चरित्र में इसका बहुत अच्छा चित्र अपने वर्णन में उतारा है। और यह सब का सब किसी समय लङ्का के राजा रावण के अधिकार में था। इसी जनस्थान में ऋष्यमूक पर्वत भी है। "जनस्थानेशून्ये पिकलकरणैरर्यचरितैरपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्"।

जलन्धर—सतलज या शत्रद्रू विशाला या व्यासा दो नदियों का दोआबा। इसी नाम का एक नगर भी यहीं है।

तमसा—टौंस रीवा के पास से निकल प्रयाग से २० मील पूर्व यमुना में मिलती है। बाल्मीकि का आश्रम इसी पर था।

तापी या ताप्ती—विन्ध्य पर्वत से निकल छोटी २ नदियों को अपने में मिलाते सूरत के पास समुद्र में मिलती है।

तुङ्गभद्रा या तुङ्गवेणा—नीज़ाम हैदराबाद के राज्य की उत्तरी सीमा इसी नदी तक है। कृष्णा नदी के साथ मिल कर बङ्गाल की खाड़ी में गिरती है।

ताम्रपर्णी—मलय पर्वत या वेस्टरन घाट के पूर्व की तराई टेनेवली के ज़िले में जो मदरास हाते में है बहती हुई मेनार की खाड़ी में गिरती है। यह खाड़ी लंका और हिन्दुस्तान के बीच में है। रघुवंश के चौथे सर्ग के ४९ और ५० के श्लोकों में तथा राजशेखर कृत वाल रामायण नाटक में इसका नाम आता है।

त्रिगर्त—सतलज और सरस्वती के बीच का देश। अधिकांश इसका रेगिस्तान है। लुधियाना और पटियाला इसी में है। महाभारत में कई ठौर इसका नाम आया है।

त्रिदिवा—दक्षिण की एक नदी वायुपुराण के मत से महेन्द्र पर्वत से जो दक्षिण में है निकल समुद्र में मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिपुर—जबलपूर से ६ मील चेदि देश के राजाओं की राजधानी थी।

दरद—वह देश जहां से सिन्धु नदी निकली है।

दर्दुर और मलय—हिन्दुस्तान के सात कुलाचल पर्वतों में एक। घाट पर्वत का वह दक्षिणी हिस्सा जो मैसूर के दक्षिण या ट्रावनकोर राज्य की पूरब की सीमा है। कावेरी नदी इसी पर्वत से निकल चारो ओर इसे घेरे हुये है। इलायची मिर्च चन्दन सुपारी और नारियर यहां तहुतायत से होते हैं। रघुवंश में इसकी तारीफ लिखा है "एलालतालिंगित चन्दनासु" कालिदास भवभूति जयदेव आदि कवियों ने इसके वर्णन में बहुत कुछ कविता की है। दर्दुर घाट पर्वत का वह हिस्सा है जो मैसूर की दक्षिण पूरब की सीमा है। कालिदास ने रघुवंश में इन दोनों पर्वतों की प्रशंसा में लिखा है। "स निवेश्य यथाकामं तटेष्वालीनचन्दने-रतनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ"।

दशार्ण—दशार्ण नाम की एक नदी भी जो दशार्ण देश में होकर वही है। यह मालवा का पूरब का हिस्सा है। इसकी राजधानी विदिशा थी जो अब भिलसा के नाम से प्रसिद्ध वेत्रवती नदी के तट पर है। कालिदास ने मेघदूत में और बाण ने कादम्बरी में विदिशा का अच्छा वर्णन किया है। कोई २ छत्तीस गढ़ को दशार्ण कहते हैं "दशार्णोदेशः नदी च दशार्णा" ऐसा भट्टोजिदीक्षित ने सिद्धान्त कौमुदी में लिखा है।

दृशद्वती—मनु ने सरस्वती और दृशद्वती दो नदियों के बीच का देश आर्यावर्त कहा है यह कुरुक्षेत्र की दक्षिण सीमा था। सरस्वती दृशद्वती दोनों एक में मिल मरूभूमि में लय हो गई हैं।

देविका—वर्तमान घाघरा।

द्राविड़—मन्दराज से आरम्भ कर दक्षिण की ओर कारोमण्डल का किनारा जो गोदावरी के दक्षिण है। खास कर वह हिस्सा जो कृष्णा और पोलर नदी के बीच है। इसकी प्राचीन राजधानी वेगवती नदी पर कांची या कंजिवरम् है जो मन्दराज से नैऋत्य कोण की ओर है।

धुरन्धर—महाभारत के करण पर्व में युगन्धर नामक एक नगर का वर्णन है यदि वही यह है तो यह पञ्जाब में था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निषध—कमाऊं का एक हिस्सा जिसकी राजधानी अलका अलकनन्दा पर थी। किसी २ का मत है कि यह बिरार में था। नलोपाख्यान में नल ने दमयन्ती को निषध देश का जो मार्ग बतलाया है सो बिन्ध्य और पयस्विनी नदी के निकट है। सात वर्ष पर्वतोंमें एक निषध भी है।

नैमिषारण्य—अवध प्रान्त का एक तीर्थ स्थान जो ज़िला सीतापूर में ८४ कोस के घेरे में एक बड़ा बन था अब वह सब आबाद है और वहां अच्छे २ गांव और कस्बे बसे हैं। "यतस्तुनिमिषेणेदंनिहतं दानवं बलम्। अरण्येऽस्मिंस्ततस्तेन नैमिषारण्य संज्ञितम्" मुख्य तीर्थ सीतापूर से १६ मील है।

पयस्विनी—विष्णु पुराण के मत से ऋक्ष पर्वत से निकली है। परंतु वायु पुराण और कूर्म पुराण के अनुसार विन्ध्य या सत्पुरा पहाड़ से इसकी उत्पत्ति है। महाभारत में लिखा है जहां से कृष्णानदी का निकास है वहीं से इसका भी है। दूसरे स्थल में लिखा है यह दण्डकारण्य की सीमामें है। युधिष्ठिर पयस्विनी में स्नानके उपरान्त वैदूर्य पर्वत और नर्मदा को गये थे। इसी नाम की एक क्षुद्र नदी चित्रकूट में है जो मन्दाकिनी में मिली है। यात्री इन दोनोंके संगममें पिण्डदान करते हैं।

पंचाल—मनु के मत से पंचाल और कन्नौज एकही देश है—पर महाभारत के अनुसार यह दक्षिण दोआब अर्थात् गंगा यमुना के बीच का प्रदेश है—आदि पर्व से जाना जाता है कि द्रुपद राजा के समय यह दो हिस्सों में बंट गया था। दक्षिण पंजाब की राजधानी माकन्दी थी और उत्तर पंचालकी अहिक्षत्र या अहिच्छत्र था। यूनान देश के टालमी नामक इतिहास वेत्ता जिसने हिन्दुस्तान का प्राचीन इतिहास लिखा है इसी अहिच्छत्र को Adisattras के नाम से लिखा है—द्रोणाचार्य ने समस्त पांचाल को जीत पीछे गंगा के उत्तर का भाग अपने अधिकार में रख जिसकी राजधानी फर्रुखाबाद के पास माकन्दी थी गङ्गा के दक्षिण का सब देश चर्मण्वती नदी तक द्रुपद को लौटा दिया। फर्रुखाबाद से १ मील पश्चिम एक मैदान में थोड़ी सी टूटी फूटी मूर्तें पाई जाती हैं जिसे वहां के लोग कहते हैं यही अखाड़ा है जहां द्रोणाचार्य ने पाण्डवों को बाणविद्या सिखाया था पंचाल और मत्स्यदेश जो जैपूर के पास था दोनों की डाड़ा मेड़ी थी। ये दोनों देश पुराणों में प्रसिद्ध हैं। पीछे से पंचाल और मत्स्य दोनों हस्तिनापुर में मिला लिये गये तब से यह कुरु पंचाल कहलाने लगा अर्थात् पंचाल का वह हिस्सा जो कौरवों के अधीन था।

( शेष )

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

# ॥ बच्चोंने तत्काल जानालया ॥

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिये दो बालिकाएं इस लाभकारी मीठी दवाको देखकर कैसी प्रसन्न होरही हैं

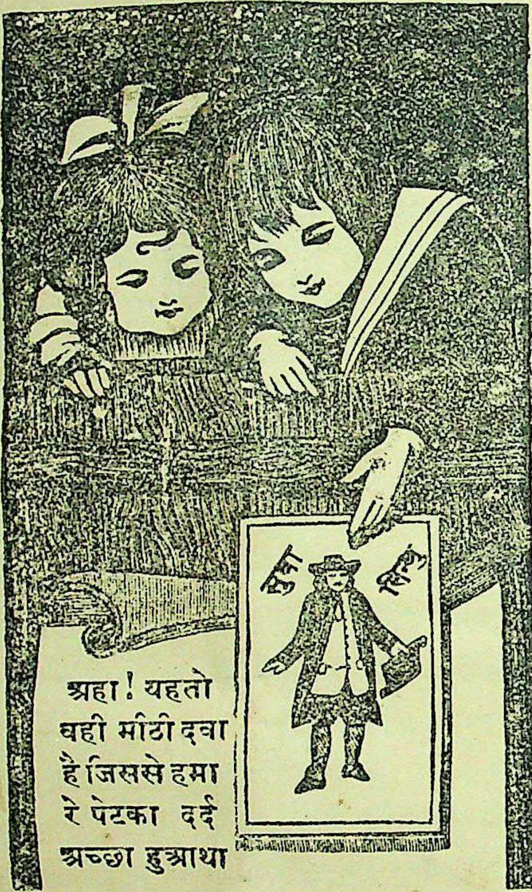


हमारा सुधासिंधु इतना प्रसिद्ध होचला है जिससे अब यह बात निर्विवाद सिद्ध होचुकी है कि नीचे लिखी बीमारियोंके लिये बिना पूछेही लोग मंगाने लगे हैं जैसे कफ, खांसी, जाडेका बुखार, हैजा, शूल, दस्त, संग्रहणी, गठिया, दमा, कै होना, जी मचलाना, बालकों के हरे पीले दस्त और कै करना इनको सिर्फ तीन खुराकमें अच्छा करता है. इसके हजारों सार्टिफिकट मौजूद हैं जिनके लिये प्रायः १२५ चित्रों सहित सूचीपत्र मंगाकर देखिये. मुफ्त भेजेंगे सुधासिन्धु की कीमत ॥) फी शीशी ६ लेनेसे १ भेट १२ लेनेसे पांच रु०

देखिये श्रीमान् राजा इन्द्रजीत प्रताप शाह बहादुर तमकुही जिला गोरखपुर से क्या आज्ञा करते हैं।

महाशय आपका एक दरजन सुधासिंधु पहुंचा जो आपने भेजाथा यह दवा बहुत लाभ दायक है बुखार और पेटके रोगों में तो बहुतही फायदेमन्द है और बहुत रोगोंमें वैसा ही फायदा करता है और महरबानी करके आध पाव चन्दनादि तैल और वासारिष्ट भेजिये। मंगाने का पता—

**क्षेत्रपाल शर्मा मालिक सुख संचारक कम्पनी मथुरा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दी प्रदीप

## मासिक पत्र।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायु सों मणिदीप समथिर नहिंटरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामे जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जिल्द २९ | सेप्टेम्बर १९०७ | संख्या ९

## विषय सूची।


हमारे में मुल्की जोश क्यों कर आवै ... ... ... १
भ्रातृ भाव ... ... ... ५
काम की बातें ... ... ८
भैरवी ... ... ... ... ९
हम इसी लिए जन्मे हैं ... १०
सिक्खों के धर्म का साधारण इतिहास ... ११
कांग्रेस का प्रेसिडेंट कौन हो १९
आद्य शंकराचार्य का चित्र २४


पण्डित बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक के

आज्ञानुसार पं० शीतलप्रसाद त्रिपाठी ने अभ्युदय प्रेस प्रयाग में छापा

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥≡)
समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्रीः ॥

# हिन्दी प्रदीप

जिलद २९ संº ९ | प्रयाग | सेप्टेम्बर सन् १९०७ ई०.

## हमारे में मुल्की जोश क्यों कर आवे ?

हम लोग समाज संशोधन की अनेक चेष्टायें करते हैं, लम्बे २ लेख लिखते हैं, घंटों तक लेक्चर झाड़ा करते हैं, दूध मुहे बालकों का व्याहने की कुरीति और खान पान की कैद को उठाने की बहुत सी फिकिर किया करते हैं, क्लब कमेटी और सभायें स्थापित करते हैं, धरम धरम पुकारते हुये सनातन के क्रम पर चलने का और वेद के समय के ऋषियों के क्रम का अनुसरण करने को लोगों से प्रार्थना करते हैं, सो सब इसी लिये कि हमारे में मुल्की जोश आवे और आंख खोल देखें कि हम क्या के क्या हो गये ! "कोउ नृप होहि हमें का हानी । चेरी छोड़ न होउब रानी ॥" इस दोहे को गढ़ने वाले ने न जानिये किस कुसाइत में गढ़ा कि इसका असर हम पर भर पूर व्यापा । सैकड़ों वर्ष तक हमें मुसल्मान रौंदते रहे अब सात समुद्र के पार से आय अंगरेज़ हमें अपने चंगुल में किये काठ की पुतली सा जैसा चाहते हैं वैसा नाच नचाते हैं, सोने का घर मिट्टी में मिल गया, दाने २ को तरसने लगे पर गुलामी की आदतों का विसर्जन न हुआ—"चेरी छोड़ रानी न बने पर न बने ।" नाहक हम खान पान के क्रम के तोड़ने तथा अनेक कुरीतियों के हटाने की कोशिशें कर रहे हैं उनसे जो हम चाहते हैं कि हम में जोश पैदा हो सो कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न होगा। जोश आजाने पर ये सब बातें जो हमारी तरक्की की बाधक हैं आप से आप दूर हो जांयगी। दरिया की बाढ़ जब आती है तो रास्ते में जो कुछ आ जाता है सब बहा ले जाती है। विचार इस समय यह किया जाता है कि वह बाढ़ क्यों कर आवे। रग रग शिथिल और ढीली पड़ गईं उनमें गुलामी का ज़हर पैठ गया है, शरीर की असंख्य नाड़ियों में एक में भी गरमी बाकी न रही, कुछ भी आगे बढ़ने का मन करो तो कहीं धर्म आड़े आता है, कहीं कहीं समाज की भांत २ की कैद हमें रोक देती है, कदाचित् धर्म और समाज की कैद दोनों को दर गुज़र कर कुछ करते तो चतुर लोगों ने अपने शासन की चतुराई से हमें ऐसा निःसत्व और निःसार कर डाला कि पेट को लला रहे हैं तब किसी व्यवसाय में लग किसी दूसरे देशी भाई के लिये उदाहरण हो रास्ता भी नहीं खोल सक्के। अस्तु धन का देश में अभी भी टूटा नहीं है तो सर्व साधारण में अभी तालीम की इतनी कमी है कि किसी के मन में धसता ही नहीं कि हम क्या बक रहे हैं। उन्हें इस दास्य भाव के कीचड़ में पड़े २ लोटना ही भावता है "ये गांहक करबीन के तुम लीन्हीं कर बीन।" पालिटिक्स और प्रसिद्ध २ ऐतिहासिक घटनाओं के सिद्धान्त का निचोड़ जिसे आप मुल्की जोश के नाम से पुकारते हैं वह आप इनमें पैदा कर दिया चाहते हैं सो कैसे सम्भव है। अधिकतर जन समूह आप के देश का कैसा है इसे भी कभी आपने खयाल किया है। तब ये रामागाती वाले तुम्हारी गूढ़ बातों को क्या समझेंगे और नहीं समझते तो इसमें इनका क्या अपराध इनको शिक्षित करने की चेष्टा आपने कब किया है। तो जान पड़ा कि तालीम ही एक मात्र इनको जोश दिलाने का मुख्य द्वार है। पर तालीम इनकी पुरानी बात और पुराने खयालों को हटाने को ज़हर के समान होगी सो इसका हमें कुछ पछतावा नहीं है। इन का Regeneration नया जन्म तभी होगा जब इनको सुशिक्षा का सुधापान कराया जायगा। Practically twice born वास्तविक द्विजाति या द्विजन्मा ये तभी होंगे जब इनमें तालीम की बरकत पहुंचेगी। पुराने क्रम में रह ये ब्राह्मण और क्षत्री होने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिमान चाहो भले ही करें पर असलीयत में ये सब के सब शूद्र हैं—सहानुभूति, भ्रातृ स्नेह का उदार भाव, देश के लिये Sacrifice of self interest अपने बड़े से बड़े लाभ का त्याग Straight forwardness in all his dealings अपने सब कामों में सब तरह के लेन देन में स्वच्छन्दता और चोखा पन, और सब के ऊपर आपस का एका, देश भर के लोगों को अपना भाई मानना, देश की सेवा अर्थात् जिसके करने से अपने देश और अपनी जाति का कल्याण और उद्धार हो उसे बड़ा धर्म मानना; इत्यादि सुशिक्षा के फल हैं। सुशिक्षित प्राचीन क्रम के ढकोसलों और आभास मात्र की हिन्दुस्तानी को चाहे घिनांय पर ऊपर कहे श्रेष्ठ गुण उन में बहुधा पाये जाते हैं। हमारा यह प्रयोजन नहीं है कि जितने तालीम याफ़्ता अंगरेज़ी पढ़े होते हैं सभी इस तरह के हैं कितने उन में के महा पतित और अत्यन्त अनार्यशील हैं। तौभी अधिकांश उनमें ऐसे हैं जिनमें उत्तम उत्तम गुणों के Germs अंकुर पाये जाते हैं। प्राचीन क्रम मे पुरानी लीक आंख मूद पीटते जाना ही धर्म है। हम इस लीक पीटने को कैसे धर्म मानै इस लिये कि जो धर्म के मार्ग पर चलने वाले हैं उनकी हानि या कोई बुराई नहीं होती; जब जो उसके करने से हमारा नित्य २ ह्रास और क्षीणता होती गई तो उस आभास मात्र के धर्म को हम अधर्म ही कहेंगे। पुराने क्रम में डूब कर देखो तो आचार्यों ने धर्म उसी को ठहराया है जिससे हमारे मे एका हो जिस काम से समस्त देश को लाभ पहुंचता हो; पर हमारा निज का लाभ उससे नहीं बरन नुक़सान है उसी को उन्होंने धर्म माना है। इस समय के प्रचलित पुराने क्रम मे एका की जड़ कट रही है अपना निज का किसी तरह का फाइदा होता हो समाज या देश को बड़ा भारी धक्का पहुंचता हो तो उसकी कभी भी परवाह न करेंगे। विदेशी शासन कर्ता अपने लोगों की इस स्वार्थ बुद्धि की कदर्यता का पूरा फाइदा उठा रहे हैं। चुग्घी देने के हौल पर गवर्नमेंट के कर्मचारी गवर्नमेंट के संबन्ध की बातों में ऐसा चारा सा छितराते हैं कि हम सब के सब उस पर टूट आपस में कट मरते हैं और देश को रसातल में झोंके देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने क्रम में धर्म का सर्वस्व केवल खाने पीने में आटिका है इस खान पान की क़ैद में जकड़े हुये हम देश के बाहर पांव नहीं निकाल सकते और २ देश वाले हमारी इस बेअकली का फाइदा भरपूर उठा रहे हैं। जितने काम जितने बड़े २ अधिकार सबों में अपना पांव जमाते गये हम सब तरह हेठे होते गये और होते जाते हैं। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा सबेरे का भूला सांझ की भांत हम इस कैद को ढीला कर बाहर पांव निकालैं और मुलकी जोश को मन में स्थान दें तो बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

पहले के ऋषियों ने जात का क्रम गुण कर्म के अनुसार चलाया था जिसमें लोग अपना २ काम करते हुये देश की सेवा में तत्पर रहैं। पीछे वेही गुण कर्म नसलों में बंट गये तब यह हुआ कि ब्राह्मण का बालक ब्राह्मण क्षत्रिय का क्षत्रिय वैश्य का वैश्य और शूद्र का शूद्र हो। इनमें कर्म से नीचे वाले ऊपर को भी चढ़ जाते थे और ऊपर वाले ब्राह्मण क्षत्री अपना काम न करने से घटते २ शूद्र हो जाते थे पर खान पान सबों का एक साथ होता था। इस तरह विभेद न था कि एक २ जाति के सैकड़ों टुकड़े हो गये और एक दूसरे के घर पानी तक पीने में सकुचाता है। इस टुकड़े २ हो जाने का फल यह हुआ कि आपस की सहानुभूति जाती रही। भ्रातृ भाव न रहा, सब लोग अपना Personal interest निज का लाभ देखने लगे, कौमीयत का जोश कहीं नाम मात्र को भी न बच रहा। तब कौन इसे धर्म कहेगा। जिसे कुछ भी समझ है और अपने देश के उद्धार की चोट है वह इस तरह के क्रम को समाज को जर्जरित करने वाला महा अधर्म कहेगा। अस्तु इसमें भी यह धींग धींगा कि पतित से पतित काम कर डालो खान पान की चौकसी रक्खो तो आप के हाड़ में फ़र्क न आवेगा। अब इस तालीम के ज़माने में ऐसी २ बेअक़ली की बातों की पाबन्दी सुशिक्षित मण्डली न कर खान पान से किसी तरह धर्म की हानि नहीं मानती। सत्य पर दृढ़ता साहस, स्थिरता, अध्यवसाय, अपने देश के लिये जान तक चाहे चली जाय तब घुने दिमाग़ वाले पुराने लोगों के क्षुद्र स्वार्थ किस गिनती मे हैं। जब हमारे चारो ओर जितनी कौम हैं उनमें खान पान की क़ैद न होने से सब और अपना अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमा रही हैं और हमें अहमक बनाते हुये हमें दबाये लेती है तब हम खान पान में धर्म की हानि समझ संकुचित होते जांय यह कहां की अकिलमन्दी है। इस तरह के धर्मधुरीण होने से तो देश के लोगों के साथ खान पान जारी कर अधर्मी और पापी होना अच्छा है। यह निश्चित है कि जब तक हम पुराने लोगों के इस तरह के जाल में पड़ पिसते रहैंगे तब तक कभी भी तरक्की न करैंगे न हमारे में भ्रातृभाव तथा मुल्की जोश पैदा होगा। दुनियां के हर एक मुल्कों की तवारीख़ गवाही दे रही है कि किसी क़ौम ने तरक्की तभी की है जब उसमें क़ौमी जोश आया है और जब तक क़ौमी जोश रहता है तब तक उस क़ौम के आदमी ज़िन्दा दिल रहते हैं। उस समय उनकी जितनी बातें जितने खयालात सबों में ज़िन्दा दिली की झलक रहती है उसी के अनुसार चलने से लोग मुर्दा दिल नहीं होने पाते। हमारा वेद ऐसे ही खयाल की पुस्तक है उसमें कहीं ऐसी बातों को धर्म नहीं माना जो क़ौमीं जोश पर कुठाराघात कर रही हैं।

---

## भ्रातृभाव।

यह वह पवित्र भाव है जिसके पैदा हो जाने से बड़े से बड़ा काम सहज में हो जाता है। इसी के न रहने से आज यह भारत परतंत्रता की बेड़ी में जकड़ा हुआ अनेक दुःख झेल रहा है। भ्रातृभाव के अभाव का दूसरा नाम फूट है जो महाभारत के समय से आज तक चली आ रही है। न जानिये किस कुसाइत से फूट का बीज अंकुरित हुआ है कि बराबर इसका पेड़ पुष्ट होता गया और इसकी जड़ दृढ़ होती गई। जैचन्द ने पृथ्वी राज के साथ इसी फूट का फल चख यवनों को यहां बुलाया। अगर एक छोटे बालक से भी पूछा जाय कि भाई का रिश्ता कैसे पैदा होता है तो वह भी कह देगा कि एक मा बाप के होने से और एकही मा का दूध पीने से परन्तु भारत के प्रधान धर्माध्यक्ष बड़े २ बुद्धिमान् लोग इस बात पर कम ध्यान देते हैं। नहीं तो कोई कारण नहीं है कि हिन्दुस्तान ऐसी शोचनीय दशा मे रहता। यदि हिन्दू और मुसलमान दोनों के मन से यह भाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पन्न हो जाय कि उनका साधारण पिता एक वही सृष्टि करता परमेश्वर है; चाहो उसे राम कहो या रहीम; अल्लाह कहो या ईश्वर और भारत भूमि उनकी माता है; उसी के पेट से दोनो पैदा हुये हैं; उसी के स्तन का दूध सदृश अन्नादि अनेक बस्तु हमें मिलती हैं जिनसे हमारा शरीर पलता पोखता है और जो भाई का रिश्ता हिन्दू और मुसलमानों में हज़ार वर्ष से चला आ रहा है तब कोई कारण नहीं मालूम होता कि वह रिश्ता आज बिल्कुल भुला दिया जाय। यह प्रकृति का एक नियम सा हो गया है कि भाई लोग बड़े होने पर जब अपना बन्दोबस्त अपने आप करने लायक हो जाते हैं तो एक साथ नहीं रहते और अलग २ दूसरे २ ढंग में लग जाते हैं। संभव है ऐसी दशा मे दोनों में विरोध हो जाय किन्तु याद रहे ऐसे झगड़ों के दूर करने का समय भी आता है। बिलायत मे रोमन् केथोलिक और प्रोटेसटेंट दो भाई कितना अलग २ थे सोलहवीं शताब्दी तक दोनो का इतना बैर बढ़ गया था कि एक दूसरे को जीता जला देते थे पर यह द्वेष तभी तक था जब तक भाई २ में आपस का मामिला रहा। जब १५८८ में स्पेन का Armada बेड़ा इंगलैंड पर आया तो रोमन केथोलिक और प्रोटेसटेंट दोनो ने यह खयाल किया कि अब यह आपस का झगड़ा अलग कर देना चाहिये। अगर स्पेन जीत गया तो हमारा देश परतंत्र हो जायगा। यह समय हमारी मातृ भूमि पर विपत्ति का है यह विचार कर अपने देश की रक्षा के लिए दोनों मिल गये और स्पेन के आरमेडा को परास्त कर संसार को दिखा दिया कि आपस में कितना भी झगड़ा हो पर मातृ भूमि के उद्धार का जब प्रश्न आ उपस्थित हो तो दोनों भाई का धर्म है कि कटिबद्ध हो दोनों आपस के छोटे २ झगड़ों को भूल जांय। हम यह नहीं कहते कि हिन्दू और मुसल्मान दोनों अपना २ धर्म छोड़ बैठें ऐसा होना कभी संभव नहीं है और कोई इसे अच्छा भी न कहेगा पर हम यह चाहते हैं कि और समय चाहे दोंनों लड़ा करें किन्तु जब उन की माता भारत भूमि की यह दशा आ लगी है कि प्लेग और अकाल आदि अनेक विपत्तियों का घर हो रहा है; जहां एक सप्ताह में ८०००० आदमी तक मरने लगे हैं; जिससे मालूम होता है कि कुछ दिनों में हिन्दुस्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से राम कृष्ण और मुहम्मद के सन्तानों का नाम तक न रह जायगा; जहां पर हिन्दुस्तानियों के हस्ती या नेस्ती का सवाल है वहां इस आपस के झगड़े को दूर बहावें। रामकृष्ण और मुहम्मद इत्यादि के सन्तान; उन २ अपने बड़ों के नाम पर इस भारत भूमि के उद्धार में तत्पर हो जांय। इसे सब लोग स्वीकार करते हैं कि प्लेग दरिद्रता की बीमारी है जब तक देश से दरिद्रता न दूर होगी तब तक प्लेग शान्त नहीं होगा। पर याद रहे दरिद्रता तभी दूर होगी जब हम लोगों में आपस की फूट दूर होगी। जब हमें यह खयाल होगा कि जो काम हम करते हैं वह करोड़ों आदमियों के लिये करते हैं; जब हम इस शब्द में ह से हिन्दू और म से मुसलमान सब लोग समझने लगेंगे। हमारे प्रतिपक्षी यही चाहते हैं कि हम लोग सदा अलग २ रहें जिसमें जब चाहें तब इस दाल को हम पीस बेसन तैयार कर लिया करें। पर याद रहे यह चना दो दाल में तब तक कभी नहीं बट सकता जब तक कि इत्तिफाक का छिलका मौजूद है उस छिलके में घुन लगने ही से यह चना बढ़ नहीं सकता और जल्द चक्की में पिस जा सकता है। इस लिये उचित है कि आपस के इत्तिफाक छिलके को मज़बूत रक्खें। जो काम इत्तिफाक के साथ किया जाता है वह काम लोहे के चने की तरह मज़बूत हो जाता है। ऐक्य में परमेश्वर रहता है एका के साथ जो काम किया जाता है उस में ईश्वर सहायक होता है। अंगरेज़ी में कहावत है। God helps those who help themselves आरमेडा की लड़ाई में आंधी से अङ्गरेज़ों को मदद मिली थी। हिन्दुस्तान को इसी इत्तिफाक की इस समय ज़रूरत है। सच पूछो तो हम अन्य देशों की सभ्यातिसभ्यजातियों से किसी बात में कम नहीं हैं कम हैं तो एक इसी बात में कि आपस में ऐक्य नहीं है। जिस्के न होने से हमारे सब उत्तमोत्तम गुण फीके हैं। "सबै अलोना लोन बिन" और भ्रातृ स्नेह उस एका के पुष्ट करने को मानो स्वाती का बिन्दु है पहले आपस में भाई का सा प्रेम आवेगा तब एका आप से आप हो जायगा।

रहस्य विहारी लाल शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## काम की बातें।

**स्वाधीनता**—How happy is he born and taught.
That serveth not another's will,
Whose armour is his honest thought;
And simple truth his utmost skill. Wolton.

उस मनुष्य का जन्म और शिक्षा धन्य है जो किसी दूसरे की इच्छा का दास नहीं रहता; जिसका साथी अपने शुद्ध विचार हैं और जिसकी चतुराई अपनी निष्कपट सत्यता में ही है।

**सन्देह**—If you suspect a man, do not employ him;
If you employ him, do not suspect him. Confucius.

यदि तुम्हें किसी मनुष्य पर सन्देह है तो उसे नौकर न रक्खो, और यदि उसे नौकर रखते हो तो उस पर सन्देह मत करो।

**शिक्षा**—Education is the fairest thing that the best of
men can ever have. Plato.

सब से श्रेष्ठ वस्तु शिक्षा है, जिसे श्रेष्ठ से श्रेष्ठ मनुष्य सब समय प्राप्त कर सकता है।

**अविद्या**—Ignorance is the Curse of God;
Knowldge is the wing where with we fly to heaven. Shakespeare.

अविद्या ईश्वर का श्राप है और विद्या स्वर्ग में उड़ कर जाने का पंख है।

**प्रेम**—To love is nothing unless to live is to
Know Him by whom we live. Ruskin.

प्रेम कुछ नहीं है, यदि हमारे जीवन का अभिप्राय उस के लिये न हो जिसने हमें जीवन दिया है।

**जीवन का अर्थ**—To live for others, to suffer for others is the inevitable condition. of our being. To accept the candition gladly is to find it crowned with its own joys, wcst cott.

हमारे जीवन का प्रयोजन यही है कि हम दूसरों के लिये जियें, दूसरों के लिये दुःख उठायें। इस शर्त को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करना ही इस उद्देश्य को पूरा करना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृढ़ संकल्प—Resolve to perform what you ought and perform without fail what you resolve. Franklin.

जो कुछ तुम्हारा कर्तव्य है उसे पूरा करने के लिये दृढ़ संकल्प हो और जिसके लिये दृढ़ संकल्प किया हो उसे अवश्यमेव पूरा करो।

सत्यता—Truth is the highest thing a man can Keep. Chancer.

Be Virtnous-Bereligious,—be a good man Sir W. Scott.

मनुष्य के रखने योग्य सत्यता सब से बड़ी वस्तु है।
धर्मपरायण होनेही से तुम भले मनुष्य होगे।

सुख में बाधा—What deprives us of happiness ? Pride ,and Avarice, selfishness and Ambition.

Sir A. Lubbock.

कौन सी वस्तु ऐसी है जो हमें सुख से विमुख रखती है ? घमंड, लालच, स्वार्थपरता और ऐश्वर्य कांक्षा। खन्ना॥

## भैरवी।

लजपत सम अस को नर होइ है॥
को स्वदेश हित संतति सम्पति प्यारे मित्र गवैंहै।
निज जननी सम जन्मभूमि को छोड़ "मांडले" जैहै॥ लज०।
आतम गौरव वृटिश जाति को अस को पुरुष दिखैहै।
सिंह सदृश को निज बाणी ते सोवत बन्धु जगैहै॥ लज०।
को निर्भय ह्वै व्यथा देश की भारत राज सुनैहै।
वृटिश राज के क्षुद्र न्याय से ताको फल यह पैहै॥ लज०।
जो कोई नर वीर लाजपत के मारग पर जैहै।
सोइ गारत आरत भारत को सांचो भक्त कहैहै॥ लज०।
अरु स्वतन्त्रता नष्ट, देशमें जो नर फिरउपजैहै।
"माधव" कहत धन्य या जग में अंत स्वर्ग पद पै है॥
लजपत सम अस को नर होइ है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## मानुषी इच्छा ।

सम्पूर्ण देश पटु शिक्षित सौम्य धीर ।
निर्द्वेष धार्मिक सुशील शुचि प्रवीर ॥
आबाल वृद्ध बनिता निज कर्म चारी ।
आलस्य स्वारथ विहीन रहे सुखारी ॥ १ ॥
विविध रत्नमयी क्षिति भारती-
दुख दरिद्र रुजा जड़ता हरै ।
सकल संतति होंहिं कुशाग्रधी-
स्वगत हस्त निबन्धनता लहै ॥

धर्म कर्म देश प्रेम जड़ से निःशेष भयो बीरता विहीन भूमि छीन हुई जाती है। आलस अविद्या द्वेष राग बहुमान मत्सर जेती बुराई सबै जन जनमे दिखाती है। अन्न धन गोरस घट्यो तापै डांट टिक्कस की मर २ अभागी प्रजा दिवस बिताती है। लाखों लाख दीन जन प्लेग के अहार होहिं भारत की दशा देख छाती फटी जाती है ॥

मा० प्र० शुक्ल—प्रयाग

---

## हम इसी लिये जन्मे हैं ।

हम इसी लिए जन्मे हैं कि गुलामी का बस्ता सिर पर लादे हुये देवाधिदेव श्वेताङ्ग महाप्रभुओं की घुड़की झिड़की और पदाघात सहते रहें। आपस के विरोध में अपना सर्वस्व समर्पण कर दाने २ को तरसते हुये भिखारी बन बैठें। बार २ धुतकारे जाने पर भी मांगना न छोड़ें। बहुत २ गिड़गिड़ाने पर जो कभी को आधा टुकड़ा पा जायं तो अपने को बड़भागी होने की सीमा मान लें और उस महा प्रसाद के घमंड में फूले न समायं। और भी दूधमुहों को व्याह अपनी फूटी आंख का सुख देख जन्म सफल कर मानें; हतवीर्य, हतोत्साह, पुरुषार्थ विहीन, परभाग्योपजीवी; गीदड़ सी सन्तान पैदा कर भाग्यशालियों की प्रथम श्रेणी में अपने को गिनने लगें। तात्कालिक थोड़े से फाइदे के लिये परिणाम में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होनहार बड़े लाभ पर दृष्टि न रख स्वार्थ से विमुख न हों। तीसरा कोई चपतमार चाहो सर्वस्व अपहरण कर ले पर हमारा भाई हम से कुछ न पावे। हम इसी लिये जन्मे ही हैं कि अदालत के कानूनों में हिन्दी की चिन्दी और उसकी बारीकियां हमारी आपस की फूट का खातिरखाह फाइदा उठावें। धर्म धुरीण हो घर के बाहर पांव न निकालें। आंख में पट्टी बांध तहखाने के भीतर बन्द पड़े रहैं। काम हमारे चाहो जैसी अनार्यता के हों पर हम आर्यवंशी हैं इस घमंड में फूले न समायं। हम न जन्मे होते तो झूठे दगाबाज़ फरेबी इत्यादि निकृष्ट से निकृष्ट करज़ोनियन उपाधि को कर्ज़न साहब फिर कहां चरितार्थ करते। गुलामी की कदर दुनिया से गायब हो जाती इस रोशनी के ज़माने में तारीकी को ठहरने के लिये कौन जगह देता। "क्षुद्रेपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैः शिरसां सतीव"। इत्यादि अपने जन्म की सफलता पाठकों को कह सुनाया यह उदाहरण मात्र है ढूढने से और भी मिल जायंगे।

---

# सिक्ख धर्म का संक्षिप्त इतिहास।

पहले के आगे से

## गुरू तेग़बहादुर जी की साखी।

गुरू तेग बहादुर सम्वत् १६६९ ईस्वी में पैदा हुये। ये छठवें गुरू हरगोविन्द जी के बेटे थे और अमृतसर में रहा करते थे। गुरू हरगोविन्द जी के पीछे गद्दी उनके बेटे हर राय जी और हर राय जी के पश्चात् हर किशन जी को मिली। गुरू हरिकृष्ण जी ८ वर्ष की अवस्था में सुरधाम सिधार गये और उन के उपरान्त गुरू तेगबहादुर जी सम्वत् १७८१ में ४२ वर्ष की उमर में गुरू बने। उस समय गुरुआई के दावेदार कई लोग थे जिनमें रामराय सातवें गुरू के बेटे शाही हिमायत में हो दिल्ली में रहते थे। रामराय को देहली के बादशाह ने एक बहुत अच्छी जागीर देहरादून के इलाके में दी थी। जिसका एक हिस्सा अब तक उनकी औलाद के पास है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरू तेगबहादुर के साथी सब मक्कार और ज़मानेसाज़ लोग थे। उन खूबियों या उत्तम गुणों में से उनमें एक भी न थे जो संसारिक लोगों के चित्त पर असर पैदा कर सक्ते थे। वे सब गुरुआई की गद्दी तो चाहते थे पर गुरू बनने की ज़िम्मेदारी से न तो वाकिफ़ थे न वाकिफ़ होने की कोशिश ही करते थे। उस समय शाहजहां अपने बेटे औरङ्गज़ेब से तख़्त से उतारा गया और क़ैद कर लिया गया था। औरंगज़ेब दीन इसलाम का कट्टर पैरोकार तअस्सुब से भरा हुआ हिन्दुओं को दुःख दे मुसल्मानों की दिलजोई कर रहा था। इस अत्याचारी ने न जानिये कितने पुराने हिन्दू देवस्थान और मन्दिरों को ढहा उनके जगह मसजिदें बनवा दीं। तीर्थों में यात्रा करने वालों पर टिकस कायम किया। प्रत्येक हिन्दुओं पर जज़िया का कर लगाया। हिन्दू बादशाही नौकरी से बरतरफ़ किये गये और इस सब का यही मतलब था कि हिन्दू अपना धर्म छोड़ मुसल्मान हो जावं। यह आज तक प्रसिद्ध है कि औरङ्गज़ेब सवामन जनेऊ उतरवाय कर खाना खाता था। यद्यपि इस में बहुत अधिक अत्युक्ति है तौ भी यह कहां तक मुबालिगा हो सकता है। इस में सन्देह नहीं सैकड़ों और हज़ारों हिन्दुओं को वह प्रतिदिन मुसल्मान करता था। जिस ने अपने बाप को क़ैद कर लिया और भाइयों को कतल करवा डाला उससे हिन्दुओं को कितना दुःख पहुंचा होगा सिर्फ़ ख़याल करने से रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

गद्दी पर बैठने के थोड़े दिन पीछे गुरू तेगबहादुर तीर्थ यात्रा को निकले और पश्चिम के समस्त तीर्थों में घूमते फिरे जहां गये वहीं हिन्दुओं पर मुसल्मानों को घोर अत्याचार करते पाया। तीर्थ यात्रा के लिये जाना बिलकुल मना था जब तक रुपये की एक भारी रकम यात्री से न लैली जाय। शहरों में हिन्दुओं के तेहवार बन्द थे और सब से ज़ियादह बुराई यह थी कि पक्षपाती मुसल्मानी अफ़सर बादशाह के हुक्म को अपने फाइदे के लिए दसगुना कर दिखाते थे, अत्याचार की हद्द न थी। खुलासा यह कि गुरू तेगबहादुर को इस यात्रा में अत्याचार की ऐसी २ दुर्घटनायें मिलीं कि इन का जी हिल गया और उन्हें खुद ऐसी २ मुशकिलें पेश आईं कि उन का जी व्याकुल हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्रा से लौट उन्हों ने एक स्थान पसन्द कर सतलज के किनारे बसाया और उसका आनन्दपुर नाम रक्खा। अमृतसर को बदल इसी को उन्हों ने अपना निवास स्थान निश्चित किया। इसी जगह एक दिन जब कि सारी संगत एकत्र थी पांच सात मनुष्यों ने उठ कर और हाथ बांध कर उन से निवेदन किया कि महाराज हिन्दुओं पर बड़ा अत्याचार हो रहा है। ऐसे २ अन्याय हो रहे हैं जो देखने में तो क्या सुनने भी नहीं आये। राजा जिसका धर्म सारी प्रजा को एक दृष्टि से देखना है सो पक्षपाती हो रहा है। नीच से नीच और पापी मुसल्मान भले से भले हिन्दू की अपेक्षा अच्छा है। मुसल्मान चाहो जैसी ज़ियादती करें उनके मुखालिफ़ या विरोधी की सुनाई नहीं है। साधु और ब्राह्मण दुखी हो रहे हैं, जगह २ असंख्य गौयें काटी जाती हैं तो अब आप ऐसी कृपा करें कि इस से निस्तार पावैं। आप से बढ़ कर महात्मा और उपकारी हमें कोई दूसरा नहीं देखने में आता इस लिये इस काम में आप की सहायता आवश्यक है।

यह सुन गुरू तेगबहादुर चुप रहे और चित्त में यह ठान लिया कि अब वह समय आरहा है जब कि इन यवनों के अत्याचार में बिना अपने को बलि चढ़ाये काम न सरैगा; अपना बलि प्रदान इस समय बड़े फ़ाइदे का है। इन अत्याचारों के रोकने की दूसरी कोई तदबीर हई नहीं। यह सब सोच विचार बोले, "करतार के भक्तों को दुःख और शोक तथा भांत २ की विपदायें झेलनाही पड़ती हैं किन्तु जब वे विपदायें मर्यादा के बाहर हो जाती हैं तो वाह गुरू आप ही उसका उपाय पैदा कर देते हैं। हां परंपरा से इस आर्य भूमि में सज्जनों की यही रीति रही है कि जब कभी पाप और उपद्रव अधिक फैल जाते हैं तो कोई प्यारी वस्तु बलिदान देते हैं बिना बलिदान दिये पीड़ा न घटैगी।"

गोविन्दसिंह जी उस समय पिता के पास बैठे थे और हर एक शब्द जो उनके मुख से निकलते थे ध्यान से सुन रहे थे। उनकी अवस्था इस समय १८ वर्ष की थी परन्तु इसी उमर में उन में दूरदर्शिता और उत्साह भरपूर आ गया था जो पीछे से उनके बड़प्पन के हेतु हुये। हाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ बोले—"महाराज सिक्खों के लिये आप से बढ़ कर प्यारी वस्तु और क्या होगी।"

सत्संग के बूढ़े लोग नई उमर के बालक की उमंग से भरी ये बातें सुन दंग हो चुप कर रहे और तेगबहादुर जी भी थोड़ी देर तक कुछ न बोले वरन अपने नौ जवान बेटे के इन सत्य वाक्यों का अपने सोचे समझे विचारों से मुकाबिला किया तो तनिक भी उस में अंतर न पाया। थोड़ा ठहर बोले कि करतार के भक्तो तुम लोग बादशाह और अहलकारों के कान तक यह समाचार पहुंचा दो कि इस समय यह गद्दी सब से अधिक प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध है; गणना भी इस गद्दी के शिष्यों की बहुत अधिक है और हिन्दुस्तान के हर एक प्रान्त में इस गद्दी की शाखा है। सो यदि उस गद्दी के गद्दीदार मुसल्मान हो जावें तो उनके साथ एक बहुत बड़ा दल हिन्दुओं का मुसल्मान हो जाय। कहते हैं यह खबर बादशाह तक पहुंचाई गई। और यदि ऐसा न भी हुआ होता तो औरङ्गज़ेब ऐसा चालबाज़ मुल्क की मज़हबी हालत और उनके गुरुओं से बेख़बर नहीं रह सकता। इसके पहले उसने सातवें गुरू को भी दिल्ली में बुलाया था परन्तु उन्हों ने उससे मिलने के पहिले ही समाधि ले ली थी और आठवें गुरू को उसने विशेष क्लेश नहीं दिया सो इस लिए कि वह नाबालिग़ थे तभी सुरधाम सिधार गये। अस्तु यह समाचार पाय उसने नवें गुरू तेग बहादुर को संवत् १६३२ में राजधानी देहली में बुलाया। दरवार में पहुंचतेही पहले तो उसने गुरू साहब की बड़ी प्रतिष्ठा की और साथ नरमी के उनसे प्रार्थना की कि वह दीन इसलाम कुबूल करलें पर जब उन्होंने इनकार किया तो लालच से उन्हें फुसलाना चाहा कि आप को पीर बनने का रुतबा मिल जायगा, सारी बादशाहत भर में तुम्हारी इज्ज़त होगी, और हर तरह पर तुम प्रसन्न रहोगे। परन्तु गुरु तेगबहादुर संसारी प्रतिष्ठा के लिए अपने धर्म को कब बेचने वाले थे, अन्त को औरङ्गज़ेब ने उनसे साफ़ २ कहदिया कि यातो तुम मुसलमान हो नहीं तो कोई करामात दिखलाओ और ऐसा न करोगे तो कतल कर दिये जाओगे। सोच समझ इसका उत्तर देने के लिये उन्हें समय दिया गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब तक उनको जेल में रखने का हुक्म हुआ। कुछ दिन वह जेल में रहे वहां उन्हों ने मौत से ज़रा भी डर न प्रगट किया न बलिदान होने के अपने इरादे में झझक प्रगट की। दिन रात ईश्वर के भजन में रहा करते और ग्रन्थ साहब को पढ़ा करते थे। आप भी नये २ शब्द रचा करते थे जो बहुत साफ़ और प्रेम से भरे रहते थे। जो शब्द उन्हों ने बन्दीखाने में लिखे वे बहुत ही पुरजोश थे उनमें के दो एक नीचे देते हैं।

चिन्ता ताकी कीजिये—जो अनहोनी होय—यह मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय—जो उपजो सो ध्वंस है—भयो आज के काल—नानक हर गुन गाइये छांड़ सकल जंजाल।

जेल में जब उनसे कहा गया कि मुसलमान हो या करामात दिखलाओ तब उन्होंने निधड़क हो जवाब दिया हम ऐसा न करेंगे पर सिर देने को तैय्यार हैं। अन्त को जब बादशाह को विश्वास हो गया कि अब ये मुसलमान न होंगे न कोई करामात दिखलावैंगे तब उसने उनके कतल का हुक्म भेज दिया। इस हुक्म के आने पर उन्होंने ५ पैसे एक नारियल अपने बेटे गोविन्द सिंह के पास भेजवा दिये जिसका तात्पर्य यह था कि गुरुआई की गद्दी के मालिक अब यही होंगे।

जिसमें वे क़ैद थे उसमें एक बरगद का वृक्ष था उसके नीचे बैठ यह ईश्वर का स्मरण और भजन किया करते थे। एक दिन प्रातः काल उसी स्थान में जहां यह भजन में आसक्त थे जल्लाद पहुंचा और सहसा सिर को इनके तन से जुदा कर दिया। हिन्दुओं में यह पहिले शहीद थे जिन्हों ने अपना शरीर धर्म के अर्पण कर अपनी रास्तवाज़ी सत्य पर निष्ठा और धर्म पर अटल विश्वास के साक्षी हुये। इनके साथ एक सिक्ख मोतीराम भी कतल किया गया। इनकी मौत ने हिन्दुओं के दिलों पर एक कड़ी चोट दी। देश भर में हलचल मच गई। कहते हैं कुदरत ( प्रकृति ) भी इस शोक में शरीक होने से न रुकी उनके कतल के उपरान्त ही ऐसी आंधी आई कि बादशाह समेत सारी देहली में खाक छा गई। यह प्राकृतिक घटना उनके महत्व की सूचक हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके कतलके उपरान्त इनका शरीर उसी जेलखाने की कोठरी मे रख दिया गया और बादशाह को सूचना दी गई कि आप के हुक्म की तामील होगई और कतल किये हुये की देह को दबाने या जलाने का हुक्म मांगा गया। परन्तु औरङ्गज़ेब साधारण मनुष्य न था जो अपने किये पर पछताता। उस्के हृदय में पक्षपात की अग्नि इतनी भड़क चुकी थी कि उस्के बुझाने को सबसे बड़े और महात्मा पुरुष का रुधिर काफी न था सोच विचार उत्तर लिख भेजा कि जो कतल हुआ है वह बादशाह और ईश्वर दोनों का बागी था। फिर जलाना उस्के रसमें की पाबन्दी है और गाड़ना उसे इसलाम के फाइदों को पहुंचना है। इस लिये मुनासिब है जहां उसकी लाश पड़ी है वहां ही पड़ी रहे और पड़ी पड़ी सड़ा करे।

जिस दिन औरङ्गज़ेब ने गुरू तेग बहादुर की लाश के बारे में यह हुक्म दिया उसी दिन और उसी समय देहली से १० कोस पर जङ्गल में एक और फैसला हो रहा था। उनके बेटे गुरु गोविन्द सिंह जी जो उनके गुरू बन गये थे पिता को कैद में पड़ा सुन अपने साथियों के साथ देहली आ रहे थे। बीच में अपने पिता के कतल का समाचार सुन यह आवश्यक हुआ कि उनका शरीर मुसलमानों के हाथ से किसी तरह निकाल लिया जाय। गुरू गोविन्द सिंह की अवस्था इस समय १८ वर्ष की थी। इस छोटी अवस्था में उन्हें गुरुआई की गद्दी के साथ ही साथ बादशाह के जुलम को सहना और उस जुल्म का बदला चुकाने की उमंग भी दी गई। उसी समय से इनके दिल में कौमी जोश के उफ़ान ने जगह कर लिया और इस चिन्ता में हुये कि कैसे अपने पिता के मृतक देह को मुसलमानो के हाथ से निकाल लावें। इनके साथके जितने आदमी थे सब गवांर और गरीब थे उनमे एक भी ऐसा न था जिस्की बादशाह या बादशाह के किसी उमरा तक पहुंच हो। किसी को आशा न थी कि उनमे से कोई गुरू तेगबहादुर के मृतक देह को अत्याचारी बादशाह के कब्ज़े से छुटा लासकेगा। पर ईश्वर की महिमा अपरंपार है इस काम का पूरा करने वाला एक ऐसी ओर से निकला जहांसे उसके निकालने का संभव न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिक्ख मत के प्रारंभही से गुरुओंने धर्म की शिक्षा में जाति पांति की आवश्यकता नहीं रक्खा गुरूनानक और उनके साथियों से ऊंच वा नीच सब धर्म शिक्षा लेते रहे। नववें गुरू के प्रेम और नम्रता ने नीच जाति के लोगों को और भी अपनी ओर खींच लिया जिन्मे रङ्गरहटों का एक अच्छा समूह शिष्यों में था। गुरु गोविन्द सिंह जी बापकी गिरफ़ारी की खबर सुन जब देहली की ओर चलने लगे थे तो दो रङ्ग-रहट सिक्ख भी उनके साथ हो लिये थे और सफ़र में लगातार साथ रहे। ये दोनो रिश्ते में बाप बेटे थे इन दोनों ने हाथ जोड़ निवेदन किया महाराज हम नीच जाति के होने से इस योग्य तो नहीं तौभी आशा रखते हैं कि इस सेवा की इज्ज़त हमे सौंपी जाय। गुरू गोविन्द सिंह जी ने उनकी यह प्रार्थना को स्वीकार किया और ये दोनों अपने भाग्य को सराहते चल दिये। इन दोनों को अभी कुछ खबर न थी कि हम किस प्रकार गुरू के शरीर को लावेंगे किन्तु गुरु के चरण पर विश्वास रख चल खड़े हुये और पांचही कोस गये थे कि उन्हें एक रथ वाला मिला। बात चीत करने पर मालूम हुआ कि वह पंजाबी है और रथ हांकने पर देहली में किसी रईस के यहां नौकर है और गुरुओं का बड़ा भक्त है। इन दोनो ने उससे अपने काम में सहायता मांगी यह मनुष्य बहुत दिनों तक देहली में रहने से वहां की हर एक गली कूचों से जानकार हो गया था। उसने इन दोनों को उस मकान का पता दिया जहां गुरुका मृतक देह रक्खा था उसने यह भी कहा कि यदि आवश्यकता हो तो रथ जिसपर मैं नौकर हूं गुरू जी की सेवा में उपस्थित है। इससे इन दोनों को बड़ा सन्तोष हुआ क्योंकि यदि किसी भांत गुरू के देह को मकान से बाहर निकाल भी लावें तो उसको देहली के बाहर निकाल ले जाना सहज काम न होगा। अब इन तीनोंने यह सलाह गांठी कि दोनो रङ्गसाज़ शरीर को मकान से निकाल लावें और रथवान अपना रथ कै थोड़ी दूर ठहरा रहे। जिस्मे देह रथमें डाल दी जाय और तीनो इस बहाने कि रईस के नौकर हैं बाहर जाते हैं लोगों की नज़र बरकाय शहर से निकल चलैं और जब रथ बाहर निकल जाय तो उसे ऐसे रास्ते में जहां आदमियों का आना जाना कम हो ले जाना सहज है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये तीनों सूर्यास्त से पहले देहली पहुंच गये। देहली इस समय बड़े रौनक पर थी; उसके बराबरी का शहर दुनियां में न था; वहां का बाज़ार संसार के अद्भुत पदार्थों से भरा था, हर एक मुहल्लों में बड़े २ महल खड़े थे अक्बर के समय से उसकी रौनक़ बढ़ती ही गई। शाहजहां ने इसकी उन्नति में अधिकतर ध्यान दिया था। निठुर चित्त औरङ्गज़ेब जो शोभा और सन्दौर्य का प्रतिपच्छी था तौ भी शाहजहां के आरम्भ किये अनेक काम बन्द न किये गये। अस्तु देहली का इस समय बाहरी चमक दमक में मध्यान्ह था। यद्यपि इन रंगसाज़ों ने देहली कभी न देखी थी परन्तु इस समय उनकी दृष्टि नतो उन अद्भुत वस्तुओं पर पड़ी न बड़े २ महलों के बनावट इत्यादि पर। सूर्य डूबते २ उस मकान के सामने पहुंचे और देर तक खड़े २ उसे बाहर भीतर से ख़ूब देखा भाला और तब उस गली के एक कोने में बैठ गये। रथवान् उनसे अलग हो गया और अलग होने के पहले वह जगह बतला गया था जहां आधी रात के पीछे रथ लिये अपने दोनों साथियों की बाट जोहता रहेगा।

रात दो पहर बीत गई चन्द्रमा भी छिप गये थे अन्धेरा और सन्नहटा भी ख़ूब छाया हुआ था चौकीदार दरवाज़ा बन्द कर भीतर के एक कमरे में जा सो रहा। ये दोनों मकान के पिछवारे से दीवार पर चढ़ छत पर कूद गये और ज़ीने की राह से नीचे उतर आये। वहां से दबे पांओं चलकर दरवाज़ा खोल दिया और उसी कोठरी में गये जहां गुरू की लाश पड़ी थी जिसका सिर तन से जुदा था। रथवाले ने रोशनी का सामान उन्हें दे दिया था उसे काम में लाय दिया जलाया और गुरू की मृतक देह सिरसे अलग पड़ी देख दोनों का जी भर आया। पहले लाश के पांवों पर सिर धर प्रार्थना की कि महा राज यद्यपि आपका शरीर कटा पड़ा है परन्तु इसमे सन्देह नही कि आप इस दुष्ट बादशाह को नष्ट कर देने मे समर्थ थे। आप चाहते तो देहली की इस अपवित्र भूमि को छिन्न भिन्न कर यहां दरिया बहा देते आप ऐसे करतार के भक्त क्या नहीं कर सक्ते। आप तो परमानन्द को प्राप्त हो गये यह हमारा मन्द भाग्य है कि हम आपके शान्ति दायक जीवित शरीर को नहीं देखते न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका मनोहर उपदेश सुनते हैं। अब कृपा कर हमे इस काम मे सहायता दीजिये। जब वाह गुरू का नाम ले अरदास समाप्त कर चुका तब उस नौ जवान रङ्गसाज़ को खयाल आया कि कल जगने पर चौकीदार लाश को गुम देख बादशाह को खबर देंगे तहकीकात होगी तो सब भेद खुल जायगा। हाय हमारा मकसद पूरा न हो सकेगा। यह खयाल उसके जीमें आई रहे थे कि उसको इसकी तदबीर भी सूझ आई। बाप से अपने मन की सब बात कह बोला कि मेरी देह इसी प्रकार और इसी जगह डाल दी जाय सो मैं लेट जाता हूं यह मेरी कटार लेकर मेरा सिर तन से अलग कर दिया जाय ताकि चौकीदार जागै तब लाश पड़ी पा कर फ़र्याद न करे। बूढ़े बाप को उसकी यह बात पसन्द आई परन्तु इस्पर वह राज़ी न हुआ कि अपने नौजवान पुत्र से अपनी जिन्दगी अधिक प्यारी समझे कहा। मेरा ही सिर काट लाश यहां डाल दी जाय पर बेटा इसे स्वीकार न करता था। दोनों में देर तक इस पर बहस रही। बूढ़ा बोला मेरा बूढ़ा शरीर गुरू के शरीर से बहुत मिलता है चौकीदार भी मेरा देह पड़ा देख शुबहा न करेगा सिवा इसके तुम जवान हो गुरू जी महाराज की देह को ले जा सकोगे। यह कह बूढ़े ने बेटे को अशीस दिया गुरु गोविन्द सिंह जी को मेरा प्रणाम कहना। उपरान्त उसने ग्रन्थ साहब का थोड़ा पाठ किया और कटार से अपना सिर अलग कर दिया। बेटे ने गुरू का देह एक ओर कर अपने बाप का देह उसकी जगह रख दिया शोक के साथ अपने बूढ़े बाप का पांव चूम गुरू का देह कन्धे पर रख चुपचाप दरवाज़े की रास्ता बाहर निकल गया रथ के पास चल पड़ा और गोविन्द सिंह जी के पास जा पहुंचा। वहां से जंगल की रास्ते गुरू का शव आनन्दपुर में पहुंचाया गया और जलाया गया। शेष

---

## कानग्रेस का प्रेसिडेंट कौन हो।

पारसाल की तरह इस साल भी कानग्रेस के सभापति के चुनाव मे गोलमाल मचा है। यह राष्ट्रीय सभा आज २२ वर्ष से हो रही है किन्तु इन दो वर्षों के सिवाय इस विषय पर पहले कभी कुछ गड़बड़ी नहीं हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी, कानग्रेस संबन्धी सब काम सुख पूर्वक हो जाते थे तो अब यहां पर यह प्रश्न उठता है कि यह गड़बड़ी क्यों ? परन्तु इस गड़बड़ी का कारण जानने के पूर्व उचित है कि कानग्रेस का ठीक स्वरूप और इसके सभापति की ठीक हैसीयत का भी विचार कर लिया जाय। कानग्रेस की उत्पत्ति का कारण पश्चिमी सभ्यता और पश्चिमी साहित्य है। जब हम लोगों का लगाव पश्चिमी लोगों से हुआ और उनके स्वतन्त्र राज काज सम्बन्धी ख्यालों की बू हम मे आ लगी तो हम मे भी स्वतन्त्रता के मीठे फल चखने की अभिलाषा उत्पन्न हुई। सौभाग्य से यह राजकीय स्वतंत्रता हमे उस जाति से मिली जो इस समय यूरोप की सब स्वतंत्र जातियों में अगुआ मानी जाती है और यह भी सौभाग्य ही कहा जायगा कि हमारा ऐसी स्वतंत्र जाति से राजाप्रजा का घनिष्ट संबन्ध हो गया। इनकी राजकीय संस्थाओं की नक़ल ह्यूम साहब ने जो कानग्रेस की बुनियाद डालने वाले माने जाते हैं हिन्दुस्तान की राष्ट्रीय सभा नेशनल कानग्रेस के नाम से शुरू किया। जिसका उद्देश्य यही है कि हर एक राजकीय विषयों की समालोचना की जाय और राजकीय प्रबन्ध और उसमें सुधार प्रजा के मत के अनुसार हो। अर्थात् राजकीय सत्ता प्रजा के हाथ मे हो और रागकर्मचारियों के कुप्रबन्ध से जो दुःख मिलता है वह प्रजा के मत के अनुसार हटाया जाय। इस राष्ट्रीय सभा का सभापति भी वही मनुष्य चुना जाय जिसमें राजकीय बातों के समझने की पूर्णयोग्यता हो जिसको अपने देश की राजकीय दशा तथा उसके सुधारने का उपाय पूरे तौर पर मालूम हो और उस समय के राजकीय संबन्धी विषयों में बहुमत के समझने का केन्द्रभाग के समान हो। इसकी हैसीयत स्वतंत्र देशों मे राजा प्रेसिडेंट या मंत्री की है। स्वतंत्र देशों मे ऐसे ही की राय के मुताबिक राजकीय प्रबन्ध के सब काम चलाये जाते हैं। तब यह बात निर्विवाद हुई कि कानग्रेस की राय प्रजा की राय है। पछतावा इस बात का है कि जिनके लिये यह सभा लड़ती है वे लोग अपने हक्क को नहीं समझते और सच तो यह है कि कानग्रेस ने उनको समझाने की आजतक कोशिश भी नहीं किया। इसी से ऐंग्लो इण्डियन पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सर्कार के खुशामदी यह कह रहे हैं कि कानग्रेस प्रजा की प्रतिनिधि नही है। आजतक कानग्रेस ने यह न दिखाया कि हमारे मन्तव्यों के पीछे Public opinion सर्व साधारण के ऐक मत्य का भी ज़ोर है! हम समझते हैं इसी से इसके मन्तव्यों का ख्याल नहीं किया जाता बरन उलटा यह दोष लगाया जाता है कि सुशिक्षित समाज केवल अपने ही लिये यह आन्दोलन कर रही है। कुछ है भी ऐसा ही क्योंकि यह दोष तो तब न लगाया जाता जब कानग्रेस ने सर्वसाधारण का ऐक मत्य पैदा करने का यत्न किया होता। प्रजा को अपना हक्क पाने के लिये इसके मुखिया लोग उभाड़ते; उन्हे बताते कि हक्क तुम्हारा क्या है और कैसे लेना चाहिये; असली तौर पर इसमे उनकी मदद करते; उनके दुःखों पर जो कर्मचारियों की स्वार्थान्ध पालिसी से मिल रहा है सहानुभूति प्रगट करते। २२ वर्ष राष्ट्रीय सभा को होते बीत गया सिवा थोड़े से पढ़े लिखों के शेष लोग यह भी नहीं जानते कि अपना हक्क पाना किस चिड़िये का नाम है।

उचित था कि कानग्रेस सर्व साधारण को अपने साथ रखता बहुत लोग बहक कर जो सर्कार की ओर चले गये हैं उन्हें उधर न जाने देता। सर्व साधारण को अपने संपर्क मे न रख उनकी समालोचना करने में उन्हें यह अबतक Dumb inert mass गूंगा बेमुह के समूह कहता रहा। जब तक उनमें इतनी योग्यता नहीं है कि यह जान सकें कि हमारा हक्क क्या है तब तक स्वराज पाने लायक वे कहां हो सक्ते हैं। याद रहे इन वेमुह के समूह मे ऐसा ज़ोर है जिससे सरकार भी डरती है और इसे सुशिक्षित समाज खूब समझती है। इसी वेमुह के लोगों मे असन्तोष जनित मुल्की जोश न पैदा हो इसकी फिकिर गवर्नमेंट को जितना अधिक है उतना इन सुशिक्षितों को अपने हक्कों के लिये चिल्लाने और लिखने पढ़ने की नहीं है। इस Dumb inert mass वेमुह वालों के दल को पढ़े लिखे लोग जबतक अपने पीछे चलने वाले न बनावें गे तबतक स्वराज का हक्क नहीं पासक्के। इसी से तिलक आदि नये दल के अगुआ कहते हैं कि मांगना बुरा नही है जब उसके पीछे लै लेने की भी ताकत हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इतिहास सिद्ध करता है कि यह ताकत प्रजा मे रहती है न कि सुशिक्षितों के समूह मे। कानग्रेस में भी आज यही झगड़ा पेश है कि पहले खुद मज़बूत हो जाओ और सरकार को यह दिखला दो कि अगर सीधे २ हक्क न मिलेगा तो दूसरे तरीके से ले लिया जायगा। इसी से नये दल वाले यह प्रयत्न कर रहे हैं कि कोई ऐसा सभापति राष्ट्रीय सभा का हो जो ऊंचे दरजे के लोगों से पुकार के कह दे कि प्रजा को हक्क पाने के लिये हम तैयार कर रहे हैं और अब सब कोशिश कानग्रेस की इसी ओर होगी। नये दल वालों ने "पवलिक ओपीनियन" बनाने का काम शुरू कर दिया है और इसकी कोशिश भी कर रहे हैं कि कानग्रेस उनको इस बात के करने में मदद दे। इसी से वे चाहते हैं कि तिलक सभापति किये जांय जो कानग्रेस की पालिसी को बदल दें और जो उद्देश्य इसका है उसमे सफलता हो। तिलक महोदय इसके सभापति न हुये तो इससे यह न समझ लेना चाहिये कि उनके सिद्धान्तों के अनुसार चलने वाले लोग नहीं हैं। उनके सिद्धन्तों को प्रजा मे फैलाने की आवश्यकता है और यह काम नये दल वालों को करना होगा और कर भी रहें हैं जिसको गवर्नमेंट विरोध करना मानती है। नये दल वाले चाहते हैं कि कानग्रेस विश्वास रूपी जादू से छुटकारा पावे और नई पालिसी को स्वीकार करे पर नरम दल वाले इस विरोध पैदा करने वाली रास्ता पर नही चला चाहते सरकार की ओर से उनका विश्वास अभी भी नही टूटा। वे यह कैसे मानलें कि इतने दिनों तक हम भूल करते आये। उन्हे चाहिये हठ छोड़ तवारीखों के दिखाये मार्गपर चलैं। प्रजा सत्तात्मक राज्य तभी कहा जा सकेगा जब कानग्रेस नये दल के सिद्धान्तों पर चलेगी। जब सरकार बार २ अपना भयानक रूप प्रकट कर रही है तब भी उसके न्याय पर विश्वास किये रहना निरी कायरता है हां यह अलबत्ता क्रम की बात है कि अनुचित काररवाइयों से अपने को बचाये रहें।

कानग्रेस का उद्देश्य प्रजा प्रतिनिधि शासन स्थापित करने का होकर भी यदि इसके नरम दल वाले अगुआ अपनी पालिसी न बदलें तो यह उनकी भूल है। जब गवर्नमेंट का यह मतलब है कि हिन्दुस्तान सदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंगलैंड के आधीन रहे और उसके हाकिमों की सत्ता रत्ती भर भी न घटै वरन दिन दूनी बढ़ती जाय तो कैसे विश्वास हो कि कानग्रेस जिसका उद्देश्य राजकीय सत्ता प्रजा के हाथ मे लाना है विना सर्कार के प्रतिकूल किसी अंश मे हुये एक सीढ़ी आगे हम चढ़ सकेंगे। हिन्दुस्तानियों का क़ौमी जोश सर्कार की स्वार्थान्ध पालिसी से बिना टक्कर खाये कब तक रह सक्ता है। तो उचित यही जान पड़ता है कि यह राष्ट्रीय सभा खुल कर अपने विचार प्रगट कर दे। इसके नरम अगुआ इस ख्याल को कानग्रेस मे आने से रोक भी नहीं सक्ते क्यों कि जब यह राष्ट्रीय सभा है तो सदा उन्ही के मार्ग पर यह नहीं चल सक्ती। कौम का राजकीय विषयों में झुकावट का क्रम सदा बदला करता है और इसका ऐसा होना कौम की तरक्की की पहिचान है। इतिहासों मे कोई उदाहरण नहीं मिलता कि किसी कौम ने सदा एक ही रास्ते पर चल कर उन्नति की हो। पराधीन राज्य की पालिसी तो सदा इसके विदेशी शासन कर्ताओं के शासन के साथ बदला करती है। गवर्नमेंट ने साफ २ कह दिया कि यदि अपना भला चाहते हो तो हमारा मुह न जोहा करो हम तुमको अपना वशंवद रक्खेंगे और ऐसा करना उचित भी है क्यों कि उसके पास आज दिन सत्ता है अपनी गाढ़ी मेहनत और खून बहाकर हिन्दुस्तान लिया है इतने पर भी हमे भिक्षुकी वृत्ति कायम रखना भूल है। पर यह भूल बहुत दिन न चलैगी। क्योंकि इस भूल को दूर करने वाले लोग चारो ओर काम कर रहे हैं। बहुतों के दिलों से यह भूल मिट गई है और मिटती जा रही है। अब इस समय राष्ट्रीय सभा का सभापति ऐसा ही होना चाहिये जो अपने देशी भाइयों को वर्तमान् शासकों के न्याय और विश्वास के जादू से छुटकारा करा दे और उनको भूल की राह से अलग कर नये दल वालों के रास्ते पर लावे जिसमें वे अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करें। और यह तभी सम्भव है जब तिलक सभापति हों।

मदनमोहन शुक्ल

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## श्री जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य का चित्र।

यह चित्र राजा रविवर्मा निर्मित भगवान् शंकराचार्य की मूर्ति का बहुत उत्तम रूप से प्रकाशित किया गया है। संग्रह के योग्य है। शंकर मतानुयायी के लिये तो हमारी समझ मे यह एक बहु मूल्य वस्तु है। मूल्य १) मिलने का पता कृष्णराव देशाई प्लीडर। मंत्री श्रीशंकराचार्य उत्सव—हुब्ली।

## थोड़ा किहिन तुलसीदास बहुत किहिन कविता।

रिज़िली सरकूलर के रहते भी विद्यार्थी लोग पालिटिक्स मे प्रवीणता प्राप्त करने को गुप्त रीति पर राजकीय विषयों मे जानकारी हासिल कर सकते थे किन्तु म्योर सेंट्रल कालिज के प्रिंसिपल मिस्टर जेनिङ्ग ने अपनी एक नई उपज या यों कहें अपना एक नया सरकुलर उसमे लगा दिया है। मि० जैनिङ्ग ने अपने कालिज के विद्यार्थियों को आज्ञा दी है कि वे किसी प्रकार की मीटिङ्ग में चाहो वह जैसी मीटिङ्ग हो शामिल न हों। और शामिल हों तो उनकी आज्ञा लेकर। हम श्रीमान् छोटे लाट हिवेट साहब को धन्यवाद देते हैं कि वे अपने अधिकृत देशों का ऐसा उत्तम शासन कर रहे हैं कि जब और २ प्रान्तों में बहुत कुछ हलचल मच गया है यू० पी० सब तरह के हलचलों से वचा है और पूरी शान्ति राजकीय विषयों मे यहां पाई जाती है। किन्तु जेनिङ्ग महाशय ऐसे लोग जब बैठ बैठाये इस तरह की खोद विनोद किया करेंगे तो हमे शक है कि विद्यार्थियों मे अचरज क्या कुछ न कुछ खलवली मच जाय जिससे शान्ति मे वाधा पड़े। जैनिङ्ग साहब को चाहिये इस विषय मे बहुत समझ बूझ काम करें।

---

## श्लाघनीय उद्योग।

नागरीप्रचारक पत्र के संपादक बाबू गोपाललाल खत्री एक संग्रह हिन्दी के प्रत्येक विषय के उत्तमोत्तम लेखों का किया चाहते हैं। मातृभाषा के समस्त शुभचिन्तकों से निवेदन है कि हरिश्चन्द्र के समय से अब तक जितने हिन्दी के प्रसिद्ध सुलेखक हो गये हैं उन का संग्रह जिनके पास जो हो भेज उनके इस प्रशंसनीय काम मे सहायक हों—

पता—गोपाललाल खत्री, संपादक नागरीप्रचारक—लालबाग़ लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

## ॥ बच्चोंने तत्काल जानलिया ॥

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिये दो बालिकाएं इस लाभकारी मीठी दवाको देखकर कैसी प्रसन्न होरही हैं

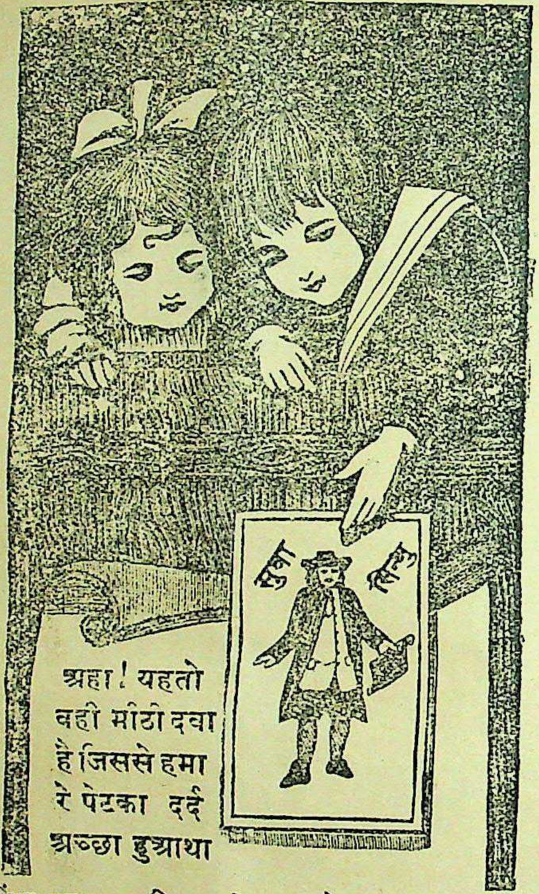


हमारा सुधासिंधु इतना प्रसिद्ध होचला है जिससे अब यह बात निर्विवाद सिद्ध होचुकी है कि नीचे लिखी बीमारियोंके लिये विना पूछेही लोग मंगाने लगे हैं जैसे कफ, खांसी, जाडेका बुखार, हैजा, शूल, दस्त, संग्रहणी, गठिया, दमा, कै होना, जो लकों के हरे पीले दस्त और कै नको सिर्फ तीन खुराकमें अ है. इसके हजारों सार्टि फि मौजूद है जनके लिये प्रायः १२५ चित्रों सहित सूचीपत्र मंगाकर देखिये. मुफ्त भे सन्धु की कीमत ॥) फी शीशी ६ लेनेसे १ भेट १२ लेनेसे पांच रु०

देखिये श्रीमान् राजा इन्द्रजीत प्रताप शाह बहादुर तमकुही जिला गोरखपुर से क्या आज्ञा करते हैं।

महाशय आपका एक दरजन सुधासिंधु पहुंचा जो आपने भेजाथा यह दवा बहुत लाभ दायक है बुखार और पेटके रोगों में तो बहुतही फायदेमन्द है और बहुत रोगोंमें वैसा ही फायदा करता है और महरबानी करके आध पाव चन्दनादि तैल और वासारिष्ट भेजिये।

मंगाने का पता—

### क्षेत्रपाल शर्मा मालिक सुख संचारक कम्पनी मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दी प्रदीप

## मासिक पत्र ।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायु सों मणिदीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामे जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जिल्द २९ | अक्टूबर १९०७ | संख्या १०

## विषय सूची ।


महामंत्र "बन्देमातरम्" ... १
इस आन्दोलन का परिणाम क्या होगा ? ... ... २
सिक्खों के धर्म का साधारण इतिहास ... ५
बीर बंधु ... ... ... ११
दासता ... ... ... १२
इस वर्ष अकाल क्यों हुआ १३
सतत शोकाश्रु संचार ... १४
परिवर्तन ... ... ... १५
संमिलित कुटुम्ब ... ... १८
हम अपने आप अपने पैरों पर कैसे खड़े हों ... २०
पतिब्रता का एक दृष्टान्त २१
प्राप्त पुस्तक... ... ... २३
नये किस्म का अर्क ... "


पण्डित बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक के

आज्ञानुसार पं० शीतलप्रसाद त्रिपाठी ने अभ्युदय प्रेस प्रयाग में छापा

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १।।≡)
समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-:॥ श्रीः ॥:-

# हिन्दी प्रदीप

जिल्द २९ सं० १० | प्रयाग | अक्तूबर सन् १९०७ ई०

## महामंत्र

### "बन्दे मातरम्"।

---

इस मंत्र के वंकिम् बाबू मंत्र द्रष्टा ऋषि हैं—भारत माता इसकी देवता हैं। महा विराट इसका छन्द है। स्वदेशी इसका साधन है। विदेशी वस्तुओं का बायकाट "बहिष्कार" इस महामंत्र का पुरश्चरण है। स्वराज इसका अन्तिम लक्ष्य है। color and creed गोरे काले का भेद न रख तथा मत मतान्तर का झगड़ा छोड़ समस्त भारत-वासी जिन्हें भारत जननी के पुत्र होने का सौभाग्य प्राप्त है वेही इस मंत्र साधन के अधिकारी हैं। "देहं वा पातयेयम् कार्यं वा साधयेम्" इसकेसाधन की विधि है। इस महा मंत्र की शक्ति आवाल वृद्ध वनिताओं तक में, हिमालय से कुमारी अन्तरीय और अटक से कटक तक व्याप्त है। Politics राज-नैतिक पटुता इसका विषय है। पूर्ण अधिकारी या इस मंत्र के साधक वे ही हैं जो चिर निद्रा से एक बारगी चौंक उठे हैं और जिनके नस २ में मुलकी जोश भरा हुआ है जो प्रतिक्षण इसी प्रयत्न में प्रवृत्त हैं कि हमारी मातृ भूमि का कैसे उद्धार हो। कुछ ऐसी अद्भुत करामात या जादू इस में पाया जाता है इस मंत्र के जापक को मातृ भूमि के साथ वह छोह पैदा हो जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिह्वा के द्वारा जिसका वर्णन हो हो नहीं सकता । इस मंत्र के साधक को आगे कहे हुये इन नियमों का ग्रहण अत्यावश्यक है—पहिले तो यह कि वह पूरा गरम दल का हो । याचक वृत्ति को महा अधम काम समझता हो । अपने पैरों पर खड़ा होना सीखे हो । Self-sacrifice आत्मत्याग में कुशल हो, कर्मचारियों की हां में हां या उनकी खुशामद से घिनाता हो । राज-सन्मान तथा बड़ी २ उपाधियों की ओर से सर्वथा निर्लोभ ही नहीं बरन उसके त्याग में पूर्ण परिव्राजक हो । हमारे पाठकों में यदि कोई इस मंत्र का साधक हुआ चाहे तो इन नियमों के पालन में विशेष दत्त चित्त हो । जापक को इसके जप में समय का कोई नियम नहीं है न इसके जप में जीभ हिलाने का क्लेश उठाने की आवश्यकता है वरन अजपा जप के समान रात दिन उठते बैठते सोते जागते निज जननी के उद्धार में लौ लगाये मन से इस महा मंत्र का स्मरण करता रहे । एक ही जन्म में नहीं वरन साधक को सिद्धि के लिये अनेक जन्म झेलना होगा । "अनेक जन्म संसिद्ध स्ततो याति परां गतिम्" "बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते" धीरज धरे लौ लगी रहे । धीरज धरै सो उतरै पारा ।

## इस आन्दोलन का परिणाम क्या होगा ।

आजकल भारत अपनी स्थिर, और अचल दशा छोड़ कर चलाय मान है, शान्त गम्भीर महोदधि में लहरें उठने लगी हैं। जैसे सोता हुआ मनुष्य प्रातः काल आंख मींजता हुआ ईश्वर का नाम उच्चारण कर उठना चाहता है इसी प्रकार बहुत दिनों तक दुर्दैवरूपी रात्रि में सोता हुआ, बङ्ग-भङ्ग, स्वेच्छाचार, टैक्स, इत्यादि मच्छड़ों के काटने से देशी पत्र पत्रियों का कलरव शब्द सुन अङ्गरेजी शिक्षा का प्रचार देख पूर्व रूप में सूर्योदय का अनुभव कर यह "हिन्दू" बालक माता का नाम "बन्दे मातरम्" चिल्लाता हुआ उठने की चेष्टा करता है । जिसकी चर्चा यूरप में है, फिरङ्गी हाकिमों के क्लबों में है । एङ्गलो इंडियन पत्रों में है और हिन्दुस्तान में तो गेहे २ जने २ हैं। मूढ़ हिन्दुस्तानी सोचते है यह सब क्या है इन सब बातों से क्या होगा ? बुद्धिमान् लोग विचार करते हैं इस "स्वदेशी आन्दोलन" का परिणाम क्या होगा ? उधर गवर्मेंट भी ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्वस्त, और व्याकुल है, कड़ाई का वर्ताव कर रही है गोया कोई बड़ा विद्रोह दबाया जाता हो। यह कड़ाई गरम दल, शिक्षित समाज और विद्यार्थियों पर विशेष है जिसमें राज-नीति बढ़ने न पावे विद्यार्थी लोग राज-नीति से अलग रहें। क्योंकि राज-नीति विशारद अंगरेज़ जानते है कि कहीं बढ़ते२ आन्दोलन का यह पौधा जातीयता का महावृक्ष न बन जाय। जिसके फल खाकर वृटिश जाति आप सर्व श्रेष्ठ और दूसरी जातियों को गुलाम बनाने में समर्थ हुई है। यही कारण है कि केवल साधारण आन्दोलन के कारण भारत में बड़े यत्न से राज-नीति बन्द की जाती है। किन्तु यह कब सम्भव है कि वीर स्वदेश-भक्त लोग कड़ाई और कष्टों से डर कर देश की दुर्दशा भूल जांय। यह बात तो वैसी ही है जैसे कोई जागता मनुष्य घर में आग लगी देख सोना चाहे या कोई आंख रहते अन्धा बन जाय।

यह जातीयता का ही प्रभाव है जिसकी बदौलत हाल में हारे हुये बोअर लोग स्वराज्य पा गये। उनके प्रतिनिधि बोथा की इङ्गलैंड में बराबर की इज्ज़त की गई। यही नहीं किन्तु वह अन्यायी कानून भी पास कर दिया गया और हिन्दुस्तानियों का कुछ ख़याल न किया गया। ऐसा हुआ क्यों? क्योंकि जैसे हम लोग प्रजा हैं वैसे ही बोअर इस पर भी हिन्दुस्तान से अङ्गरेज़ों को जो फ़ायदा है उनका दिल जानता है। यदि योग्यता का ख्याल किया जाय तो जितनी बोअर लोगों की संख्या है उतने तो यहां ग्रेजुएट हैं। अच्छा यह सब न सही रङ्ग का ही भेद समझा जाय तो जितने इंगलैंड और ट्रान्सवाल में सफ़ेद चमड़े वाले हैं उनसे अधिक लोग यहां गोरे और खूबसूरत निकल आवेंगे। किन्तु यह सब होने से क्या हो सकता है भेद अवश्य है। बोअर युद्ध देखिये वीर बोअरों ने प्राणपण से अन्त तक युद्ध किया फिर हार जाने पर भी एक साथ शस्त्र रख कर जो उन लोगों ने एकता का परिचय दिया उनकी क़दर सच्ची स्वदेश-भक्त वृटिशजाति क्यों न करें। इधर भारत के पुराने इतिहास को छोड़ वर्तमान आन्दोलन पर दृष्टिपात कीजिये एक ओर National Congress करके हम लोग सरकार से कुछ मांगना चाहते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी ओर Anti-Congress मौजूद है। एक ओर स्वदेशी आन्दोलन करके जिससें भारतवासी मात्र का समान लाभ है अपने में "स्वावलम्बन और जातीयता" लाना चाहते हैं। लेकिन मूर्खता से वहुसंख्यक मुसलमान इसके विरुद्ध हैं और हिन्दुओं पर इस लिये अत्याचार करना चाहते हैं जिससें "स्वदेशी" बन्द हो। कितने दनादन लायल बन रहे हैं। भला जिनके राज-नीति मार्गमें इतना भेद है वे कैसे ऐक फुटपाथ पर चल सकते हैं और कैसे बराबरी का दावा करते हैं ? लायल बनने वाले यहां के राजा महाराजा आदि को जानना चाहिये कि सच्चे स्वदेश-भक्त अंगरेज़ लोग सच्ची स्वदेश-भक्तिही से खुश होने वाले हैं न कि खुशामद से।

यहां के बहुत से शिक्षित महाशयों का मत है कि भिन्न २ धर्म रहने से इस देश में जातीयता या प्रजाशक्ति का होना अत्यन्त कठिन है किन्तु अन्यदेशों के उदाहरण से यह बात बेजड़ सिद्ध होती है। जैसे फ्रांस और जर्मन आदि देशों में रहने वाले यहूदी या ईसाई दोनोंका समान अधिकार है इससे सिद्ध है कि जातीयता के लिये एक धर्म की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी शिक्षा और अभ्यास की है। अब शिक्षित और योग्य हिन्दुस्तानियों की संख्या यहां कम नहीं है। किन्तु अभ्यास की कसर है और इसी कसर मिटाने के लिये ही ईश्वरेच्छा से किसी महान् शुभघड़ी में वर्तमान राजनीति चर्चा आरम्भ हुई है। जैसे एक छोटा, निर्बल, सुकुमार बालक कसरत करते २ बज्र शरीर पहलवान बन जाता है। ऐसे ही यद्यपि आज हम लोग महा शक्तिहीन हैं सभी बातों में हत मनोरथ हैं किन्तु राज-नैतिक अभ्यास करते २ बिखरी हुई शक्तियों को इकट्ठा कर विघ्न बाधाओं को दूर कर अवश्य जातीयता शक्ति प्राप्त करैंगे। यह पौधा है जिसके पास कायर लोग फटकते भी नहीं और यही आन्दोलन का पौधा स्वदेशभक्त वीर गणों के सर्वस्वरूपी जल से सिंच कर "जातीय महा वृक्ष" हो कर एक दिन "स्वराज्य" फल अवश्य उत्पन्न करेगा, जिस फल को खाकर और जिसकी छाया में बिश्राम कर बहुत दिनों से दुःखित, दलित, क्लेशित भारतवासी शान्ति, पावैंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारभ्यते न खलु विघ्न भयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहताः विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति॥

बेनी प्रसाद शुक्ल

# सिक्ख धर्म का साधारण इतिहास।

## गोविन्द सिंह के दो बेगुनाह बच्चों का बलिदान।

सम्वत् १६६० में पहाड़ी राजपूत राजे और लाहौर तथा सरहिन्द के सूबेदारों ने मिलकर आनन्दपुर पर चढ़ाई की जहां सिक्खों के दसवें गुरू गोविन्द जी रहते थे। इस चढ़ाई पर इतना ज़ोर दिया गया कि किले के भीतर खाने पीने की जिन्सों का जाना बिलकुल बन्द कर दिया गया। इस कारण आनन्दपुर की फौज़ के सिपाही बिलकुल बेदिल हो गये। गोविन्द सिंह जी को इस समय इन दो बातों के सिवाय और कुछ न सूझता था कि या तो मैदान में अपनी दुर्बल फौज़ लेकर इतने बड़े लशकर का सामना करें, जो उनकी छोटी सी फौज़ से २० गुना अधिक थी या अपने को शत्रुओं की दया पर छोड़ दें। पहली बात के अनुसार चलना जानबूझ अपने साथियों को कतल करना है। दूसरी बात इससे भी अधिक भय पैदा करने वाली है और अप्रतिष्ठा का कारण है। उन्हों ने इन दो बातों में किसी पर अपनी सम्मति न प्रगट की। इतने में शत्रु की सेना का एक प्रतिनिधि आया और संदेसा लाया जिसका आशय यह था कि आप बहुत जल्द किला खाली कर दें तो आप और आपके साथियों के जान और माल की रक्षा रहैगी और जहां चाहिये वहां चले जाइये।

गोविन्द सिंह जी फौज़ के इस सन्देसे का विश्वास तो न किया किन्तु ऊपर कही दोनों बातों का बचाव इसमें देख पड़ा इस लिये इसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। अपनी सेना को आज्ञा दिया कि कल प्रातःकाल किला खाली करने को सब लोग उद्यत रहैं। दूसरे दिन भोर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप अपनी माता दोनों स्त्रियां चारो पुत्र और समग्र सेना समेत किले के बाहर निकले। जब तक ये सब लोग किले के पास रहे शत्रुओं की सेना अपनी जगह से न हिली। जब सब लोग इतनी दूर चले गये कि वहां से लौट किले में चले जाना असम्भव था तब शत्रु की सेना ने उन पर धावा कर दिया। यह देख गोविन्द सिंह जी के साथी सब घबड़ा गये और मिल के लड़ने के बदले चारो ओर भागने लगे। सामने उनके सतलज नदी थी और पीछे शत्रुओं की सेना। बहुत से जो नदी में कूद पैरकर पार जाने का साहस न कर सके शत्रु के तलवार के शिकार हुये और जो नदी में कूद पड़े उनमें से बहुतेरे डूब गये बहुत ही थोड़े थे जो किसी न किसी भांति प्राण बचा भागे। इस घबड़ाहट में गोविन्द सिंह जी और उनके कुटुम्बी अलग हो गये दोनों स्त्रियां थोड़े से सिक्खों के साथ एक ओर चल पड़ीं और देहली पहुंच गईं। उनकी माता और दोनों पुत्र फतहसिंह और ज़ोरावर सिंह घर के रसोइये ब्राह्मण के साथ एक ओर हो लिये जब कि गोविन्दसिंह जी दो बड़े पुत्र और थोड़े से शिष्यों सहित रोपड़ को रवाना हुये।

यह ब्राह्मण जो माई गुजरी के साथ था गोविन्द सिंह जी के घर में बहुत दिनों से नौकर था और विश्वास पात्र समझा जाता था। इसने माई जी से कहा आप अपने पुत्र सहित हमारे गांव में चलिये वह गांव हिन्दुओं का है और रास्ते से अलग है इस्से आप शत्रुओं के उपद्रव से बची रहेंगी। माई जी ने इसे स्वीकार कर लिया और रात होते होते गांव में पहुंच उस ब्राह्मण के घर जा उतरीं। इनके पास अशर्फियों का एक डिब्बा था और गहनों का एक थैला था। दोनों को उसी कोठरी में जहां उतरी थीं रख दिया थके मांदे तो थे ही सब के सब सो गये। ब्राह्मण ने जब उन सबों को सोते पाया तो थैला और डिब्बा दोनों को छिपा दिया और फिर बाहर खड़ा हो चोर २ ऊंचे स्वर से चिल्लाने लगा। माई जी इस शब्द के सुनते ही चौंक उठीं थैला और डिब्बा न पाय उस ब्राह्मण पर उन्हे शङ्का हुआ उसे बुलाकर कहा हमारा थैला और डिब्बा लाओ। इस पर वह मक्कार कहने लगा तुम हमको चोरी लगाती हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम सब लोग बादशाह के बागी हो हमने अपनी जान जोखिम में छोड़ तुम्हें शरण दिया उसका यह प्रति फल तुम हमको दे रही हो। अब मैं धोखे में न आऊंगा और तुमको यवनों को सौपूंगा। माई जी उसकी इस धमकी से डर गईं और कहने लगीं हमारा यह मतलब न था कि तुम चोर हो पर यह कि यदि तुमने रखवाली के लिये हमारी वस्तु रख दी हैं तो ले आओ सो तुमने यदि नहीं रक्खी तो अस्तु—हमारे दिन ही ऐसे हैं राह का खर्च था सो भी गया अब न जानिये किस प्रकार कर्तार हमारा निर्वाह करे और कब इस बिपत्ति से छुटकारा पावें। यह सुन मक्कार ब्राह्मण चुप हो रहा परन्तु मन में ठान लिया कि अब इन्हें अपने घर में न रहने दें। इस इरादे से वह भोर को उठा और पास के गांव में जहां के मुखिया बड़े पक्षपाती थे उन्हें खबर दी कि गुरू गोविन्द सिंह की मा और उनके दो लड़के मेरे घर में हैं। वे दोनों पक्षपाती उस कृतघ्नी के साथ हो लिये और उसके घर पहुंच उन निर्दोषियों को गिरिफ़ार कर लिया और नाज़िम सरहिन्द के पास भेज दिया।

उस समय सरहिन्द की गद्दी पर जेदखां नाम का एक मनुष्य था यह और नाज़िम लाहोर दोनों गुरू गोविन्द सिंह जी से बहुत चिढ़े थे इस लिये कि इन दोनों को गोविन्द सिंह ने पहले बहुत तंग कर रक्खा था। दोनों हर समय बदला लेने का मौका ढूंढ रहे थे। लालच मक्कारी और बेरहमी से भरे हुये थे। सफ़दरजंग ज़ाबिता खां गुलाम क़ादिर ऐसे लोगों के साथी ये दोनों थे जो मुगलिया सलतनत के नष्ट हो जाने के बानी भुवानी हुये।

नाज़िम सरहिन्द को जब यह ख़बर मिली कि गुरू गोविन्द सिंह जी की मा और उनके दो पुत्र पकड़ गये हैं तो उसने एक दम उन्हें अपने दरबार में तलब किया और आज्ञा दी कि सब लोग क़ैदख़ाने में पहुंचा दिये जांय जहां उन पर सख़्त पहरा रहे। सारा दिन और रात उसने विचार किया कि उनको क्या हुक्म देना चाहिये। दया का उसके स्वभाव में कहीं लेश भी न था और गुरू गोविन्द सिंह से बदला चुकाने की हर दम उसके जी में बसी हुई थी। इस मतलब को पूरा करने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे दो बात सूझी कि इन निरापराधियों का काम तलवार के द्वारा पूरा किया जाय या दोनों मुसल्मान कर के छोड़ दिये जांय। दूसरे दिन सबेरे दोनों लड़कों को अपने दरबार में बुलाया। ये दोनों पहिले २४ घंटों से कुछ खाया पिया न था और थके भी थे इस से उनका मुख कुम्हलाया हुआ था किन्तु इस पर नाज़िम को तनिक दया न आई। डांट कर बोला तुम्हारा बाप खुदा और बादशाह दोनों का बागी है। जैसा उसका काम है उस से यही वाजिब जान पड़ता है कि उसकी जड़ दुनियां से उखाड़ दी जाय। चाहिये कि तुम तुरंत कतल कर दिये जाओ पर तुम्हारी उमर अभी छोटी है इस से हमें यह ख्याल होता है कि तुम छोड़ दिये जाओ इस शर्त पर कि तुम खुशी से पाक दीन इसलाम कुबूल कर लो। यह तुम्हारी खुश किस्मती है कि तुम लशकर इसलाम के हाथ आकर खुदा के दरगाह में पहुंच गये नहीं तो तुम अपने बाप के साथ रहते तो ज़रूर काफ़िर और बागियों की सी तालीम पाते और दोनों जहान में दुखी होते। ये दोनों लड़के जो हिन्दू शिक्षा में पले थे और जिन्हों ने उसी अवस्था में गुरू तेगबहादुर जी और गुरू गोविन्द सिंह जी का उपदेश ग्रहण कर लिया था उन पर नाज़िम की उन बातों का बिलकुल असर न हुआ। नाज़िम ने सोच रक्खा था कि मौत का नाम सुनते ही उनको ऐसा डर समायगा कि उन्हें दीन इसलाम की ओर खींच लाने में वह कामयाब होगा बल्कि मौत के डरावने चेहरे के सन्मुख दीन इसलाम की गोद और बादशाह का आश्रय उनके लिये अनमोल वस्तु होगी। किन्तु दोनो भाई नाज़िम की बातों को चुपचाप सुनते रहे और समाप्त होने पर भी कुछ न बोले तब वह क्रोध कर बोला—क्या लड़को तुम्हें अपनी जान प्यारी नहीं है जो इसलाम की गोद में नहीं आना चाहते? या बहरे हो जो हमारा कहना नहीं सुन सके? खूब समझे रहो दीन इसलाम के कबूल कर लेनेही से तुम्हारी जान बच सक्ती है। यदि स्वीकार हो तो हम अभी जमा मसजिद में चल कर रसमीयात अदा कर देंगे। नहीं तो एक घंटे में तुम्हारा काम तमाम कर दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सुन दोनों बच्चों का मुख पीला पड़ जाने के बदले सुर्ख़ हो गया दोनों एक साथ बोलने लगे। पर बड़े ने छोटे को मना कर दिया और बोला कि हम महात्मा नानिक जी के बंश में उत्पन्न हैं जो सत्य धर्म के अवतार थे। गुरु तेगबहादुर जी के जिन्होंने धर्म के निमित्त अपने को बलिदान कर दिया पोते हैं और गोविन्द सिंह जी के जिन्होंने अपना सर्वस्व धर्म पर न्योछावर कर रक्खा है पुत्र हैं। धिक्कार यदि हम अपनी कमज़ोरी से ऐसे महात्माओं के यश में बट्टा लगावें और ऐसे पवित्र कुल की हतक करें। वाह ! गुरु कृपा करें कि हम पतित होने के पहिले ही मर जावें अधर्म की पैरवी करने के बिना ही इस संसार को छोड़ जावें। हम बच्चे अवश्य हैं परन्तु भक्त प्रह्लाद अपनी परीक्षा के समय हम से भी छोटे थे। सो हमारा उत्तर यही है कि हम सत्य को छोड़ असत्य को ग्रहण न करेंगे और श्रेष्ठ धर्म को छोड़ तुम्हारे मन्द मत को स्वीकार न करेंगे चाहो हमारी जान चली जाय अब जो तुम्हारी इच्छा हो सो करो हमें कुछ डर नही है !

बच्चों की ये बातें सुन नाज़िम चकित हो गया और क्रोध से दांत पीसने लगा। उसको यह विश्वास न था कि लड़के अपने धर्म की पैरवी में इतना हठ करेंगे और जीवन से इतना निडर होंगे। परन्तु उसने यह पक्का इरादा कर लिया था कि वागी के ये लड़के अपना मत न छोड़ेंगे तो उनकी जान लेली जायगी। इस मतलब से उसने दो पठान नौ जवानों को जो उसके नौकरों में से थे और जिनके बाप को गोविन्दसिंह जी ने लड़ाई मे मारा था बुलाकर कहा मै तुम को बाप के खून का बदला देता हूं और इन लड़कों को तुम्हें सौंपता हूं इस लिये कि तुम शरा के हुक्म की तामील अपने ख़ंजर से करो–

इन दोनों बहादुरों ने उत्तर दिया कि यद्यपि हम बाप का बदला चुकाने को तैयार हैं किन्तु आप को मालूम होगा कि हमारे बाप को गोविन्दसिंह ने लड़ाई मे मारा था उसके बदले मे इन दीन बच्चों को मारना हमारी समझ मे बुद्धिमानी नही बल्कि निर्दयता और बुज़दिली है। इस लिये हमारे बाप का खयाल छोड़ आप शरा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाबन्दी कीजिये। इन बातों को सुन नाज़िम और भी आगबबूला हो गया तुरन्त हुक्म दिया उन्हें शहर की फसील में चुनवा दो—यह हौलनाक हुक्म सुन कर भी दोनो मे से किसी के मुख पर डर के चिह्न न प्रगट हुये और चुप चाप जल्लाद के साथ हो लिये—नाज़िम के महल से दोसौ गज़ पर शहर की फसील दो गज लंबी चौड़ी थी। दोनो भाई एक दूसरे से एक गज़ की दूरी पर खड़े किये गये कठोर हृदय नाज़िम भी आ पहुंचा जिस्में अपनी संग दिली और बेरहमी को आंखों से देखे—दीवार इन दीन कच्चों के चारो ओर चुनी जाने लगी जब घुटनों तक आगई तो नाज़िम ने उन से कहा कमबख़्तो अब भी अपनी ना समझी पर पछताय दीनइसलाम कबूल करलो—एक ओर अमीरी और दीनइसलाम का विहिश्त और दूसरी ओर मौत और लानत है—इस पर इन दोनों ने उत्तर दिया—ऐ पापी तुम ऐसे दुष्टों के नीच मत मे मिलने से मौत अच्छी है--चुनाई का काम जो नाज़िम के कहने से बन्द कर दिया गया था फिर प्रारंभ कर दिया गया--जब कमर तक दीवार पहुंची तो नाज़िम एक बार और बोला बेसमझ बच्चो अब भी समय है जान बचालो इस समय छोटा लड़का बेहोश हो चुका और जवाब देने मे असमर्थ था पर बड़ा अभी होश मे था भाई की ओर देख उसका जी भर आया धीमी आवाज़ से नाज़िम की ओर देख कर बोला—पापी अपने काम को पूरा होने दे--ईश्वर की ऐसी ही इच्छा है कि तुम्हारे पाप से तुम्हारा राज्य नष्ट हो हमे मौत से डर नही है पर तुम्हारे भी आराम और सुख का अन्त है इस्का बहुत बुरा बदला तुम से लिया जायगा—ये बातें सुन नाज़िम हंस दिया पर दिल उस्का धड़क रहा था देर तक वहां न ठहर सका सिरतक चुन देने का आखिरी हुक्म दे महलों मे लौट आया--देखते देखते दीवार दोनो के सिर तक पहुंच बन्द कर दी गई—माई गुजरी को इस्का समाचार दोपहर को मिला और सुनते ही प्राण त्याग दिये। ऐसा सच्चा जोश हो तब देश का उद्धार हो सक्ता है कोरे लेकचर या कोरे लेख से कुछ होना नही है।

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## बीर बन्धु।

"बीर बन्धु" है कौन देश मे कौन वुद्धि बल शाली हैं
यदि बिचार देखो भाई तो, आर्य पुरुष बंगाली हैं॥
कौन स्वदेशी सेवक सच्चे कौन सुदृढ़ प्रण पालक हैं।
बंधु जनो! यह कहना होगा, बंग देश के बालक हैं॥
देश भक्त हैं यही लोग अरु, इनका यश जग छायेगा।
अल्प दिनों में इनके ही, कर्तब का फल दिखलाएगा॥
अधिक लोग इस "भारत" मे तो, बात मिलाने वाले हैं।
देश भक्ति की मधु पीकर, कुछ यही हुए मतवाले हैं॥
आत्म, स्वार्थ, का त्याग यही जन कैसा ठीक दिखाते हैं।
सरल चित्त से देखो तो ये मानों हमे सिखाते हैं॥
जो सुकुमार बालकों पर भी निर्दय दया न लाते हैं।
इन दुष्कर्मों से स्वजाति का परिचय जो दिखलाते हैं॥
ऐसे प्रबल हाकिमो का भी सहलेते हैं बज्र कुठार
हंसते हुए चले जाते हैं आज देश हित कारागार॥
प्यारे महाराष्ट्र भाई एक इनके तुम्ही सहायक हो।
आर्य पुरुष साहसी हृदय अरु भारत के सुखदायक हो॥
बंधु गणों! हम अधिक बंदना आज तुम्हारी करते हैं।
तुम लोगों के ही कर्तब को देख धैर्य हिय धरते हैं॥
आर्य गणों! इस्मे जगदीश्वर तुमलोगों की करे सहाय।
बढ़े तुम्हारी शक्ति अधिकतर भारत में धन धर्म दिखाय।
हा! पंजाव देश बासी गण तुम कुछ नहीं लजाते हो।
देश भक्त जन सहें दुःख तुम राज भक्ति दिखलाते हो॥
थोड़े दिन इस जग मे रहना जो कुछ भी कर जाओ गे।
पुनर्जन्म लेकर निश्चयही उस्का प्रतिफल पाओ गे॥
युक्त प्रान्त बालों को देखो कैसे सुख से सोते हैं।
ज़रा ध्यान भी नहीं देश का व्यर्थ जिन्दगी खोते हैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टसको मसको देखो भालों कुछ तो मुंहसे बोलोगे।
अच्छा भला यही बतलादो कबतक आंखे खोलोगे॥

---

## दासता।

भूमि के सम्पूर्ण देशों मे कभी जो एक था।
हा! वो 'भारत' घर गुलामों का कहा जाने लगा॥
थी जगद्विख्यात जिस्की वीरता, कारीगरी।
धर्म तत्परता, सुजनता, एकता, सौदागरी॥
और विद्या का भरा आगार था जिस देश मे।
हा! वही सहता अनादर 'दासता' के भेख मे॥
वीरवर जयमल्ल, पुत्त, प्रताप, पृथ्वीराज से।
मान गौरव के वढ़ावन हार थे जिस देश के॥
प्राण रहते जिन्हों ने छोड़ी नही "स्वाधीनता"।
हुए रिपु भी मुग्ध जिनकी देख वल शालीनता॥
'दासता' सुनते ही जिनके क्रोध की सीमा न थी।
आज उनके वंशधर हा! दास बन वैठे सभी॥
इस तरह कितने वली इस भूमि ने पैदा किये।
मातहित जिन प्राण जगहित सुयश तज सुरपद लिये॥
हाय! भारत आज यह तेरी दशा क्या हो गई।
भूमि मे विख्यात महिमा है कहां सब खो गई॥
देशके प्यारे जनों अवभी पड़े क्यों सोते हो।
'दासता' को मानकर सुख व्यर्थ दिन क्यों खोते हो॥
भाईयो यह देश गारत है इसीकाही किया।
देश से "स्वाधीनता" को है इसी ने हरलिया॥
है इसीनेही नसाया धर्म हिन्दुस्तान का।
करदिया हमको निरा ज्यों पूतला वे जानका॥
वोलने लिखने तलक की अव मनाही हो गई।
देश की सत्कीर्ति सव इस्की वदौलत धो गई॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है किया चौपट इसी ने सब हमारे कारोबार।
अब संगाती भीख हमसे है फिराकर द्वार द्वार॥
लोभ दिखला कर फसाया देश को है किस्तरह।
जाल में स्वच्छन्द पक्षी आन फंसता जिस्तरह॥
हे विभो! भारत को पहले की तरह भरपूर कर।
शीघ्रही सर्वस्व हारिणि "दासता" को दूरकर॥

माधव शुक्ल।

---

## इस वर्ष अकाल क्यों हुआ ?

ईश्वर का जब बड़ा कोप होता है तब अकाल और मरी प्रजा में फैलती है। ५१ वर्ष पहिले और अब को मिलाओ तो सस्ती का समय भी अकाल मालूम होगा। किन्तु सहते सहते सह गये तो अब रुपये का १२ सेर गेहूं सस्ती का समय मान लिया गया है। मनसून इस साल बड़ी देर के आया और बहुत जल्द लौट गया। अन्न का संग्रह देश में रहा होता सब का सब रेली ब्रादर्स के कहे न लगता, बिलाइत न ढो गया होता, तो संभव था कुछ मँहगी होती इतना अकाल न पड़ता कि ८ सेर ७ सेर का गेहूं ५ सेर ४ सेर का चावल बिक रहा है लोग भूखों मर रहे हैं। एक जून भी पेट भर नहीं खाते पर कौन कहे हमारे सामयिक शासन कर्ताओं की शासन प्रणाली ही कुछ ऐसी है कि वे बिलायत के लोगों की हानि नहीं सह सक्ते हैं। उन के हर तरह के आराम और सुख चैन Luxury में फर्क न पड़े हम चाहे जैसे अपना दिन काटें। छोटे से छोटे हाकिम और उनकी मेमसाहबा नौवाब तथा शाही बेगमों का कान काटे हुये हैं। राजा और प्रजा का रिश्ता एक ओर रहे उतनी भी हमदरदी उनके कामों से नही प्रगट होती जितनी मनुष्य को मनुष्य के साथ होनी चाहिये। कई लाख मनुष्य प्लेग में मरते ही हैं अब इस अकाल मे भी सही। पर अकाल पीड़ितों की मृत्यु प्लेग से अधिक भयंकर है "कष्टात्कष्टतरं क्षुधा"। जो हमारे जान माल की रक्षा का बीड़ा उठाये हुये हैं वेही अब "फ्रीटेड" स्वछन्द बाणिज्य की पालिसी को क़ायम रख हमे क्षुधा पीड़ित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहे हैं और सस्ती में भी हर एक चीज़ों का भाव फ्रीट्रेड के कारण अकाल का सा किये हुये हैं तब यह अकाल तो दैवी कोप माना जाता है। पर यह दैवी कोप हम पर क्यों है? हम से कौन सा पाप बनता है? देश निर्धन हो गया तो दरिद्रता ही एक पाप है जो गुलामी के भाव को साथ लिये हमारे सिर पर चढ़ी नाच रही है। गुलामी से छुटने का यत्न करैं तो दरिद्रता अपने ताण्डव नृत्य की गति के घमण्ड में भरी ऐसी गहरी ठोकर जमाती है कि हक्का बक्का हो छट्ठी का दूध याद आने लगता है होश गुम हो जाते हैं। अस्तु राजकीय कोप तो था ही जिधर ज़रा भी उभड़ने का मन करते हैं उधर ही नये रिज़ोल्यूशन और कड़े से कड़े कानूनों की ऐसी कील ठोक दी जाती हैं कि दास्य भाव के पिंजड़े में बंद पड़े सड़ते रहै तो अब दैवी कोप भी सही। सहन शील को सब सहते जाना ही बड़ी तपस्या है और हम तो तपस्वी ऋषियों के बंशधर हैं। तब कुल परम्परा गत धर्म आना ही हमारी शोभा है तथास्तु।

## सतत शोकाश्रु संचार।

न जानिये हत भागिनी हिन्दी के कैसे कुदिन आ लगे हैं कि जो इसके लिये कटिबद्ध हो सनद्ध हो जाता है उसी को मौत निगोड़ी नई फूलीहुई कली के समान खसोट लेती है। अधिक तर यह वर्ष तो इस दुर्घटना के लिये न जानिये कैसा मनहूस आया कि इसमे हमारे कई एक सुलेखक उस महा पथ के बटोही बने जिसमे प्रस्थान कर फिर आज तक कोई न लौटा। जिनके निमित्त हमे सतत शोकाश्रु संचार से आश्वासन के लिये अवकाश ही नही मिलता। दुर्दैव घाव पर घाव बराबर देता जा रहा है। सबके पहिले नागरी सेवकों के अग्रगण्य काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापक सुग्रहीत नाम धेय बाबू राधा कृष्ण जी को गोलोक धामकी प्राप्ति हुई। उनके शोकान्धकार में हम लोग पड़े२ टटोल रहेथे कि सहसा माधव प्रसाद मिश्र के स्वर्ग बास का समाचार हिन्दी पर वज्र पात सा आटूटा उक्त मिश्र जी ने हिंदी के साथ जैसी सहानुभूति दरसाई वह किसी से छिपी नही समाचार पत्र इन की बहुत कुछ लीला गाचुके हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने स्थिर अध्यवसाय मे ये इस समय के चाणक्य थे। चाणक्य के बहुत से गुण इनमे पाये गये अस्तु। इस शोक का मार्जन नहीं हुआ था कि मध्य प्रदेश को उजागर करने वाले पं० अनन्त राम पाण्डेय हिन्दी रसिकों को अपने विछोह से खिन्न करते चलबसे, उक्त पाण्डेय को बहुत कम लोग जानते होंगे किन्तु हिन्दी के लिये उनकी सरगरमी इनके सरस लेख से विदित है। प्रदीप की पुरानी फाइलों में इन के बहुत से लेख मुद्रित हो चुके हैं उनके पढ़ने से इनके सुलेखक होने का पता मिलता है। पाण्डेय जी चुपचाप काम करने वाले थे विना किसी निज के स्वार्थ के इन्होने हिन्दी के साथ सहानुभूति दरसाया। अन्त में बा० वालमुकुन्द गुप्त भारत मित्र की उन्नति के एक मात्र आंधार अपने वियोग से हिन्दी रसिकों को निराश कर हम सबों को शोकाश्रु पूरित कर गये। हमारे दीर्घ जीवन मे सतत शोकाश्रु संचारही लिख दिया गया है क्या ? हा धिक्।

---

## परिवर्तन।

संसार के जितने काम हैं सब किसी न किसी प्राकृतिक नियमों के सिद्धान्तों पर और उन सिद्धान्तों को प्रगट कर दरसाने के लिये होते हैं। आज इस बात के विचार करने का जी चाहता है कि राज का परिवर्तन किस नियम पर होता है और उन नियमों के उदाहरण क्या हैं।

न्याय दृष्टि से देखा जाय तो मालूम होगा कि प्रत्येक मनुष्य को उसके गुण कर्म के अनुसार इतनी स्वच्छन्दता अवश्य मिलनी चाहिये कि वह आप अपने को सम्हाले रहे। किसी को इसमे कोई अधिकार नहीं है कि वह दूसरे की आज़ादी छीन कर आप उस आज़ादी का फ़ाइदा उठावे। न यही किसी को अधिकार है कि वह दूसरे को अपनी राय के मुताबिक काम करने की बेजां कोशिश करे। प्रत्येक मनुष्य को इतनी स्वतंत्रा अवश्य होनी चाहिये कि वह किसी धर्म या मज़हब का पाबन्द हो या न हो चाहे जिस समाज का पोषक हो या चाहे जिस राज नैतिक सिद्धान्त का पालन करे। इतनी रुकावट अवश्य होनी चाहिये कि उसके ऐसा करने से किसी व्यक्ति या समाज को व्यर्थ हानि न पहुंचे इसी नियम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार हर एक जाति समाज या कौम को स्वतंत्रा मिलनी चाहिये। किसी कौम को अधिकार नहीं है कि वह दूसरी कौम को अपनी राय से चलावे या उसपर ज़बर दस्ती करे । ऐसा करना प्राकृतिक नियम के विरुद्ध है और जब कि किसी प्राकृतिक नियम का उल्लंघन किया जाता है तो ऐसा करने वाले को उसका बुरा नतीजा भुगतना पड़ता है क्योंकि ये नियम ऐसे कठोर और परिवर्तन विमुख हैं कि उन के पालन करने ही में भलाई है और उल्लंघन करने वाले से ये बिना बदला लिये रहते भी नहीं । इस लिये कि ये नियम सर्वथा पक्षपात रहित हैं इसी से संसार में उनकी प्रतिष्ठा और मान्य है। बल्कि यों कहना चाहिये कि संसार इन्हीं नियमों की बदौलत चल रहा है। यावत् विद्या और शास्त्र सबों का यही उद्देश्य है कि हम इन नियमों को जानें और उन पर चल मनुष्य मात्र लाभ उठावें। तो निश्चय हुआ कि परिवर्तन या हल चल तभी होते हैं जब उन नियमों का उल्लंघन किया जाता है। इन नियमों के अनुसार जो स्वतंत्रा प्राप्त हुई वह चाहे धर्म संबन्धी हो चाहे व्यवहार या व्यवसाय की हो या राज नैतिक हो अथवा किसी दूसरे प्रकार की हो जब उसके अनुसार चलने का लाभ उठाने में रोकावट डाली जायगी तब हल चल का होना ज़रूरी बात हैं ।

धर्म सम्बन्ध में आज़ादी न होने के हल चल हिन्दुस्तान से बढ़ कर कहां हुये होंगे। मुसलमानों ने बहुतेरा इस आज़ादी को छीन लेना चाहा किन्तु उसका बुरा परिणाम उन्हें भुगतना पड़ा। हजारों हिन्दुओं की जान इस आज़ादी छीनने के लिये लेली गई और औरंगज़ेब ने तो इस ज़बरदस्ती का अन्त कर डाला था पीछे को यही मुसल्मानोंके अधः पात का कारण हुई। अन्त को धर्म संबन्धी इन हलचलों का परिणाम यही हुआ कि भारत वर्ष में आज हर एक मनुष्य को अधिकार है कि वह चाहे जिस धर्म का पालन करे यूरप में भी न जानिये कितनों की जान इस धार्मिक स्वतंत्रता के लिये लेली गई। समाज या व्यवहार में स्वतंत्रता का भी यही हाल है ब्राह्मण लोग सामाजिक स्वतंत्रता को रोक आप सबों के ऊपर हुये। परिणाम में वे खुद गिर गये और उनके पाप से समाज भी गिर गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस लिये कि इस मूर्ख समाज ने ब्राह्मण को ऐसी ज़बरदस्ती करने दिया और अन्त को इस में भी आज़ादगी के लिये हलचल हुआ। गुरू नानिक इस हलचल के मुखिया बने पीछे स्वामी दयानन्द तथा राजा रायमोहन सरीखे दो एक महापुरुषों ने इसे करी डाला। व्यवसाय में भी हलचल होते हैं और उन्हें Strike हरताल कहते हैं। जब कि व्यवसाय के अगुआ ज़ियादह हिस्सा फ़ाइदे का आप हज़म करने लगते हैं और ग़रीब हीन दीन मज़दूरे तथा मेहनत करने वालों की कम अक़ली का फ़ाइदा वे आप उठाते हैं तो निश्चय है कि बिना हड़ताल हुये रहेगा नहीं। परिणाम में कारखाने टूट जाते हैं और कारखाने के मालिकों को बेवाजिब फ़ाइदे से ज़ियादह नुक़सान सहना पड़ता है।

राजनैतिक हलचल भी स्वतंत्रता ही के लिये होते हैं जब एक क़ौम दूसरी क़ौम का स्वाभाविक राजनैतिक हक़्क़ छीन लेती है या देश में एक दल के लोग झूठे अगुआ बन दूसरे दल पर अत्याचार करने लगते हैं तो इस दशा में हलचल आरंभ हो जाता है और स्वतंत्रता के लिये लोग प्राण तक देने को उद्यत हो जाते हैं। इतिहासों के देखने से पता लगता है कि कोई भी शासन कर्ता शासितों का बधकर बिना उस का बध हुये बचा नहीं। सैकड़ों स्वार्थान्ध झूठे अगुआ कतल करडाले गये इस लिये कि उन्हों ने भी प्रजा का खून किया था। जब २ न्याय का उल्लंघन कर ज़ोर के साथ मनुष्यों पर अत्याचार किया जाता है और लोग राजनैतिक हक़्क़ों के लाभ उठाने से रहित किये जाते हैं तब २ हलचल या राज का परिवर्तन होता है। मनुष्यमात्र को प्राकृतिक नियम के जानने और उनके अनुसार चलने की बुद्धि दी गई है। इन हलचलों से लाभ होते हैं। गरीबों पर अत्याचार रोकने को यही एक मात्र उपाय है। सताने वाले के जी में भय पैदा करने का यही यत्न है। इतिहासों में पाया जाता है कि जिस कौम में अधिक हलचल हुआ है वह आजदिन आज़ाद क़ौमों में सब से ऊंची गिनी जाती है। इंगलैंड आदि स्वतंत्र देश इसी के बदौलत आज गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। अत्याचारी क़ौमों को सज़ा देने का यही अच्छा उपाय है। आरंभ इन हलचलों का अवश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयंकर है किन्तु परिणाम इस का अमृत फल के चखने के समान हैं। हमें चाहिये जहां तक हो सके हलचल होने से रोकैं और यह तभी रुक सक्ता है जब सब लोग न्याय के मार्ग पर चलने को उद्यत रहैं। बेकन ने जो अंगरेजों नें एक दार्शनिक हुआ है कहा है कि "यदि रोकना चाहते हो तो इन हलचलों के मूल को काट डालो क्यों कि यदि चिनगारी रहेगी तो आग अवश्य भड़क उठैगी" हम सब लोग उसी को रोका चाहते हैं किन्तु सरकार हम लोगों का चित्त दुखाती हुई उसे उभाड़ती है। सरकार की ओर से इस के दबाने का जो यत्न किया जाता है वह मानो आग में घी छोड़ने के समान होता है। सरकार को उचित है वह अपने पूजनीय दार्शिनिक वेकन के बताये मार्ग पर चले और न्याय के प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करने वाले ऐंग्लो इंडियन पत्रों को रोकै कि वे मनमानी यद्वा तद्वा लिख हम लोगों का जी न दुखाया करें। सच पूछो तो "सेडिशन" राजविद्रोह पायोनियर तथा टाइम्स ऐसे पत्रों में भरा रहता है जिनके लेख के एक २ शब्द में बहुधा ज़हर टपका करता है हम लोग नाहक बदनाम हैं कि नेटिव एडिटर सेडिशन फैलाते हैं। निश्चय मानिये ये प्राकृतिक नियम ऐसे टेढ़े हैं कि वे उनको उपेक्षा और निरादर करने वाले से बिना बदला चुकाये नहीं रहते। हमारे छोटे लाट श्रीमान् हुवेट साहेब की इच्छा कुछ ऐसी ही मालूम होती है कि हम अपना शासन ऐसे क्रम का करें जिसमें उन प्राकृतिक नियमों का पालन हो। यदि हमारा अनुमान ठीक है तो उक्त श्रीमान् को धन्यवाद है। सुनते हैं लाट साहब आइरिश जाति के हैं इसी से उनके शासन में कड़ाई नहीं पाई जाती। अस्तु अन्त में यही कहना पड़ता है कि परिवर्तन ऊपर कहे हुये प्रकृति के नियम पर होते हैं और संसार में न्याय और स्वतंत्रता किस तरह कायम है उसके ये परिवर्तन उदाहरण हैं।

मदन मोहन शुक्ल

## संमिलित कुटुम्ब Joint family ।

यहां लोग कुनबा भर एक साथ रहना बहुत अच्छा समझते हैं इसका कारण यही मन में आता है कि कुनबा भर एक साथ मिलकर रहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से परस्पर की सहानुभूति बनी रहती है । यदि कुनवे का एक मनुष्य परलोक गामी होगया तो उसके लड़कों को परिवार के और लोग अपने निज के लड़कों के समान पालते पोसते हैं तथा उनके पढ़ाने लिखाने का सब खरच अपने ऊपर ओढ़ लेते हैं। जब देश में धन भर पूर रहा दरिद्रता ने अपना पांव नहीं पसारा था, परस्पर की प्रीति और सुख प्यार में कहीं से त्रुटि न थी, न लोग तब इतने सुख के लोलुप थे; परिश्रमी और साहसी होते थे; उस समय संमिलित कुटुम्ब अवश्य-मेव गृहस्थाश्रम की शोभा थी। किन्तु अब सभी बात इसके विपरीत देखी जाती है यहां तक की भाई भाई को नहीं सुहाता जेठानी भावज को नहीं चाहती न भावज जेठानी को, घर के एक२ आदमी रात दिन यही सोचा करते हैं कि कब जुदा हो सुख से रहैं। यदि कहा जाय कि यह अविद्या और मूर्खता के कारण से है सो भी नहीं इस लिये कि अच्छे विद्वानों के यहां भी यही हाल देखा और सुना जाता है। स्त्रियों का मूर्ख रहना भी इसका एक हेतु माना गया है किन्तु विचार कर देखो तो स्त्रियां कितना भी पढ़ी लिखी हों पर जो उनका स्वभाव है वह नहीं बदल सकता। कुनवे में दूसरे को अच्छे गहने या कपड़े पहने देख आप भी वैसाही गहने और कपड़ों के लिए कहैंगी और न मिला तो मन ही मन कुढ़ती रहैंगी और जैसे होगा पति को कुनवेवालों से अलग कर देंगी। पति जो परिश्रमी और पढ़ा लिखा हुआ तो उदर निर्बाह अच्छी तरह कर सकेगा नहीं तो मेहनत मज़दूरी कर दो चार आने पैसे भी सुबह से शाम तक मे लाना कठिन हो जाता है। यदि कहो विलाइत के लोग एक दूसरे से अलग रह कर भी आपस में प्रेम रखते हैं सो इस लिये कि उन लोगों में यह नियम चलपड़ा है कि लड़का कमाने खाने लायक होगया तो अपनी पसन्द से जहां चाहेगा वहां अपना ब्याह करेगा बाप मा को कोई अधिकार नहीं कि दखल दें। न उनमें विवाह इत्यादि संस्कार ऐसे हैं जिन्में कुनबे के सब लोगों के इकट्ठे होने की आवश्यकता है। सिवा इसके वे खुद परिश्रमी होते हैं एक दूसरे की कमाई पर निर्भर नहीं रहते। हम लोगों के सुस्त और अनुद्यमी होने का संमिलित कुटुम्ब भी एक कारण है। यह तभी शोभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देता है जब कुनबे के सब लोग पढ़े लिखे और परिश्रमी हों; एक दूसरे की सहायता करते रहैं; दूसरों की कमाई पर निर्भर न रहैं बरन अपने बाहुबल से इस असार संसार को पार करने का उद्योग करैं; और जो सर्वथा अशक्त और धन हीन हों उनकी सहायता कर उन्हें अपने बराबर का कर दें।

केशवानन्द चौबे—रायपुर—सी० पी०

---

## हम अपने आप अपने पैरों पर कैसे खड़े हों।

सब के पहिले यह सोचना उचित है कि बिना बकबक के और बिना भांत २ का रिज़ोल्यूशन पास किये हम कहां तक और कितना कर सकते हैं। जब हमें उस काम में अपनी शक्ति और अपनी पहुंच का पूरा निश्चय होगया तब तत्काल उस काम को आरंभ कर दें क्योंकि कर्तव्य का निश्चय हो जाने के उपरान्त उस काम में ढिलाई या देर करना व्यर्थ को समय नष्ट करना है। कहा भी है। "क्षिप्रमक्रियमाणस्य कालः पिबति तद्रसम्"। जिससे देश की दुर्गति और दरिद्रता दूर हो उस पर ज़ोर देना हमारा पहिला काम है। Self reliance आत्म-निर्भर देश की खोई हुई कारीगरी तथा व्योपार के पुनरुज्जीवन का बड़ा भारी सहारा है। ऐसा करने वाला केवल एक आदमी समस्त देश भर के लिये उदाहरण बन सकता है। इटली देश में मेज़ीनी और गेरीवाल्डी एकही थे जो इटली भर के लिये देश भक्ति तथा मुल्की जोश पैदा कर देने के नमूने हुये। संसार भरमें उनके नाम प्रातस्मरणीय और पुण्य श्लोक कहे गये हैं। इतिहास पढ़ने वाले तथा जो पत्रों को सदा पढ़ा करते हैं ऐसे कौन होंगे जो इन देश भक्त महापुरुषों का नाम न जानते हों। हमारे यहां लाला लाजपतराय तथा तिलक महोदय और विपिन पाल प्रातः स्मरणीय हैं। आर्कराइट जिन्होंने पहले पहल इंगलैंड में कपड़ा बनने की मिल निकाली तथा जेम्सवाट जिन्होंने भाफ की ताकत ईजाद की एक ही आदमी थे पर तमाम दुनिया को उनके ईजाद से फ़ाइदा पहुंच रहा है। अपने पावों पर खड़े होने का दूसरा उपाय विदेश की बनी चीज़ों को काम में न लाने का प्रण है। देश का देशी इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भांत प्रण कर ले तो देश से दरिद्रता का रङ्ग फीका पड़ जाय और धन यहां का बाहर न जाने से लोग न केवल मालदार हो जायं बल्कि मुल्की जोश की ताकत Political strength उनमें आजाय। भारत के उद्धार का इस समय दोही उपाय है Industry and political strength शिल्प की उन्नति और राजनैतिक पटुता। हमें यह लिखते खेद होता है कि हमारे उन्नतेच्छुक नरम या गरम चाहे जिस दल के हों राजनैतिक पटुता के लिये तन मन से यत्न कर रहे हैं पर शिल्प और वाणिज्य Industry and trade की उन्नति के लिये तनिक ध्यान नहीं देते। देश में शिल्प और वाणिज्य के सुरक्षित रहनेही से हम स्वराज पा सकते हैं। सच पूछो तो भारत का उद्धार मिल के मालिकों की मिल और किसानों के खेत पर जितना निर्भर है उतना लेक्चरारों की लेक्चर हाल तथा सम्पादकों की लेखनी पर नहीं। लेक्चर और लेख Ideal केवल ज़बानी जमा खर्च हैं मिलके मालिक और खेतिहर करके देखा देने वाले हैं। उन्ही की पूरी तरक्की पैरों पर खड़ा होना है।

---

## पतिव्रता का एक दृष्टान्त।

आज मैं एक नई पुस्तक पढ़ रही थी उसमें पतिप्राणा महाराणी कलावती का वृत्तान्त पढ़ मुझे पश्चात्ताप हुआ कि जिस भारत भूमि में ऐसी २ ललना ललाम हो चुकी हैं जिन की कीर्ति आज लौं लोग गाते हैं उसी भूमि में अब ऐसी स्त्रियां हैं कि वे यह समझती ही नहीं कि कीर्ति बढ़ाना किसे कहते हैं। हे भारत वर्षीय भगिनियो! आप लोगों से मेरी यही विनती है कि आप अपना पुराना गौरव प्राप्त करने के लिये सयत्न हों।

कर्णसिंह राजपुताने के किसी प्रान्त के राजा थे कलावती उनकी रानी थी जिस समय अलाउद्दीन लूट मार करता हुआ कर्णसिंह के राज्य की सीमा से निकला तो सब राजपूत इकट्ठे हो कर्णसिंह को अगुआ कर लड़ने को उद्यत हुये—देर तक लड़ाई होती रही दोनों ओर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े २ बीर योधा काम आये राजपूतों की सेना बहुत कम थी तौ भी कर्णसिंह ने वीरता से मुसलमानों के छक्के छुड़ा दिये । ज़हर की बुझाई एक ऐसी तीर कर्णसिंह के लगी कि वह मूर्छित हो घोड़े से नीचे गिर गये । कर्णसिंह को घोड़े पर न देख सेना सब तितिर बितिर हो गई। मुसलमान इस घात में हुये कि जख़मी राजा को किसी तरह पकड़ लावें किन्तु उसकी पतिब्रता रानी कलावती भी कर्णसिंह के साथ रण भूमि में आई थी उसने जल्द अपने पति को डोली में रख-संग्राम में सिपाहियों को युद्ध के लिये उत्साह दिलाते खुद लड़ने लगी । कई मुसलमान डोली की ओर झुके रानी ने तलवार हाथ मे ले सबों को मार गिराया। सांझ तक बराबर ऐसे ही लड़ती रही । सन्ध्या समय जब लड़ाई बन्द हो गई तो अलाउद्दीन की फ़ौज राजपूतों के भय से आगे बढ़ी और राजपूतों ने अपनी राजधानी में आय दम लिया ।

कर्णसिंह के शरीर से तीर निकाला गया और वह बड़े पीड़ित थे। वैद्य जो इलाज के लिये बुलाये गये सबों ने कहा तीर विष से भरा था राजा के बचने की कोई उपाय नहीं हो सक्ती ! हां यदि कोई किसी तरह राजा के विष को चूसले तो यह बच जा सकते हैं किन्तु जो इस विष को चूसेगा वह निश्चय मर जायगा । कर्णसिंह को यह स्वीकार नहीं था कि कोई पुरुष उनके लिये अपने प्राण दे । रात को जब राजा सो रहे थे कलावती ने उनको दवा सुंघाय बेसुध कर दिया और आप उनके घाव का विष चूसने लगी। थोड़े ही देर में सब विष चूस कर फेंक दिया। राजा तो बच गया पर भोर को दो तीन घड़ी दिन चढ़ने के उपरान्त कलावती की दशा बिगड़ने लगी जब देखा कि समय समीप आगया तो बोली मैं आप की दासी और प्रजा हूं मेरे ऐसे सहस्त्रों आप पर निछावर हैं । मुझे यह स्वीकार न था कि मेरे जीते जी मेरे प्राणबल्लभ इस संसार से कूच कर जायं इस लिये मैंने आप के विष को चूस लिया। अब अपना चरण मुझे दीजिये कि मैं आप के चरणों का आश्रय लिये हुये इस असार-संसार से बिदा हूं । पति का चरण अपने मस्तक पर धरे यह पतिव्रता सुरधाम सिधार गई। अब इस समय इस तरह की पतिप्राणा ललनाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अभाव है इसी से भारत इस आरत दशा को पहुंच गया है। बहिनों भारत के उद्धार के अनेक प्रयत्नों में एक यह भी है कि यहां कलावती सरीखी स्त्रियां उपज खड़ी हों जो कलावती ऐसी पतिप्राणा ललनाओं का पूर्ण कला से अनुकरण न कर सकें तो कुछ अंश में तो उनकी समानता अपने में लावें।

एक अबला।

---

## प्राप्त पुस्तक।

### सुधासिन्धु।

यह मासिक पुस्तक वैद्यक शास्त्र सम्बन्धी बातों के लिये बड़ी उपयोगी है। यद्यपि इस तरह की और कई एक मासिक पत्रिकायें निकलती हैं किन्तु यह हमे सब से उत्तम और प्रतिष्ठित जंची। ३ अंक इसके निकल चुके हैं। संपादक वैद्यनाथ शर्मा, प्रयाग। वार्षिक मूल्य २) है।

### वल्लभकुल दंभ दर्पण।

मिस्टर बलाकेट कृत—इसमें वल्लभ कुल के दंभ की अच्छी ज़ीट उड़ाई गई है। जैसा उनके चरित्र का दर्पण इसमें है यदि यह सब सच्च है तो नाम लेते घिन होती है तब उन पर श्रद्धा रखना और उनके सम्प्रदाय के शिष्य होना तो दूर रहा। यह भी समय की महिमा है कि जो रास्ता दिखाने वाले हैं वेही इस लक्षण के हो गये। मूल्य ।=)

---

## नये किस्म का अर्क।

बाद बड़ी जांफ़िशानी तालाश और हज़ारों पित्ते मारी के यह एक वड़ाही अजीबो ग़रीब अर्क तैयार किया गया है। अफलातू अरस्तू सुक़रात सरीखे हकीमों न्यूटन हमिलटन मिल आदि आकिलों के दिमाग में भी न सूझी होगी कहां तक कहें बड़े २ फिलासोफरों की फिलासफी के इत्र का मजमुआ इसमे रखदिया गया है! इस अर्क के तैयार करने मे मैंने तमाम तिब्बका हीर खींच लिया है। इसके पीने से अस्सी बर्ष की बुढ़िया बछुली घुड़िया सी कुलाचें भरने लगती है। साठ वर्ष का बुड्ढा भी सोलह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष का जवान गभरू बन पुराना ऊंट सा बलबलाता फिरता है। कैसाही उदार और सख़ावत का दम भरता हो इसके सेवन से कंजूस मक्खी चूस बन बैठता है। "भरजैहौं तोहि न भजैहौं" महा मंत्रका उपासक बन जाता है। बहुत पढ़ा लिखा हो खानदानी हो किन्तु लोगों में प्रतिष्ठा कम हो इसके लेने से हज़ारों आदमी पैलगी करने लगते हैं। बे रोज़गार बैठाहो नौकरी न लगती हो तमाम सरकारी आफिस और रेलवे के दफतरों तक की खाक़ छान आयाहो इसके पीतेही फौरन डिटेक्टिव पुलिस की जगह मिल सक्ती है। कोई कैसही देश भक्त तमाम देशोन्नति के लिये हफनाता हो बलन्द हौसिले से वन्दे मातरम् चिल्लाता फिरता हो इसका एक डोज़ लेतेही ख़ासा लायल हो जल्द राय बहादुरी के ख़िताब का हक़दार बन जायगा। कितना ही जाहिल जट्ट हो एक हर्फ लिखने का शऊर नहो हम दावेके साथ कह सक्ते हैं इसकी एक शीशी ढाल लेने से औव्वल दरजे का लिक्खाड़ हो जायगा किसी पत्र का संपादक बन जिसपर जो चाहे आंय बांय शांय लिख मारेगा। वाह्मन हो तो इसके प्रताप से फूला फला भैसासा हो अपने लंठ यजमानो में महा पण्डित बन जायगा। व्यासगद्दी पर बैठ फूटी ढोल की सी अवाज़ से सप्त स्वर अलापता हुआ ललना जन बल्लभ बन जायगा। यह कुबेर को धन हीन; ईमान दार को दिवालिया, काले कोइलासे रंग वाले को गौरांग ज़हीन को कुन्द, गोरे कर्मचारियों के पाद दलित को उनका चरण सेवी, अमीर को फ़कीर फकीर को हकीर बना सक्ता है। इसकी अधिक प्रशंसा अपने मुहमियां मिट्ठू होना है। हज़ारों लाखों प्रशंसा पत्र हमारी पगड़ी और अबा के हर कोनों में लटका करते हैं। शीशी अब बहुत थोड़ी रह गई हैं जिसे मंगाना हो दोपैसे का टिकट चिपका फौरन दरख़ास्त भेज दे नही तो पीछे हाथ मल २ पछताना पड़ेगा दाम एक खुराक का दफा १२४ पता नादिहन्द मुफ्त खोरोंका कूचा

ठयाङ्करप्ट स्ट्रीट

L.

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दी प्रदीप

## मासिक पत्र ।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायु सें मणिदीप समथिर नहिंटरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामे जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जिल्द २९ | नवम्बर १९०७ | संख्या ११

## विषय सूची ।


भारत का भावी क्या होगा १
न्याय और शान्ति ... ५
वृद्ध (भारत) और दिवाली ७
कष्ट ... ... ... ... ९
जातीय कर्तव्य और उसके साधन ... ... ११
मित्र का मन्तव्य ... ... १४
नयी सृष्टि ... ... ... १७
आर्यसमाज की भीरुता ,,
एक मित्र की कविता ... १८
गुन आगरी नागरी ... १९
स्पर्द्धा ... ... ... ... २१
प्राप्त ग्रन्थ ... ... ... २४


पण्डित बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक के

आज्ञानुसार पं० शीतलप्रसाद त्रिपाठी ने अभ्युदय प्रेस प्रयाग में छापा

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियें तथा असमर्थो से अग्रिम १॥=)
समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-:॥ श्रीः ॥:-

# हिन्दी प्रदीप

जिल्द २९ सं० ११ | प्रयाग | नवम्बर सन् १९०७ ई०

## भारत का भावी क्या होगा ?

जब मनुष्य के क्षणिक जीवन में एक पल भर की कोई नहीं बता सक्ता कि अभी क्या है क्षण भर के उपरान्त क्या होने वाला है तब इतने दीर्घकाल का जिसमें शताब्दियों का बीत जाना कोई बड़ी बात नही है कौन कह सक्ता है । परन्तु जैसी देश की वर्तमान बुरी दशा है और जैसी दुर्गति यहां के लोग सह रहे हैं उससे अनुमान किया जाता है कि बहुत दिनों तक हमारी यही दुरवस्था न रहेगी । यातो सब भांत हीन दीन हो और भी नीचे गिर हमारी आर्यजाति का मूलोच्छेद हो जायगा या कि, देर आये, दुरुस्त आये वाली कहावत पर येही हिन्दू सर्वमान्य और सर्व श्रेष्ठ हो सभ्यातिसभ्य जाति के अगुआ बन जांयगे । खोये हुये गौरव को पुनः प्राप्तकर अपने नवाभ्युत्थान में परोसी चीन और जापान ऐसे उत्साही और पुरजोश देशों को अपना सहकारी कर लेंगे । उस समय इस गिरे भारत के भाग्य की सीमा न रहेगी । पर इस भविष्य वाणी के पूरा उतरने को कितना कालातिपात होगा सो साधारण मनुष्य की कौन कहे महापुरुष त्रिकालज्ञदर्शी योगी जनों की ध्यानावस्था के भी परे है । प्रजा की उर्वरा मानसी वृत्ति में जैसा इस समय स्वदेशी का बीज बोया गया है जो कुछ २ अंकुरित भी हो चला है और अब बहिष्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वारिद के अमृत जल से ज्यों २ सिंचता जायगा त्यों २ फबकेगा । अनेक मिल और देशी कारखानों की जैसी २ खाद इसमें पड़ती जायगी वैसा २ बढ़ेगा अन्त को यह महावृक्ष इतना बड़ा होगा कि समस्त देश का देश इसकी छांह में विश्राम पावेगा । जो अमृत फल इसमें फलेगा वह आबाल वृद्ध बनिता सबों को जीवन दान के समान होगा । जो लोग इस समय बेरोज़गारी के रोग से रुग्ण और पीड़ित दशा में पड़े आर्तनाद करते हुये चिल्ला रहे हैं वे इस वृक्ष के फलों के रस से आप्यायित चंगे हो उठैंगे और हर्ष निर्भर हो भारत माता की जैजै कार करैंगे । हमारा धन बाहर जाने से बच और सुरक्षित रह देश की धन धान्य संपत्ति को सौगुना कर दिखावेगा । उस समय "धान्यं धनं पशु बहु पुत्रलाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः" यह आशिष प्रार्थना सार्थक और सफल होगी । पर समझे रहो यह सब सहज में न हो जायगा । इसके पूरा करने में अनेक विघ्न आ पड़ेंगे; तुम हर तरह पर हतोत्साह किये जाओगे; बड़ी २ डर दिखाई जायगी, कितने कायर कापुरुष भयभीत हो अगम्य स्थान में जा लुकैंगे । कितने लोग बनावटी राजभक्ति दिखलाते देशोद्धार महापादप के काटने को कुठार बन बैठैंगे । कोई कोना अंतरा न बचैगा जहां स्वजाति और स्वदेश के कोढ़ डिटेकटिब ताक में न रहैंगे । ज़रा भी छिद्र पाय भीतर पैठ हमें सत्यानाश में मिलाने से न चूकैंगे "छिद्रं निरूप्य सहसा प्रविशत्यशंकः" भले कामों में अनेक अड़चन और विघ्न होते ही हैं । "श्रेयांसि बहु विघ्नानि" तो क्या विघ्नों के भय से हमें अपने दृढ़ निश्चय से हट जाना चाहिये ? ऐसा करना तो कायरों का काम है । तुम उन आर्यों के सन्तान हो जो सब क्लेश सह जिस बात के करने को उन्हों ने ठान लिया अथवा जिसके लिये वे दृढ़प्रतिज्ञ या दृढ़निश्चय हो गये उसे करी डाला । हिन्दुस्तान के इतिहास में हम्मीर सरीखे दृढ़ प्रतिज्ञों के अनेक दृष्टान्त पाये जाते हैं ।

आत्मशासन या स्वराज तुम्हारा अन्तिम लक्ष्य है । आत्मनिर्भर अपने पैरों पर खड़े होना इसकी पहली सीढ़ी है । स्वदेशी की उन्नति आत्मनिर्भर से जैसा जल्द हो सक्ती है वैसा दूसरे पर भरोसा रखते से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। तब हम अपने पैरों पर खड़े होने के लिये क्यों कटिबद्ध न हों? तुमको आगे बढ़ने के लिये यही सबसे पहली बात है। अंगरेज़ी राज्य के स्वास्थ्य ने इस गुण को हम से सर्वथा छीन लिया। कोई दूसरी जाति होती तो इस स्वास्थ्य और अमनचैन को अमृत फल मान इसका भर पूर स्वाद चखती पर हम अत्याचारी मुसलमान बादशाहों के अत्याचार से इतना ऊब गये थे कि इस अमनचैन को गनीमत समझ खूब ही टांग पसार सोते रहे। बृटिश शासन के अटल रीति पर यहां सुस्थिर होने का भी तो यही कारण हुआ। यह क्या मालूम था कि अभी का अमनचैन पीछे कुछ और ही गुल खिलावेगा। रोटी दिखाय ढेला फेंकने की भांत अमनचैन में पड़ हम अपनी रोज़ की रोटी भी खो बैठेंगे। अस्तु हमारे सामयिक शासन कर्ता न केवल शासन के काम में कुशल हैं अपिच वणिक् वृत्ति भी अच्छी तरह जानते हैं। उसी वणिक् व्यापार को काम में लाय हमारी इस अटूट नींद का भरपूर फ़ायदा उठाते रहे और तै कर लिया था कि ये काहे को कभी जागेंगे जहां तक बने अपने स्वार्थ साधन से न चूको। जैसा कोई दूध मुहे बालक को फुसलाता है वैसा ही जब ये बहुत रोवैं गावैं तब एक आध टुकड़ा फेंक दिया करो। किन्तु भूल से हो या अपने निज स्वार्थ की दृष्टि से नेत्रांजन की भांति एक बार एक ऐसा सुरमा हमारी आंख में लीप दिया गया था कि उसके असर से धीरे २ हमारी नींद टूटने लगी। सहसा चौंक पड़े आंख खोला तो इस सौ वर्ष में और २ मुल्कों के मुकाबिले हमने अपने मे ज़मीन और आसमान का अन्तर पाया। इस समय भूमण्डल की कोई जाति नहीं हैं जो आगे न बढ़ रही हो। अफरीका तथा अनेक द्वीप द्वीपान्तर की असभ्य से असभ्य जाति भी सभ्यता की दौड़ में सरपट भाग रही हैं और हम लोग गुलामी की जंजीर से जकड़े हुये दीन हीन मन मलीन पस्त हिम्मत ससाने से हो रहे हैं। संसार की जितनी सभ्य जाति सबों के पीछे हैं। चतुर शासकों के भांत भांत के कानून और नये २ रिज़ोल्यूशन के जाल में ऐसे फसे हुये थे कि किसी तरह बाहर निकलने का रास्ता ही नहीं पाते थे। किन्तु धन्यबाद है कर्तुमकर्तुमन्यथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्तुं समर्थ उस बड़े पोलिटिशन की अद्भुत पालिसी को जिसने स्वदेशी और बहिष्कार ऐसा सुझा दिया कि चतुर सयाने भी किंकर्तव्यता मूढ़ हो रहे हैं। सब चतुराई काम में लाते हैं पर जैसा चाहिये वैसा उनकी कोई युक्ति यथोचित कारगर नहीं होती, और एक छोर से दूसरे तक पढ़ अपढ़ सब एक स्वर से इसकी तान अलापते देखाई देते हैं।

अपनी भलाई और अपनी तरक्की कौन न चाहता होगा खास कर ऐसे समय में जब राजा के वर्ग वाले और प्रजाके वर्ग वालों में बराबर का होड़ Competition चल रहा है। राजा के वर्गवाले यही चाहते हैं कि जहां तक हो हम प्रजा का हक्क दबा सुर्ख रुई हासिल करें और शासन के काम में जो मुखिया और प्रधान हैं उनकी दृष्टि में बड़े खैर खाह और कार गुज़ार ठहर जल्द २ तरक्की पाते रहें। तब प्रजा के वर्गवाले यह सोच कि प्रजा का हक्क न जाने पावे हमारे सामने परसी हुई थाली से जो छीना चला ज़ा रहा है बस नहीं चलता कि रोकें और अपना निज का भोजन न लैजाने दें केवल रोते गाते और पछताते हैं। वही "सेडिशन,, राजविद्रोह कहाजाता है। केवल कहाजाता हो सो नहीं वरन दिव्य दृष्टि से देखा जा रहा है कि किस तरह इसे विद्रोह फैलाने का अपराधी कर दें। सच पूछो तो हम किस बूते पर विद्रोह फैलाने का साहस कर सकते हैं जब हमे अपने निज का हक्क पाना दुशवार है। इस कहने की बदौलत हमलोग बड़ी २ दुर्गति सह रहे हैं फिर भी अपनी आदत नहीं छोड़ते सो इस लिये कि कह डालने से व्यथा कुछ घट जाती है। जैसा बरसात में जब तलाव भर गया हो तब एक ओर का बांध तोड़ कुछ जल उसमें का निकाल देनाही उस ताल की रक्षा का उपाय है। "पूरोत्पीडे तड़ागस्य परीवाहः प्रतिक्रिया" इसी को ऐंगलो इण्डियन पत्र कहते हैं "ये नहीं जानते उनके लिये क्या और किसमें भलाई है" तात्पर्य यह कि हम इतने क्षुद्र और कम अक़िल हैं कि केवल अपना ही फ़ायदा सोच रहे हैं गेहूं के साथ बथुआ सीचने वाली पालिसी को सर्वथा नहीं समझते। इसी से हम कहते हैं भारत का भावी क्या होगा।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# न्याय और शान्ति।

न्याय और शान्ति इन दोनों का ऐसा घनिष्ठ संबन्ध है कि शान्ति सदैव न्याय के आधार पर रहती है, अन्याय का लेश भी शान्ति में बड़ी बाधा छोड़ देता है। अशान्ति बहुधा छोटे दरजे के लोग और मध्यम श्रेणी वालों में पहले प्रगट होती है। प्रारंभ ही से उसके मिटाने की जल्द फ़िकिर न की गई तो धीरे २ अशान्ति फैलती हुई संपूर्ण देशभर में छा जाती है। तब इसका निर्मूल करना बहुत कठिन हो जाता है। देश के एक ओर और एक समूह से उसे हटाओ तो दूसरी ओर और दूसरे दल में विस्तार पाती है। हमने ऊपर कहा है कि अशान्ति पहले मध्यम श्रेणी और छोटे लोगों में फैलती है सो इस लिये कि बड़े लोगों में बहुधा अन्याय का असर कम पहुंचता है। दूसरे यह कि जब बड़े लोग स्वयं छोटों के लिये अन्याय का रूप बन रहे हैं तब बहुधा उन्हें इस बात की निर्ख़ ही नहीं रहती कि न्याय या अन्याय क्या है। उनकी समझ में तो जो वे करते हैं सब न्याय और युक्ति युक्त है। उनकी राय में छोटे लोग इसी लिये हुई हैं कि उन पर न्याय अन्याय का कुछ ख्याल न कर निज के सुख और आराम में कसर न रक्खी जाय। हमारे कर्मचारी भी बहुधा इन्हीं बड़े और समृद्धि शालियों का अधिक ध्यान रखते हैं और समझते हैं कि इन बड़ोंही का रुख-देख हम अपना सब प्रबन्ध और मुल्की इन्तिज़ाम करते रहें बस अशान्ति रुकी रहेगी पर यह हमारे कर्म चारियों की भूल है। उन्हें चाहिये कि मध्यम श्रेणी वालों का मन लै इन्तिज़ाम करें। सच तो यह है कि ये बीच के दरजे वाले इन बड़ों से इन दिनों बहुत ही चिढ़े हुये हैं इसी से जहां तहां जब तब देश में अशान्ति फैल जाती है। समृद्धशाली बड़ों की अपेक्षा इन बीच वालों का दल सब ठौर अधिक रहता है। गवर्नमेंट के कर्मचारी यही समझते हैं कि मुल्की इन्तिज़ाम में इन बड़ों की राय "पबलिक ओपीनीयन" सर्वसाधारण का ऐकमत्य है पर वस्तुतः ऐसा नहीं है। बहुधा इन बड़ों की राय से सर्वसाधारण की राय में बड़ा अन्तर रहता है इस लिये कि इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ों का उद्देश्य जितना कर्मचारियों के खुश रखने का रहता है उतना सर्व साधारण के हित का नहीं। जैसा इस समय शासन का चक्र चल रहा है उसके अनुसार जिसमें राजकर्मचारी का हित है उसमें राजा का नहीं है। जैसा कहा है "नरपति हित कर्ता द्वेष्यतां याति लोके जनपद हितकारी त्यज्यते पार्थिवेन्द्रैः" तब शान्ति फैलने की सुगम उपाय मध्यम श्रेणी वालों को प्रसन्न रखना है। जब तक उनके साथ न्याय का वर्ताव न होगा तब तक अशान्ति भी नहीं मिट सकती। बंगाल आदि कई प्रान्तों में जो इस समय अशान्ति फैल रही है और प्रजा वर्ग प्रसन्न नहीं है सो इसी से कि मध्यम श्रेणी वालों का वहां बड़ा तिरस्कार होता है। हम प्रत्येक प्रान्तीय गवर्नमेंट से प्रार्थना करते हैं विशेष कर अपने लाट श्रीमान् हुयेट साहब से कि वे अपने २ अधिकृत प्रान्तों में यदि पूरी तरह शान्ति रखना चाहें तो इन बीच के दरजे वालों की भी सलाह मुल्की इन्तिजामों में लिया करें। मसल है "न सांप मरा न लाठी टूटी" बहुधा अशान्ति पैदा करने वाले यही लोग होते हैं इस लिये कि सर्वथा हानि उन्हीं की इन प्रचलित प्रबन्धों में देखी जाती है। तब जो इन के अगुआ भी प्रबन्ध कारिणी कमेटियों में शरीक़ कर लिये जांय तो आशा है अशान्ति पैदा करने वाली बातों का अंकुर ही न जमे और न्याय भी भरपूर हो। अनेक तरह के अत्याचारों के होते भी हम मुसलमान शासन कर्ताओं से क्यों सन्तुष्ट रहे? इसी लिये कि अब के समान मुल्की इन्तिज़ाम के प्रबन्ध कर्त्ता हाकिमों को निरी हुकूमत की बू नहीं समाई थी। एक मज़हब को छोड़ और सब मे वे हमें अपने बराबर का समझते थे इसी से कभी कभी को उनका अन्याय भी हमें गवारा था और सब सहलेते थे। अब तो हां हुज़ूर वाला न्याय चाहो वास्तव में न्याय संगत हो पर सन्तोष न दे अशान्ति का हेतु होता है। हां हुज़ूर वालों का ऐसा करना भी उचित मालूम होता है। इस लिये कि उनका कर्मचारियों का किसी न किसी बात से इतना घनिष्ट संपर्क है कि गवर्नमेंट की निगाह में इन कर्मचारियों की सुर्ख़ रूई के लिये हमारे रईसों को उनके मन की करना ही पड़ता है। मध्यम श्रेणीवालों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गवर्नमेंट तथा कर्मचारियों से कोई लगाव नहीं रहता तब वे खुशामद क्यों करने लगे वरन जो शुद्ध न्याय और प्रजा के हित की बात है वही वे चाहेंगे और हो जाने से सब लोग सन्तुष्ट रह देश में शान्ति को स्थान देंगे।

गवर्नमेंट से सविनय प्रार्थना की एक दूसरी बात और भी है कि पायोनियर सरीखे ऐंगलो इण्डियन पत्रों का तदारुक किया जाय क्यों कि इन पत्रों के कडुये लेख अशान्ति को और अधिक फैलाते हैं। न इन के लेख में न्याय को अवकाश दिया जाता है। जो कुछ हमारी बुराई है उसे ये सदा ढूंढ़ा करते हैं जिसमें सर्कार हमारी कुछ भलाई किया चाहता है उसकी शुरू ही से जड़ काटते हैं और हमारे लिये बिष उगलने से नहीं रुकते। हम लोग जो लिखते हैं सो इस इच्छा से कि जहां पर अन्याय है और सर्कार का ध्यान उस ओर नहीं है उस ओर ध्यान दे उसे मिटाने का यत्न किया जाय। पर उसका मिटाना या संशोधन दूर रहा यह अलबत्ता देखा जाता है कि यह बड़ा साहसी है इसको रोको, कि ऐसा न लिखा करे। ऐंगलो इण्डियन पत्र हम लोगों को चाहे जैसी कड़ी से कड़ी बात लिख डालें जिससे हम लोगों में अशान्ति फैलने का डर है उसकी सर्वथा उपेक्षा करदी जाती है। हम लोग देशी पत्रों पर अलबत्ता विशेष कड़ाई रहती है इसी से हमारी प्रार्थना है कि सर्कार जैसा हमारी ख़बर लिया करती है वैसा ही इन की ख़बर भी लीजाय ऐसा होने से अशान्ति की जड़ कटी रहैगी।

---

## वृद्ध ( भारत ) और दिवाली।

एक वृद्ध जंगल में रह कर अपना समय बिताता था।
सूरत से वह महा दुखी औ उदासीन दिखलाता था॥
निर्बल कृशित भूख से व्याकुल इस प्रकार था उसका तन।
पागल सा प्रतीत होता था निर्धन होने के कारन॥
कुछ संकेत अंगुलियों से वह पड़ा भूमि पर करता था।
कभी कभी कुछ बातें कह कर दुख से आहें भरता था॥
उसकी दशा देख कर चुपके एक वृक्ष के नीचे जा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान लगा कर मैं उसकी दुख भरी बात को सुनता था ॥
कहीं रोशनी ज्वलित अग्नि की चहुं दिस जंगल में छाई ।
जिसको देख वृद्ध के मन में याद दिवाली की आई ॥
यद्यपि विकल रूप था उसका पर वह देख हुआ कुछ शान्त ।
कहने लगा सोच कर फिर वो कुछ अपना पिछला वृतान्त ॥
अहा! दिवाली जब आती थी जग जगमग हो जाता था ।
रंग रंगीले बूटों से घर सज्जित स्वच्छ दिखता था ॥
ऊंचे नीचे घर महलों पर जहं दीपक लहराते थे ।
मानो देवगणों को आने का मारग बतलाते थे ॥
सब जन मिल कर अति उछाह से लक्ष्मी पूजन करते थे ॥
उस कौतुक को देख हमारे जनित कष्ट सब हरते थे ॥
करते बंद व्यापारी लेखा करके विगत वर्ष का कार ।
होता था प्रारंभ नया फिर इस दिन से उनका व्यापार ॥
बालक युवा वृद्ध सबही का मुख प्रफुल्ल दिखलाता था ।
महा तुच्छ से तुच्छ जीव सुख से व्यवहार बिताता था ॥
दुनिया की समस्त सम्पति से भरा पुरा था मेरा घर ।
ऐसा नहीं किसी का भी था इस धरती तल के ऊपर ॥
कुछ दिन से क्या जानैं किस ने ऐसा टोना डाला है ।
जिसने धीरे धीरे मेरा तो सर्व नाश कर डाला है ॥
बुधि मेरे सन्तानों की जो तब से पलटा खाई है ।
तजि व्यवसाय दासता करना दिल में यही समाई है ॥
परदेशिन संग खेल जुआ अपनी सब सम्पति खो बैठे ।
मेरी बची बचाई को भी दे उनको कर धो बैठे ॥
ढो कर वे ले गये देश निज ये बैठे पछताते हैं ।
बने आलसी मूर्ख अपौरुष अपना समय गवांते हैं ॥
नित नित पड़त अकाल देश में कितने जन मर जाते हैं ।
कितने ग्रसित प्लेग से हो कर फिर उठने नहिं पाते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सब दशा देख कर उनकी महादुखी मैं होता हूं।
इसी शोक में विह्वल रहता रात दिवस नहिं सोता हूं॥
गिरी दशा का चित्र हमारी कोई खींच कर दिखलावे।
मेरी ओर से हित की बातें स्वच्छ हृदय से समझावे॥
प्यारे पुत्र! देख कर मेरी ओर मूर्खता त्याग करो।
जुवा खेलना द्वेष ईर्षा छोड़ बन्धु अनुराग करो॥
विद्या पढ़ो पढ़ाओ सीखो सब मिल उद्यम करो व्यपार।
अपना धन मत दो विदेश को करो "स्वदेशी" वस्तु प्रचार॥

माधव शुक्ल—प्रयाग

## ( कष्ट )

रे! कष्ट तोहि नहि और ठौर,
भारत गर लागत दौर दौर।
यह भूमि भई तोहिं अस पियारि,
रस रह्यो सकल सुध बुध बिसारि॥१॥
पहले छलयुत दृढ़ प्रीत कीन्ह,
पुनि धीरे धीरे स्ववश कीन्ह।
अब घर घर डारिन पात पात,
तजि,अंत समय तोहि नहिं सोहात॥२॥
बानर जिमि गहि शावक बिलारि,
अति प्रेम करत निज हिय बिचारि।
नहि छाड़त जबलौ मर न जात,
सोई लच्छन तुमरो दिखात ॥३॥
जबसे निज दल युत बसे आय,
श्री नष्ट भई अति बढ्यो ताप।
जन प्रेम एकता गई दूर,
निसदिन रोवत यह हिय बिसूर॥४॥
परतहिं तुम्हरो पग देस हाय,
बनबैठो भारत शुष्क काय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन, अन्न, पुरुष, विद्या, बिहीन,
　　ह्वै गयो दीन अरु पराधीन ॥ ५ ॥
कहुं प्लेगरूप कहुं गरु अकाल,
　　कहुं राजनीति में पांव डाल।
यह बिधि कलपावत आर्य बंश,
　　रे निठुर! तोहि नहि दया अंश ॥ ६ ॥
हम बिनवत तोहिसन बारबार,
　　जिन कर दुखियन ऊपर प्रहार।
ह्वै रहे बिपति फंसि जे अधीर,
　　का लाभ तिनहिं पुनि दिये पीर॥ ७ ॥
मम भारत को सीधो सुभाव,
　　अब याको तजि कहुं अंत जाव।
यह प्रीति न तुव संग करन जोग,
　　तासे चाहत अब तव बियोग ॥ ८ ॥
इङ्गलैंड जर्मनी आदि देश,
　　तिनमे न करत कस तुम प्रवेश।
याही के हित का जनम तोर,
　　ह्वै गयो कुटिल कुत्सित कठोर ॥ ९ ॥
बहु बिनती कर कर गए हार,
　　तजि भारत गवनहु सिन्धु पार।
यहि में भल तुमरो अरु हमार,
　　नतु अवस बढ़ैगो हिय बिकार ॥ १० ॥
बस, अंत कहव हम एक बात,
　　तुमरो करतव नहि सह्यो जात।
अबहूं अपने जिय समुझ लेहु
　　कहुं, जाहु; आपनी राह लेहु ॥ ११ ॥

माधव शुक्ल—प्रयाग

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जातीय कर्तव्य और उसके साधन।

इस नये जोश पर जितना ही ध्यान दो उतना ही इसकी उत्पत्ति; बढ़ता हुआ इस का प्रचार और अन्तिम परिणाम इसका क्या होगा; इस सब के बारे में नये २ ख्यालात मन में उठते हैं। प्रकृति के नियमानुसार समस्त जन समूह कई एक कौम में बांट दिये गये हैं। जन समूह की उन्नति और सभ्यता का इतिहास पढ़ मालूम होता है कि हर एक कौम इस नये जोश की उन्नति और सभ्यता के प्रचार में सहायक है। इतना ही नहीं बल्कि हर एक कौम का यह फ़र्ज़ है कि आम लोगों को आगे बढ़ाने में जहां तक अक़िल चले मदद दे। यह मदद चाहे जिस बात की हो; धर्म सम्बन्ध में हो, व्यवसाय या रोज़गार में हो, राजनीति या मुल्की मामिलों में हो, अथवा जन समूह की सभ्यता बढ़ाने के लिये हो, सब में एक सी सहायता देनी चाहिये। जो कौम अपने इस कर्तव्य पालन से हटती है वह दुनिया की और कौमों से नीची समझी जाती है। हर एक कौमों के इतिहास की ओर ध्यान दिया जाय तो जो कौम गिर गई है उसके गिरने का कारण यही मालूम देता है कि जब वह अपने जातीय कर्तव्य पालन कर चुकती है फिर उसमें बल पौरुष नहीं रहता कि मनुष्य जाति की सभ्यता और उन्नति में हिस्सा ले सके तब वह गिर जाती है। पुरानी कौमों में रोम और ग्रीस आदि इसी कर्तव्य पालन न करने के कारण गिर गईं यहां तक कि अब उनका नाम तक सब लोग नहीं जानते। जो कौम गिर गई वह तभी उठ सक्ती है जब वह फिर मनुष्य जाति की सभ्यता के बढ़ाने की (Strugle) लड़ाई में हिस्सा लेने की कोशिस करे। यदि वह इस लड़ाई में शरीक नहीं है तो उसको संसार में कायम रहने का कोई हक़ नहीं है बरन धीरे २ समस्त जाति की जाति निर्मूल हो जाती है। अमेरिका के (Red Indians) आदि पुरानी जाति इसके उदाहरण हैं। हिन्दुस्तान में आर्य भी एक पुरानी गिरी कौमों में से हैं प्राचीन समय से जन समूह की सभ्यता बढ़ाने में यह आर्य्य जाति बड़ी सहायक हुई है जिस ने अपना कर्तव्य बहुत प्रशंसा पूर्वक किया है। संसार में कोई ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म नहीं है जिस में हिन्दू जाति के सिद्धान्त न पाये जांय। रोम और ग्रीस देश की प्राचीन जातियों की भांति यदि आर्य जाति भी मिट गई होती तो मानो कर्तव्य परायण मनुष्य की मृत्यु के भांत इसकी दशा होती। किन्तु ऐसा न हुआ इस से बोध होता है कि यह पुरुष के पौरुषेय गुण (Humanity) के बढ़ाने में भाग ले। क्योंकि यदि यह उस में भाग न लेगी तो धीरे २ यह जाति निर्मूल हो जायगी पर इसका निर्मूल होना असंभव है। देखा जाता है कि आज इस गिरी दशा में भी इस में दिमागी ताकत मौजूद है जिस से यह संसार की सभ्य से सभ्य जाति का भी मुक़ाबिला कर सक्ती है। आज तक ऐसा नहीं देखा गया कि आर्य सन्तान प्रतिद्वन्द्वता में किसी से हेठे निकले हों। इस समय देश में नये जोश की यही पुकार है कि संसार की सभ्यता बढ़ाने में हमें भी भाग मिले। हम को अपने कौमी फ़र्ज़ (Duty) अदा करने दो। इसको यह मालूम हो गया है कि मैं अपना फ़र्ज़ न अदा करूंगा तो संसार की समस्त जाति के सामने नीचा देखना पड़ेगा ईश्वर के आगे कृतघ्नी होना होगा और अन्त को धीरे २ हमारी संपूर्ण जाति अस्त हो जायगी।

इस जोश का पूरा रूप यही है। इसको केवल राजनैतिक जोश कहना इसके पूरे स्वरूप को न पहिचानना है वरन नया राजनैतिक जोश इस का एक अंग है। यह अलबत्ता कह सक्ते हैं कि यही इसका मुख्य अंग है। संसार में उन्नति का मुख्य कारण अवकाश या मौक़ा है जिस जाति के एक २ व्यक्ति को पूरा अवसर अपनी प्रतिभा (Geneus) को पूरी तरह पर प्रगट (Develope) होने को नहीं मिलता वह जाति कभी उन्नति नहीं कर सक्ती। इस समय हमारा राजनैतिक शासन इस प्रकार हो रहा है कि हमारी संपूर्ण मानसिक और शारीरिक शक्तियां गिरती जाती हैं। इसी से यह नया जोश पहले राजनैतिक शासन को ठीक करने की ओर बहुत प्रबलता के साथ झुक रहा है। जगन्नियन्ता ईश्वर भी इसे न चाहता होगा कि एक जाति या कौम दूसरी कौम को अपना जातीय कर्तव्य पूरा करने से रोके। ऐसी कौम ईश्वर और संसार के आगे पाप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागी होती है और परिणाम में बहुत बड़ी हानि सहती है ।

इस जन समूह की बुनियाद या मूलभित्ति National duty कौमीफ़र्ज़ है इसी बुनियाद पर यह नया जोश चलाया जाता है। पुराने जोश की लड़ाई National right कौमी हक्क पाने के लिए थी किन्तु वह "नेशनल राइट" की पुकार हमारी जाति को आगे न बढ़ा सकी इस लिये कि पहली सीढ़ी अपना फ़र्ज़ अदा करना है तब दूसरी सीढ़ी हक्क के दावा करने की है। नये जोश के अगुआ आज अपने देशवासियों को पुकार २ कह रहे है कि अपने जातीय कर्तव्य का पालन करो उसके लिए अवकाश पाने की फिकिर करो नहीं तो नष्ट हो जाओगे। तिलक महोदय जो इस नई जाग्रति के प्रधान हैं अपने गणेश उत्सव में कहा है "इस बुरी दशा से तो नष्ट हो जाना ही उत्तम है" जान पड़ता है उक्त महोदय ने इसी जातीय कर्तव्यता के खयाल से ही ऐसा कहा है। भारत का उद्धार इस जातीय कर्तव्यता ही पर निर्भर है। जिन अगुआओं Leaders के चित्त में इसकी चोट लग गई है वे इस जातीय कर्तव्य को खूब फैला रहे हैं। किन्तु जब तक देश के सब लोग इस चोट को न मालूम करेंगे तब तक कार्य सिद्धि में विलम्ब है। इस नये जोश की उन्नति के तीन मार्ग हैं। सब के पहले अपने कर्तव्य पालन में जागृति है फिर अपने देशी भाइयों को समझाना कि यदि अपने कौमी फ़र्ज़ से चूकोगे तो तुम्हारी दशा कदापि ठीक नहीं होगी बरन तुम को नष्ट हो जाना होगा। देखा जाता है जहां तहां लोग इस पुकार पर ध्यान दे रहे हैं देश के जिस हिस्से में इसकी पुकार की गई वहां लोगों ने धोखा नहीं दिया। खेद है हमारे शासक इस पुकार के दवाने का यत्न कर रहे हैं। यह बात भी सिद्ध और निश्चित है कि कर्तव्य परायणता की पुकार को कोई रोक नहीं सकता किन्तु जो लोग इसे फैला रहे हों उन्हें अपने सिद्धान्त में दृढ़ होना अति आवश्यक है। उनको यह विश्वास रखना उचित है कि जिन में ठीक २ कार्य परायणता है उनकी सदैव विजय होती है। यह भी उन्हें निश्चय रखना चाहिये कि बिना जागृति पैदा किये कोई जाति आगे को कदम नहीं बढ़ा सकती उनकी दृढ़ता उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठिनाइयों से अधिक रहना चाहिये जिन कठिनाइयों को उन्हें पार करना है। इसी दृढ़ता के रहने से हमारे बहुतेरे भाई जागृति से डर रहे हैं और खुल के नहीं काम किया चाहते। वे इस कर्तव्य पालन की लड़ाई छोड़ अपना हक्क पाने वाली सहज लड़ाई में शामिल हैं। इस जागृति का दूसरा नाम नया जोश है हमको अपने काम में सफलता प्राप्त करने का यही उत्तम मार्ग है। दूसरा रास्ता सफलता का अपने ख़यालों को काम में लाने का है। ख़याल को कार्य में परिणत करने वाली अवस्था को Arising उत्थान कहते हैं। परन्तु इस अवस्था में भी एक बात की आवश्यकता है वह Self s crifice आत्मत्याग है क्योंकि बिना आत्मत्याग के जो कठिनाइयां हमारे मार्ग में आपड़ेंगी वह दूर न होंगी। देश हितैषियों के अग्रणी इटली देश के मेज़नी का वाक्य है। विघ्न या बुराइयों का मुक़ाबिला ही करने से सफलता होती है न कि जान बचा कर छिप रहने से" हम लोगों को इस के लिए धन और जीवन दोनों को विसर्जन करना पड़ेगा। जिन्होंने इन दोनों के त्याग का दृढ़ संकल्प कर लिया है वे ही Martyre देश हित की लड़ाई में शहीद गिने जाते हैं। जब संपूर्ण जाति की जाति इस तरह का शहीद होने को कमर कस ले तब उद्धार हो सकता है और इस भांत दृढ़ संकल्प वाली क़ौम को ऊपरा उठनेसे कोई रोक भी नहीं सकता। जातीय कर्तव्य में विश्वास Faith काम Action और आत्मत्याग Sacrifice इन्हीं तीनों की आवश्यकता है। नया जोश इन्हीं तीनों के बल से सफलता पाने का यत्न कर रहा है यही भाव Awake arise and stop not till the goal is reached "जागो उठो और जब तक कृत कार्य न हो यत्न करते रहो" में भरा है।

मदन मोहन शुक्ल।

---

## मित्र का मन्तव्य।

प्रिय महाशय!

अब इस बात की पुष्टि में कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रह गई है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि "हिन्दी भाषा और देव नागरी अक्षर" को हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा और राजलिपि बनाना चाहिए। यह बात अब प्रायः सर्वमान्य हो ई है। तभी तो "देव नागर" जैसे पत्रों का शुभ जन्म हुआ और खूब वार हो रहा है। हिन्दी भाषा के अच्छे मासिक पत्रों का अभाव अब हुत अनुभव होने लगा है।

इस बात को भी अब प्रायः सब कोई मानने लगे हैं कि अंगरेज़ी ा अन्य भाषा मात्र का बोध होना ही विद्वत्ता की निशानी है। ज्ञान विज्ञान और पदार्थ वेत्ता होना ही चाहे किसी भाषा के द्वारा क्यों हो विद्वानता है। तब यदि एम० ए० आदि के बराबर की तालीम मै हिन्दी भाषा में मिल सके और हमारी हिन्दी भाषा इतनी संपन्न ना ली जावे कि उन सब ज्ञान, विज्ञान आदि की बातों को अपने ब्दों में अच्छी तरह हमको समझा सके तो बिना अंगरेज़ी आदि विदेशी भाषामें माथा पच्ची कियेही हम "मास्टर अफ अर्टस और ायंस वेत्ता युवक की लियाकत को क्या न प्राप्त कर सकें ?

इस के वास्ते हम अंगरेज़ी अदि विदेशी भाषाओं के बिद्वानों से ाथ जोड़ बिनती करते हैं कि हम मूक प्रायः लोगों पर दया करके पनी पढ़ी पढ़ाई पुस्तकों के अनुबाद हमें हिन्दी में कर देवें। किसी कवि ने कहा है। दानोपभोग हीनेन धनेन धनिनो यदि । इत्यादि ान और उपभोग से रहित यदि आप धनी हैं तो हम निर्धन ोग भी आप से कुछ कम नहीं हैं क्योंकि न आप ही धन का दान ौर भोग कर सकते हैं और न हमारे ही लिलार में वह बदा है! आप पनी उपार्जित विद्या का यदि दान न करें तो वह निःसंदेह निरर्थक है क्योंकि यही एक बात आप के हाथ में है उपभोग तो उसका आप के माथे में बिधिनाने हिन्दुस्तान में जन्म देने के कारण लिखा ही नहीं विद्वत्ता जन्य सभी सुख भोग के द्वार आप के लिये बिल-कुल बन्द हैं।

तब यदि आप विद्वान् हो कर अपनी उपार्जित विद्या का दान भी हम लोगों के लिये हमारी बोली में लिख कर न करें तो हम क्या कहें ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप यदि अंगरेज़ी भाषा में अच्छे २ मेगज़ीन और देश विदेशों की चर्चायें सभ्यता, जातीयता, विज्ञान, नीति आदि की चर्चायें और प्रबन्ध नित नवीन पढ़ते रहते हैं और हम हिन्दी बोलने समझने वाले अपने छोटे मोटे भाई बंधुओं को उस से वंचित किये हैं तो आप एक प्रकार भगवान की व्यवस्था में हमारे लोगों के ऋणी रहते हैं। आप इस बात को मानते भी हैं तभी तो हम देखते हैं कि आप के मध्य में हिन्दी भाषा को उन्नत करने की आजकल अधिक रुचि प्रवृत्त हुई है। हिन्दी भाषा में अच्छे मेगज़ीन की सचमुच बड़ी भारी जरूरत है। वैसे मासिक मेगज़ीनों की जैसे कि आज कल माडर्न रिव्यू, हिन्दुस्थान रिव्यू, इन्डियन रिव्यू आदि निकलते हैं। हम बड़े बिनीति भाव से अपने पूज्य पंडितवर बालकृष्ण भट्ट जी से निवेदन करते हैं कि यदि वे कृपा कर अपने 'हिन्दी प्रदीप' पत्र को इन्हीं रिव्यूज़ की भांति का एक सम्पन्न पत्र बनाने की चेष्टा करैं तो यह अभाव बहुत कुछ दूर हो सकता है। हमे यह भी आशा है कि हमारे अंगरेज़ी के विद्वान् महाशय गण कम से कम इन रिव्यूज़ में से अनुवाद देने की कृपा तो अवश्य में वही कर सकेंगे और इसी प्रकार के इसी लाइन पर किये हुए हिन्दी लेखों में अपनी निज ओरिजिनालिटी भी ऐसी मनोहर हो सकेगी कि जो हिन्दी भाषा को वास्तविक अलंकृत करने में बड़ा भारी भाग लेगी।

हिन्दी प्रदीप यदि कम से कम अपने आकार में दूना अर्थात् पचास पृष्ठों का हो जावे और लेख आदि प्रबंध रिव्यूज़ केसे कर दिये जावें तो हमारा अभाव बहुत कुछ मिट सकता है।

क्या हमारे सांप्रतिक सम्पादक महाशय गण इस विषय पर कुछ सम्मति प्रदान करेंगे ? और श्रीमान् भट्ट जी भी कृपया पहिले अपनी अनुमति प्रकाशित करके हमको वाधित करेंगे ॥ ?

निवेदक—गदाधर सिंह,

प्रयाग।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नयी सृष्टि।

## । नयादेह ।

आशाएं सब नाश हुईं और नूतन भय में भरमाया।
अन्तकाल पाया आयुष का मृत्यु रुप सन्मुख आया॥
गत अरु वर्तमान देख कर आंखें भर भर आती हैं।
अन्त–यातना कौतुक करतीं, और शरीर कँपाती हैं॥
"अनुतापित तनु शुद्ध हुआ और हुए बिलीन पाप सब सारे।
"परिचित हुआ ईश का तू अब डरता है क्यों भय–मारे।
"मन तेरा अब शुद्धरूप है मर्त्यजनों को मत देरे।
"अर्पण कर उसके चरणों में वही तुझे तारेगा रे।"
हँसा गुप्तध्वनि यह सुनकर मैं, हँसकर रोया फेर हँसा।
नया देह पाकर मैं फिर भी नयी सृष्टि में आन धँसा॥

लक्ष्मीधर वाजपेयी।

---

## आर्यसमाज की भीरुता।

सद्धर्म प्रचारक में यह पढ़ हमें खेद हुआ कि लाला लाजपतराय को राय दी गई है कि तुम जो वैदिकधर्म में आया चाहो तो राजनैतिक आन्दोलन (Political agitation) की निस्सरता में न पड़ो। हा धिक् हम जो आर्यसमाज पर श्रद्धा रखते थे सो इसी लिये कि इसकी बुनियाद राजनैतिक है। इसके प्रवर्तक ने सर्वथा राजनैतिक बुनियाद पर इसे स्थापित किया था नहीं तो यह हिन्दू धर्म को जड़ पेड़ से उखाड़ रही है किस प्रयोजन की है। इतना ही इसमें भलाई है कि इसके मेम्बरों को धर्म के साथ राजनैतिक जोश भी पैदा होता है। जब इसके मुखिया लोग राजकीय विषयों में हस्तक्षेप से इतना डरते हैं तब हिन्दू धर्म के और २ संप्रदाय प्रवर्तकों से इसमें क्या अन्तर रहा? हानि अलबत्ता है कि जो लोग धर्म की एक बंधी हुई शृंखला पर चल रहे हैं उनके मन में कुतर्क पैदा हो जाता है। वैदिक धर्म सार्वभौमिक भी तभी होगा जब इसमें पालिटिक्स का संपर्क रहेगा नहीं तो आर्यसमाज का किया कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न होगा। हमको तो तभी से अश्रद्धा और क्रोध है जब से आर्यसमाज उक्त लाला जी की गिरफ़ारी के समय दुम दबाय अलग हो गई। हमें विश्वास नहीं है कि लाला जी समाज की इस सलाह को स्वीकार करलेंगे यदि मंजूर कर किया तो वे भी लोगों की नज़र से गिर जांयगे। किन्तु पंजाब ऐसे प्रान्त में जाकर लाला जी की बुद्धि जो कर्तव्य परायणता पर अटल रही तो उनको बहुत ही बहुत धन्यबाद है।

## एक मित्र की कविता।

आज है सुदिन सुमंगल को घरघर,
सुनत आनन्द धुन बजत बधाई है।
एकसनएकमिल होत हैं प्रसन्न मन,
अरिहू ने मिलन को भुजा बढ़ाई है॥
आजकी घड़ी बड़ी है सुमंगल मूल,
मानो दिवाली दस दिनमें लौट आई है।
एहोमित्र! चित्तसे ईश्वर को धन्यकहो,
भारत की लाजपत खोई फेरि आई है॥ १॥
कृपण ज्यों राखत हैं प्राण से पियारो धन,
पतिब्रता नारी ज्यों सेवत निजपति को।
अहि जिमि प्राण जाय तौहूं नहीं त्यागे मणि,
रातको बटोही नहीं छाड़त सुपथ को॥
कामी जिमि नारिन की चिन्ता में मगन रहत,
ज्ञानी ज्यों लगाएरहत ज्ञान मे सुमत को।
मित्र 'कृष्ण' ताही भांति सुहृदय से जबलौं जियो,
प्रानहूते प्यारे कर राखो लाजपत को॥ २॥
एरीमात आजघर भोर ही से होत कहा,
काहे को चौक पूर वेदी खंचाई है।
काहे की पूजा और कौनसो तेवहार आज,
काहे की खुशी चित तेरे मे छाई है॥
कौन घर आवेगो किनकी तू जोवे बाट,
काके हित द्वारन पै बाजत बधाई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एहो तात! आज भारत के जागे भाग,
लाजपत गई फेरि "भारत" की आई है ॥ ३ ॥
आज अजीत फिरे निज देस,
दिनेस की भांति भई उंजियारी।
बंचक जोति मलीन हुई,
खद्योत गृहान की राह संभारी ॥
नाम अजीत लियो जग जीत,
सुभारत की पत फेरि उबारी।
भारत से बिछुरे न कभू,
जबलौं चिर भारत गंग में वारी ॥ ४ ॥

---

## गुन आगरी नागरी।

गुण की पूंजी ऐसी प्रबल होती है कि मनो राख के नीचे आग की चिनगारी सी छिपाये नहीं छिपती। उर्दू भूतिन ने नागरी की मिठास और लालित्य आदि सोहावने मनभावने गुनो के दबाने को कितना ही सिर धुनां और उर्दू के भक्तों ने भी इसे सब ओर से निर्मूल करदेने में किसी ओर से कोर कसर न छोड़ रक्खा; नागरी को राजद्वार में न पैठने दिया; घरेलू लिखा पढ़ी बोलचाल खत किताबत में इसे न ठहरने दिया; मित्रगोष्ठी और सभ्य समाज में तो यह सदा निकासी ही रही; बरन ऐसा निरादर इसका किया गया कि केवल ग्रामीण और देहातियों में ठहरने का अवसर इसे मिला। पर लुभाने वाले लोकोत्तर गुणों ने इसका पीछा न छोड़ा। सूर तुलसी बिहारी भूखन गिरधर आदि कवियों की मुहर छाप ऐसी भारी थी कि इसका गौरव बढ़ता ही गया।

ज़ौक ज़फर सौदा आतश नासिख आदि शायर हांथ मल मल पछताते रहे माधुर्यलालित्यादि इसके उत्तम गुण उर्दू में न आये और उर्दू ललचाती ही रहगई कि मैं बड़े २ नौवाबों के घर में पली उनके महलों की नाज़नीन पर इस गवारिन के मुक़ाबिले हीनही रही और इसके समान चित्तको खींचने वाली क्यों न हुई। अस्तु नाम के हिन्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर काम में आये मुसलमान न जानिये कितने कुल कलंकों ने इसे सर्वथा अपने बीचसे निकाल उर्दू भूतिन को पट्टरानी कर बैठे और इस गुन आगरी के गुनो को बिल्कुल भुला दिया । ऐसे समय काशी के बहु मूल्य रत्नस्वरूप सुगृहीत नामधेय बाबू हरिश्चन्द्र इसके गुणों की ओर तन मन धन से इसके प्रचार में प्रवृत्त हुये । अस्तु फिर भी कोई ऐसा माई का लाल न निकला जो राजद्वार में इसका प्रवेश कराता । धन्यवाद उस सपूत मालवीय कुल भूषण मदन मोहन को जिन्हों ने अपने नामको सार्थक कर राजद्वार में इसका प्रवेश करा दिया । पर यह प्रवेश केवल नाममात्र को रहा इसकी बुराई चाहने वाले इसे आगे बढ़ाने में हर तरह की अड़चन छोड़ रहे हैं । मुसल्मानो का अड़चन डालना इतना बुरा नहीं लगता जितना उन अर्द्ध यवनों का जो अपने थोड़े से लाभ के लिये इसके प्रचार मे बाधक हैं । जान पड़ता है कोई दिन आवेगा कि यह सब गुन आगरी उन अड़चनों के रहते भी अपने बहुत अच्छे २ गुणों से राजद्वार में भरपूर पांव पसार लेगी । जो बाधक हैं उन्हीं के सन्तान इसका सन्मान करते हुये इसे जीवन दान के समान होंगे । हम ऊपर कह आये हैं गुन छिपाये नहीं छिपता अपने गुनों से यह दिन दिन विस्तार पा रही है । प्रति वर्ष इसमें नये २ मासिक और साप्ताहिक हर एक विषय के निकल रहे हैं और इस पादप को अनेक शाखा प्रशाखा में पल्लवित करते जाते हैं; नगर २ नागरी हितैषी सभा और शाखा सभा संस्थापित करने के उद्योग में लगे हैं । काशी नागरी प्रचारिणी सभा जिसका पूर्ण आदर्श है । हम सहर्ष प्रकाश करते हैं कि यहां भी कालेज और स्कूल के छात्रों ने काशी नागरी प्रचारिणी के अनुकरण पर नागरी प्रचारिणी के नाम से एक सभा संस्थापित किया है प्रति रविवार को इसका अधिवेशन क्रमसे होता है । सत्तर के लगभग सभासद इसके अब तक हो चुके हैं । इसके अधिवेशन में उत्तमोत्तम निबन्ध पढ़े जाते हैं, नागरी का प्रचार किस तरह हो इसपर विचार किया जाता है । जैसा ढंग इस सभा का है उससे मालूम होता है इसके सभासद केवल आरंभ शूर नहीं हैं बरन Beal workers काम करके दिखादेने वाले हैं । हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनकी उन्नति के बड़े अभिलाषुक हैं। इतने नवयुवकों को ऐसे उत्तम काम में लगे देख चित्त हर्षनिर्भर हो उठता है जगदीश इनको इनके काम में सफलता दे। जो निबन्ध इसमें पढ़े जा चुके हैं उन्हें क्रमसे हम प्रकाश करेंगे उनमे से एक यह है।

---

## स्पर्द्धा।

आज का यह विषय हाथ में लेते ही थोड़ीदेर के लिये उस जगदाधार की अनुपम शक्ति का परिचय प्रत्यक्ष होता है। जिस तरह उसके अनेक लोकोत्तर गुणोंको स्मरण कर आनन्द की घटा उमड़ आती है वैसाही उसकी भूल के स्मरण का बवंडर एकत्रित घटा के छटा को कभी २ हटा कर चित्त चकोर को चिन्ता सागर में डुबो देता है। यह भूल नहीं तो क्या है कि गुलाब को ऐसा सर्वाङ्ग सुन्दर बनाय उसमें कांटा पैदा कर दिया। मेरी समझ में दुर्जन मित्र के साथ का यह परिणाम है कि गुलाब में कांटे की उपमा उपयुक्त समझी जाती है। हमारे उन्नतेच्छुक युवकों को अपने हर एक कामों में जैसा स्पर्धा आवश्यकीय है वैसाही स्पर्धा को आदर्श कर उसकी जांच और परताल भी। स्पर्धा के श्लाघनीय गुणों में कोई बुराई पैदा हो जाती है तो वहीं जहां आदर्श स्वयं कलंकी है। सब भांत भलाई में एक न एक बुराई भी रहती है गुलाब में कांटा इसका निदर्शन है। इर्ष्या और स्पर्धा में परस्पर का क्या लगाव है इसको बताने का कोई प्रयोजन ही नहीं है। इर्षा स्पर्धा की साथ देने वाली भी होकर उपेक्षणीय और त्याज्य है इसी के प्रतिकूल स्पर्धा ग्राह्य और आदरणीय है। स्पर्द्धा से जो दुर्लभ है वह सुलभ हो जाता है और ईर्षा से सुलभ भी दुर्लभ। वह नीचे से ऊपर को उठाती है यह ऊपर से नीचे को ढकेलती है। उससे सत्कार मिलता है इससे जो सत्कार मिल चुका है उसमें घाटा देखा जाता है। कहां तक कहें ईर्षा स्पर्धा की सहचारिणी भी होकर सर्वथा त्याज्य है। जो हो आज हम को स्पर्धा के गुणों से प्रयोजन है। प्रिय सज्जनों स्पर्धा वह वस्तु है जिसने विश्वामित्र को क्षत्रिय से ब्रह्मर्षि बना दिया वशिष्ट के अदम्य और उदण्ड तेज को देख विश्वा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्र ने उनका अनुकरण करना चाहा तपस्या का अनेक कष्ट सहने के उपरान्त अन्त को सफल मनोरथ हो ही गये। स्पर्धा से कितने परतन्त्र देश स्वतंत्र हो गये और कितनो के स्वतंत्र हो जाने का वीज बोया जा रहा है। इटली, और जापान इसका उदाहरण है। चीनियों का अफ़ीम छोड़ देना इसका साक्षात् प्रमाण है। बहुतेरे काम देखा देखी लोग स्पर्धा में आप करने लगते हैं। धनुर्धारी अर्जुन को बाण चलाते देख कितने उस समय के क्षत्री बाण विद्या विशारद हो गये थे। आज कल व्याख्यान दाताओं की वाचाल शक्ति देख हम में से कितने वक्तृता देने लगे हैं। स्वामी भास्करानन्द का योग बल देख कितनो को योगी होने का शौक़ कराया था। स्वामी रामतीर्थ तथा एनीबिसेंट कोहिन्दू धर्म में दृढ़ देख कितने ग्रेजुयेटों के खयाल बदल गये। सैंडो का डंडा फेंकना और कसरत करना देख हम भी सैंडो बन सीखने लगे। बाबू हरिश्चन्द्र को हिन्दी में लेख और कविता करते देख कितने हिन्दी के सुलेखक हो गये। कहां तक गिनावें जगत् की रीति ही कुछ ऐसी देखी जाती है पहलवान को देख अखाड़े की खोज लोगों को होती है। अच्छे विद्वान् पण्डित या आलिम को देख उन पुस्तकों का अनुसन्धान होने लगता है जिन्हें पढ़ उसने इतनी पण्डिताई या इल्म हासिल किया। कहां तक गिनावें उपन्यास लेखक, नाटक रचयिता, इतिहास वेत्ता, वैज्ञानिक, चित्रकार, शास्त्रकार, दार्शनिक समाज संशोधक, मातृभाषा प्रचारक, साहित्याचार्य, गायनाचार्य, वैद्य, इत्यादि इसी स्पर्धा की सेवा उपासना से उत्पन्न होते हैं। एक को देख दूसरा उसी काम में हाथ डालता है खरबूजे को देख खरबूजा रङ्ग पकड़ता है। सुना जाता है शेक्सपियर पहिले किसी नाट्यशाला में ऐक्टर थे पीछे वेही ऐसे नाटक रचयिता हुये कि जिनके नाटकों में जो भाव दरसाये गये हैं उनकी न जानिये कितनी टीका टिप्पणी हो चुकी है। ऐसाही मुल्की तरक्की और मुल्की जोश में जापान को आदर्श बनाय भारत इस समय चिर निद्रा से जाग उठा है। सारांश यह कि संसार में जितने नवीन संविधान, भले परिवर्तन, सद्गुणों का आवि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्भाव, प्राचीन जीर्णोद्धार, सभ्य संस्कार, उन्नति, अभ्युदय, परिवर्द्धन इत्यादि व इस स्पर्द्धा पर निर्भर हैं। स्पर्द्धा से श्रद्धा का प्रादुर्भाव होता है उपरान्त आत्म निर्भरता के साधारण सूत्र का उपयोग करना पड़ता है। फिर क्या रहा जहां आत्मनिर्भर ऐसा अमूल्य रत्न हाथ आया तब र्लभ ही क्या है संसार के सर्वो पदार्थ हाथ की पुतली बने नाचने गते हैं।

अभी तक गुलाब के गंध का गुण आप को दिखाया गया अब कांटे ी ओर तनिक दृष्टि दीजिये। स्पर्धा के साथ विचार और विवेक न खने से हमारी भली बात भी उलटा असर पैदा करने लगती है। स्पर्धा े दुरुपयोग और दुराग्रह से हमारे नवयुवकों को जेन्टिलमेन बनने का हौसिला चित्त में आ समाया है। जिससे वे अपनी सब्बी पुरानी रीति नीति को जलांजली दे बैठे हैं और नई सभ्यता के संचार के लिये ऊधुम मचाये हुये हैं। द्विजाति हों तो जब तक शिखा सूत्र का विसर्जन न कर लें तब तक सभ्यों की श्रेणी में आ ही नहीं सकते। साफ़ा और पगड़ी की जगह जब तक है ट और डासन का बूट न हो तब तक उनकी शिक्षा और सभ्यता दोनों अधूरी है। सौ मन साबुन पोत डाला पर रंग गोरा न कर सके सफ़ाई और ऊपरी बनावट की सब फ़िकिर कर चुके पर कामयाब न हुये। अपने चेहरे की बनावट पर इतना नाज़ां हैं कि घंटों बाल ारने में बीत जाता है और दर्पण हाथ से अलग नहीं होता। यदि हो विद्योपार्जन में पूर्ण हुये तो भी नहीं सभा और कमेटियों में सिवाय ालियां पीटने के और कुछ न सीखा। जिन्होंने सीखा वे उनके से ेनटिलमेन न बन सके। वस्तुतः ऐसों ने हमारी आशा लता पर पाला डाल दिया हमारे आनन्द को किरकिरा बना दिया। ऐसों के चरित्र के संबन्ध में किसी कवि ने कहा है—

ईश गिरिजा को छोड़ ईशू गिरजा में जाय,
सुन्दर स्वदेशी लोग मिस्टर कहावेंगे।
कोट पतलून बूट टोपी कंफार्ट हैट,
जाकेट के पाकेट में वाच लटकावेंगे॥ इत्यादि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारांश यह कि स्पर्द्धा का सदुपयोग बड़े से बड़े अभीष्ट साधन का द्वार है और दुरुपयोग से पतित से पतित दशा में गिर जाना संभव है। किन्तु इस दुरुपयोग महारोग की संजीवनी औषधी और वैद्य अपना विचार और विवेक है उसी से उचित अनुचित का निश्चय कर तदनन्तर उसे साधन में परिणत करने से भले ही सब भांत भला है।

## प्राप्त ग्रन्थ।

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति–पं० महाबीर प्रसाद द्विवेदी कृत। इसमें हिन्दी का पूरा इतिहास है। समय २ हिन्दी में क्या २ परिवर्तन हुये और अबयह इस वर्तमान दशा को कैसे पहुंची यह सब भी हिन्दी की उत्पत्ति के साथ इसमें दिया गया है। मूल्य ।) पता इण्डियन प्रेस–प्रयाग।

बालनीति माला–पं० रामजी लाल शर्मा रचित। चाणक्य, विदुर, शुक्र, कणिक, इन सबों के नीति का सारांश हिन्दी में दिया गया है बालकों को बहुत उपयोगी है। मूल्य ॥) पता इण्डियन प्रेस–प्रयाग

लड़कों का खेल–छोटे बालकों को परमोपयोगी। वर्णमाला के अक्षरों के अभ्यास की सचित्र पुस्तक बालकों को परमोपकारी ऐसी पुस्तक अब तक नहीं छपी। एक २ अक्षर में एक २ चित्र और उसी अक्षर का एक २ छोटासा जुमला ( वाक्य ) इसमें है। छोटे बालकों का मन ऐसी पुस्तकों के पढ़ने में अवश्य रमेगा। मूल्य =)॥ पता इण्डियन प्रेस–प्रयाग।

## विशिष्टाद्वैत दर्पण।

रामानुज संप्रदाय का तत्व इसमें बहुत अच्छी तरह पर दिया गया है। ग्रन्थकार ने इस पुस्तक के रचने में बड़ा परिश्रम किया है और श्रुति स्मृति द्वारा विशिष्टाद्वैत के सिद्धान्तों को पुष्ट किया है। श्री वैष्णवों के लिये तो परमोपकारी है किन्तु साधारणतः सबों के लिये मनोरंजक है। यह बड़ा लाभ इस पुस्तक के पढ़ने से है कि विशिष्टाद्वैत क्या है सो अच्छी तरह मालूम हो जाता है। श्रीमान् स्वामी रामप्रपन्न रीवां निवासी द्वारा राघवेन्द्र प्रेस प्रयाग में मुद्रित हुआ। मूल्य ॥।)

फ्रैंडस डायरी १९०८ की। लहरी प्रेस बनारस की छपी। हम इस डायरी को सहर्ष स्वीकार करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिये दो बालिकाएं [illegible] ... सी प्रसन्न होरही हैं

हमारा सुधासिंधु इतना प्रसिद्ध होचला है जिससे अब यह बात निर्विवाद सिद्ध होचुकी है कि नीचे लिखी बीमारियोंके लिये बिना पूछेही लोग मंगाने लगे हैं जैसे कफ, खांसी, जाडेका बुखार, हैजा, शूल, दस्त, संग्रहणी, गठिया, दमा, कै होना, जी मचलाना, बालकों के हरे पीले दस्त और कै करना इनको सिर्फ तीन खुराकमें अच्छा करता है. इसके हजारों सार्टिफिकट मौजूद हैं जिनके लिये प्रायः १२५ चित्रों सहित सूचीपत्र मंगाकर देखिये. मुफ्त भेजेंगे सुधासिन्धु की कीमत ॥) फी शीशी ६ लेनेसे १ भेट १२ लेनेसे पांच रु०

देखिय श्रीमान् राजा इन्द्रजीत प्रताप शाह बहादुर तमकुही जिला गोरखपुर से क्या आज्ञा करते हैं।

महाशय आपका एक दरजन सुधासिंधु पहुंचा जो आपने भेजाथा यह दवा बहुत लाभ दायक है बुखार और पेटके रोगों में तो बहुतही फायदेमन्द है और बहुत रोगोंमें वैसा ही फायदा करता है और महरबानी करके आध पाव चन्दनादि तैल और वासारिष्ट भेजिये।

मंगाने का पता—

**क्षेत्रपाल शर्मा मालिक सुख संचारक कम्पनी मथुरा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGD. No. ... 508.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दी प्रदीप

## मासिक पत्र।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायु सों मणिदीप समथिर नहिंटरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामे जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जिल्द २९ } दिसम्बर १९०७ } संख्या १२

## विषय सूची।


| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्तः सारवान् ... ... | १ | दक्षयज्ञ विध्वंस ... ... | १६ |
| शान्ति से अशान्ति ... | ३ | (मनुष्य के जन्म का उद्देश्य) | १८ |
| व्यापार शिक्षा ... ... | ५ | समय ... ... ... ... | १९ |
| हिन्दू दिमाग़ी कूवत में सब से बड़े हैं ... ... | ८ | जुबली ... ... ... | २० |
| हम क्या सदा गुलामही रहैंगे | ९ | नागरी विनय ... ... | २१ |
| शब्द की आकर्षण शक्ति | ११ | नामावली संकीर्तन ... | ,, |
| रत्न हानि ... ... ... | १५ | जातीय उन्नति ... ... | २२ |
| | | प्राप्ति ... ... ... ... | २३ |


पण्डित बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक के

आज्ञानुसार पं० शीतलप्रसाद त्रिपाठी ने अभ्युदय प्रेस प्रयाग में छापा

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-:॥ श्रीः ॥:-

# हिन्दी प्रदीप

जिल्द २९ सं० १२ | प्रयाग | दिसम्बर सन् १९०७ ई०

## अन्तः सारवान् ।

कविकुल गुरू कालिदास ने मेघदूत में कहा है "रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय"। छूछा या खाली सब हलका होता है भरा हुआ भारी भरखं हो जाता है। कौन कितना छूछा है और कितना भारी भरखं है यह प्रत्येक मनुष्य के काम से प्रगट होता है जो क्षुद्र या छिछोरे हैं वे कितना ही अपने को पूर्ण प्रगट करैं पर किसी को उनका गौरव पसन्द नहीं आता न किसी को उन पर श्रद्धा भक्ति होती है। जो अन्तः सारवान् हैं वे अपनी सारवता की पूंजी चाहे वे कितना ही छिपावें भी पर उनकी पूंजी गुप्त रहती ही नहीं। संसार के जितने विषय हैं सबों में प्रायः इन दोनों की परख होती है। सब छोड़ पहले हम रोज़गार या धन संबन्ध में इसकी परख करते हैं। जो थोड़ी पूंजी वाले हैं वे रोज़गारियों में अपनी बात बनाने को अनेक रंग रंगते हैं और सदा इसी चेष्टा में रहते हैं कि हमारी शाख बाज़ार में दूनी चौगुनी रहे बड़े २ सेठ साहूकारों में हम भी गिने जांय। सदा इसी फिकिर में रहते हैं कि वही व्योपार करैं जिसमें डेवढ़ा दोगुना हो। थोड़ा मुनाफ़ा उन्हें पसन्द नहीं आता जब तक एक के दो और दो के चार न हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


धन में जो भारी भरखं और बड़ी पूंजी के हैं वे रुपये में एक पाई मुनाफ़े को ग़नीमत मानते हैं लाखों का वारान्यारा बात की बात में कर देते हैं। उनको रुपये में एक पाई का मुनाफ़ा लाखों पाई के हिसाब से कई हज़ार रुपये हो जाते हैं। दिन में दस बीस लाख का हेर फिर हुआ तो कई हज़ार की बचत प्रत्येक दिन होती गई तब उनके असंख्य धन का क्या ठिकाना है। ऐसे व्यौपारी यूरोप और अमरीकामें हैं हिन्दुस्तान में काहे को कभी होंगे ऐसा ही अन्तः सारवान् पूर्ण विद्वान् जो सागर समान विद्या में अगाध अक्षोभ्य और गंभीर हैं उनकी तुलना वह नहीं कर सकता जिसमें पल्लव ग्राहि पाण्डित्य है। पर ये पण्डितंमन्य कभी किसी अंश में षट्शास्त्री से कम अपने को नहीं मानते जितना ही वे अपने को बनाते हैं उतना ही उनका ओछापन प्रगट होता जाता है। ऐसा ही आभिजात्य और कुलीनता में भी है जो ऊंचे कुल के हैं जिनकी नसल में कोई फ़र्क़ नहीं है शुद्ध रजवीर्य की सारवत्ता जिनमें है वे जहां रहेंगे छिपेंगे नहीं। ऐसे लोग जिस किसी ऊंचे अधिकार पर रहेंगे बहुधा अपने काम से उस पद की शोभा होंगे। हमारे हाकिमों में प्रायः ऐसा देखा जाता है कि जो किसी ऊंचे कुल के हैं उनके शासन से सब खुश रहें हैं। जब से कंपिटीशन का क्रम निकला तब से ऊंच नीच सब दरजे के लोग सिविलियन बन यहां आने लगे हैं। उनमें जो नीच कुल के हैं वे अपने कामों में जल्द से पदच्युत हो अपने कुल की नीचता तुर्त प्रगट कर देते हैं। "उन्नतं पदमवाप्य यो लघुर्हेलयैव सपतेदिति ब्रुवन्। शैलशेखरगतः पृषत्कणश्चारुमारुतधुतः पतत्यधः" पहाड़ की चोटी पर दश पांच कतरा पानी का हलकी हवा के झकोर से भी जो नीचे आ गिरता है सो मानो इस बात को कह रहा है कि हलका मनुष्य जो अन्तः सारवान् नहीं है वह भी हमारे समान ऐसाही आ गिरेगा। शारीरिक बल पहलवानी में भी जो अन्तः सारवान् है चाहे बहुत मोटा ताज़ा न हो अपने दुगुने को कुश्ती में उठाय पटक देता है। जो दुर्बल और अन्तःसार विहीन है वह कितना ही दांव पेच जानता हो कभी न जीतेगा। इत्यादि प्रत्येक विषय में इसके भांति २ के उदाहरण मिलेंगे पढ़ने वालों को दिग्दर्शन मात्र यहां कराया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# शान्ति से अशान्ति ।

वृटिश जाति के शासनकर्ता भारत में शान्ति स्थापन का अभिमान रखते हैं। अभी हाल में मारली साहब ने अपनी एक स्पीच में कहा भी है कि यदि हम हिन्दुस्तान का शासन छोड़ कर चले आवें तो वहां के लोग आपस में कट मरें। तात्पर्य यह है कि यहां के लोग इस योग्य नहीं हैं कि अपने मुल्क का इन्तिज़ाम अपने आप कर लें। पायोनियर ने भी ऐसा ही एक बार लिखा है कि "वे नहीं जानते उनके लिये क्या अच्छा है और किसमें उनकी भलाई है।" सच है इस ग़ायब गोई का ज्ञान तो केवल पायोनियर को है हम क्या जानें कि हमारे लिये क्या भलाई है। कदाचित् पायोनियर का यह आशय है कि दासत्व की शृंखला से अपने को छुटाने का यत्न हम न करें चपत पर चपत खाते रहैं फिर भी बराबर गिड़ गिड़ाते ही जांय इसी में हमारा भला है। पण्डित मारली को अपनी विद्या का बड़ा अभिमान है विद्या और समझदारी की पूंजी मारली ही साहब के पास रह गई है। बुद्धिमानों ने काल को चक्र के रूप में नाहक बांधा है यह काल लंगड़ा सा हो सदा स्थिर रहता है उसमें परिवर्तन कभी होता ही नहीं। देश की जो दशा तब थी जब अंगरेज़ यहां पधारे थे वही मूढ़ता अब तक लोगों में बनी है उसमें ज़रा भी हेर फेर नहीं हुआ। इतने दिनों तक जो हमें शिक्षा दी गई वह सब व्यर्थ गई उसका कोई परिणाम न हुआ। धन्य मिस्टर मारली की मोटी अकिल स्वार्थ ऐसा ही होता है। लोभ बुरी बला है इनसाफ़ और न्याय का अंकुर भी मन में नहीं रह जाता। भारत में अब एक २ नगर में प्रत्येक विषय में पटु बुद्धि सर्वकला चातुरी धुरीण राज्यशासन कौशल कुशल मुल्की इन्तिज़ाम की मानों मूर्ति ऐसे २ लोग हैं कि भारत क्या समग्र योरप का शासन करने को तैयार हैं। खेद है कि उनको अपनी बुद्धि और कला कौशल को मांजने का अवसर नहीं दिया जाता। अस्तु अब प्रस्तुत का विचार करो तो यह शान्ति हमको उतना लाभ दायक नहीं हुई जितना शान्ति स्थापन करने वालों को। ज्यों २ शान्ति और आशायिश तथा आराम बढ़ता गया त्यों २ हम क्षीण होते गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


श्रीरामचन्द्र के समय का हाल गुसांई तुलसीदास जी ने लिखा है "जेपुर-गांव बसहि मग मांहीं। तिन्हहिं नाग सुर नगर सियाहीं।" अर्थात् श्रीरामचन्द्र को बन में जाते समय जो नगर और गांव मिले वे इतने रंजे पुंजे थे कि उन्हें देख नाग और देवताओं के नगर सिहाते थे कि हम भी ऐसे क्यों न हुये। वही अब इस समय विशेष कर ऐसे दुर्भिक्ष में कि थोड़े से प्रधान २ नगरों को छोड़ देश का देश श्रीहत सा हो रहा है। हमारे लिये वह अशान्ति ही अच्छी थी कि सब लोग रंजे पुंजे खुशहाल चैन उड़ाते थे देश का धन एक पैसा बाहर नजा हर साल की उपज यहीं रहती थी लोगों का भरपूर भरण पोषण होता था। छोटे मनुष्य को भी अन्न वस्त्र का टूटा न था। अब के समान तब देश में एक चौथाई लोग एक जून आधे पेट खाकर नहीं रह जाते थे। इस समय जिस नगर या गांव में जाइए वहीं क्षुधा पीड़ित मनुष्य अस्थि-शेष पिशाच की सी सूरत बनाये पेट खलाये नज़र पड़ेंगे। देशका देश श्रीहत श्मसान भूमि सा हो रहा है। क्या इसी का नाम शान्ति है? यह शान्ति तो महा अशान्ति का क़िबले गाह है। हम ऐसी शान्ति कभी नहीं चाहते। हमें इस शान्ति से क्या लाभ पहुंचा विलायत अलबत्ता हमारी बदौलत रुपयों से खचा खच भर गई और वहां के लोग इस समय माला माल हो रहे हैं। इस शान्ति के साथ ही साथ एक तरह का प्रलोभन और माया जाल ऐसा फैला था कि जिससे शान्ति भंग होने से अब तक बची रही। पर वह प्रलोभन निरा झूठा निकल गया तब वह माया जाल का परदा भला कै दिन रह सक्ता था। गुरू लोगों की पालिसी की पोल खुल गई रेल तार इत्यादि अनेक आराम पहुंचाने वाली बातें की गईं पर हमें क्या उसका लाभ भी वही उठा रहे हैं जिन्हों-ने शान्ति स्थापन के लिए इसे निकाला है। रेल द्वारा जितना रुपया विला-यत जा रहा है उतना किसी दूसरे ज़रिये नहीं। यही सब समझ २ हम परकटे पखेरू से फड़ फड़ा रहे हैं कुछ वश नहीं है। इतने पर भी सन्तोष नहीं है "तृप्तिर्नास्ति महोदधेश्चवहुभिर्ग्रासैः पलासैरपि" हम जो अपने लिये स्वदेशी और बायकाट निकाल रहे हैं वह अखर गया वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


भीतर अशान्ति पदा कर रहा है। तो सिद्ध हुआ यह शान्ति अब अशान्ति का रूप हो रही है पर इसे हमने बहुत दिन बाद सर्वस्व गवांय तब पहचाना और यह अशान्ति दिन २ बाढ़ पर है घटने की आशा नहीं है।

## व्यापार शिक्षा।

ऐसे समय जब इस भारत भूमि में देशी व्यापार के पौधे जमते ही न थे पूरब की ओर से उठी बायकाट की घनघोर घटा ने स्वदेशी आन्दोलन की सुखदायी वर्षा का आरम्भ कर दिया। इस वृष्टि ने १८८३ में लगाये हुए पौधे को मानों फिर से सजीवित कर दिया। सूखते धान् में मानों पानी पड़ा पुराने पौधे हरे भरे होने लगे और नये उगने लगे। जिन मिलों के हिस्सों का भाव गिर कर ५०) होगया था। उनका १५०) और २००) हो गया। नये २ कारखाने दूकाने और मिलें स्थापित होने लगीं। जहां पहिले केवल निराशा थी वहां आशा के अंकुर जमने लगे। युवक जन आपस में कहने लगे कि इस असार संसार में सिर्फ सरकारी नौकरी ही सार नहीं है बरन और २ ज़रिये भी ऐसे हैं जिनसे हम अपनी हैसीयत के माफ़िक़ कालक्षेप कर सकते हैं। इसका एक मात्र उद्देश्य केवल अपना भरण पोषण ही नहीं है अपिच देश का बड़ा भारी उपकार भी है। उनके हौसिले जिन्होंने कभी बंगाल की खाड़ी भी नहीं नांघा था अमेरिका और जापान की खबर लेने लगे। अशिक्षित जिन्हें अक्षर से भेंट न थी वे देशी व्यापार की ओर झुक पड़े और सोंचने लगे कि विदेशी वस्तुओं में तो अब सिवाय घाटा के फ़ायदा नहीं है तो अब देशी चीज़ों की ओर हमें ध्यान देना चाहिये। इसमें नफ़ा है और गाहक भी खुश रहते हैं। देशी माल रखने से बिना प्रयोजन के लोग हमारी दूकान की तरक्की के लिये प्रयत्न करते हैं। तब इस बहती गंगा में हाथ क्यों न धोलिया जाय। कारीगरों के प्राण तो मानों यम द्वार से फिर लौट आये। तात्पर्य यह कि इस स्वदेशी आन्दोलन से जहां देखो वहां सब भला ही भला है। अगर कुछ हानि हुई तो विदेशी व्यापार और विदेशी कर्मचारियों की। यह तो साधारण जन समूह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



का हाल हुआ अब टुक उन वीरों का हाल कह सुनाते हैं जो देशानुराग की मूर्ति है, देश के लिये प्राण तक न्यौछावर कर देने को उद्यत हैं और बन्दे मातरम् की चिल्लाहट मचाते अपना बेड़ा पार खींच ले आया चाहते हैं। व्यापार, समाज का सुधार, और शिक्षा इन तीनों को उन्होंने बहुत आवश्यक मान रक्खा है। देश की वर्तमान दशा में यह नहीं कहा जासक्ता कि इन तीनों में कौन कम हैं कौन ज़ियादा इस लिये कि देश में इन तीनों की एक सी ज़रूरत है। कितनों का यह मत है कि सब का मूल शिक्षा है सब लोग शिक्षित हो जांय तो समाज सुधर जाय और व्यापार भी बढ़े। कुछ लोगों के चित्त में समाया हुआ है कि राष्ट्रीय शिक्षा बिना समाज सुधार के हो ही नहीं सकती शिक्षा ही के ये सब गुण हैं कि हमें चेत आई और सोचने लगे कि हम क्या थे क्या होगये। परन्तु जब तक समाज ठीक न हो जाय शिक्षा का प्रबन्ध करैगा कौन? इससे समाज का सुधार उनके मत में पहली बात है।

कितनों का मत है कि "बिना ज़र इश्क टें टें,, धन हीन के कोई काम सिज़िल नहीं उतरते वह धन व्यापार से मिलता है तब व्यापार ही सब में प्रधान है। मेरी समझ में ये तीनों भूलते हैं इनका खयाल है कि एक काम करने से तीनो हो जांयगे किन्तु यह नियम वहां के लिये है जहां एक ही मनुष्य के कामों की आलोचना करना हो वहां ही यह बहुत सुघटित है। "एकहि साधे सब सधै सब साधे सब जाय" परन्तु जहां देश या राष्ट्र के कामों का विचार है वहां यह नियम सर्वथा दूषित है। इस लिये कि एक मनुष्य का चित्त एक ही हो कर अनेक कार्यों की ओर रुचि प्रगट करता है तब जो वह मनुष्य हबस में पड़ सब को साधना चाहता है तो उसका चित्त बंट जाता है जिससे सब काम नष्ट हो जाते हैं इससे उसे एक समय मे एकही काम करना उचित है। किन्तु जब राष्ट्र और देश में अनेक मनुष्य होते हैं और सबकी रुचि और निपुणता एक ही काम की ओर होना संभव नहीं है तब यदि एक ही काम किया जाय तो बहुत से मनुष्य जिनकी स्वाभा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


विक रुचि उस काम की ओर नहीं है वे बेकार रहैंगे या उस काम को करैंगे भी तो आधे मन या बुझी तबियत से करैंगे। पर भिन्न भिन्न काम होने से सब लोग अपनी २ रुचि और निपुणता के अनुसार काम बांट के करैंगे तो देश सब ओर से इकट्ठा तरक्की करता हुआ आगे को बढ़ता जायगा। इस लिये हमारी समझ में यदि व्यापार, शिक्षा और समाज के सुधार का एक साथ प्रयत्न किया जाय तो उत्तम होगा। इन तीनों विषयों की अलग २ समालोचना पढ़ने वालों को अवश्य रोचक होगी।

सब से पहले इस पर ध्यान देना चाहिये कि जो हम हिन्दुस्तान को भारी व्यपारी देश बनाना चाहते हैं तो व्यापार के पुराने तरीकों को छोड़ नये तरीकों को काम में लावें इस लिये कि अब उन पुराने तरीकों से प्रयोजन की सिद्धि असंभव है। सोचना चाहिये कि हम अमेरिका इंगलैंड, जरमनी, फ्रांस आदि देशों से किस बात में कम हैं जिससे हम उनके मुक़ाबिले कंपिटीशन में हट जाते हैं। हमारे यहां मज़दूर ≡) हद्द से हद्द ।-) या ।=) पाते हैं और वहां मज़दूर १) कभी को ९।) रोज़ पाते हैं, तब भी उनकी चीज़ें हमारे यहां से सस्ती पड़ती हैं। कच्चा बाना रुई और सन इत्यादि यहां ही से वे खरीद ले जाते हैं और जहाज़ आदि का भाड़ा देते हैं तब भी उनका माल हम से सस्ता पड़ता है सो क्यों। इसका कारण केवल निर्माण कौशल है। उन चीज़ों के तैयार करने में हम अभी उतने कुशल नहीं हुये हैं जितना कि वे हैं। यह उनकी निर्माण चातुरी ही का कारण है कि उन २ देशों के व्यौपारी से कच्चा बाना महंगा खरीद ज़ियादा मज़दूरी देकर भी बाज़ार में चीज़ें हम लोगों से सस्ती बेंचते हैं। निर्माण चातुरी जैसा रेशम या ऊन में सन या पेटुआ का पुट दे देते हैं कि रेशम और ऊन में दिया हुआ वह पुट बिलकुल भासित नहीं होता न उसकी चमक दमक में कहीं से कुछ हेठापन ज़ाहिर होता है और उसे खालिस ऊन या रेशम की बनी चीज़ों के भाव बेंचते हैं। यही कारण है कि यहां के बने कपड़े शुद्ध ऊन या रेशम के बने होने के कारण अधिक टिकाऊ और खुरखुरे होते हैं। हां वैसी चमक दमक नहीं आती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जिसने भारत सन्तानों को मोहित कर रक्खा है। तो विदेशों में जांय व्यापार में सहायक मिलों की कारी गरी सीखना बहुत आवश्यक जान पड़ता है। अभी इस व्यापार शिक्षा के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहना है जिसे फिर कहेंगे।

हरी कृष्ण अग्रवाल

## हिन्दू दिमाग़ी कूवत में सब से बढ़े हैं।

प्रारंभ से पाया जाता है कि जिस ओर इन्होंने अपना दिमाग़ लड़ाया उसी में अद्वीतीय होगये। पहिले जनक के समय ब्रह्मविद्या की ओर जनक ऐसे राजाओं की झुकावट देख हमारी ऋषिमण्डली उसी की खोज में झुक पड़ी। उस समय कैसे २ उपनिषद और दूसरे २ ग्रन्थ तैयार किये गये जिन्हें पढ़ जरमनी इङ्गलैंड अमेरिका के विशिष्ट विद्वान् निहाल हो जाते हैं और मान बैठे हैं कि बाइबिल और क़ोरान आदि धर्म ग्रन्थ में आध्यात्मिक सब उन्हीं की छाया है और उन आर्यों की बुद्धि का गौरव बड़े आदर पूर्वक स्वीकार करते हैं। उपरान्त अर्जुन के समय वाणविद्या का अधिक प्रचार होने से महाभारत के समय कैसे २ वाणविद्या में कुशल क्षत्रिय और द्रोण, कृप, अस्वत्थामा सरीखे ब्राह्मण भी हुये जिनकी वीरता की कहानी में व्यास देव ने महाभारत सरीखा इतना बड़ा ग्रन्थ रच डाला। "गुण न हिरानो गुण ग्राहक हिराने हैं" इस कहावत को चरितार्थ करते विक्रम और भोज के समय राजाओं को कवियों की क़दर करते देख कालिदास भवभूति भारवि, श्रीहर्ष, वाण, दण्डी, प्रभृति कैसे २ कवि और कुमारिल, शङ्कर, वाचस्पति आदि दर्शनिक हुये जिनके रचे ग्रन्थों में इन दिनों के पण्डितों का चंचुप्रवेश भी नहीं होता। उनकी पंक्तियों के लगाने में विद्वानों के भी दांतों पसीने आते हैं। इधर भोगलिप्सू मुसल्मानों की सलतनत में नाचने गाने बजाने की बेइन्तिहा तरक्क़ी होने पर बैजू और तानसेन सरीखे कैसे २ गवैये हुये कि रागों की आलापचारी में उस्ताद भी पहले जिनका नाम लेकर गाना बजाना शुरू करते हैं। ऐसाही फ़ारसी उर्दू के प्रचार होने पर कैसे २ शायर और लेखक फ़ारसी और उर्दू में हुये बल्कि अब तक हैं जिनकी तहरीर पर मुसलमान जो अरबी फारसी को अपनी भाषा मानते हैं वे अब उसे अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कहते शरमाते हैं। ऐसाही थोड़ेही दिनों से अङ्गरेज़ी में कितनी तरक्की यहां के लोगों ने किया है कि विलायत में जाय अङ्गरेज़ी में वक्तृता कर अमेरिका तथा इङ्गलैंड के लोगों में अचरज पैदा कर दिया। अब ये राजनैतिक विषय तथा शिल्पचातुरी और देशी कारीगरी को तरक्की देने में प्रवृत्त हुये हैं जिससे ये विदेशियों के आंख का कांटा सा हो रहे हैं और अनेक विघ्न डाल रहे हैं कि ये आगे न बढ़ने पावें पर उस प्रवाह को कौन रोक सक्का है जो इनके मस्तिष्क की अखण्ड धारा से निकलता है। इनके मस्तिष्क में यह प्रवल शक्ति न रही होती तो अचरज न था कि विदेशी लोग जिन्होंने अनेक छल छिद्र से इन्हें वशमें कर रक्खा है अफ्रिका के हबशी और अमेरिका के रेड इण्डियनों की भांत इन्हें भी नेस्तनाबूद कर दिये होते। फिर भी गुलामी की जंज़ीर से इन्हें जकड़े हुये हैं और नहीं चाहते कि उनके चंगुल के बाहर हो जांय पर यह उनकी शक्ति के बाहर है। इनकी दिमाग़ी कूवत जो इनमें कुदरती या स्वाभाविक है छीन न सके। "नत्वस्य दुग्धजलभेद विधौ प्रसिद्धां वैदग्ध्य कीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः"। इनकी गुलामी का अन्त भी तभी होगा जब इनके दिमाग़ की कुदरती ताकत भरपूर प्रगट हो उठेगी और उसे ये बेरोक टोक स्वच्छन्दता पूर्वक काम में लाने लगेंगे। वही समय हमारे स्वराज का होगा और वह समय एक दिन अवश्यमेव आवेगा। शासनकर्ताओं की शासनप्रणाली उसके आने में यद्यपि देर कर रही है पर होनहार को कौन रोक सका है जितना ही देर हो रही है उतना ही उसमें पोढ़ापन आता जाता है। हमें चाहिये हम धैर्य के साथ उस दिन की प्रतीक्षा करते रहैं उकतांय नहीं। परमात्मा न्यायी है यदि हमारा पक्ष न्याय दूषित नहीं है तो अवश्य हम कृतकार्य होंगे।

---

## हम क्या सदा गुलाम ही रहैं गे!

विचार कर देखो तो हमारी कोई भी ऐसी बात नहीं है जिसमें गुलामी आदत की झलक न आती हो। कुल समाज की समाज कुछ ऐसे ढंग पर ढुलक पड़ी है कि हमारी हर एक बात में गुलामी की गन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आ रही है। हमारी रीति नीति आपस का बर्ताव धर्म कर्म कोई भी ऐसे नहीं हैं जो गुलामी से खाली हों। नवयुवक स्वराज के लिये बहुत कुछ धूम मचाये हुये हैं किन्तु जब तक दास्य भाव के प्रेम को हम पाले हुये हैं तब तक कभी संभव है कि कौमी आज़ादी का आखिरी अंजाम स्वराज से विभ्राजमान हो हम स्वतंत्र सम्राज का सुख भोगने वाले देशों की नामावली में अपनी गिनती कर सकें? मसल है काजल सबी लगाते हैं पर उस चितवन की छवि ही निराली है जो मन को मोह लेती है। इसमें सन्देह नहीं शिक्षा विभाग में इतनी कड़ाई पर भी हमारे नवयुवक बड़ी तरक्की कर रहे हैं इल्म के हर एक Department विभाग में वायु वेग की गति से उड़ते चले जा रहे हैं और कुल हिन्दुस्तान को एक नेशन बनाने का हांथ ठोक दावा बांधे हुये हैं। इतनी बड़ी इमारत खड़ी कर दिया चाहते हैं पर नेव की ओर उनका ख़याल नहीं दौड़ता कि कैसी कच्ची नेव पर इस विशाल मन्दिर का निर्माण हम कर रहे हैं। हम भीतर भीतर कितने पोले हैं गुलामी का ज़हर हमारी नस २ में कितना भरा हुआ है इस पर उनका ध्यान नहीं है। ये नवयुवक अपनी विज्ञान चातुरी इतिहास और पोलिटिकल इकानोमी में प्रवीण हो भांति२ के नये२ राजनैतिक ख़याल निकाला करते हैं किन्तु वह बात उनमें आही नहीं सक्ती जो आज़ाद कौम के मन में सूझैगी। वह जोश वह उत्साह वह सर गरमी उन से कोसों दूर है जो स्वतंत्र जाति में है। जिसे राजसिंहासन पर विराजमान होने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ वह पन्नियों से मिढ़ी नकली चौकी पर बैठ कहां तक असलीयत को पहुंचेगा। इस सब बकबाद का सारांश यह है कि हमारे में राजनैतिक बल पुष्टता के साथ तब आवेगा जब हमारी समाज में संशोधन होगा। वह संशोधन तभी हो सकेगा जब एक भी पुरानी लकीर के फ़कीर परिवर्तन विमुख न रह जांयगे और शिक्षा का प्रवाह भारत में सब ओर फैल जायगा। जब से वैदिकधर्म का लोप हुआ और ब्राह्मणों ने अपने मन का मत चलाया तब से धर्म के उपदेश का चोखापन जाता रहा। जिसमें देखो उसी में ब्राह्मणों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


ने निजस्वार्थ को जल में तूंबी समान हिन्दूधर्म में सब के ऊपर रक्खा। धर्म की आड़ में रख समाज को अनेक फिजूल की क़ैद में जकड़ दिया और ऐसे २ सामाजिक नियम प्रचलित किये कि स्वातंत्र्य कहीं नाम को भी न रहा। अस्तु भगवत् शंकराचार्य्य ने लोगों को समाज के बन्धन से मुक्त करने की बहुत कुछ फिकिर आत्मवाद के द्वारा किया और कुछ दूर तक कृतकार्य भी हुये। किन्तु थोड़े ही दिन के उपरान्त स्वामी रामानुज और बल्लभाचार्य आदि कई एक संप्रदाय प्रवर्तक ऐसे हुये कि दासोस्मि की शिक्षा का प्रचार कर देश से आज़ादगी को उन्होंने खो बहाया। जहां के धर्म में दास होना मुक्ति का साधन माना गया है वहां के लोग आज़ादगी का ज़ायका कैसे चख सक्ते हैं। कान में मंत्र फूंक चेला बनाना धूर्त प्रतारकों का ऐसा भारी लटका है कि इस ने बड़ाही सर्वनाश कर डाला और स्वतंत्रता को पास न फटकने दिया। ब्रह्मचर्य की प्रथा उठाय दुधमुहों के गले में शुरू ही से चक्की बांध सब्ज़े की तरह उगते पैरों से रुले जाने की भांति देश के भलाई की आशालता को जब हम पहले ही से काट डालते हैं "लतायां पूर्वलूनायां कुसुमस्यागमः कुतः" तब क्या उम्मेद की जाय कि हमारे में मुल्की जोश पैदा होगा। जब तक दुधमुहों के विवाह की चाल कायम है तब तक स्वतंत्रता के लिए चेष्टा व्यर्थ है इसी लिए हमें यह सन्देह होता है कि हम क्या सदा गुलाम ही रहेंगे।

---

## शब्द की आकर्षण शक्ति।

शब्द की आकर्षण शक्ति न्यूटन की आकर्षण शक्ति से लवमात्र भी कम नहीं कही जा सकती बलिक शब्द की इस शक्ति को न्यूटन की आकर्षण शक्ति से विशेष कहना चाहिये। इसलिये कि जिस आकर्षण शक्ति को न्यूटन ने प्रगट किया है वह केवल प्रत्यक्ष में काम दे सक्ती है। सूर्य पृथ्वी को अपनी ओर खींचता है पृथ्वी चन्द्रमण्डल को। योंही जितने बड़े पदार्थ सब छोटे को आकर्षण कर रहे हैं। किन्तु जब वे दोनों पदार्थ एक दूसरे के मुकाबिले में हों। पर शब्द की आकर्षण शक्ति में कुछ आवश्यक नहीं कि शब्द की आकर्षण शक्ति तभी ठहर सक्ती हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जब नेत्र भी वहां योग देता हो। इन शब्दों का जितना ही अधिक समूह बढ़ता जायगा उतनी आकर्षण शक्ति भी अधिक होती जायगी। प्रत्येक जाति के धर्म ग्रन्थ इसके प्रमाण हैं। वेदादि धर्म ग्रन्थ जो इतने माननीय हैं सो इसी लिये कि उनमें धर्म का उपदेश ऐसे शब्द समूहों में है जो चित्त को अपनी ओर खींच लेते हैं और ऐसा चित्त में गड़ के बैठ जाते हैं कि हटाये नहीं हटते। जैसा न्यूटन वाले आकर्षण का हाल हुआ कि वह सबों के दिलों को आकर्षित न कर सका। वृक्ष से फल का टूट कर नीचे गिरना साधारण बात है किसी के मन में इसका कोई असर नहीं होता न्यूटन के चित्त में अकस्मात् आया कि यह फल ऊपर क्यों न जा नीचे को गिरा तो अवश्य इसमें कोई बात है। देर तक सोचने के उपरान्त उसने निश्चय किया कि इसका कारण यही है कि बड़ी चीज़ छोटी को खींचती है। पर शब्द की आकर्षण शक्ति में इतना असर है कि मनुष्य की कौन कहे बन में मृगों को भी मुग्ध कर देती है। कोयल अपनी बोल में पंचम स्वर अलापती हुई सबों को क्यों भावती है इसी लिये कि मीठी आवाज़ Melodious voice सबों को सुखद है। वीन इत्यादि बाजन भी लोगों को क्यों रुचते हैं इसी लिये कि वे कान को सुखद और मन को आकर्षण करने वाले हैं।

केवल शब्द की मधुर ध्वनि पर जब इतना प्रलोभन है तब यदि उन शब्दों में अर्थचातुरी भी भरी हो तो वह कितना मन को खींचने वाली न होगी। अलंकारों में अनुप्रास Alliteration कितना करण रसायन है पर उसमें अर्थचातुरी न रहने से वह अलंकारिकों में इतनी प्रतिष्ठा नहीं पाता। यदि पद लालित्य के साथ अर्थचातुरी भी हो तो उसके समान बहुत कम काव्य निकलेंगे। जैसा दामोदर गुप्त का यह श्लोक है "अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः। अलमलमालि मृडालैरिति रुदति दिवानिशं वाला॥"

कोई विरहिणी नायिका अपने प्रियतम के वियोग में कामाग्नि से व्याकुल अपनी सहेली से कह रही है। कामज्वर के दूर करने को जो तुमने यह (घन सार) चन्दन हमारे शरीर में पोत रक्खा है इसे (अप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सारय ) दूर करो इसलिये कि चन्दन से तो और भी कामाग्नि धधक उठेगी मोतियों का हार उतार लो कमलों से क्या होगा वह भी ठंढक न पहुंचा सकेंगे। ( अलमलमालि मृडालैः ) ठंढक के लिए जो मृडालों को मेरे ऊपर धरे हो उसे हटाओ। इस भांत वह वाला रातो दिन कहर २ तुम्हारे वियोग में रोया करती है। तुलसी और बिहारी के काव्यों में ऐसा बहुत ठौर आगया है जहां अनुप्रास की मिठास और अर्थ चातुरी दोनों आई हैं। कुछ उदाहरण उसके यहां पर हम देते हैं।

"टटकी धोई धोवती चटकीली मुख जोति।
फिरत रसोंई के घरन जगर मगर द्युति होति" ॥
"मानहु मुख दिखरावनी दुलहिन करि अनुराग।
सास सदन मन ललन हूं सौतिन दियो सुहाग" ॥
"भूषण भार सम्हारि हैं किमि ये तन सुकुमार।
सूधे पायन धरि परत महि सोभा के भार"।
"लगालगी लोचन करैं नाहक मनबंध जाय"।
"देह दुलहैया की बढ़ै ज्यों ज्यों योवन योति।
त्यों त्यों लखि सौतैं सबै बदन मलिन द्युति होति।"

तुलसी का जैसा—"तुलसी सराहत सकल सादर सींव सहज सनेह की"। "धिग मोहि भयउं वेनु बन आगी। दुसह दाह दुख दूषन भागी" ॥ "सुनी बहोरि मातु मृदुवानी। सील सनेह सरल रससानी" ॥

अगरेज़ी में भी कहीं २ पर ऐसा है। जैसा पोप की इस पंक्ति में है। The sound should seem an echo to the sense अर्थात् शब्द ऐसे होने चाहिए जिसमें अर्थों की गूंज सी निकले।

कालिदास का जैसा—"कन्या ललाम कमनीय मजस्य लिप्सोः"—इत्यादि भवभूति का जैसा—"कूजत्कुञ्जकुटीर कौशिक घटा।" वैदर्भी रीति और प्रसाद गुण इस तरह के काव्यों का प्राण है। पोप का और भी How high his highness holds his haughty head पर इसमें अर्थ चातुरी का अभाव है। शेक्सपियर का सा जैसा His heavy-shotted hammer shroud इसमें अनुप्रास अर्थ चातुरी सहित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हमारा तात्पर्य यह कि जहां अनुप्रास विना प्रयास आजाय अर्थ में भी उससे अधिक सौन्दर्य बढ़ जाय तो वह सर्वथा ग्राह्य है और अनुप्रास के पीछे अर्थ चातुरी की हत्या करना पड़ा तो वह अनुप्रास किस काम का, जैसा इस समय के बहुधा, नवसिखिया लेखक करते हैं। कालिदास के इस श्लोक में। "इयमधिक मनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी किमिवहि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्" अनुप्रास बिना बनावट के आगया है तो उत्तम है। जैसा "भवभूतेः संवन्धात् भूधर भूरेव भारती भाति"। जयदेव जो कोकिल कण्ठ कहलाये सो इसी लिए कि उनके पदों में लालित्य अर्थ चातुरी से कहीं पर खाली नहीं है। जैसा—"ललित लवंगलता परिशीलन कोमल मलय समीरे" इत्यादि। प्रसाद गुण विशिष्ट जैसा—"परमेश्वर परिपाल्यो भवता भवताप भीतोहम्" वैदर्भी रीति का जैसा "कुतोऽवीचिर्वीचिस्तव यदि गता लोचन पथं त्वमापीता पीताम्बर पुरनिवासं वितरसि। त्वदुत्संगे गंगे पतति यदि कायस्तनुभृतां तदा मातः शातक्रतव पदलाभोप्यतिलघु"।

हे गंगे तुम्हारी (वीचि) लहर यदि नेत्र पथ में आ जाय तो (अवीचि) नरक या पाप कहां। तुम जल रूप में जो पी ली जाओ तो (पीताम्बर पुर) वैकुण्ठ धाम का वास दे देती हो। तुम्हारी गोद में जो देहधारी मात्र का शरीर आ गिरे तो ( शातक्रतव ) इन्द्र की पुरी स्वर्ग के पद का लाभ भी बहुत थोड़ा है।

जगन्नाथ पण्डित राज का जैसा—"यवनी नवनीत कोमलांगी। शयनीये यदि नीयते कथंचित्। अवनीतलमेव साधुमन्ये नवनी माघवनी विनोदहेतुः—

यमक और अनुप्रास दोनों एक साथ जैसा "तर्क कर्कश विचार चातुरी का तुरीय वयसा विचार्यते। आतुरी भवति यत्र मानसं धातुरीप्सितमपाकरोति कः"। इत्यादि अनेक इसके उदाहरण संस्कृत और भाषा दोनों में पाये जाते हैं अधिक पल्लवित न कर केवल दिग्दर्शन मात्र किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# रत्न हानि ।

विद्या के अगाध सागर सच्चरित्र की कसौटी दो बहु मूल्य रत्न पं० सरयूप्रसाद जी मिश्र और पं० लक्ष्मीनारायण जी व्यास इस मनहूस महीने में हमारे बीच से निकल गये, पं० सरयूप्रसाद जी वेदान्तदर्शन के अद्भुत पण्डित थे कुसुमांजलि खण्डनखाद्य आदि ग्रन्थों को समझने वाले और उन ग्रन्थों की पक्तियों को लगाने वाले बड़े योग्य विद्वान थे। न केवल वेदान्त ही किन्तु छहो दर्शनों में आपका बहुत अच्छा प्रवेश था यहां तक कि मिल डारविन और स्पेन्सर आदि अंगरेज़ फिलासोफरों के सिद्धान्तों को भी अच्छी तरह समझे थे। उक्त पण्डित जी केवल दर्शन मात्र के पण्डित न थे वरन संस्कृत का कोई विषय नहीं बचा था जिसका स्वाद ये नहीं चक्खे हुये हों। धर्मशास्त्र, काव्य कोष अलंकार सबों में अच्छी तरह विद्वान थे। न केवल संस्कृत किन्तु भाषा के भी अच्छे पण्डित थे। इनके बहुत से लेख प्रदीप की पुरानी फ़ाइलों में मिलैंगे। निस्पृह और निर्लोभ भी इतने थे कि ऐसे विद्वान् होकर क्लेश से अपना जीवन बिताया पर किसी के आश्रित न हुए और अपने ४ पुत्रों को बी० ए० तक की उत्तम शिक्षा दिलाया। खेद इस बात का है कि मिश्र जी की आयुष्य अधिक नहीं थी केवल ५४ वर्ष की उमर में आप को काशी में गङ्गा लाभ हुआ। परमात्मा इनकी आत्मा को उत्तम गति प्राप्त करे।

व्यास जी हमारे प्रयाग नगर की शोभा थे शास्त्रीय क्रम पर वैद्य विद्या को ऐसा जानने वाले हम समझते हैं देश में बहुत कम लोग होंगे। सिवाय वैद्यक के व्यास जी योग का प्रकरण भी बहुत अच्छा समझे हुये थे। ८१ वर्ष की उमर में अनेक पुत्र पौत्र प्रपौत्र सहित बड़ा कुनबा छोड़ भाग्यशालियों की सीमा अपने में दरसाते सुरधाम सिधार गये। खेद है हमारे पुराने क्रम के जो लोग सिधार जाते हैं उनके न रहने की त्रुटि को दूसरा उनका स्थानापन्न हो नहीं पूरा कर सक्ता।

दीनानाम् कल्पवृक्षः स्वगुण फलनतः सज्जनानां कुटुम्बी।
आदर्शः पंडितानाम् सुचरित निकशः शील वेला समुद्रः॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्कर्ता नावमंता पुरुष गुण निधिर्दक्षिणोदार सत्वो।
ह्येकः श्लाघ्यः सजीवत्यधिक गुणतया चोच्छ्वसन्तीव चान्ये॥

इस श्लोक का भावार्थ पूर्ण रीति पर इन महात्मा के सम्बन्ध में सुघटित होता है। सच्चिदानन्द परमात्मा इनकी आत्मा का कल्याण करे।

---

## दक्ष यज्ञ विध्वंस।

इस वर्ष कांग्रेस में जो दुर्घटना हुई उसे सबी पत्र लिख चुके। वहां की एक २ छोटी २ बातों को लिखना केवल पिष्ट पेषण है। फूट जो हिन्दुस्तान को सब भांत मिट्टी में मिलाये है यहां भी अपना पांव पसार ने से न चूकी। नरम और गरम दो दलों में आपस की फूट यहां तक तरक्की को पहुंची कि इसने काङ्गरेस महायज्ञ को जिसमें दक्ष के स्थानापन्न सर फ़ीरोज़शाह मेहता महोदय को मानना पड़ेगा बाल गंगाधर के द्वारा विध्वंस कर डाला। दक्ष के यज्ञ में सती ने अपना तन त्यागा था यहां नरम और गरम दोनों की सहानुभूति सुरधाम सिधार गई। दक्ष यज्ञ में शिव के गण ने नोच खसोट और लूट मार की थी यहां तिलक के अनुयायी विरार और नागपूर वालों ने यष्टि प्रहार के द्वारा कांगरेस पंडाल छिन्न भिन्न कर डाला। दक्ष के यज्ञ में इतनी हलचल होने पर भी त्रिनेत्र शिव अपने आसन से चलायमान न हुये यहां गरम दल को अपने साथ लिये राजनैतिक विषयों को स्वराज्य स्वदेशी और बायकाट त्रिधा विभाग कर बाल गंगाधर अपने अटल सिद्धान्त से ज़रा न टसके। यों तो जो जिस दल का है वह उसी की गीत गाता है और उसी के अनुसार गोखले मेहता और तिलक का खण्डन मण्डन करते आक्षेप उपालंभन तथा स्तुति से नहीं चूकता। कोई तिलक को सर्वथा दोषी ठहराता है कोई कहता है इसमें कुसूर मेहता और गोखले का है। जो जिसकी राय हो हम को इसके निर्णय से कोई प्रयोजन नहीं। हम केवल इतना ही कहा चाहते हैं कि इस तरह के विरोध का परिणाम अच्छा नहीं और जो कुछ दुर्घटना वहां हुई वह शिष्ट क्रम के सब भांत प्रतिकूल है। "पथः श्रुतेर्दर्शयितार ईश्वरा मलीमसामाददतेनपद्धतिम्" जहां देश के ऐसे उच्चश्रेणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


के लोग हों वहां लाठी लठौअल और जूता पैजार हो तो अशिष्ट असभ्यों से इनमें क्या अन्तर रहा। बहुत लोगों का अनुमान है कि भारत की मृतक देह में प्राण आने का यह शुभ शकुन है। दो क्या हमारा दस दल क्यों न हो जाय हमारी जातीयता में जागृति, अवश्य पैदा हो चली है। अस्तु।

जागृति इनमें पैदा हो गई है सो इससे मालूम होता है कि प्रति दिन गरम दल बढ़ता ही जा रहा है। २२ वर्ष की कांग्रेस में जो नरम लोग न कर सके उसे ये दो ही वर्ष में कर गुज़रे। जो अब नरम हैं उन्हीं के सन्तान पीछे गरम दल वाले हो जांयगे। इसमें सन्देह नहीं इस दुर्घटना से बहुत लोग हताश हो गये हैं और हमारे शत्रुओं की बन पड़ी है पर भविष्य अवश्य चमकीला और उत्साहवर्द्धक है। हमारे शासकों की बुद्धि ऐसी ही कायम रही और वे दिन प्रति दिन अधिक २ कड़ाई करते गये तो सर्वसाधारण में अशान्ति बढ़ती रहेगी। पायोनियर आदि ऐंगलो इण्डियन पत्र तथा विलाइत के लंडन टाइम्स इत्यादि पत्र अपने कर्णकटु लेख से उस अशान्ति को और अधिक सुलगा रहे हैं। हम विजयी जाति के हैं इस अभिमान में चूर चूर अपने लेख से भी हमारा मर्म ताड़न करने से नहीं चूकते। लंडन टाइम्स लिखता है The Moderates will be listened-to afresh but they should not ask forthe moon. "नरम दल वालों की दरख़ास्त पर भरपूर ख़्याल किया जायगा पर उन्हें चाहिये वे चांद न मांगे" अर्थात् फुसलाने के ढंग पर दो एक बात उनके मन की कर दी जायगी, पर उन्हें चाहिये कि वे समझ कर अपनी औकात के माफ़िक मांगे। राज्य-प्रबन्ध की असिल बातों को जैसा टैक्स कम करना खिराज वसूल करना, बड़े से बड़े ओहदे हिन्दुस्तानियों को दिये जाना इत्यादि बातें वे न मांगे। कहावत है "अतिप्रसन्नो दमडीं ददाति" जब हम अपने को प्रगट कर दिखादेंगे कि राजशासन की योग्यता में हम सब भांत लायक किसी अंश में तुमसे कम नहीं हैं तब भी हमे वही दास रहना पड़ेगा तब हम तुमसे क्यों मांगने जांय गरम दलवालों की यह पालिसी सब तरह प्रशंसनीय है। गरम दल का सिद्वान्त है हमे चाहिये हम चुपचाप सब सहते जांय पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने आप अपने पैरों खड़े होने के प्रयत्न से न चूकें, इनसे कुछ मांगनी या इनका किसी बात में सहारा चाहना व्यर्थ और निरी मूर्खता है। गरम दलवालों के मुखियों की यह अवश्य बड़ी भूल कही जायगी जो इस राष्ट्रीय महासभा की कारवाइयों में उन्होंने विघ्न डाला। मान लिया जाय राष्ट्रीय सभा गवर्नमेंट की खुशामद में लगी है और भिक्षा की भांत अपना हक्क मांग रही है जो उनकी समझ में सर्वथा भूल है तो यही बात देश की भलाई के लिये क्या कम है कि इतने लोग एक ठौर इकट्ठा हो राजनैतिक विचार में लग देश के उद्धार की बात सोचते हैं, और नई २ उक्ति युक्ति निकाला करते हैं, सिवा इसके कांग्रेस के साथ ही साथ और न जानिये कितने तरह के कानफ्रेंस कमेटी तथा परिषद का अधिवेशन बरसवें दिन हुआ करता है। हमारा राजनैतिक जोश साल भर सुस्त पड़ा रह एकसंग उभड़ उठता है इन सब बातों को सोच विचार यह अवश्य कहा जायगा कि तिलक महाराज से भूल हुई और जो कहीं ईर्षा वश लाग में यह काम उन्होंने किया है जो आगे चल उनके कामों से आप ही प्रगट हो जायगा तो उनकी यह कारवाई बिलकुल बेजा है। किन्तु हम सरीखे छोटी बुद्धि वाले ऐसे बड़े लोगों को दूषित ठहरावें यह सर्वथा छोटे मुंह बड़ी बात है इससे उचित है कि चंचल लेखिनी को आगे बढ़ने से रोक चुप हो बैठ रहें। और भगवान् से प्रार्थना करें कि इस दक्षयज्ञ विध्वंस की फिर पूर्ति हो और यह पहले से भी अधिक बलवान् हो।

---

## ( मनुष्य के जन्म लेने का उद्देश्य )

प्यारे मनुज ! पूर्व में तूने, अच्छा कर्म कमाया है।
निस्सन्देह रतन यह नरतन, बड़े भाग से पाया है॥
तिस पर अच्छा देश वेश, सब दैव कृपा से होता है।
पै तोहिं धिक् पाकर फिर इसको, आंख बन्द कर सोता है॥
नहीं सोचता कुछ भी मनमें, किस कारण जग आया है।
जग का सिरजनहार कष्ट सह, क्यों कर तुझे बनाया है ?
इन बातों पर मनमें अपने, सदा ध्यान करना चहिये।
क्यों कर आया यहां और अब, तुझको क्या करना चहिये ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुझे जन्म ले पृथ्वी तल पर निज कर्तव्य करना चहिये ।
धर्म सहायक करके अपना, देश दुःख हरना चहिये ॥
प्यारे मानव ! वही भूमि पर, धनी देश कहलाता है ।
जो निज कर्तव्य पालक जनसे, पूरा भरा सुहाता है ॥
जन्म भूमि जिस पर तू जन्मा, वही तिहारी माता है ।
अर्थ, धर्म, अरु काम, मोक्ष, वह चारो फल की दाता है ॥
वही तुझे अति कष्ट सहन कर, सब प्रकार सुख देती है ।
अंत समय भी गर्भ में अपने वही तुझे रख लेती है ॥
तू है ऋणी कृपा का "उसकी", जो वह करती है तुझ पर ।
इसके बदले तू भी उस की, तनमन धन से सेवा कर ॥
सब बिधि उस की रक्षा करना, मुख्य धर्म यह तेरा है ।
द्वेष कपट की बुद्धि त्याग कर, जान सकल जग मेरा है ॥
जो जन्मे हैं इस पृथ्वी पर, वह सब तेरे भाई हैं ।
क्या हिन्दू, पारसी, मुसल्मां, क्या जो बने इसाई हैं ॥
एक दूसरे से आपस में, रहे सदा तू मिल जुल कर ।
यह शरीर है थोड़े दिन का, कभी इसे मत जान अमर ॥
जब तक तू है बना जगत में, चूक न अपने कर्तव्य से ।
नहि कृतघ्न कहलाएगा जो, है निकृष्ट पदवी सब से ॥
विविध शिल्प विद्यादि गुणों से, "उसे" रचित करना चहिये ।
बन कर वीर प्राण तन, मन, से, उसका दुख हरना चहिये ॥
जो मनुष्य निज पौरुष बल से, अपना काम चलाता है ।
ईश्वर स्वयं सहायक बन कर, उस को योग्य बनाता है ॥
प्रजा जहां की निजहाथों से, अपनी वस्तु बनाती है ।
नहीं किसी के आश्रित रह कर, अपना काम चलाती है ॥
वही देश होकर स्वतंत्र फिर, दिन दिन उन्नति पाता है ।
पृथ्वीतल पर औरों के हित, उदाहरण बन जाता है ॥
जग आकर निज कर्तव्य करना, यह है जीवन का उद्देश ।
करो कराओ बन्धुगणों से, यह कह मैं करता हूं शेष ॥

## समय ॥

समय राव से रंक बनाता रंक को राव बनाता है ।
समय बिगड़ते ही सब कौतुक मिट्टी में मिल जाता है ॥
कभी बना कर विद्यासागर महिमा अधिक बढ़ाता है ।
कभी बना कर काठ का उल्लू जगमें हंसी कराता है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी सवारी घोड़ा हाथी रथ पर कभी बिठाता है।
फटे वस्त्र पहना नंगे पग चहुं दिस कभी फिराता है॥
कभी महल औ बाग बगीचे सेवक संग चलाता है।
कभी उच्च कुल होने पर भी दास कर्म करवाता है॥
कभी प्रकट कर अच्छी ऋतु को अन्न अधिक उपजाता है।
कभी महा बिकराल काल कर दानों को तरसाता है॥
कभी जंगली जाति सभ्य कर दिन दिन शक्ति बढ़ाता है।
कभी सभ्य से सभ्य जाति की महिमा धूल मिलाता है॥
कभी देश, धन, अन्न, बुद्धि, बल, विद्या युक्त कराता है।
पराधीन कर कभी अपौरुष सर्बस बुद्धि हराता है॥
इस प्रकार यह समय सदा से निज प्रभाव दिखलाता है।
नीचा कर फिर उसी को ऊंचा चक्र समान घुमाता है॥

माधव शुक्ल।

## जुबिली।

हमारे पढ़ने वाले चौंक उठे होंगे कि यह जुबिली कैसी । महारानी विक्टोरिया की उनके जीवन काल में एक की कौन कहे रजत, स्वर्ण और हीरक के नाम से तीन बार जुबिली की गई । नियमानुसार ३० वर्ष बीत जाने पर जुबिली मनाने का क्रम है । यों तो हमारे प्रभुवरों के मन की बात है वे जब चाहें तब जिस बात की चाहें उसी की जुबिली कर सक्ते हैं। महाराज एडवर्ड सप्तम को राज करते अभी १० वर्ष भी नहीं हुये नहीं तो इस महामारी और अकाल की पीड़ा में भी एक जुबिली उत्सव मना डालते और सबों को उसे मानना ही पड़ता । जब यह है कि १० वर्ष के थोड़े समय में भी जुबिली हो सकती है तब हमें तो ३० वर्ष हो गये और ३० वर्ष तक हमी अकेले प्रदीप को निरन्तर सम्पादन करते रहे तो क्या अनुचित है कि हम अपने आप अपनी जुबिली कर डालें पर एक चना भार नहीं फोड़ सक्ता इससे इस कार्य में अपने प्रेमी पाठकों की भी सहायता आवश्यक है । ऐसे अवसर पर ठाकुर गदाधर सिंह को विशेष धन्यवाद देना चाहिये जिन्होंने हमें प्रोत्साहित किया है । हमारे प्रेमियों को प्रयाग के अभ्युदय पत्र में इसके लिये सूचना दी ।

हम भी अभ्युदय में प्रकाशित उनके मन्तव्य को सर्वथा उत्तम मानते हैं यदि ५०० ग्राहक हो जाते तो इस जुबिली की यादगारी में प्रदीप ५० पृष्ट का कर इसका आकार बढ़ा देते और १) अधिक इसका मूल्य कर २॥) में इसे सर्वांग सुन्दर बना देते। अपने प्रेमियों से प्रार्थना है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और यही हमारी जुबिली मनाना है कि वे आगे से २॥) अग्रिम मूल्य भेज दें और इसके ग्राहक बढ़ाने का प्रयत्न करें जिसमें इस मनोरथ में हमें सफलता प्राप्त हो ।

# ( नागरी विनय )

## राग पीलू ।

नाथ! यह दुखिनी कहत पुकार ।
तुम बिन नाथ रह्यो अब नहिं कोउ मो दुःख टारनहार ।
तासे बिनवौं दशा आपनी सुनियो दया विचार ॥ नाथ०
प्रिय कितेक प्रानहुंते मम सुत हरि चन्द सम सुकुमार ।
निर्दय काल तिनहिं हरि मोपै कीन्ह्यों वज्र प्रहार ॥ नाथ०
दुख सागर में परि अभागिनी मैं डूबत मझधार ।
वेगि लगावहुं पार नाथ अब तुम बिन कौन हमार ॥ नाथ०
रही लगाए आस जिनहिं पै करिहैं मम उद्धार ।
ते वनिदास अतिहि "उर्दू" के ह्वै गए निपट गंवार ॥ नाथ०
धर्म कर्म की बात भुलानी खुल्यो कुपंथ को द्वार ।
काह कहौं दिन दिन तव "भारत" होत जात निःसार ॥ नाथ
मोको तजि औरन पहं धावत का मति भयो विकार ।
सर्वस भरो न सूझत कछु जनु "दीपक तर अंधियार" ॥ नाथ०
फंसि कुबुद्धि महँ यदपि लेत नहिं सुधि अब कछुक हमार ।
तदपि अहैं मम परम हितैषी बहु हिन्दू परिवार ॥ नाथ०
इनकी बुद्धि सुधारहु स्वामी दुर्मति सकल संहार ।
याही में मम अरु भारत को होइ है अति उपकार ॥ नाथ०
अरु इनकी सब शक्ति बढ़ावहु करैं प्रीति व्यवहार ।
करि सुदूर "उर्दू" पापिन को मोहिं लगावहिं पार ॥ नाथ०
हे 'राघव' ! यादवपति ! माधव ! दीनन के हितकार ।
भवभय हारन! मो दुख टारन में न करहु अब आर ॥ नाथ० मा० शु०

## नामावली संकीर्तन ।

आदि अन्त में मंगल पाठ यह हम आर्यों का अनादि काल से क्रम चला आया है । उसी के अनुसार यह वर्ष का अन्त है तो विघ्नविदारक मंगलकारक भगवान् का नाम संकीर्तन सबभांत शुभ है ।

१ वेदान्त वेद्य—सिद्धान्त सेव्य—सत्चित् आनन्द घन—मुनिमनमानस विहंग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसृति सन्तरण सेतु—अघओघ दवदलनहेतु—
श्रीदश्रीशश्रीनिवास—सत्यधाम—सत्यकाम—गुणगणगणनाललाम।
कंजारुण लोचन-पाप विमोचन-भवभय मोचन-देवनुते।
प्रणतारति भंजन-विपत्प्रभंजन-दुष्टदल गंजन-गोपपते।
भक्त भयहारी-संत सुख कारी-जानकी जानि नमोस्तुते।
केशव माधव जन सुखकारी-यादव यमुना तीर विहारी।
श्रीधर मथुरानाथ खरारी आद्य अनन्त अनघ असुरारी।
अरविन्द नयन-अरविन्द नाभि-कमलायत लोचन-श्रीमुरारी।
विश्वाश्रय-विश्वंभर-विष्णो-विश्व विमोहन-पाहि विभो।
राधा रमण-श्रवण सुखदायक-साधु सहायक-कृष्णहरे।

## जातीय उन्नति।

क्या वह पौधा उग सकता है, और बड़ा वृक्ष हो बढ़ सकता है, यदि वह ऐसी जगह में कर दिया जाय जहां धूप और हवा न पहुंचे। इसी तरह क्या कोई जाति उन्नति कर सकती है यदि वह दासत्व के कटहरे में बन्द हो? पैरों में गुलामी की बेड़ियां और हाथों में हथकड़ी पड़ी हो? भारत की अवनति का आरम्भ कब से हुआ? भारत का इतिहास एक बार ध्यान से देखा जाय तो मालूम होगा कि हमारे शिल्प हमारे साहित्य और हमारे विज्ञान की अवनति उसी समय आरम्भ हुई है जब से हमारे में से राजनैतिक शक्ति जाती रही। इसमें किसी का दोष नहीं है इस गुलामी का फल समस्त दास जातियों को मिलता आया है और भविष्य में मिलता रहेगा। जो जाति दासत्व में पड़ी है उसको सब से प्रथम अपने उदरपोषण की फ़िक्र होती है और जो कुछ समय बचा भी तो दासत्व उस जाति के विचार और भावों को ऐसा गिरा देता है कि पशु तुल्य अपना जीवन बिता देने के सिवाय आगे कुछ उन्नति की उसे सूझती ही नहीं। भारत की वर्तमान दुरवस्था की ओर ध्यान दिया जाय तो निश्चय हो सकता है कि यह कहां तक सत्य है। भारत ही क्यों और कितने देश ऐसी ही दशा में पड़े यही दशा भुगत रहे हैं और ऐसी अवस्था में पड़ यदि वह स्वतंत्र होने का प्रयत्न करें तो इसमें अचरज ही क्या है। भारतवासियों को यदि अपने पूर्व पुरुषों की सन्तान होने का अभिमान है और अपनी पहिली अवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भारत को पहुंचाना स्वीकृत है तो उचित है कि अपनी निद्रित दशा का विसर्जन कर उठैं और अपने को संभालें। असभ्य जाति भी बहुत दिनों तक निद्रित दशा में रह पीछे सभ्य जाति का संपर्क पाय सभ्यता की उत्कृष्ट सीमा तक पहुंच गई तब हम तो उत्तम कोटि की सभ्यता की सीढ़ी पर चढ़ नीचे गिर गये हैं हमें अपना पहिला गौरव प्राप्त करना सहज है। केवल इतनी ही त्रुटि हमारे में आ गई है कि हम अपने आप कुछ करना भूल गये हैं और हर एक बात में दूसरे का सहारा लिया चाहते हैं जो हमारी जातीय उन्नति का बड़ा बाधक है। इसलिये शारीरिक तथा मानसिक बड़े २ काम करने का अवसर हम प्राप्त किया चाहते हों और यह भी चाहते हों कि धर्म सम्बन्धी कार्यों में भी पहले के समान हमारी कीर्ति गूंजने लग जाय तो स्वतंत्रता पहली सीढ़ी है। जिस अविश्वास भय और चिन्ता की दशा में परतंत्र हो दास वृत्ति वाले रहते हैं उसमें कदापि संभव नहीं कि हम किसी तरह की उन्नति कर सकें। इस दशा में जो कुछ उन्नति वे करते भी हैं तो उस का पूरा फ़ाइदा वेही उठाते हैं जो उनका शासन कर रहे हैं। ऐसे समय बायकाट "वहिष्कार" एक मात्र दास्य भाव के बरकाने का सुगम उपाय है। इसी के द्वारा आत्मीय बल का संचार संभव है। परमात्मा की कुछ ऐसी ही प्रेरणा मालूम होती है। जिससे स्वदेश का अंकुर मन में लोगों के जमने लगा है देशभक्ति बल पकड़ती आ रही है। देश में जातीय जोश के संचार का भी कोई अवसर हमारे युवक जन हाथ से नहीं जाते देते उनका उत्साह उनकी सरगर्मी भविष्य के लिये बहुत ही शुभ सूचक है इस का प्रतिफल एक दिन बिना मिले न रहेगा। खन्ना॥

# प्राप्ति।

## कमोदनीसुमन तेल।

आज कल केशरंजन आदि कितने ही तरह के तैल निकले हुये हैं। पर यह तेल भी अपने ढंग का एक अनोखा ही गुण रखता है हम स्वयम् इसकी परीक्षा कर चुके हैं। लगाते समय इसकी सुगन्धि से मकान गमक उठता है और चित्त को अद्भुत आनन्द पहुंचता है। मूल्य फी शीशी।=) फ़ी दर्जन का ४) गुरुस ४५ पता जी—एस् बरमन कन्नौज सिटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## बाल भागवत ।

इण्डियन प्रेस को बालकों से कुछ विचित्र स्नेह सा मालूम होता है बाल सखा पुस्तक माला की यह छठी पुस्तक है बाल भागवत का यही पहला भाग है दूसरे भाग में कदाचित् दशमस्कंध का श्रीकृष्णचरित हो पुस्तक बालकों के लिये अति उपयोगी है पर इस छोटी पुस्तक में कहीं प्रचलित उपदेशक श्लोकों का समावेश होता तो अति उत्तम होता जो बालकों के कण्ठस्थ करने में उचित समझा जाता मूल्य ॥) सर्वसाधारण में प्रचार होने के लिये विशेष मालूम होता है ।

पता—वही इण्डियन प्रेस प्रयाग

## प्रवासी ।

पाण्डेय लोचनप्रसाद जी का यह प्रथम प्रयत्न सराहनीय है । पर कहीं २ तुक बन्दी में कविता कुछ कर्ण कटु, वा भद्दी सी मालूम होती है जो कुछ हो ऐसे ही अभ्यास कराते २ कुछ दिनों में यह अच्छे कबि हो जांयगे।

पता—पाण्डेय लोचनप्रसाद बालपूर
पोस्ट चन्द्रपूर ज़िला बिलासपूर सी० पी०

## कमला ।

आज मुद्दत से सरस्वती अपने गुण को प्रयाग के इण्डियन प्रेस से प्रकाश तो कर ही रही थी पर कमला ( लक्ष्मी ) का अभाव या सो वह भी कलकत्ते के कुछ महानुभाव सम्पादक समिति द्वारा यह बात मिट सी गई और इस बात को एक तरह से झूंठा साबित सा कर दिया कि "लक्ष्मी सरस्वती ( खासकर भारत में ) एक स्थान पर नहीं तिष्ठती" प्रत्युत इसके इस कमला से यह मालूम होता है कि छपाई, सफाई, चित्र आदि में सरस्वती को भी नीचा दिखाने की इच्छा सी रखती है पर एक विषय के लेख इसमें होते हुये भी यदि यह कमला वर्तमान विषय राजनैतिक आदि अपनावे तो निस्सन्देह सरस्वती से बढ़ जाने में कोई सन्देह न रहेगा और बिना राजनैतिक के पूर्ण तरह से कमला ( लक्ष्मी ) को हथियाना असम्भव सा है वार्षिक मूल्य ३) पता—मैनेजर—कमला

नं०—११९ हरीसन रोड़ कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078010
गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

## ॥ बच्चोंने तत्काल जानलिया ॥

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(देखिये दो बालिकायें इस लाभकारी मीठी दवाको देखकर कैसी प्रसन्न होरही हैं)

पुस्तकालय
कुल कांगड़ी

हमारा सुधासिंधु इतना प्रसिद्ध होचला है जिससे अब यह बात निर्विवाद सिद्ध होचुकी है कि नीचे लिखी बीमारियोंके लिये बिना पूछेही लोग मंगाने लगे हैं जैसे कफ, खांसी, जाडेका बुखार, हैजा, शूल, दस्त, संग्रहणी, गठिया, दमा, कै होना, जी मचलाना, बालकों के हरे पीले दस्त और कै करना इनको सिर्फ तीन खुराकमें अच्छा करता है. इसके हजारों सार्टिफिकट मौजूद हैं जिनके लिये प्रायः १२५ चित्रों सहित सूचीपत्र मंगाकर देखिये. मुफ्त भेजेंगे सुधासिन्धु की कीमत ।।) फी शीशी ६ लेनेसे १ भेट १२ लेनेसे पांच रु०

देखिये श्रीमान् राजा इन्द्रजीत प्रताप शाह बहादुर तमकुही जिला गोरखपुर से क्या आज्ञा करते हैं।

महाशय आपका एक दरजन सुधासिंधु पहुंचा जो आपने भेजाथा यह दवा बहुत लाभ दायक है बुखार और पेटके रोगों में तो बहुतही फायदेमन्द है और बहुत रोगोंमें वैसा ही फायदा करता है और महरबानी करके आध पाव चन्दनादि तैल और वासारिष्ट भेजिये।

मंगाने का पता—

**क्षेत्रपाल शर्मा मालिक सुख संचारक कम्पनी मथुरा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri